दैवज्ञविनोदकी–भूमिका।



ज्योतिष शास्त्ररूपी रत्नाकर सागरमें अनेक रत्न जगमगाहट कररहे हैं जिनोंको आग्रह करके लेनेको सज्जन महज्जन राजा महाराजा आदि अनेक पुरुष उत्सुकभी हैं परंतु साधारण विद्वानोंको खरा रत्न मिलना बडा दुस्साध्य है तो औरोंकी तो बातही क्या है प्रथम इस समुद्रसे रत्न निकालनेमें विद्या और बुद्धिबल पूर्ण होना चाहिये फिर पीछे शरीरका उद्योगी पूर्ण हो और तीसरे किसीका आश्रयहो तब तो एक दोरत्न बडे मुष्किलसे मिल सकतेहैं नहीं तो काचके खोटे बनावटी रत्नोंसेही अपना गुजारा करलो और भोली भाली प्रजाकोंभी प्रसन्न करदो परंच "विना शास्त्रेण यो ब्रूयात्तमाहुर्ब्रह्मघातिनम्" इस वचनके देखनेसे ऐसे गुजारा करना ठीक नहीं ज्योतिष शास्त्र कुछ छोटा मोटा शास्त्र नहीं है किंतु सब शास्त्रोंसे शिरोमणी यही ज्योतिषशास्त्र है जिनको आगम निगम जैन बौद्ध चार्वाक स्मार्त वैष्णव शैव शाक्त फारसी यवन और बडे बडे अँग्रेजलोग मान देते हैं और सहस्रों रूपया खर्च करके नये नये आकाशके दूरदर्शी यंत्र बनवाते हैं जिनके द्वारा सूर्यग्रहणादिकोंकी यथास्थिति आस पासके तारे ग्रहका उदयास्तकालआदि यथार्थ देखतेहैं और अपनी आत्माकों बडा कृतकृत्य मानतेहैं जैसा यह ज्योतिष शास्त्र सार्वजनिक शास्त्र है ऐसा और शास्त्र इसके दर्जे नहीं लाग सक्ता इसका मत सब मतोंमें मिलताहै जैसे वेदानुयायी लोग सूर्य चन्द्रादिक ७ वार मानतेहैं ऐसे मुसल्मानभी सातही मानतेहैं और इंग्रेज लोगभी सातही मानतेहैं और वेदांग ज्योतिष शास्त्रमें जैसा पृथ्वीका मान और ग्रहोंकी नीची ऊंची कक्षा मानीहैं ऐसे उन लोकोंनेभी ऐसाही मानाहै जिस शास्त्रका सहमत सभीका मिलताहै वह शास्त्र सर्वोत्तम और पूज्य मानाजाताहै इस शास्त्रका जाणकार हिन्दुस्थानके निवासी जनोंसे मानपावे उसमें तो आश्चर्यही क्या परंतु अन्य विलायतोंके वसनेवाले जो कि ईरानी पारसी इंग्रेज आदि लोगोंसेभी बडा मान पाताहै काशीनिवासी श्रीमान् बापुदेव शास्त्रीजीने इंग्रेज लोगोंसे, महामहोपाध्यायका पद ग्रहण कियाथा और पूरा गणितका जाणकार जानकर वे लोग इनका बडाभारी आदर करतेथे महाराष्ट्र देशके निवासी वे० रा० रा० केरु लक्ष्मण छत्रेजीनेभी इंग्रेजी प्रोफेसर और अफ्सरोंसे अच्छा मान पायाहै और आजकालके वर्तमान समयमें दक्षिण देशके बागलकोट निवासी वे. शा. सं. रा. रा. वेंकटेशकेतकर शर्म्माजीभी गणित शास्त्रके पूरे विद्वान हैं ॥ और इन्होंने गणितके ग्रंथभी उत्तम संस्कृतमें श्लोकबद्ध निर्माण कियेहैं और मुद्रितभी हुयेहैं परन्तु उन ग्रन्थोंका विशेष प्रचार अद्यावधि कहीं देखनेमें नहीं आता कारण कि ग्रीन देशके निवासी मिष्टर लवर हानसेन न्यूकम्बसाहिब आदि इंग्रेज विद्वानोंने केन्द्रच्युति १ मन्दकर्ण २ पात ३ नीच ४ शर ५ और मध्यमगति ६ यह मूलांक उत्तमोत्तम यंत्रोंके बलसे ग्रहको वेधके यथार्थ निश्चय करके उन्होंने इंग्लिश भाषामें ग्रंथ बनायेहैं और उन्ही ग्रंथोंसे बना हुवा नाटिकल एल्मनाक आदि इंग्लिश पंचांगभी देखेगयेहैं और उन्हीं ग्रंथोंका आश्रय लेके उक्त केतकरजीने यह ग्रंथ निर्माण कियेहैं ॥ जिन ग्रंथोंके आश्रयसे हिन्दुस्थानका पंचांग निर्माण किया जाय तो ठीक दृक् तुल्य होसक्ताहै परंतु धर्मशास्त्रोंसे उनके तिथ्यादिकोंमें विरोध आताहै ॥ कारण कि वेदांग आर्ष ग्रंथोंसे एकतिथि ६ घटीसे न्यून और ५ घटीसे अधिक कभी नहीं होसक्ती और उनके गणितसे ९ वा १० घटीकी घट बध होसक्तीहै जिससे व्रतोपवासादिमें कुछका कुछ हेर फेर

होना संभव है अतः इन ग्रंथोंका प्रचार होना बडा मुश्किल है हाँ यदि भौमादि पंचताराओंका उदयास्तसंबंधि गणित ज्योतिर्विद इन ग्रंथोंसे निज निज पंचांगोंमें निवेशभी करले तो किसी प्रकारका हर्जा नही क्योंकि कालके अंतरसे ग्रहगणितमें अंतर हमेशा पडताही रहताहै जिसको श्रीगणेशदैवज्ञ आप कहतेहैं "ब्रह्माचार्यवसिष्ठकश्यपमुखैर्यत्खेटकर्मोदितं तत्तत्कालजमेव तथ्यमथ तद्दूरीक्षणेऽभूच्छलथम् ॥ प्रापातोथ मयासुरः कृतयुगान्तेर्कात्स्फुटं तोषितात्तच्चास्तिस्म कलौतु सांतरमथाभूच्चारुपाराशरम् ॥ १ ॥ तज्ज्ञात्वार्यभटःखिलं बहुतिथे कालेऽकरोत्प्रस्फुटं तत्सस्तं किल दुर्गसिंहमिहिराद्यैस्तान्निबद्धं स्फुटम् ॥ तच्चाभूच्छिथिलं तुजिष्णुतनयेनाकारिवेधात्स्फुटं ब्रह्मोक्त्या श्रितमेतदप्यथबहो कालेभवत्सांतरम् ॥ २ ॥ श्रीकेशवः स्फुटतरं कृतवान् हिसौरार्यासन्नमेतदपि वष्टि मितेगतेहि ॥ दृष्ट्वाक्षयं किमपि तत्तनयो गणेशः स्पष्टंयथा स्वकृतदृग्गणितैक्यमत्र" ॥ ३ ॥

भावार्थ—ब्रह्मा, बृहस्पति, वशिष्ठजी और कश्यपजी आदि महर्षियोंने ग्रहगणितशास्त्र बनाये थे सो उसी समयमें दृक्तुल्य थे पीछे अधिक कालके होनेसे सांतर उनको देखके मयासुरनाम दैत्यने सूर्य नारायणसे प्रार्थना करी तब सूर्यसिद्धांत बना और सूर्यसिद्धांतमें अंतर देखके पाराशर ग्रंथ हुआ पाराशरके विशेष कालांतरसे आर्यभट्टने आर्यसिद्धांत निर्माण किया आर्यसिद्धांतको सांतर देखके दुर्गसिंह वराहमिहर आदि आचार्योंने अपने अपने सिद्धांत बनाये और उनमें अंतर देखके जिष्णुतनय ब्रह्मगुप्तने ब्रह्मसिद्धांत बनाया और ब्रह्मसिद्धांतके पीछे भास्कराचार्यने सिद्धांतशिरोमणि कर्णकुतूहल आदि बनाये और उनमें अंतर देखके केशवाचार्यने निज नामका ग्रंथ निर्माण किया और इसके ६० वर्ष पीछे इनके पुत्र गणेशदैवज्ञने ग्रहलाघव बनाया जिसको आज ३८१ वर्ष व्यतीत हुये है ॥ यद्यपि बहुत वर्षोंके बीतेनेसे इसके भौमादिकोंके गणितमें कुछ कुछ अंतर आताभीहै तथापि ग्रहलाघवका गणित फिरभी और ग्रंथोंसे ठीक है इसके पीछे ग्रहगणितको सुधारके नवीन ग्रंथ बनानेवाला आचार्य कोई नहीं हुवा अब इन सिद्धांतोंके बाबत कोई यह शंका करे कि कर्ण ग्रंथोंमें तो स्थूल मंदोच्चादिकोंके पठनेसे कालांतरसे ग्रहांतर होभी सक्ताहै ॥ परंतु सिद्धांतोंके गणितमें अंतर पडनेका क्या कारण है? जिसका यह समाधान है कि प्रतिवर्ष अयनकी गति चलतीही रहतीहै और ग्रहगणित सब अयनके आश्रित है जब वामन भगवानका जन्म भाद्रपद शुक्ला १२ का हुवाथा तब अयनस्थिति मेष और तुला ऊपरथी जिससे उनका जन्म उत्तरायणमें शास्त्रकारोंने लिखाहै ॥ और युधिष्ठिर महाराज राज्य करतेथे उस समयमें दक्षिणायन और उत्तरायणका स्थान आश्लेषार्ध और धनिष्ठाद्य भागमें था और वर्तमान समयमें दक्षिणायन और उत्तरायणका स्थान मूल और आर्द्रा नक्षत्र ऊपरि है ॥ यह अयनगति बडी जटिल है जिसमें जुदे जुदे आचार्योंका मतभेद है मीनदेशके इयेजों ने ५० पल प्रति वर्षकी मानीहै और किसी आचार्यने ५५ और किसीने ५७ पल मानीहै किसीने ५९ पल मानीहै और गणेशदैवज्ञादिकोंके मतसे ६० पल अयनकी गति विराम होतीहै जिससे विशेष वर्षोंके अंतरसे सिद्धांतगणितमें भी अंतर होना संभव है ॥ क्योंकि ऋतुका बदलना शरदी गर्मीका न्यूनाधिक होना केवल अयनके आश्रित है जब अधिक कालके बीतनेसे ऋतुमें फेर फार होताहै तब तो ग्रहगणितमें अंतर होना संभवही है जिससे वर्ष वर्ष के प्रति उत्तम ज्योतिर्विद ग्रहगणित देखते रहेंगे और नलिकाआदियंत्रोंसे वेध करते रहेंगे तो उनकी वाणी कभी मिथ्या नहीं होगी ऐसे मैंभी इस ग्रहलाघवका नतिसंस्कार बिगडा हुवा सुधारकर इसी ग्रंथमें उसकी सारिणी बनाके लिखाहै सो विद्वज्जन योग्यबुद्धिसे देखेंगे तो स्वयं अनुभव होजायगा मेरे वृद्ध प्रपितामहा-

भूमिका.

दिकोंके पूर्वज कूर्मजातिके क्षत्रियोंके पुरोहित थे और यह क्षत्री नैषध देशके राजा थे और उनसे इनको भेटमें गांगवती ग्राम मिलाया और इसी ग्रामके नामसे हमारे पूर्वज गांगवत कहलायेहैं फिर समयके फेरफारसे यजमानोंका राज्य आमेरका हुवा तबसे हमारे पूर्वजभी इस आमेर राज्यांतर्गत निवास किया इसी आमेराधिपतीके सात राणियां थीं जिसमें खींचीक्षत्री कुलकी कन्या आमेराधिपतीको विवाही उसके साथमें सेढोजी पाराशर ब्राह्मण आयेथे उनको शकुन शास्त्रका अच्छा ज्ञानथा किसी समयमें उनकी शकुनकी बात ठीक मिलनेसे महाराजा प्रसन्न होके खींचणजीके संतानका सेढेजीको पुरोहित बनाया छे राणियोंका और आपका पुरोहित गांगावतोंकोही रखा ॥ फिर समयकी विलोमतासे छे राणियोंके संतानका अभाव हुवा एक केवल खींचणजीके संतान हुई जिससे छे राणी और महाराजा देवलोक हुये बाद कूर्मवंशकी पुरोहिताई गांगावत ब्राह्मणोंसे समाप्त होके पाराशर पुरोहितोंको प्राप्तभई तबसे मेरे वृद्ध प्रपितामहादिकोंका निवास स्थान जैपुर राज्यांत-गतखंडेलेके राज्यमें गोवर्टी ग्राममें हुवा फिर किसी कारणसे मेरे पितामहादिकोंको सीकर राज्यांत गत रामगढ निवास किये आज ८० वर्षके अनुमान हुये ॥ मैं गौड गांगावतवंशज भारद्वाज १. आंगिरस २ बार्हस्पत्य ३ त्रिप्रवरान्वित भारद्वाजगोत्र माध्यन्दिनीशाखाका विद्वानोंका सेवक हूं ॥ मेरे पितामहका नाम सदारामजी था और मेरे पिताका नाम रूपरामजी था रूपरामजीके ज्येष्ठपुत्र-नरहरि और कनिष्ठ पुत्र मनीराम हुवा रूपरामजीके सहोदर सुरूपरामजीके पुत्र श्रीवल्लभको अपुत्र जाण बांधव भावसे मेरेको श्रीवल्लभजीका दत्तपुत्र बनाया मेरा जन्म वैक्रमीय संवत् १९१७ के प्रथम आश्विन शुक्ला ४ मंगलवार निशीथ समयको है और मैंने ज्योतिष शास्त्र ज्येष्ठ भ्राता नरहरिजीसे पढाहै और पीछे उज्जैण निवासी श्रीसांदीपनवंशोद्भव दीनानाथजी महाराजसे पढाहै तथापि इस ग्रंथमें किसी स्थानमें त्रुटि देखके विद्वज्जन मुझ दीन ऊपर क्षमाकरेंगे क्योंकि यह ग्रंथ भाषाका दैवज्ञोंके विनोदार्थ है और साधारण छात्रोंके पढने योग्यहै छात्रलोग इससे परिचित होंगे तो उनकी सिद्धांतोंमें प्रवेश करनेकी गति सम्यक् प्रकारसे होजायगी और वे नक्षत्रसूचीके दोषोंसे अलग होंके दर्शनीय होजायगे शास्त्रमें लिखाहै कि तिथिकी उत्पत्ति जाने नहीं और ग्रहसाधनभी नहीं जाने और ज्योतिषविद्याकी उपजीविका करै वह नक्षत्रसूची कहलाताहै और सिद्धांतपाठोंके दर्शन करनेसे दशदिनका पाप दूर होताहै और श्राद्धमें पूज्य और भोजनाहै है नक्षत्रसूची श्राद्ध और धर्मकृत्यमें त्याज्य गर्हणीयहै इससे नक्षत्रसूचकत्व दोष दूरकरने के लिये इस ग्रंथका अवश्य पठन पाठन ज्योतिर्विदोंको करना परमावश्यक है ॥

पं० मनीरामशर्मा.

॥ श्रीः ॥

दैवज्ञविनोदस्थविषयानुक्रमः ।

इति देवज्ञविनोदविषयानुक्रमः समाप्तः ।

दैवज्ञविनोदः।

अथ प्रथम विनोदः १.

श्रीविनायकाय नमः ॥प्रथम शास्त्रके प्रारंभमें अव्यक्त और अचिंत्यरूप परमात्माको अनेक धन्यवाद है कि, जिसकी कृपाकटाक्षके प्रकाश से सूर्यादिमंडल अखिल विश्वमें प्रकाशित होरहेहैं और उसीकी आज्ञासे कालज्ञानको सूचित करतेहैं. और वही जगत्के उत्पत्तिका मूल है.जिसके भयसे इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, धनद, रुद्र इत्यादि देव अपने अपने कर्मोंमें नियुक्त होरहे हैं. अतएव उसी करुणावरुणालय सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरको प्रणाम करके और उनकी कृपासे महाराव राजाजी श्रीमाधवसिंहजी बहादुर सीकरनरेशके रामगढ़निवासी मनीरामशर्माने जगत्का उपकार समझके यह "दैवज्ञविनोद" नाम ज्योतिष ग्रंथ बहुत ग्रंथोंका सार लेके आर्यभाषा (हिंदुस्थानी) में संग्रह कियाहै. उक्त ज्योतिष शास्त्रके तीन भेद हैं. सिद्धांत १ संहिता २ होरा ३ इन तीन भागोंमें आद्य भाग जो कि, सिद्धांत शास्त्र है उसीका कथन यहां होताहै. अब सिद्धांत किसको कहते हैं ? त्रुट्यादि प्रलयांतकालकी रचना जिसमें हो वही सिद्धात कहलाता है. सिद्धांतोंमें कौन सिद्धांत मुख्य है ब्रह्म १ सूर्य २ आर्य ३ यही तीन सिद्धात मुख्य हैं और इन्हींकाही गणित विश्वप्रचलित और मान्य है उक्त सिद्धांतोंमें पृथ्वी और आकाशकी रचना लिखी वही इस ग्रंथमें यथार्थ लिखीहै. जिससे अधिक और भी अनुभवसिद्ध बातें जो कि, प्रत्यक्षप्रमाणमें ठीक ठीक हों वेभी यहां लिखीगई हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, इस संपूर्ण ब्रह्मांडका कारण इच्छारहित सत् चित् आनंदस्वरूप ब्रह्म परमात्माकी प्रकृति (माया) है. वह माया नित्य है. जैसे सूर्यकी प्रतिच्छाया. और वही माया जड है. अतः चैतन्य परमात्माके संयोगसे इस संसारने नटवत् मायया करती हुई प्रथम बुद्धि उपजाती भई. वह बुद्धि कैसी कि,इच्छामयी.

महत्तत्व जिसके स्वरूप हैं. महत्तत्वसे अहंकार हुवा. वह अहंकार रजोगुण, १ सतोगुण २ तमोगुणमय ३ तीन प्रकारसे हुवा. रजोगुण और सतोगुण यह दोनोंसे दश इन्द्रियाँ उत्पन्न भई और उक्त दोनोंसे मनभी उत्पन्न हुवा. दश इंद्रियोंमें कर्ण १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ यह पांच ज्ञानेंद्रियें कहलातीं हैं और वाणी १ हाथ २ पैर ३ लिंग ४ गुदा ५ इन्होंका नाम कर्मेंद्रिय हैं. तमोगुण और सतोगुणसे अहंकार मिलके पंचतन्मात्रा-जो कि, शब्द, १ स्पर्श, २ रूप, ३ रस ४ गंध ५ उत्पन्न हुवाहै और पंचतन्मात्रासेही पंच महाभूत जो कि शब्दसे आकाश, १ स्पर्शसे वायु, २ रूपसे अग्नि, ३ रससे जल, ४ गंधसे पृथ्वी, ५ उत्पन्न हुए हैं, उक्त पांच ज्ञानेंद्रियोंमें कर्णविषय शब्द, १ त्वचा विषय स्पर्श, २ नेत्रविषय रूप ३ जिह्वा विषय स्वाद ४ नासिका विषय सुगंध दुर्गंधका पहिचानना. ५ और कर्मेंद्रियोंमें वाणी विषय शब्द, १ हाथ विषयग्राह्य २ पैर विषय हलन चलन, ३ लिंगविषय मैथुनादि, ४ गुदाविषय मलका परित्याग करना. प्रधान, प्रकृती, शक्ति, नित्या, विकृति, यह प्रकृतीकेही विशेषण हैं. महत्तत्व, -१ अहंकार, २ पंचतन्मात्रा, ७ प्रकृती; ८ दश इंद्रियाँ, १८ एक मन, १९ पंच महाभूत २४ एवं चौवीस तत्वोंसे मिलके शरीररूपी घर बनताहै फिर जीवात्मा शुभ अशुभ कर्मोंके अधीन हो उक्त शरीररूपी घरमें मन दूतके वश हो निवास करताहै. अतएव जीवसंयुक्त शरीरको नामही देही है ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते सृष्टयुत्पत्तिकथनं नाम प्रथमविनोदः ॥ १ ॥

अथ कालमीमांसां व्याख्यास्यामः ।

मनुष्य देहीके सुखके साधन वेदमें लिखे दर्श पूर्णमास याग और अमुक तिथी, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न, नवमांशोंमें अमुक काम करनेसे सुख होना या दुःख होना यह विवेक ज्योतिष शास्त्रसेही जाना जायगा. अतएव

ज्योतिषशास्त्र वेदभगवान्के नेत्र हैं. जैसे नेत्रोंसे वर्तमान वस्तुवोंको मनुष्य देख सक्ताहै वैसे ज्योतिष शास्त्रसे भूत भविष्य और वर्तमान कालकी बातें ज्योतिर्विद् देख सक्ताहै इसी कारणसेही तो इसका नाम कालविधान शास्त्र है. अतएव इस शास्त्रके पढनेवालोंको प्रथम कालज्ञान होना चाहिये. वह काल दोप्रकारसे है अमूर्तकाल १ और मूर्तकाल २ जिसमें अमूर्तकालकी मीमांसा नारदके मतसे लिखतेहैं. भली भाँति मनुष्य सोताहुवा नेत्र खोले उन्हीं नेत्रके खुलती समयके त्रिंशत् भागका नाम एक तत्पर है. और तत्परके शतांशका नाम एक त्रुटि है. एवं त्रुटिके सहस्रांशको एक लव कहाजाताहै.यह लव योगाभ्याससे योगीराजही जान सक्ताहै. बाकी और मनुष्य नहीं जान सक्ता. इति अमूर्तकालकी मीमांसा.

अथ मूर्तकालकी मीमांसा—यह मूर्त कालका वर्णन सूर्यसिद्धान्तसे लिखा जाताहै. स्वस्थ मनुष्यके ६ प्राणका नाम एक पल और ६० पलकी एक घडी. और साठ घडियोंका एकदिन और ३० दिन का एक मास, एवं बारा मासोंका एक वर्ष यह ३६० दिनोंका सावन वर्ष कहलाताहै. और इन सावनदिनके प्रमाण ३६५ दिन १५ घडी ३१ पल ३० विपल यह सौर-वर्ष कहलाताहै.सौर वर्ष क्या.१उक्त दिनादिमें सूर्य घूमके वही ठिकाने आताहै कि, जहांसे चलाथा. और वही सावन दिनके प्रमाण ३५४ दिन, २२ घडी १ पल२३विपल यह चान्द्रवर्ष कहलाताहै चांद्रवर्ष क्या१चैत्रशुदि १ से फिर चैत्रवदि ३० पर्यंत यह चांद्रवर्षका भोग है. और उक्त सावनदिनोंके प्रमाणही ३६१ दिन १ घडी ३६ पल ११ विपल यह बार्हस्पत्य वर्ष कहलाताहै. बार्हस्पत्य क्या१बृहस्पतीका राशिभोग और प्रभवादिसंवत्सरभोग इतने दिना-

---

१ नारदः—स्वस्थेनरेसुप्तासीनेयावत्स्पंदातिलोचनम्॥तस्यत्रिंशत्तमोभागस्तत्परः परिकीर्तितः ॥१॥ तत्पराच्छतशो भागस्त्रुटिरित्यभिधीयते ॥ त्रुटेःसहस्रभागोयो लवस्तत्र स उच्यते ॥ २ ॥ दृष्टोपितेन ज्ञानातिक्लिष्टुनःप्राकृतोजन ॥ निमित्तमाङ्गदैवज्ञतद्वशाप्यनुमानमम् ॥ ३ ॥ इति निगदर्पदापनदीपायां विवरितम् ।

दिकोंका है. अब इन सबका प्रयोजन यह है कि, नित्य व्यापार प्रतिदिनके व्याजमें वा अहर्गणादि तो सावनवर्षसे सिद्ध होताहै और वसंतादि ऋतुओंका ज्ञान सौर वर्षसे सिद्ध होताहै. एवं श्रौतस्मार्त कर्म वा गर्भाधानादिगणना चांद्र-सेही सिद्ध होसक्तीहै. और संवत्सरादि फलकांक्षा, संकल्पसिद्धि बार्हस्पत्य वर्षसेही सिद्ध होतीहै. अतएव इन चार प्रकारके वर्षादिमानही यहां लिखा-गया. वर्षोंका मान तो औरभी है परंच ग्रंथविस्तृतिभयसें वे यहां नहीं लिखा. उनकी अपेक्षा किसीको हो तो वह सूर्यसिद्धांतमें देख लेवें इति मूर्तकालकी मीमांसा.

अथ कालांगवर्णनम्.–कालभगवान्का आत्मा सूर्य ॥ मन चंद्रमा ॥ सत्व मंगल ॥ वाणी बुध ॥ ज्ञान और सुख गुरु॥ काम शुक्र ॥ दुःख शनी और इसी प्रकारसे कालभगवान्का मस्तक मेष ॥ मुख वृषभ ॥ ग्रीवा मि-थुन ॥ हृदय कर्क ॥ उदर सिंह ॥ कटि कन्या ॥ वस्ति तुला ॥ व्यंजन वृश्चिक ॥ ऊरू धन॥जानु मकर ॥जंघा कुंभ॥ पैर मीन॥ अब यहां ध्यान देनाचाहिये कि, सूर्यचंद्रमाके अंतरसे तिथि बनती है और केवल चंद्रमासे नक्षत्र बनताहै. एवं सूर्य चंद्र इन दोनोंके मिलानेसे योग बनताहै. और तिथिका भोग आधा करनेसे करण बनताहै अत एव सूर्य चंद्रमा कालभगवान्के अंग हैं जब तिथि वार नक्षत्र योग करण यह सब पाँचो तो कालांग होनाही चाहिये क्योंकि इनकी सिद्धिभी तो उक्त सूर्य चंद्रमासेही है. इसीसे इन पांचवस्तुओंके गणित का नाम पंचांग लिखा जाता है.॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते कालमी-
मांसावर्णनं नाम द्वितीयविनोदः.॥ २ ॥

---

१ सायनसंक्रांतिसे ऋतुकी प्रवृत्ति होतीहै जैसे मीन मेषमें वसंत १ वृष मिथुनसे ग्रीष्म २ कर्क सिंहमें वर्षा ३ कन्यातुलमें शरद ४ वृश्चिक धनसे हेमंत ५ मकर कुंभमें शिशिरऋतु ६ होताहै।

अथ भूगोलवर्णनम् ।

इस ब्रह्मांडको पंचास कोटि योजनके विस्तारमें पुराण शास्त्रकारोंने लिखा है जिसमें भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्य यह सप्त लोक और तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल यह सप्त पाताल मिलके चतुर्दशलोकों की स्थिति है और इसी ब्रह्मांडके बीच यह भूगोल (पृथ्वी) नारंगीसदृश गोल है.जिसका गोला ज्योतिषके मतसे४९६७योजनोंके लगभग है.परंच शास्त्रकारोंने रेखामापसे जो पृथ्वीका माप लिखाहै वही यहां लिखाजाता है. उक्त पृथ्वीके चारदिशामें चार पुर प्रथम वसे हैं. जिसमें पूर्व यमकोटि, १ दक्षिण लंका, २ पश्चिम रोमकपत्तन, ३ उत्तर सिद्धपुर, ४ इनमें दक्षिण लंकासे उत्तर सिद्धपुरपर्यंत जो दक्षिणोत्तर सूत्ररेखा है वह भूमध्यरेखा कहलाती है और पूर्व यमकोटीसे पश्चिम रोमकपत्तनके सूत्रकी पूर्वापर रेखा है जिसे विषुवति रेखा कहते हैं.जिसका वर्णन सविस्तर आगे होगा यहां तो भूमध्यरेखाका वर्णन होरहा है. लंकासे उत्तर१२५ योजन कुमारी कन्या इससे उत्तर८०योजन कांचीपुरी, एवं ३६ योजन किष्किंधा जिससे उत्तर ९ योजन परेल ग्राम, जिससे उत्तर १० योजन बार्सिंव गांम. जिस्से उत्तर ५० योजन उज्जैनपुरी, उज्जैनसे उत्तर१०८योजन कुरुक्षेत्र जिस्से उत्तर ८२४ योजनपर सुमेरु है. अब यह दक्षिणोत्तर सारे १२४२ योजन

---

१ अंडमध्यगतःसूर्यो द्यावाभूम्योर्यदंतरं॥सूर्यांडगोलयोर्मध्ये कोटयःस्युः पंचविंशतिः॥इति भागवते. पृथ्वी सांडकटाहेन पंचाशत्कोटिविस्तरा इत्यग्निपुराणे । योजनानां च पंचाशत्कोटिसंख्या प्रमाणतः । ब्रह्मांडस्यैव विस्तारो मुनिभिः परिकीर्तितः । इति महाशिवपुराणे ।

२ पृथ्वीका गोला २५ हजार मैलका सूर्यके गिरद घूमरहाहै. ऐसे इंग्लिशभूगोलोंमे लिखाहै. और शास्त्रकारोंने वीसहजार कोशके लगभग सारी पृथ्वी लिखी. जिससें दोनोंका मत एक मिलताहै. क्योंकि मीलके मापसे शास्त्रके कोश कुछ बडेहैं.परंच पंचसिद्धांतिकाचार्य वराहमिहर कहताहै की पृथ्वी घूमे तो पक्षियोंकूं अपना ठिकाना कहांसे मिले.क्योंकि ये तो हमेश आकाशमेंही रहाकरतेहैं.इससे पृथ्वी अचला है।

३ पुरीराक्षसीतत्वभूदेवकन्याततो नयकाचीतुसाष्टप्रमाणैः ॥ सितः पर्वतोमंगरामैश्च संख्याततोयोजनैर्नन्दभिः पर्यलीस्यात् ॥ ततोयोजनैःखेंदुभिर्वत्सगुल्मंखबाणैः सुदूरेरवंतिप्रमाणम् ॥ कुरुक्षेत्रमष्टोत्तरैर्योजनैःसज्जिनैर्नागयुक्तैः प्रमाणैः सुमेरुः इति सिद्धांतसारे. प्रोक्तो योजनसंख्ययाकुपरिधिःसप्तांगनंदाब्धयः इति शिरोमणौ ।

लंकासे सुमेरुतक हुवा और सुमेरुसे उत्तर पारिवेट, मेलविल सौंद, आलव-त्सलांट, लाद, श्रेतसलेब, अपावास्का, बिंतिस, आकेगान, वगलानदी, कारि-एतेसकेप, ज्वालापहाड, कार्लिमाज्वलत गालपा गासवेटतक १२४२योजन सिद्धपुर है और सिद्धपुरसे उत्तर सालाईगोमेथ, आल, अलेकसांदवेट, और समुद्र विक्टोरिया लांदसें. ८४०मैल आगे दक्षिण ध्रुवके ठीक अधस्थ १२४२ योजन असुरस्थान है जिससे ऐदर्विलांद, साक्दानल्दसवेट, करग्वे-लनलांद, आमस्तरदामबेट, सेत पालबेट, सेन्ट्रीबेट, और चागास बेटके सूत्रतक घूमके १२४२ योजन फिर वही लंकातक एवं सर्व मिलके भूगोल-योजन ४९६७ के विस्तारमें है और उक्त शहरोंका नाम लिखे वे ठीक मध्य रेखाके समीप वसते हैं. और इन शहरों के सूत्र वीच जो शहर वा ग्राम हैं उन्हींको भी मध्यरेखाके वीचही समझना चाहिये. जिनका योजनात्मक परिमाण मुझको ठीकठीक नहीं मिला जिससें वे यहां नहीं लिखागया अतएव ज्योतिर्विदोंको उचित है कि, जो मध्य रेखाके ग्राम पूर्वापर जो कि अपने समीप है उसीकी मध्यरेखा ग्रहणकरे दूरकी न करे. जैसे कि, ढोसी गर्गराट, वैराट इत्यादि ग्रामोंकी इनके समीप वसनेवाले ग्रहण करते हैं अब ध्यान देना चाहिये कि, यह पृथ्वीका भ्रमणहोना आर्यसिद्धांतमें लिखा है और "आयंगौ" इत्यादि वेदमेंभी लिखाहै. बाकी और सिद्धांतोंमें पृथ्वीको अचलही मानाहै.लेकिन चल वा अचल जो हो सो हो ज्योतिर्विदको चल वा अचलसे कुछ प्रयोजन नहीं.ग्रहगणित तो दोनोंसेही समान आसकेगा. उक्त पृथ्वी सूर्यके आकर्षणसत्तासे ब्रह्मांडके वीच ठहर रही है नीचे आधार इस्के किसीकाभी नहीं. यदि आधार मानोगे तो फिरभी उसके नीचे किसी काभी आधार मानना होगा.आखिर थकते थकते पीछे यही कहोगे कि पृथ्वी

१ आर्यभटः अनुलोमगतिनौंस्थ· पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत् ॥ अचलानिभानितद्वत्समपश्चिमगानि लङ्कायाम् ।

२ मभानान्मिनोदाधारपृथ्वीमुतद्यामिनः छुटीरनिमिषाभिषष्टे । यह प्रमाण ऋग्वेदसंहिताके तीसरे अष्टक और चौथी अध्यायके पंचमवर्गमें है ।

स्वशक्त्याश्रित है जिससे पहिलेही स्वशक्त्याश्रित कहना श्रेष्ठ है. जैसे सूर्य चन्द्रादिकभी तो अपनी अपनी सत्तासे ठहर रहेहैं वैसे पृथ्वीभी ठहर रही है. और कितने शास्त्रकारोंने चारों दिग्गज चारों दिशावोंमें लिखेहैं वे यथार्थ हैं.परंच वह दिग्गज भूगर्भ के अधोभागमेंही है बाह्य नहीं.और सप्त पातालरचनाभी उक्त पृथ्वीके उदरमेंही है. जो पृथ्वीके बाह्यके विवर (दरार) हैं वे उन पातालवासियोंके आनेजानेके मार्ग हैं.और शेष वा कूर्मभी उक्त पृथ्वीके उदरहीमें होंगे. वस्तुतः अनेक शास्त्रोंमें जो लिखाहै उसे सत्य नहीं कहना—यह एक अस्मदादिकोंकी भूल है क्योंकि शास्त्रोंकी एक संगति लानी वडी कठिन है. इन बातोंमें वडे वडे आदमी चक्कर खाजातेहैं. तो अस्मदादिलोक तो किस बागकी मूली है. अब आगे देखिये कि, इसी पृथ्वीके चौफेर पशु पक्षी मनुष्य समुद्र, नदी, बन, पर्वत इत्यादि बसरहेहैं. और उन पर्वतोंके बीच जो पृथ्वीहै उसीको खंड बोलते हैं. अब यह दक्षिण समुद्रसे उत्तर समुद्रपर्यंत और पश्चिमसमुद्रसे पूर्वसमुद्र पर्यंत पृथ्वीके अर्धभागकोही शास्त्रवेत्ता जंबुद्वीप कहते हैं. उक्त समुद्रके जल खारा होनेके कारण इसका नाम क्षारसमुद्र रक्खागया.उक्त जंबुद्वीपके नव खंड हैं. और जिसमें अस्मदादि वसते हैं. यह भारतवर्ष कहलाता है. और भरतखंडभी इसीको कहते हैं. जिसकी सीमा पूर्व पश्चिम दक्षिण यह तीन ओर तो समुद्रसे घिरा है.और उत्तरसीमा इसकी हिमालय पर्वत है.वह हिमालय और सब पर्वतोंसे ऊंचा है. ब्रह्मपुत्रनद इसकी पश्चिम सीमासे निकलके तिब्बतके देश हो आया है इन पहाडोंमें हिम अर्थात् बर्फ अधिक रहनेके कारणसेही इसका नाम हिमालय रक्खागया

---

१ वाल्मीकीयरामायणे—खन्यमानेततस्तस्मिन्ददृशु.पर्वतोपमम्॥दिशागजविरूपाक्षं धारयंतं महीतलम्॥ ब्रह्माके एकदिनमें पृथ्वीके चौफेर एक योजन ऊंचेतक मृत्तिका चढतीहै. और ब्रह्माकी रात्रिमें वही मृत्तिकाकी हानि होतीहै इसका प्रमाण आर्यसिद्धाते ब्रह्मदिवसेनभूमेरुपरिष्टाद्योजनंभवतिवृद्धिः ॥ दिनतुल्ययैकरात्र्यामृदुपचितायास्तदिहहानिः ॥

२ भुगताब्धिजलंक्षारंलवणार्णवसंज्ञकम् ॥ तद्वेलावलयस्थानांसमंताधत्रकुत्रचित् ॥ इतितत्वविवेकसिद्धांते। ततः समंतात्परिधि' क्रमेणायं महार्णवः इत्यादिसिद्धांतवाक्योंसे इसी समुद्रसे अनेक समुद्र भेद हुयेहै ।

इस पर्वतपर पशुपक्षी भी नहीं जासक्के तो मनुष्य क्योंकर जायगा. आकाशके रहनेवाले बादलभी कटिमेखलासे अधोभागमेंही लटकते रहते हैं. किसी दिन आकाश निर्मलमें बर्फ विनाके ऊँचेसे पहाडचढनेसे चित्तको बडा आनंद आता है. पूर्व पश्चिम दक्षिण यह तीन ओर तो पहाडही पहाड दृष्टिआते हैं कि, जहां अपनी दृष्टि टिके और कितने कितने हाथ लंबे और मोटे जंगली वृक्षोंको हरियाली के मानो उन पर्वतोंको हरित वस्त्र पहनाये हैं. और अच्छी अच्छी नदियोंका पानी इन वृक्षोंकी जडोंमें सूर्यके तेजसे ऐसा चमकता है मानो उन वस्त्रोंको किनारीगोटा लगाये हैं. और समुद्रके तरंगकी तरह ऊंचे नीचे दिखाई देरहेहैं. इन्हीं शिखरोंके उत्तरकी तरफ अर्धचंद्राकार अपनी दृष्टि टिके जहांतक बर्फहीके पहाड दीख पडतेहैं वे पर्वत इतने ऊंचे हैं मानो ईश्वरने आकाशके सहारेके लिये खंभे बनायेहैं. सूर्यके तेजसे ऐसे चमक रहेहैं कि, मानो पृथ्वी अपना हाथ निकालके हीराके जटित कंकण दिखलारहीहै. और अपने पैरोंकी तरफ देखो तो हरित वनस्पती और फूलोंके मानो गालिचे बिछ रहेहैं. इन पहाडोंमें सबसे ऊंचे शृंग धवलगिरीके हैं जिसमेंसे गंडकीनदी निकलीहै जमनोत्रीके पहाड इनसे कुछ उत्तर है. जिसको वहाँवाले पुरागिलनामसे बोलाकरते हैं.और सतलज या दौली यह दोनों नदियाँ बदरीनाथके पश्चिमपहाडोंसे निकलीहै. और इन पहाडोंकी श्रेणी सिंधुनदसे ब्रह्मपुत्र नदतक चलीगई है.उक्त पहाडों पैं साढेछहजार हाथ ऊंचेतक वृक्ष या खेतीवारियां उत्पन्न होतीहैं. इसके ऊपरबर्फही बर्फ है शीतऋतुमें तो छःहजारहाथ नीचे भी कुछ कुछ बर्फपडतीहै. परंच गर्मीके दिनोंमें नहीं पडती. यहांतक मनुष्य पशु पक्षी पहुँच-सकेहैं. यह अजब महिमा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरकी है कि, एकऋतुमें एकही जगह तीनों ऋतु दरशा रहेहैं पृथ्वीके समीप तो गर्म ऋतुके वृक्ष और जिससे ऊंचा वर्षाऋतुके वृक्ष और उससे ऊंचे पहाड चढदेखो तो शरदृतुके वृक्ष दिखलाई देरहेहैं और बर्फकी हदके समीप जानेपर भोजपत्रके सिवाय कोईभी वृक्ष दि

खलातानहीं. उक्त हिमाद्रि पर्वतोंसे छोटा विंध्याचल इसी भारतवर्ष के मध्यमें है.यह पर्वत खम्भातकी खाडीसे नर्मदानदीके उत्तर जीले भागलपूरमें गंगाके किनारेतक गयाहै. और सह्याद्री विंध्याचलके पश्चिम शिरेसे लेंके समुद्रके निकटही निकट कुमारी अंतरीपतक चला गयाहै इसी सह्याद्रीके दक्षिण भागका नाम मलयागिरीहै. और बंगालेकी खाडीके निकटही निकट कावेरी से विंध्यके पूर्वसिरेतक पहाडोंकी छोटी एक श्रेणी है जिससे पूर्वघांट बोलतेहैं. और पूर्वघांटके बीच दक्षिणकी तरफ और जो पहाड है उसीका नाम नीलगिरी है. और शेखावाटीमें मालकेतुकी श्रेणियाँ कितनीही दूरतक चलीगई हैं.और पुष्करतीर्थके चौफेर जो पहाडहै वे अर्वली वा अजयमेरु के नामसे बोले जातेहैं. और उक्त पर्वत अर्बुदाचलकी श्रेणियाँही जानपडतीहैं.आर छोटे छोटे पहाड तो शेखावाटीमें कितने स्थानोंपर हैं लेकिन ग्रंथविस्तृतिभयसे वे यहां नहीं लिखेगये उनके नाम उनके समीप वसनेवाले कहकर पुकारतेहैं. वही ठीक हैं.अब जहां इतने बडे बडे पहाड हैं वहां नदीभी जरूर होना चाहिये सो नदी इस भरतखंडमें इतनी मुख्य हैं. जिनका नाम गंगा, यमुना, सरयू, गंडकी, शोण, कोसी, तिष्ठा, चम्बल, सिंधु, झेलम, चनाव, रावी, व्यासा, सतलज, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, तापी, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी इन्होंमें इस देशकी प्रधान नदी गंगा है यह गंगा गंगोत्रीके पहाडसे चलके और अनेक नदियोंका पानी अपने साथ लेतीहुई पांचकोसके पाटसे कपिलमुनीके आश्रम होके समुद्रसे मिलीहै. जिसको गंगासागरसंगम कहते हैं. और ब्रह्मपुत्रनद हिमालयके उत्तर अलंग मानससरोवरसे निकलके गंगासे मिलाहै. और यमुना जमनोत्रीके पहाडसें बहके प्रयागमें गंगासे मिलीहै. सरयू और गंडकी कौशिकी और त्रिस्रोता, वा तिष्ठा यह चार नदियां हिमालयके वर्फी पहाडोंसे निकलके पहली छपरेके समीप दूजी पटनेके सामने तीसरी भागलपुरके नजदीक चौथी करतोयाने लेतीहुई नवावगंजके पासही गंगासे मिलीहै. और कर्मनासा एक छोटी नदी काशी और बिहारके जिलेके बीच बहकर

गंगासे मिलीहै. चर्मण्वती वा चंबल और शोण यह विंध्याचलसे चलके पहली इटावेके नजदीक जमुनामें खपीहै.दूसरी सरयू और गंडकीके बीच जाके छपरेकेपास गंगासे मिली है. सिंधू नदी जिसको भाषामें अटक कहते हैं यह नदी हिमालयके पार गारु शहरके पास कैलासपर्वतकी उत्तर अलंगसें निकलके हजार उन्मान कोश बहके पश्चिमसमुद्र में मिली है और झेलम चनाव व्यासा रावी सतलज यह पांचों नदियां हिमालयसे निकलके सब इकट्ठीहो पंचनद के नामसे मिटनकोटके नीचे सिंधुमें मिली है. इन पांच नदियोंके देशका नाम पंजाब कहलाता है उक्त पांच नदियोंमें सतलज नदी हिमालयके उत्तर भागसे मानससरोवरके पास रावणहृदसे निकली हैं. और बाकी रही वे नदियां हिमालयकी दक्षिण अलंगसे आई हैं झेलम वितस्ता जंगसियालेसे दशकोशनीचे चनावमें मिली है. और रावी जिसका नाम शुद्धऐरावती है वह मुलतानसे बीसकोस ऊपर चलके चनावहीमें मिली है. व्यासा वा विपासा अभयकुंडसे निकलके हरिपत्तनके समीप सतलजमें मिली है. और सतलज जिसका शुद्धनाम शतद्रु है यह नदी मिटनकोटके नीचेही सिंधुमें मिली है. चंनाव वा चंद्रभागा हिमालयसे निकलके मिटनकोटसे थोडी दूर जाके खपी है. और नर्मदा शोणके उद्गमस्थानके उत्तरसे निकलके भडोचके पासही खंभाइतकी खाडीमें मिली है. और तापीभी सतपुडा पहाडसे निकलके सूरतसे दसकोस पर पश्चिम समुद्रसे मिली है. महानदी नागपुरके इलाकेसे निकलके कटकके पास अनेकधारा होके समुद्रसे मिली है गोदावरी पश्चिमघांटमें त्र्यंबकसे निकलके वरदा और बाणगंगासे मिलके इनको साथ लेके राजमहेंद्रीके नीचे समुद्रसे मिली है.कृष्णाभी सह्याद्रीके पहाडोंसे सितारेके नजीक मालपर्व गतपर्व भीमा वा भीमरथी तुंगभद्रा इन पश्चिम घांटसे निकली हुई नदियोंको साथ लेके मछलीबंदरके पास समुद्रसें मिलीहै और कावेरी नीलगिरीसें निकलके तिरूचीसे थोडी दूर आगे समुद्रमें मिलीहै. और शिप्रानदी उज्जैनके पश्चिम तरफ बहती हुई आगे चलके और नदियोंमें मिलके समुद्रमें मिली है ॥ इति नद्युत्पत्तिः ॥

अथ देशव्यवस्था—अब भारत वर्षके मध्यके और आठोंदिशावोंके जो देश हैं वे क्रमसे यहां लिखे जाते हैं. पूर्व और पश्चिम समुद्रके हिमाचल और विंध्याचलके बीच जो देश वसताहै वह आर्यावर्त कहलाताहै. उक्त आर्यावर्तमें कुरुक्षेत्र पांचाल मत्स्यदेश और शूरसेन[3] इन देशोंको ब्रह्मऋषि देशके नामसे बोलते हैं. और भद्र, अरिमेद, मांडव्य, शाल्वनीक उज्जिहान. संख्यात मांडवार वत्सघोप यामुन सारस्वत[7] मत्स्य माध्यमिक माथुर शूरसेन. उपज्योतिष. धर्मारण्य, गौरमुख, उद्देहिक पांडुगुड अश्वत्थ पांचाल. साकेत कंक कुरु काल कोटि कुक्कर पारियात्रपर्वत औदुंबर कापिष्ठल हस्तिनापुर यह देश जंबूद्वीपके मध्यमें है॥ और अंजन वृषभध्वज पद्म माल्यवान. व्याघ्रमुखजन, सुह्मदेश, कर्वटासहर चांद्रपुर शूर्पकर्ण खस मगध शैबरगिरि मिथिले समतट उड्र अश्ववदन दंतुर प्राग्ज्योतिष[13] लौहित्यनद क्षीरोद[14] पुरुषभक्षक उदयाद्रि भद्र गौडपौंड्र उत्कल काशि मेकल आंबष्ठ एकपद तामलिप्तिक कोशैल वर्धमान यह देश पूर्वके हैं॥ और दक्षिणकोशल कलिंग[17] वंग औंड्र उपवंग जठरांग शूलिक विदर्भ[19] वत्स आंध्र चेदि[21] ऊर्ध्वकंठ वृषस्थान, नारिकेल, चर्मद्वीप विंध्यपर्वत त्रिपुरीलोक श्मश्रूधर हेमकूट व्यालग्रीव महाग्रीव किष्किन्धादेश कंटकस्थल निषाद राष्ट्र पुरीद दशार्ण शबर पर्णशबर यह अग्निदिशाके हैं॥ और लंका[25] कालाजिन सौरीकीर्णतालिकट गिरिनगर मलयाचल[26] दर्दुर माहेंद्र मालिंद्य भरु कच्छ कंकट टंकण वनवासी शिबिक फणिकार कोंकण[27] आभीर आकरस्थान. वेणानदी आवर्तक[28] दशपुर[29] गोनर्द[30] केरल कर्णाटक महाटवी चित्रकूट नाशिक कोल्लगिरी.

---

१ कानपुरप्रदेश. २ जयपुरराज्य. ३ कोसी मथुरावगैरे. ४ जोधपुर जेसलमेर राजधानी. ५ हरियाणा. ६ पूर्वयमुनावासी. ७ सरस्वतीके समीपवासी. ८ कुरुक्षेत्र. ९ कैथल. १० खसियालोक. ११ पटनेसे दक्षिणबैराडतक. १२ बंगालेकी ईशानसीमातक. १३ आसाम. १४ ब्रह्मपुत्र. १५ अयोध्या. १६ अयोध्यासे दक्षिणराज्य. १७ बंगाली. १८ भागलपुरसे बंगालेतक. १९ नागपुरका जिला. २० तैलंग. २१ चंदेरी. २२ म्हैसुरप्रांत. २३ कोलीराज्य. २४ विंध्याद्रिके दक्षिण देश. २५ मालदीवबेटसे पूर्व. २६ मलबार. २७ सूरतमुंबई बीचमें. २८ उज्जेणवासी. २९ मालवखारीनदीसे उज्जेनतक. ३० तंजलीकी जन्मभूमी.

चौल क्रौंचद्वीप जटाधर कावेरीनदी ऋष्यमूक पर्वत मोतीखांन अत्रिऋषीके आश्रम वारिचर धर्मपत्तन गणराज कृष्णवेल्लुर पिशीक शूर्पाद्रि कुसुमनगर तुंबवन कार्मण्येक दक्षिण समुद्र तपस्वाश्रम कांचीपुरी मरुचीपत्तन चेर्यायक सिंहल ऋषभ बलदेवपत्तन दंडकवन तिमिंगिलासन. भद्रकच्छ कुंजरदरी ताम्रपर्णी नदी यह दक्षिणके देश हैं॥ और पल्हव कांबोज सिंधु सौवीर वडवामुख अरवं अंबष्ठ कपिलनारीमुख आनर्त फेणगिरी यवन् भाकर कर्णप्रावेय पारशव शूद्रवर्बर किरातखंड क्रव्याश्य आभीर चंचूक हेमगिरि सिंधुनद कालक रैवताचल सौराष्ट्र बादर द्रविडमहार्णव. यह देश नैर्ऋत्यदिशाके हैं॥ और मणिमानपर्वत मेघवान वनौघ क्षुरार्पण अस्ताद्रि अपरांतक शांतिक हैहय प्रणस्ताद्रि वाक्काण पंचनद रमठ पारत तारक्षितिजंग वैश्यकनक शक निर्मर्याद म्लेच्छ यह पश्चिमके देश हैं॥ और मांडव्य तुखार तालहल मद्र-अश्मक कुलूत लहड स्त्रीराज्य नृसिंहवन, खस्त, वेणुमतीनदी, लूंका, गुरुहा मरुकच्छ चर्मरंग एकलोचन शूलिक दीर्घग्रीव दीर्घास्य. दीर्घकेश यह देश वायव्यके हैं॥ और कैलासगिरि हिमाचल वसुमान धनुष्मान क्रौंचमेरु उत्तरकुरु क्षुद्रमीन कैकेय वसति उत्तरयामुन भोगप्रस्थ अर्जुनायन आग्नीध्र आदर्श अंतर्द्वीप त्रिगर्त तुरगानन अश्वमुख, केशधर, चिपिटनासिक, दासेरक, वाटधान शरधान, तक्षशिल, पुष्कलावत, कैलावत, कंठधान, अंबर, मद्रक, पौरव, मालव, कच्छदंड, पिंगलक, माणहल, हूण, कोहत; शीतक, मांडव, भूतपुर, गांधार, यशोवती, हेमताल, राजन्यखचर, गव्य, यौधेय, दासेय, श्यामाकक्षेम, धूर्त, यह उत्तरके देश हैं॥ और मेरुक, नष्टराज्य, पशुपालकीर, काश्मीर, अभिसार, दरद, तंगण, कुलुथ, सैरिंध्र, वनराष्ट्र, ब्रह्मपुर, दार्व, डामर, वनराज्य, किरात, चीण, कौणिंद भल्लापलोल जटासुर कुनट खस घोष कूचिक एकचरण अनुविश्व

---

१ सठकोपकी तपोभूमी. २ आर्यभट्टकी जन्मभूमी. ३ सिलोनबेट (कैलासभीपातदिश) ४ सिंधुनदीसें उत्तरदेश. ५ अर्वस्तामुल (मक्कामदीना) ६ पार्शियोंका मुलक. ७ काठियावाड. ८ अहमदाबादसे सोमनाथमहादेवतक. ९ संद्वार. १० चिनावर.

सुवर्णभू वसुधन दिविष्ठ पौरव चीरनिवसन त्रिनेत्र मुंजाद्रि गंधर्वलोक यह देश भारत वर्षके ईशानदिशाके हैं ॥ अब शास्त्रीय नामके देशोंका अपभ्रंशनाम हुवा सो लिखते हैं जिसमें दो लीटींके बीचका शुद्धनाम और खाली रहे सो अपभ्रंशनाम समझना चाहिये. (अश्वक्रांत.) युरोप (रथक्रांत सूर्यारिका) आफ्रिका (रमनक) आस्ट्रेलेशिया, (स्वर्णप्रस्थद्वीप.) पालिनेशिया (आवर्तन) ब्रिटन (इंद्रद्वीप) इंदुद्वीप. इंग्लंड (पशुशील भावकच्छ) पोर्तुगाल, (सैनिक, कुकुट) हालेंडबेलजियम (अश्वक, आश्विया) आस्ट्रिया (तामसदेश.) स्पेन (विष्णुक्रांत, आसेचनक) एशिया (कुमारद्वीप, माहेय, स्वरसाभूमि) अमेरिका (रोमपडचेर) रूम (रोमांतःपातिदेश) इटाली (क्रमथ कामला क्रौंच) जर्मनी (मलिया) कुहक, फ्रान्स (मारक) डेन्मार्क (माठक) स्केनडीनेभिया (अणिकतुरस्क) युरोपियन टरकी, (शशिलीना) सिसिली (रथक्रांत) आफ्रिकाखंडके मुलक (मिश्र) मिसर,इजिप्त, (बर्बर) वार्वरी, (वारुण उपद्वीप राक्षसावास) वोरवना (विष्णुक्रांत) एसियाद्वीप (शक) मुशल (तुरुष्क) टरकी(ग्रामिकतुरुष्क) एसियाइरूस (नैकपृष्टयुगंधर) लापलेन्ड (तुखार) बुखारा (तालतोपक, तीर्वर्त) तिब्बत (शैलराज्यपार्वत) तार्तार (खस) इरान(हौरव) साइबिरिया (पारद, चीन) महाचीन चीन (कांबोज,आवर्त) आरब (पारस्य,पारासिक) पारस,फारस (शूद्रयवन) मक्का (अपवाह,अपरांत) मस्कत (केकय) हिरात (सुमित्राद्वीप) सुमात्राद्वीप (सिंहलद्वीप) गांधर्व (स्कलावास) लंका,सिलोन (चंद्रशक) सौम्य, तारकद, मारीचावास न्यूहालंड (ब्रह्मोत्तर, ब्रह्मदेश) बर्म्मा (कुमारिका, भारतवर्ष) हिंदुस्थान; इंडिया (नार्द्धिनाश,कारस्कार) मदीना (पल्हव) काबूल (गांधार)कंधार (मणिद्वीप) जापान (पंचजन्यद्वीप) हेनानद्वीप (गभस्तिमान,मरीचिद्वीप) मिरचद्वीप (नाकद्वीप) नाकरद्वीप (उपमल्वका) मलाकाद्वीप (प्राविजया) जंतिया (शुर्माश्टङ्गदेश) सिंगापुर (कुमारिकानाभिवर्ष) हिंदुस्थान(नेपाल.)

नैपाल. (मरु) मारवाड (स्थल) स्थली; बिकानेरराज्य (दरद) भुटान (दरदलिंग) दार्जलिंग (वैराटनाभिवर्ष,मत्स्यदेश) जयपूरराज्य (पंचनद) पंजाब (पांचाल) कान्हपुरप्रदेश (गौरिक,काश्मीर) काश्मीर (कोशल) कोशलदेश अयोध्या (उत्तरकोशल) फयजाबाद (शूरसेनमाथुर) मथुरा (काशी) काशी (वाराणसी) बनारस (कुरुजांगल) कुरुक्षेत्र, थानेश्वर (इन्द्रप्रस्थ) दिल्ली (गंगाद्वार) बद्रिकाश्रम (माया) हरिद्वार (अवंती, विशाला, पुष्करवर्तिनी, उज्जयिनी) उज्जेन (गुर्जर) गुजरात (कांची) कर्णाटक (माहिषिक) म्हैसूर (कोंकण) मुंबई (बर्बर किष्किन्धा) तुंगभद्राकिनारे (केरल) विंध्यसें पश्चिमदेश (मलय मोरिया) मलबार(उत्कल) उडीसा, श्रीक्षेत्र (औड्र कटक) कलिंगमाहेंद्र उडीसाकेसमीप (सौराष्ट्र) अहमदाबाद,सोमनाथ (महाराष्ट्र) पूना (द्राविड) पूर्वघाट (सिंध)सिंधुदेश (महोदय,कान्यकुब्ज) लखनौसमीपवर्तिदेश (पाटलपुत्र,बौद्धराजधानी) पटना (अंग) राजमहल (कर्णराज) चंपा भागलपुर कर्णराजधानी आराप्रभृतीदेश (पौंड्र) मेदिनीपुर (उपवंग) मैमनसिंहप्रदेश (वर्द्धमान) वर्दमान (वंग) मालदह मुर्शिदाबाद, नदिया, कलकत्ता (गौड) ढाका, पावना, बगुडा, राजशाही, फरीदपुर (सुह्म) चाटगांव (प्राग्ज्योतिष, कामरूप) आसाम चेदी टिपुरा. (कुमारद्वीप) अमेरिका (उत्तरकुमार) उत्तर अमेरिका (दक्षिणकुमार) दक्षिणअमेरिका द० अ०७८ (तलह) ब्राजील (हिरण्यपुर) पेरु (मुनिदेश,तावसदेश,ताम्रद्वीप) ग्रीनलेन्ड॥ अब जानना चाहिये कि "विपाशेरावतीतीरे" और "रेवापूर्वगंडकीपश्चिमे" और "अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्यात्सलंकपालकम् ॥ भरण्यांचकिरातेशम्" इत्यादि वचनोंके प्रयोजन सिद्ध होनेकेलिये नदी पर्वत और देशोंका नाम यहां लिखागया जिससे अमुकदेश अमुक ठिकाने है ऐसा ज्योतिर्विद सहजही जान लेवेंगे. शेष और देश नदी पर्वत समुद्र वगैरे न लिखा सो भूगोलका नकसा देखके जान लेवेंगे इति देशव्यवस्था ॥

अथ दिग्व्यवस्था—उक्तदेश व्यवस्था तब मालुम होगी जब कि, प्रथम ज्योतिर्विद् सूर्यके उदयास्त होनेका मार्ग जानता होगा क्योंकि पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर यह दिशा और आग्नेय नैर्ऋत वायव्य ईशान विदिशावोंका ठीक-ठीक मालूम सूर्यउदयास्तसेही हो सक्ताहै अतएव सूर्यके उदयास्त मार्गोंका वृत्तांत यहां लिखा जाताहै.उक्त सूर्य जिस मार्गसे आकाशमें घूमताहै उसीको नाम क्रांतिवृत्त है यह क्रांतिवृत्त पृथ्वीकी पूर्वापरकी सूत्रकी विषुवती रेखासे चौवीस अंशतक दक्षिणोत्तर झुकरहा है और सायन मेष तुलाकी संक्रांतिमें तो विषुवती रेखाके सूत्रही सूर्य घूमता रहता है परंच मकर और कर्कमें चौवीस अंश उत्तर दक्षिण विषुवती रेखासे दूरपर जाता है अतएव जिधर रवि उदय हो वही पूर्वदिशा अस्त होवे वही पश्चिमदिशा और सूर्योदयके सन्मुख मुँहकिये दहना हाथ जिधर हो वह दक्षिणादिशा और वामभागकी तरफ उत्तर दिशा है. और इन दिशावोंके बिचले भागोंको विदिशा जानना. जैसे उत्तर पूर्वके बीचका नाम ईशान वैसेही पूर्व दक्षिणके बीचका नाम आग्नेय और दक्षिण पश्चिमके बीचका नाम नैर्ऋत,पश्चिम उत्तरके बीचका नाम वायव्य विदिशा है.॥जानना चाहिये कि,जैसे दिशावोंका ज्ञान सूर्यसे हो सक्ताहै वैसेही दिन रात्रिके घटबढका और सरदी गरमीका ज्ञान भी सूर्यसे ही हो-सक्ताहै क्योंकि विषुवती रेखासे चौवीस अंशके अंतरसे सूर्य घूमताहै यही उनका कारण है. और इन अंशोंका नामही क्रांति है.॥यहां विषुवती रेखाके पूर्वापरसूत्रका देश वगैरे कुछ लिखाजाताहै.(कोलंबो) लंकामाले मंगादो-स्को, वारिगाम, विक्टोरियागाम, धाकटालूत जिगम् (रोमकपत्तन.) सानलोमें बेट, मारानावो, गोआस्म, नेग्रानदी, मादा, पिचित्राज्य, (सिद्ध-पुर) पानामायेव, पिचिंचाज्वलित, गालपागासबेट, नाकरबेट, वूक, जार्विस (यमकोटी) वैरन. इमंदबेट, मातेवदीवदीबेट, दामपीर, सामुद्रधुनी, जिलोलो बेट, मेसकापास, तार्मिंग; वार्निवो, शिंगापुर, सुमोच और निवास टोंकसे चलके बस वही लंकामें जा मिली॥उक्त विषुवती रेखासे तिरछा होके रवि

यदि दक्षिण भागको जावेगा तो वह दक्षिणायन कहलावेगा. और उत्तर को जानेसे उत्तरायण कहलावेगा. अयननाम घरका है. यह सूर्यके घूमनेकी सडक मेष और तुलामें तो विषुवती रेखासे मिली हुई है और उक्त राशियोंसे आगे चल कुछ कुछ तिरछी चलती चलती दक्षिणकी तर्फ मकरके ठिकाने २४ अंशके अंतरमें है और-कर्कके ठिकाने २४ अंशतक उत्तरकी ओर तक दूरगई है. अब यहां ध्यान देनाचाहिये कि, आकाशमें नलिकासे वा दुर्बीनोंसे देखो तो यह सारे ग्रह सायन दीखपडते हैं. और संसारमें व्रतो-पवासादि वैदिक धर्म साधनेके लिये निरयन गणित लेना पडताहै. क्योंकि सूर्यसिद्धांतादि जो सिद्धांत ग्रंथ हैं उन्हीं में निरयन गणितको ही सविस्तर लिखा और मानाहै. इन्हों में अयनगति अलग दिखलाई गईहै अतएव गणित दो प्रकारसे है. दृश्य १ अदृश्य २ जो दृश्य गणित है सो सायन कहलाता है. और अदृश्य है वह निरयन गणित कहलाता है जब किसी दिन ग्रहोंका उदया-स्तादि अपने आँखोंसे देखनेकी इच्छा होवे तब सायन गणित करना पडता है. नहीं तो निरयन गणितके पंचांग बने हुये प्रचलित सब होही रहेहैं कितने भोले भाले मनुष्य कहाकरते हैं साहब सिद्धांतके गणितमेंभी अंतर आने लगगया. क्योंकि पंचांगवालोंके शुक्रादि ग्रहोंके उदयास्त और ग्रहण अब ठीक ठीक नहीं मिलता परंच वह यह नहीं जानते कि, सिद्धांतका गणित तो जो पहिले था सोई अब है परंच ग्रहकी अयनगति ठीक होनी चाहिये क्योंकि अयनेगति सदा एक नहीं रहसकी काल पाके अयनगतिमें कुछ अंतर आजाताहै इसलिये यहां अयनगतिके प्रत्यक्ष-लानेकी विधी लिखते हैं. अयनांश देखनेवाला मनुष्य सहरके बाहिर कहीं भी जहां किसी वस्तुकी ओट न हो तहाँ जलवत्समान भूमि शोधके प्राची साधन करे. फिर उक्त भूमिमें

१ अयनविषयेभचक्रंपश्चिमतईश्वरेच्छयाप्रथमतः कतिचिद्भागैश्चलतिततः परावृत्य यथास्थितंभय-तिततोपितद्भागैः क्रमेणपूर्वतश्चलतिततोऽपिपरावर्त्य यथास्थितमित्येतोविलक्षणोऽयनगणः.

२ त्रिंशत्कृत्वोयुगेभानांचक्रंप्राक्परिलंबते. इति सूर्यसिद्धांते ।

माकारसे वृत्त निकालके उसमें द्वादश राशिके समान चिह्न निकाले और एक एकराशिके बीच तीस तीस अंशोंके चिह्न करे फिर उस वृत्तके मध्यभागमें द्वादशांगुल शंकू जो कि, अधोभाग जिसका पुष्ट और ऊर्ध्वभागसे तीखा जब रात्रिदिन बराबर हो उस दिन रक्खे फिर उक्त शंकूकी छाया प्रतिदिन देखता रहै. छः मासके लगभग जिस दिन छाया चलती पीछी हटेगी वही अयनका स्थान शुद्ध है. और उसके देखनेकी दूसरी विधि यह है कि, नलिकायंत्रसे स्पष्ट किया हुवा ग्रह और सिद्धांतसे स्पष्ट किया जो ग्रह इन दोनोंका अंतरका जो गणित है वही शुद्ध अयनांश कहलाताहै. अयनांश चीज क्या है.१ ग्रहकी स्थिति बिंब और प्रकाश बिंबके अंतरका नामही अयनांश है॥ इति दिग्व्यवस्था॥

अब जानना चाहिये कि, सूर्य उत्तर गोलपर जानेसे विषुवती रेखाके उत्तर के देशोंमें क्षितिजके समीपताके सबबसे जल्दीही उदय होता दीख पडताहै. और पश्चिममें अस्त होनेके समय क्षितिजके निकटताके कारण कितनी देरीतक दीखताचलाजाताहै. इसीसे सायन मेष संक्रांति प्रारंभसेही दिन बड़ा और रात्रि छोटी होने लगती है.जितना विषुवती रेखासे उत्तर देश दूर होगा उतनाही उत्तर गोलमें दिन जियादह बढेगा जैसे लंका विषुवती रेखाके ऊपर होनेसे वहां तो दिनरात्रि समानही ३० घडीका सदैव होगा. फिर लंकासें उत्तर उज्जैनमें ३३ घडी और राजपूतानामें ३४ घडी और पंजाबमें ३५ घडी आगे फिर जहां जहां उत्तरके मूलक विषुवती रेखासे दूर पडता जायगा त्यौंत्यौं दिन बढता चलाजायगा.और रात्रि घटती जायगी. कितने अंग्रेजी भूगोल जाननेवाले लोग कहतेहैं कि, रूसके राज्यके उत्तरभागमें कितनेदिनों-तक सूर्य आषाढ महीनेमें दिखलाई देता रहताहै.रात्रि नहीं होती.और जिस-के आगे ध्रुवके वृत्तमें शीत अधिक होनेके कारणसे समुद्रका पानी जमारहता

१ सायनरविसे अयन और गोलभेद जानाजाताहै मकरके रविसे उत्तरायण. कर्करविसे दक्षिणायन और मेषके रविसे उत्तरगोल तुलाके रविसे दक्षिणगोल कहलाताहै।

२ उत्तरअक्षांश ८२ और दक्षिणअक्षांश ७८ के आगे शीतअधिकताके कारण मनुष्य नहीं जासक्ता बस यहांतक मुल्क बसताहै।

है. वहां कितने महीनोंतक दिन होते चले जाते हैं. उस समुद्रको आर्तिक नामसे वे लोग पुकारतेहैं. और अस्मदादिकोंके शास्त्रोंमें उत्तर ध्रुवके नीचे सुमेरु लिखाहै वहां उत्तर सूर्य में छः महीनेका एकदिन होना. यह एक शास्त्र-सिद्ध बात तो हैही परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणसे भी ठीक मिलताहै. और ऐसेही जब दक्षिणगोल (सायनतुल)का सूर्य होगा तब उक्त मुल्कोंमें दिन घटता जायगा और रात्रि बढती चली जायगी.जहां छः महीनों तक दिन दिखलाई देताहै वहां छः महीनोंतक रात्रि ही बनी रहेगी सूर्य न दीख सकेगा. सूर्य दक्षिणायनमें लंकासे दक्षिण ध्रुवके ठीक नजदीक छः महीनोंका एकदिन होना शास्त्रकारोंने लिखाहै सबब कि, उस स्थानको असुरस्थान मानाहै अबके इंग्लिश भूगोल जाननेवाले लोगभी कहा करते हैं कि, दक्षिणध्रुवसे ८४० मैल ओछा विक्टोरिया ल्यांडमें पूस महीनेमें सूर्य कितने दिनोंतक दिखलाई देतारहताहै. रात्रि नहीं होती परंतु सूर्य दूरपर जानेके सबब वहां का समुद्र ठंढसे जमा रहता है, वहां पासिफिक समुद्रकाही नाम भेदसे दक्षिण महासागर बोलाजाताहै. फिर जब सूर्य दक्षिण अयनको त्यागके उत्तर अयनको आवेगा तो वहां प्रतिदिन रात्रि बढती जायगी. दिन घटता घटता जब रवि उत्तर गोलपर पहुँचेगा तब तो दिनरात्रि समान ३० घडीके होजायँगे. ऐसेही जिन मुल्कोंके समीप सूर्य आवेगा वहां गरमी अधिक पडेगी. और उन मुल्कोंसे सूर्य दूर पर जानेके सबबसे वहां शरदी विशेष पड़ेगी. और इसी कारणसे वहां पानी का बर्फ होजायगा. यह शरदी गरमीके न्यूनाधिक्यका और दिन रात्रि छोटा बडा होनेका मुख्य कारण एक केवल सूर्य है और उसी के प्रकाशसे सब विश्व प्रकाशित होरहा है।

१ मेरुर्योजनमात्रः प्रभाकरो हिमवता परिक्षिप्तः । नंदनवनस्य मध्ये रत्नमयःसर्वतो वृत्तः॥" इति आर्यभट्टः ।

२ भूमिके पश्चार्धगोलमें जल सिपादह है. और ज्वालामुखी पर्वतोंमें आग धनक रहीहै "मेरुस्थलमध्ये नरको बडवामुखश्च जलमध्ये" इति आर्यभट्टः ।

है. वहां कितने महीनोंतक दिन होते चले जाते हैं. उस समुद्रको आर्तिव नामसे ये लोग पुकारतेहैं. और अस्मदादिकोंके शास्त्रोंमें उत्तर ध्रुवके नीचे सुमेरु लिखाहै वहां उत्तर सूर्य में छः महीनेका एकदिन होना. यह एक शास्त्र सिद्ध बात तो हैही परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणसे भी ठीक मिलताहै. और ऐसेही जब दक्षिणगोल (सायनतुल)का सूर्य होगा तब उक्त मुल्कोंमें दिन घटता जायगा और रात्रि बढती चली जायगी. जहां छः महीनों तक दिन दिखलाई देताहै वहां छः महीनोंतक रात्रि ही बनी रहेगी सूर्य न दीख सकेगा. सूर्य दक्षिणायनमें लंकासे दक्षिण ध्रुवके ठीक नजदीक छः महीनोंका एकदिन होना शास्त्रकारोंने लिखाहै सबब कि, उस स्थानको असुरस्थान मानाहै अबके इंग्लिश भूगोल जाननेवाले लोगभी कहा करते हैं कि, दक्षिणे ध्रुवसे ८४० मैल ओछा विक्टोरिया ल्यांडमें पूस महीनेमें सूर्य कितने दिनोंतक दिखलाई देतारहताहै. रात्रि नहीं होती परंतु सूर्य दूरपर जानेके सबब वहां का समुद्र ठंढसे जमा रहता है, वहां पासिफिक समुद्रकाही नाम भेदसे दक्षिण महासागर बोलाजाताहै. फिर जब सूर्य दक्षिण अयनको त्यागके उत्तर अयनको आवेगा तो वहां प्रतिदिन रात्रि बढती जायगी. दिन घटता घटता जब रवि उत्तर गोलपर पहुँचेगा तब तो दिनरात्रि समान ३० घडीके होजायँगे. ऐसेही जिन मुल्कोंके समीप सूर्य आवेगा वहां गरमी अधिक पडेगी. और उन मुल्कोंसे सूर्य दूर पर जानेके सबबसे वहां शरदी विशेष पडेगी. और इसी कारणसे वहां पानी का बर्फ होजायगा. यह शरदी गरमीके न्यूनाधिक्यका और दिन रात्रि छोटा बडा होनेका मुख्य कारण एक केवल सूर्य है और उसी के प्रकाशसे सब विश्व प्रकाशित होरहा है

१ मेरुर्योजनमात्रः प्रभाकरो हिमवता परिक्षिप्तः । नन्दनवनस्य मध्ये रत्नमय सर्वतो वृत्त इति आर्यभट्ट ।

२ भूमिके पश्चार्धगोलमें जल जियादह है. और ज्वालामुखी पर्वतोंमे आग धनक रहीहै वर्मरस्थलमध्ये नरको वडवामुखश्च जलमध्ये' इति आर्यभट्टः ।

आकाशमें मेष वृषादि राशियोंके नामसे बारह जातके मुल्क समझना चाहिये इन मुल्कोंमें जो प्रधान मेष वृषादि वा सिंह मिथुनादि देव मनुष्य पशु पक्षि-आदि बसतेहैं वे मुल्क उन्हींके नामसे बोले जाते हैं.जब सूर्य चन्द्रादिक ग्र-होंको अपनी कक्षापर सृष्टिकर्ता ने उपस्थित किया तब सूर्य और चन्द्रमा इन दोनोंने राशियोंके मुल्क आधे २ लेलिये विषमराशियोंके छ मुल्क तो सूर्यने लेलिये और सम छः मुल्कोंका राश्यधिपति चन्द्रमा हुवा. फिर बुध शीघ्र-गतिसे दौडके चन्द्रमासे राज्य मांगा तो कन्याका राज्य तो बुधको चन्द्रमाने दिया और मिथुनका राज्य रवि देतेभये फिर इसीही तौरसे शुक्र राज्या-भिलाषाकरके दोनोंको कहा जिससे चन्द्रमाने वृषभका राज्य दिया और रवि तुलाका राज्य दिया और तत्पश्चात् मंगलनेभी राज्याभिलाषासे याचना करी तब चन्द्रमाने वृश्चिक का राज्यदिया. और सूर्यने मेषका राज्यदिया. इससे मंदगतिसे चलके गुरुभी सूर्य और चन्द्रमासे जामिला और राज्यस्प-र्धा जताई तब मीनका राज्य चन्द्रमाने और धनका राज्य रविने देदिया फिर अतिमंदगामी शनैश्चरजी दोनोंसे जा कहा कि, कुछ राज्य तो मुझको भी चाहिये इस बातपर ध्यान देके चन्द्रमाने मकरका राज्य और रविने कुंभका राज्य शनैश्चरको देदिया इसी कारण उक्त सूर्यके एक सिंहका राज्यही शेष रहा. और चंद्रमाके केवल कर्कका राज्य अवशेष रहा ॥

इसके आगे ग्रह जियादा कम क्यों चलते हैं वह हाल यहां लिखाजाताहै ॥ यह उक्त ग्रह अपने अपने लोकोंमें बसकर अपनी अपनी कक्षावों (सडकों) पै घूम रहेहैं. और वे कक्षा सब बारह राशियोंके सूत्रभाग जो कि, आकाश कक्षासे पृथ्वीपर्यंत आये हैं. सो खर्बूजके फलकी रेखावत् विभागोंसे विभूषित हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, जैसे खर्बूज की लकीरें नाकेके समीप तो

१ जब चन्द्रमा पृथ्वीपे सूर्यास्तहुये पीछे दीखताहै तब सूर्यसे ऊंचा दीखताहै जिसे व्यासजीने चन्द्रमंडल सूर्यसे ऊंचा मानाहै परन्तु वास्तवमें सूर्यसे चन्द्रमण्डल नीचाहै ॥ ऊर्ध्वाधरत्वंपरिवस्य शङ्कोर्यशेन यो दृश्य विधुः सदोर्ध्वः ॥ सर्वोर्ध्वगोर्केत्तदघोऽस्त्यवश्यं व्यासेरितं चेत्यमपि प्रमाणम् ॥ इति तत्त्व विवेकसिद्धांते ।

मांशसे चलना शुरू हुवा. जिससे राशियोंकी प्रथम मेष आदिसे गणना चली. और प्रतिदिनकी रात्रि चंद्रमाके प्रकाशसे शुरूहुई जिससे शुक्लपक्षसे प्रथम गणना चली.और उक्त सूर्य चंद्रमाके सबबही प्रतिपदादि तिथि अश्विनी आदि नक्षत्र और विष्कुंभ योगादिकोंकी गणना चलीहै. जानना चाहिये कि, प्रवहवायु उत्तर ध्रुवके और दक्षिण ध्रुवके बीचमें षष्टिघट्यात्मक भचक्रको पूर्वसे पश्चिमतरफ घुमारहा है और ग्रहोंके कक्षावृत्त अपनी२गतिके कारण पूर्वको चल रहे हैं. परंच पश्चिमकी तरफही चलते दीख पडते हैं. जैसे कुम्हारके चक्रपे विलोम चलती हुई चींटी चक्रके गतिके मुवाफिक चलती दीख पडती है वैसेही ग्रहोंके दीखनेका हाल है.अब प्रत्यक्ष प्रमाणोंसे क्या यह बात मिथ्या हो सक्ती है कि, ऐसे नहीं चलते हैं? देखिये कि, प्रथम अश्विनी नक्षत्रके तारोंका उदय होके पीछे भरणीके तारे दीख पडेंगे. तो कहो जी! ग्रह अश्विनी भोगके फिर भरणीको भोगेगा कि,नहीं? यदि अश्विनी भोगके फिर भरणीका भोग करेगा. तब तो पश्चिमसे पूर्वको ग्रहका चलना स्वयं सिद्धही है. और उक्त ग्रहोंके मंदोच्च शीघ्रोच्च पातादिकोंके वृत्त सब प्रवहरूपी रश्मिसे बँधे हुये हैं.वे अपनी मर्यादाके विशेप इधर उधर कभी नहीं होसक्के और यह भू वायु (पृथ्वीकी पवन) केवल पृथ्वीसे १२योजन ऊँचेतक है. यहांतक गये हुये मनुष्य पशु पक्षीभी पीछा आ सकेगा परंतु इससे ऊँचे प्रवहवायुके भीतर जब कभी कोई जावेगा वह फिर पृथ्वीपै पीछा न आवेगा.जैसे महाभारतमें भीमसेनने हस्तियोंको फेंकाथा और वे पीछे नहीं आये. क्योंकि इन दोनों पवनोंके धर्म इसी ढंगकेहैं पृथ्वी की वायु तो सर्व वस्तुवोंको पृथ्वीकी तरफही आकर्षण करता है और आकाशका पवन आकाशकी ओर ऊँचेकोही आकर्षण करता है. हाँ कोई अपने योगबलसे तो बेशक इनदोनों पवनोंको रोकटोकके पृथ्वी की ओर आकाशकी वस्तुवोंको एकमेक करसकेगा नहीं तो ऐसा होना मुश्किल है॥ और अब इसके आगे सूर्य चंद्रमा एक एक राशिके स्वामी हुए. और ग्रहोंको दोदो राश्यधिकार क्यों कर मिला उसका हाल यहां लिखाजाताहै. ॥ यह

आकाशमें मेष वृषादि राशियोंके नामसे बारह जातके मुल्क समझना चाहिये इन मुलकोंमें जो प्रधान मेष वृषादि वा सिंह मिथुनादि देव मनुष्य पशु पक्षि- आदि बसतेहैं वे मुल्क उन्हींके नामसे बोले जाते हैं.जब सूर्य चन्द्रादिक ग्र- होंको अपनी कक्षापर सृष्टिकर्ता ने उपस्थित किया तब सूर्य और चन्द्रमा इन दोनोंने राशियोंके मुल्क आधे २ लेलिये विषमराशियोंके छ मुल्क तो सूर्यने लेलिये और सम छः मुल्कोंका राश्यधिपति चन्द्रमा हुवा. फिर बुध शीघ्र- गतिसे दौडके चन्द्रमासे राज्य मांगा तो कन्याका राज्य तो बुधको चन्द्रमाने दिया और मिथुनका राज्य रवि देतेभये फिर इसीही तौरसे शुक्र राज्या- भिलाषाकरके दोनोंको कहा जिससे चन्द्रमाने वृषभका राज्य दिया और रवि तुलाका राज्य दिया और तत्पश्चात् मंगलनेभी राज्याभिलाषासे याचना करी तब चन्द्रमाने वृश्चिक का राज्यदिया. और सूर्यने मेषका राज्यदिया. इससे मंदगतिसे चलके गुरुभी सूर्य और चन्द्रमासे जामिला और राज्यस्प- र्धा जताई तब मीनका राज्य चन्द्रमाने और धनका राज्य रविने देदिया फिर अतिमंदगामी शनैश्चरजी दोनोंसे जा कहा कि, कुछ राज्य तो मुझको भी चाहिये इस बातपर ध्यान देके चन्द्रमाने मकरका राज्य और रविने कुंभका राज्य शनैश्चरको देदिया इसी कारण उक्त सूर्यके एक सिंहका राज्यही शेष रहा. और चंद्रमाके केवल कर्कका राज्य अवशेष रहा ॥ इसके आगे ग्रह जियादा कम क्यों चलते हैं वह हाल यहां लिखाजाताहै ॥ यह उक्त ग्रह अपने अपने लोकोंमें वसकर अपनी अपनी कक्षावों (सडकों) पै घूम रहेहैं. और वे कक्षा सब बारह राशियोंके सूत्रभाग जो कि,आकाश कक्षासे पृथ्वीपर्यंत आये हैं. सो खर्बूजके फलकी रेखावत् विभागोंसे विभूषित हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, जैसे खर्बूज की लकीरें नाकेके समीप तो

१ जब चन्द्रमा पृथ्वीपे सूर्यास्तहुये पीछे दीखताहै तब सूर्यसे ऊंचा दीखताहै जिसे व्यासजीने चन्द्रमंडल सूर्यसे ऊंचा मानाहै परन्तु वास्तवमें सूर्यसे चन्द्रमण्डल नीचाहै ॥ ऊर्ध्वाधरत्वंपरिकल्प्य शङ्कोर्वेशेन यो दृश्य विधुः सदोर्ध्वः ॥ सर्वोर्ध्वगोर्कस्तदधोऽस्त्यवश्यं व्यासेरितं चेत्थमपि प्रमाणम् ॥ इति तत्त्व विवेकसिद्धांते ।

ऐक्य हो जावें और ऊँचे मध्य भागमें जियादा अंतर होना ऐसेही राशि-योंके विभागोंकी और ग्रहोंकी नीची ऊँची कक्षावोंकी व्यवस्था है प्रथम चन्द्रमाकी कक्षा पृथ्वीसे ५१५६६ योजन ऊंची जिससे चन्द्रमाकी राशि एकके भोगमें केवल सवादो दिन लगते हैं. इससे ऊंचा बुध शीघ्रमंडल है. जो कि, पृथ्वीसे १६६०३२ योजन है जिससे चन्द्रमासे बुधको राशि भोगमें दिन जियादा लगता है यही रीतिसे ऐसे ही ऊंचा ४२४०८८ योजन शुक्रमंडल है. फिर ऊंचा ६८९३७७ योजन सूर्यमंडल है और १२९६६१९ योजन ऊंचा भौममंडल है और८१७६५३८ योजन ऊंचा गुरुमंडल है. और २०३११९०७१ योजन पृथ्वीसे सब ग्रहों से ऊंचे शनि कक्षा है. जिसको राशिभोगमें सब ग्रहोंसे दिन जियादा लगता है. जिस ग्रहका लोक पृथ्वीके निकट होगा उसीको राशिभोगमें दिन कमती लगेंगे और जिस ग्रह का ऊँचा लोक है जिसको राशिभोगमें दिन जियादा चलना पडेगा और पृथ्वीसे सबसे जियादा ४१३६२६२६५८ योजन ऊंची नक्षत्र कक्षा है. और इसके फिर आगे राशिलोक जिससे आगे जनलोक उसके आगे तपलोक उसके आगे सत्यलोक उसके आगे ब्रह्मांडकी कक्षा है कि, जहांतकही सूर्यका प्रकाश जा सक्ता है.

इति श्रीमन्नुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते खगोलव्यवस्था-कथनं नाम चतुर्थविनोदः समाप्तः ॥४॥

अथ सृष्टयाद्यहर्गणं व्याख्यास्यामः ॥ जिस दिनसे सूर्यादिग्रह अपनी कक्षा वृत्तमें घूमनेको शुरू हुये हैं उसीदिनसे लेके और अपने अभीष्टदिनपर्यंत जितने दिनोंका समूह है वह सृष्टयाद्यहर्गण कहलाता है विक्रम संवत् १९४९ शालिवाहन शके १८१४ चैत्रशुक्ला १ भौमवारके दिन इस ग्रंथका जन्म-हुवा उसीसे उक्त दिनका अहर्गण लिखाजाताहै अब उक्त दिनेंसे पहले ब्रह्म-देवजी ५० वर्षके होचुके उक्त ब्रह्माके एकदिनमें १४ मनुराजा होते हैं.

जिन्होंका नाम स्वायंभुवमनु १ स्वारोचिष २ उत्तमौज ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इंद्रसावर्णि १४ इन उक्तराजाओंमें एक राजा ७१ महायुगतक राज्य करता है वह सत्ययुग १७२८००० त्रेता १२९६००० द्वापर ८६४००० कलियुग ४३२००० इन चारोंयुगोंके इकट्ठे वर्षों ४३२०००० का नाम महायुग कहलाता है उक्त महायुगके वर्षोंको ७१ से गुणनेसे एक मनुके राज्यके वर्ष होते हैं और दो मनुके बीच की संधिके वर्ष सत्ययुगतुल्य हैं. इन १५ संधिके वर्षोंको और चौदह मन्वंतरोंके वर्षोंको इकट्ठा करनेसे एक ब्रह्माका दिन कहलावेगा और दिनतुल्यही रात्रि होती है. इसीही क्रमसे ब्रह्माके ५० वर्ष बीतके इकावनवें वर्षका पहिला दिन बीतरहाहै. इसीदिनमेंभी ६ मनु राज्य करचुके उन्हींके वर्ष १८४०३२०००० और संधिसात ७ के वर्ष १२०९६००० इतने गतहुये हैं. फिर महायुगों २७ के वर्ष ११६६४०००० इतने बीते और तीन युगोंके वर्ष ३८८८००० इतने गतहुये हैं अब अष्टाविंशतितम कलियुगके गत वर्ष ४९९३ और वे सब वर्षोंको इकट्ठा करनेसे सृष्टब्द १९५५८८४९९३ इतने हुये इन वर्षोंका अहर्गण ७१४४०४१२०३४९ यह हुवा जिससे रवि बुध शुक्र ११।१५। १३।५० चंद्र ०।३।१७।२२ मंगल ७।१५।३९। ४५ गुरु ११।१४।३७।३५ शनि ४।२४।०।० राहु १।०।२५।५९ यह मध्यमग्रह हुवा. ॥और सूर्य ११।१७।१४।१७ चंद्रः ०।३। २३।१९ मंगलः ८।१४।४५।३५। बुधः ०।३।२१।४१ गुरुः ११।१४।०।१२ शुक्रः १।१।५०।५८ शनिः ५।०।१।० राहुः १।०।२५।५९ यह स्पष्ट ग्रह ४५।१८ के इष्टपे हैं. अब देखिये कि, उक्त अहर्गणादिकोंका भिन्नभिन्न उदाहरण कियेबिना सिद्धांतगणितकी समझ नहीं होसक्ती जिसके लिये पूर्वाचार्योंका कियाहुवा उदाहरण यहां भिन्न भिन्न लिखा जाता है. शके

१५०६ वैशाखशुक्ल ६-रविवारके दिन ७१ महायुगों से छैः मनुवोंके वर्ष- गुणे४२६हुये फिर एक महायुगके ४३२००००वर्षोंसे उनको गुणनेसे मनुके वर्ष १८४०३२०००० इतने हुये. संधि ७ के वर्षों १२०९६००० को जोडनेसे ससंधि छैंमनुवोंके वर्ष १८५२४१६००० इतने गये फिरसप्तम- वैवस्वत मन्वंतरके सप्तविंशति महायुगोंके वर्ष ११६६४००००उक्त वर्षोंमें जोडनेसे ससंधि षट् मन्वंतर सहित सप्तविंशति महायुगपर्यंत के १९६९० ५६००० गतवर्ष हुये अब (अष्टाविंशति) अट्ठाईसके महायुगमें सत्ययुग १ त्रेता २ द्वापर ३ तीन युगगत हुये जिसमें सत्य युगका वर्ष१७२८००० पूर्वोक्त वर्षोंमें योगकरनेसे सृष्टिआदिसे सत्ययुगपर्यंत १९७०७८४००० इतने वर्ष गत हुये.जब ब्रह्माके सृष्टि रचनेके दिव्य वर्षों४७४००को ३६० से गुणा जब१७०६४००० मनुष्यवर्ष हुये. यह पूर्वोक्त वर्षोंमें हीन करनेसे १९५३७२०००० इतना अवशेष रहा. इन्हों में त्रेता१२९६०००द्वापर ८६४०००कलिगतवर्षप्रमाण ४६८५ इन तीनोंके वर्ष २१६४६८५ जोडनेसे सृष्टयादि वर्ष १९५५८८४६८५ इतने गतहुये॥

अथ अहर्गणानयनम् ॥ उक्तसृष्टिवर्षों १९५५८८४६८५ को १२ से गुणा जब २३४७०६१६२२० इतने मास हुए इन्होंमें एक मास जोडा जब २३४७०६१६२२१ *यह मासगण* हुवा. इसको दो जगह रखके फिर एकको सृष्टयधिमासों १५९३३३६ से गुणनेसे ३७ ३९६५७७६७७६७१०३२५६ इतने हुये. इन्होंके सूर्य मासों ५१८४ ०००० के भागसे सृष्टिआदिसे अहर्गणपर्यंत अधिमास७२१३८४६०१ इतने गत हुये इन्होंको दूसरी ठौरके अंकमें जोडनेसे स्पष्टमासगण२४१९२० ००८२२ हुवे उक्तमासगणको ३० गुणनेसे ७२५७६००२४६६० यह

१ कलिगतवर्ष लानेकी विधि. कलिके प्रारंभसे ३०४४ युधिष्ठिरके शाके. पीछे १३५ विक्रमका शाका रहा जिस वर्षमें अहर्गण लावे वह शालिवाहन गतशाकेके वर्षमें पूर्वोक्त वर्ष जोडनेसे कलियुगके गताब्द होतेहैं ।

दिन हुये इनमें गततिथि ५ जोडी जब ७२५७६००२४६६५ यह हुये. इन्होंको दो जगह रखके एकको सृष्टितिथिक्षयदिनों२५०८२२५२ से गुणे तो. १८२०३६९५८३०१७३७४५५८०यह हुये इन्होंके सृष्टिचांद्र दिनोंके १६०३००००८० भाग देनेसे सृष्टिरचनासे अहर्गणपर्यंत क्षयतिथि११३५६०१६७९४ इतनी आइ इन्होंको पूर्वोक्त दूसरी जगेके अंकमें हीनकरणेसे अहर्गण सावन ७१४४०००७८७१ यह हुवा. उक्त अहर्गण सत्यासत्य परीक्षाकेलिये ७ भागसे अवशेषित अहर्गणसे १ रहा जिससे रविवार जिस दिन होनेसे यह अहर्गण सत्य ह.

अथ मासपतिवर्षपत्योरानयनम्.—अहर्गण७१४४०४००७८७१इसके ३० भागसे लब्ध २३८१३४६६९२९ हुये इनका द्विगुना—४७६२६९३३८५८ यह हुवा और इसमें १ और जोडा जब-४७६२६९३३८५९ यह हुवा इन्होंको सप्तावशेषित किया जब १ रहा जिससे मासेश्वर सूर्य हुवा. जिसका गतदिन १ और भोग्यदिन २९ समझना चाहिये. अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को ३६० के भागसे लब्ध १९८४४५५५७७ यह आया इन्होंको ३ से गुणके ५९५३३६६७३१ और १ और जोडा जब ५९५३३६६७३२ यह हुवा. इन्होंके ७ भागसे शेष ५ वचनेसे गुरु वर्षेश्वर हुवा. जिसका भुक्त दिन १५१ और भोग्यदिन २०९ हुये.

इति श्रीमनुरचित दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते अहर्गणानयनंनाम पंचमविनोदः ॥ ५ ॥

अथमध्यमग्रहानयनविधिं व्याख्यास्यामः ॥अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को सूर्य भगणोंसे ४३२०००० गुणके ३०८६२५३१४००२७२०००० फिर भूदिनोंके१५७७९१७८२८ भागसे लब्ध भगणः १९५५८८४६८५ भगणशेष २९०५५८२० को १२ से गुणा जब ३४८६६९८४० यह हुवा.इन्होंके पूर्वोक्त भूदिनोंका भाग दिया जब लब्ध राशि०

राशिशेप ३४८६६९८४० को ३० से गुणा जब १०४६००९५२०० यह हुवा. इन्हों के पूर्वोक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ६ अंशशेप ९९२५ ८८२३२ को ६० गुणके ५९५५२९३९२० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ३७ कलाशेप ११७२३३४२८४ को ६० गुणके ७०३४० ०५७०४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४४ विकलाशेपः९११६ ७२६०८ एवं भगणादिमध्यमरविः ११५५८८४६८५ । ० । ६ । ३७ ।४४ अथ चंद्रः ॥ अहर्गण७१४४०४००७८७१ को चंद्र भगण ५७७ ५३३३६ से गुणके ४१२५९२१४७०६३२०५०७६५६ फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः २६१४७८८५५०७और भगणशेपको ३२ २३८८६,० फिर १२ से गुणके ३८६८६६६३२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि २ राशि शेप ७१२८३०६६४ को ३० गुणके २१ ३८४९१९९२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १३ अंशशेप ८७१९ ८८१५६ को ६० गुणके ५२३१९२८९३६० उक्त भूदिनोंके भाग से कला ३३ कला शेपः २४८००१०३६ को ६० गुणके १४८८०६२ १६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ९ विकला शेपः ६७८८० १७०८ एवं भगणादिमध्यमचंद्रः २६१४७८८५५०७।२।१३।३३।९

अथ चंद्रोच्चानयनम्-अहर्गणः ७१४४०४००७८७१ को चंद्रोच भगण ४८८२०३ से गुणके ३४८७७४१७९८५४६४५८१३इन्होंके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २२१०३४४३७ भगण शेप ११०४० २९७७ को १२ गुणके १३२४८३५७२४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ८ राशिशेप ७०१४९३१०० को३०गुणके२१०४४७९३००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १३ अंशशेप ५३१७६१२३६ को६० से गुणके ३१९०५६७४१६० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः २० कलाशेप ३४७३१७६०० को ६० गुणके ३०८३९०५६००० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः १३ विकलाशेपः ३२६१२४

२३६ एवं भगणादि उच्च चंद्रः २२१०३४४३३७ । ८ । १३ । २० । २३ अथ चंद्रपातः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को चंद्रपात भगणों २३२२३८ से गुणके १६५९११५७९७९९४५२९८ फिर भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १७५११४६००६ भगणशेष ५६९५५०३३० को १२ गुणके ६८३४६०३९६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ४ राशिशेष ५२२९३१६४८ को ३० गुणके १५६८७९७९४४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ९ अंशशेष १४८६७१८९८८ को ६० गुणके ८९२०३१३९२८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ५६ कलाशेष ८३९७४०९१२ को ६० गुणके ५०३८४४५४७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३१ एवं भगणादिचंद्रपातः (राहुः) १७५११४६००६ । ४ । ९ । ५६ । ३१ उक्त राश्यादि इनसे १२ शोधनेसे चंद्रपातः ७ । २० । ३ । २९ अथ भौमः— अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को भौम भगण १०३९८९३१७८ से गुणके १६४०८६५९६६२०६३६४६७२ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १०३९८९३१७८ भगणशेष १४२४५८७२८८ को १२ गुणके १७०९५०४७४५६ फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः १० राशिशेष १४१४८६९१७६ को ३० गुणके ३९४७६०७५२८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंशः २५ अंश-शेष २८२२९५८० को ६० गुणके १६८७७७४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः १० कलाशेष १०९८५६७२ को ६० गुणके ६५९१४१८८३२० उक्त भूदिनोंकें भागसे लब्ध विकला ४ विकला शेष २७९७४७००८ एवं भगणादिभौमः १०३९८९३१७८ । १० । २५ । १० । ४ अथ शीघ्रोच्चबुधः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को बुध-भगणशीघ्रोच्च १७९३७०६० से गुणके १२८१४३०७५५३४२२५९९२६०० फिर उक्त भूदिनों के भागसे लब्ध भगणः ८१२१०२३३६७ भगणशेष १०२८७१२३८४ को १२ गुणके १२३४४५४८६०८ उ-

क्तभूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ७ राशिशेष १२९९१२३८९ को ३० गुणके ३८९७३७१४३६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २४ अंशशेष ११३६८६४८८को ६० गुणके ६६२२११८९२८० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्धकला ४१ कलाशेष १५४६५५८५३२ को ६० गुणके ९२७९३५११९२० उक्त भूदिनों के भागसे लब्धविकला ५८ विकलाशेषः १२७४२७७८८९६ एवं भगणादिशीघ्रोच्चबुधः ८१२१०२३३६७ । ७ । २४ । ४१।५८ अथ गुरुः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को गुरुभगण ३६४१२०से गुणके २६०२००२२७७४६०७५६२० उक्त भूदिनों के भागसे लब्ध भगणः १६४९००९९९ भगणशेष १५६९६६५४४८ को १२ गुणके १८८३५९८५३७६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ११ राशिशेष ४७८८८९२६८ को ३० गुणके ४४३६६६७८०४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २८ अंशशेष १८४९७८८५६ को ६० गुणके ११०९८९८७३१३६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ७ कलाशेष ५३३०५६६४ को ६० गुणके ३१९८३९३८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला २ विकलाशेषः ४२५५८१८४ एवं भगणादिमध्यमगुरुः १६४९००९९९ । ११। २८ । ७ । २ अथशीघ्रोच्चशुक्रः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को शीघ्रोच्चशुक्रभगण ७०२२३७६ से गुणके५०१६६१३५५९१७७१२१४९६ उक्त भदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ३१७९३८८३४९ भगणशेष १२५१०४५३५२४ को १२ गुणके १३८५४४२६२८८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ८ राशिशेष १२३१०८३६६४ को ३० गुणके ३६९३२५०९९२०उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २३अंशशेष ६४०३९९८७६ को ६० गुणके ३८४२३९९२५६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकलाः २८ कलाशेष ५५३९६४६८ को ६० गुणके ३३२३७८८२२८०उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः २१ विकलाशेषः१०

१६०६८९२ एवं भगणादि शीघ्रोच्चशुक्रः ३१७९३८८३४९।८।२३।२३ । २१ अथ शनिः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को शनिभगण १४६५६८ से गुणके१०४७०८०६६३२५६३६७२८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ६६३५८८२० भगणशेष १५०२५९३७६८ को १२ गुणके १८०३११२५२१६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ११ राशिशेष ६७४०२९१०८ को ३० गुणके २०२२०८७३२४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १२ अंशशेष १२८५८५९३०४ को ६० गुणके ७७१५१५८२४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ४८ कलाशेष १४११४७९६ को ६० से गुणके ८४६८०२२९७६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ५३ विकला शेषः १०५८५८४८७६ एवं भगणादिमध्यमशनिः ६६३५८८२० । ११ । १२ । ४८ । ५३।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहमध्यमानयनं नाम षष्ठो विनोदः ॥ ६ ॥

अथ ग्रहाणां मंदोच्चानयनम्.—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को रविमंदोच्च भगण ३८७ से गुणके २७६४७५३५१०४६०७७५ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धभगण १७५ भगणशेष ३३८७३११४६०७७ को १२गुणके४०६४७७३७३७५२२९२४उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धराशिः २ राशिशेष ९०९९३८०९६९२४ को ३० से गुणके २७२६८१४२९०७७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १७ अंशशेष ४४३५३९८३२७२० को ६० गुणके २६६७१३८९९०३२०० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः १६ कलाशेष १३६५७०४६५५२०० को ६० गुणके ८१९४२२७९३१२००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकलाः ५१ विकलाशेष १४६८४७००८४०० एवं भगणादि रविमंदोच्च १७५ । २ । १७ । १६ । ५१ अथ भौमः—अहर्गणको भौममंदोच्च भगण२०४

से गुणके १४५२३८४१७६०५६८४उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण ९२ भगणशेष ५६९९७७४१९६८४ को १२ गुणके ६८३९७२९१५ ६२०८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः४ राशिशेपः ५१८७५ ७८४४२०८ को ३० गुणके १५८४१७३५३२६२४० उक्त भूदिनों के भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष ६२५५७०४६२४० को ६० गुणके ३७५३४२२७७४०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकला २२ विकला. शेप ११४१०३४८८८००० एवं भगणादिमंदोच्चभौमः ९२। ४। १० । २ । २२ अथ बुधः—अहर्गणको बुधमंदोच्चभगणोंसे ३६८ गुणके २६२९००६७४८९६५२८ फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १६६ भगणशेष ९३६३१९४४०५२८को १२ से गुण करके ११५९५७८२७४२३३६ उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ७ राशिशेप ५५०३५७९४६३६ को ३० गुणके १६ ५१००३८३९००८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १० अंशशेप ७३१५६०११००८० को ६० से गुणके ८३८९३६०६६० ४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला २७ कलाशेप १२८९ ८२५२४८८०० को ६० गुणके ७७३८९५१४९२८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः ४९ विकलाशेप ७१५४१३५६००० एवं भगणादिमंदोच्चबुधः १६६।७।१०।२७।४९ अथ गुरुः—अहर्गणको गुरुमंदोच्चभगणों ९०० से गुणके६४२४६३६०७०८३९००उक्तकल्पभू-दिनोंके भागसे लब्धभगण ४०७ भगणशेष ७५१०५१०८०९०० को १२ गुणके ९०१२६१३०५४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धराशि ५ राशिशेप ११२३९१४८०० को ३० गुणके ९०१२६१३०५४८०० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्धअंश २१ अंशशेप ५५४४४३०५६००को६० गुणके ३३२६६५८३३६००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला २१ कलाशेप १३०८९७२०००को ६० गुणके ७८१८५३८३२०००

उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४ विकलाशेष १५०६८६७००८०००एवं भगणादि मंदोच्चगुरुः ४०७।५।२१।२१।४ अथ शुक्रः—अहर्गणको शुक्र मंदोच्चभगण ५३५ से गुणके ३८२२०६१४४२१०९८५ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २४२ भगणशेष ३५०००२९८३४९८५ को १२ गुणके ४२००३५८०१९८२० उक्त भूदिनोंके भागसे. लब्ध राशि २ राशिशेष १०४४५२२३८०० को ३० गुणके ३१३३५६७०९५६००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला ५१ कलाशेष ८४०१७१७२८००० को ६० गुणके ५०४०७३०३६८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३१ विकलाशेष १४९१८५१०२००० एवं भगणादिमंदोच्चशुक्रः २४२।२।१९।५१।३१ अथ शनिः-अहर्गणको शनि मंदोच्च भगण ३९ से गुणके २७८६२७५६३०६९६९ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १७ भगणशेष १०३७१५३२३०९६९ को १२ गुणके १२४४५८३८०७१६२८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि ७ राशिशेष १४००४१३९७५६२८ को ३० गुणके ४२०१२४१९२६८८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २६ अंशशेष ९८६५५५७४०८४० को ६० से गुणके ५९१९३३४४४५०४०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ३७ कलाशेष ८१०३८४८१४४०० को ६० गुणके ४८६२३०८८८६४००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३० विकलाशेष १२८५५४०२४०००एवं भगणादिशनिमंदोच्चं १७ । ७ । २६ । ३७ । ३० ।

इति श्रीमनुराचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहमंदोच्चानयनं नाम सप्तमो विनोदः ॥ ७ ॥.

अथ भौमादीनां पातानयनम्—अहर्गणको भौमपात भगण२१४से गुणके १५२८८२४५७६८४३९४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण ६९

भगणशेप १४०२३४६१९६३९४को१२गुणके१६८२८१५४२०१८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि १० राशिशेप १०४८९७६०७६७२८ को ३० गुणके ३१४६९२८२३०१८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १९ अंशशेप १४८८४३५६९८४० को ६० गुणके ८९३३०६१४१९०४०० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः५६कलांशेप९६७२१५८२२४०० को ६० गुणके ५८०३२९४२३४४००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकलाः३३ विकलाशेपः १२२७९०७५३६००० एवं भगणादिभौमपातः ९६ । १० । १९ । ५६ । ३३ राश्यादि १२ से शुद्ध १ । १० । ३ ।२४॥अथ बुधः ॥अहर्गणको बुधपात भगण ४८८ से गुणके ३४८६२९१५५८४१००८ उक्त कल्पभूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २२० भगणशेप १४८७२३३६८८१०४८ को १२ गुणके १७८४६८०४१७२५६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि ११ राशिशेप ४८९७०८०६४५७६ को ३० गुणके २४६९१२४११९३७२८० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः १८ कलाशेप ९९६३६८२१२८०० को ६० गुणके ५९७८२०९१७६८००० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्धविकलाः ३७ विकलाशेप १३९९१३३१३२०००एवं भगणादिजातः बधपातः२२०।११ । ९ । १८।३७ राश्यादि १२ से शुद्ध० ।२०।४१। २३॥अथ गुरुः ॥अहर्गणको गुरुपात-भगण १७४ से गुणके १२४३०६२९७३६९५५४ उक्तकल्पभूदिनोंके भागसे लब्ध भगण ७८ भगणशेप १२२८७०६०५५५४ को १२गुणके १४७२४४८१४२६६४८उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ९ राशिशेप ५४३२२०९७४६४८ को ३० गुणके १६२९६६२९२३९४४०उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १० अंशशेप ५१७४५०९५९४४० कोद६० गुणके ३१०४७०५७५६६४००उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ४० कलाशेपः १०६६६१८८३४४०० को ६० गुणके ६३९९७१३००

६४०००उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४० विकलाशेष ८८०४१ ६९४४००० एवं भगणादिगुरुपातः७८ ।९ । १० । ४० । ४०राश्यादि १२ से शुद्धः २। १९ । १९।२० अथ शुक्रः—अहर्गणको शुक्रपात भगण ९३० से गुणके ४५०६८१९१०७५१३ उक्तकल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २०४ भगणशेष १३१६३४५२८३५१३ को १२ गुणके १५७९६१४३४०२१५६ उक्तकल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि १० राशिशेष१६९६५१२२२१५६को ३० गुणके ५०८९५३६६४६८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश०अंशशेष ५०८९५३६६४६८ को ६० गुणके ३०५३७२१९८८०८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः१६ कलाशेष ५५६७८११४८८०० को ६० गुणके ३३४०१८६८९२ ८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः२१ विकलाशेषः २७०५९ ४५४००००एवं भगणादि शुक्रपातः २०४ । १० । ० । १९ । २१ राश्यादि १२ से शुद्धः १ । २९ । ४० । ३९ अथ शनिः—अहर्गणको शनिपात भगण ६८२ से गुणके ४७२९३५४५३१०६०२ उक्त कल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २९९ भगणशेष ११३८०२२६३८६०२ को १२ गुणके १३६५६२७१६६३२१४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध-राशि ८ राशिशेष १०३२९२९०३९२३४ को ३० गुणके ३०९८७८ ७१११७६७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश१९ अंशशेष १००७ ४३२४४४७२० को ६० गुणके ६०४४५९४६६८३२०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ३८ कलाशेष ४८५०६९२१९२०० को ६० गुणके २९१०४१५३१५२००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला १८ विकलाशेष ७०१६२२२४८००००एवं भगणादि शनिपातः २ ९९ । ८ । १९ । ३८ । १८ राश्यादि १२ से शुद्धः ३ । १०.। २१ । ४२ इति भौमादीनां पातानयनम् । अथ संवत्सरानयनम्—गुरुके गत भगण १६४९००९९९ को १२ गुणके १९७८८११९८ फिर वर्तमानराशि

११को जोडके १९७८८११९९९फिर ६० के भागसे लब्ध ३२९८० १९ इतने विजयादि संवत्सर गया. और शेपांक ५९ यह रहा और मध्य-गुरुके अंशादि २८ । ७ । २ कोंने १२ गुणके ३३७ । २४ । २४ फिर ३० भागसे लब्ध गतमासादि ११ । ७ । २४ । २४ शेपांक ५९ में २६ जोडनेसे प्रभवादि शुक्त संवत्सर २५ । ११ । ७ । २४ । २४ यह हुवा.

अथ देशांतरानयनम्-भून्यासयोजन १६०० के वर्ग २५६०००० को १० गुणके २५६००००० इसका मूल ५०५९ यह भूपरिधि हुई. इस्को लंबज्या ३१०० से गुणके १५६८२९००० त्रिज्या ३४३८ के भागसे लब्ध स्वदेश काशीकी स्पष्ट भूपरिधि ४५६२ रविगति ५९ । ८ को देशांतर योजन ६० से गुणके ३५४८फिर स्पष्ट परिधिके भागसे लब्ध कलादि देशांतरफल०।४७ सूर्यका हुवा. ऐसे चन्द्र १०।२४ भौम ०।२४ बुध ३ । १४ गुरु ० । ४ शुक्र शीघ्रोच्च १ । १६ शनि० । २ चंद्रोच्च० । ५ चन्द्रपात० । ३ उक्त देशांतर फलको मध्य रेखासे काशी पूर्व होनेके सबब ग्रहोंमें हीन किया. जब देशांतरसंस्कृत मध्यम ग्रह हुवा. सूर्य ०।६। ३६ । ५८ चन्द्रः २ । १३ । २२ । ४१ चन्द्रउच ८ । ११ । ४६ । २६ पातः ७ । १८ । २९ । ५० मंगलः १० । २५ । ० । ४० बुधः ११ । २४ । ५९ । ३४ बृहस्पतिः ११ । २४ । ४२ । ३४ शुक्रः ८ । १८ । ४२ । ० शनिः ११ । १७ । २९ । ५७ ॥

इति श्रीमनुराचिते दैवज्ञविनोदे सुभापाविभूपिते भौमादिपातसंवत्सर-देशांतरानयनं नाम अष्टमविनोदः ॥ ८ ॥

अथ ग्रहाणां क्रमेण स्फुटीकरणम्-मध्यम रविः १० । ६ । ३४ । ५८ को मंदोच्च २ । १७ । २६ । ५२ में हीन किया जब मंदकेंद्र २।१० । ४१ । ५४ हुवा यह विपम पद होनेसे यही गत भुज २ । १० । ४१ । ५४ और गम्यभुज० । १९ । १८ । ६ हुवा. इसकी कोटी = । १९ ।

१८ । ६ यही है. भुजलिप्ता ४२२४१। ५४ के तत्त्वलोचन २२५ भागसे लब्ध १८ तन्मितखंडज्या ३१७७ यह गत संज्ञक है. और गम्य संज्ञक ३२५६ इन दोनोंका अंतर ७९ इस्से शेष १९१ । ५४ इस्से गुणके ५१ ६० । ६ तत्त्वलोचन २२५ के भागसे लब्ध ६७ । २२ को गतभुजज्या पिंडमें जोडे स्पष्टज्या ३२४४ । २२ यह हुई अथ स्पष्टपरिधि लानेकी विधिः—युग्मांत रविमंदपरिध्यंश १४३७ ओजांतपरिध्यंश १३ । ४० ओजयुग्मांत २० से भुजज्यागुणके ६४८८७ । २० त्रिज्याके भागसे लब्ध कलादि १८ । ५२ ओजवृत्तयुग्म वृत्तसे अधिक होनेके कारण युग्मवृत्तमें ऋण किये स्पष्ट परिधिः १३।४१।८भुजज्यागुणके४४०१भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल १२३ । २० यही धनु और यही कलादि मंदफल कहलाता है यहां मेषादि केंद्रवशसे मध्यमरविमें योगसे स्पष्ट रवि ० । ८। ४०। १६ अथ गत्यानयनम्—रवि केंद्रगति ५९ । ८ दोर्ज्यांतर ७९ से गुणके ४६७१३२ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध २० । २४५ को स्वमंदपरिधिसे १३ । ४१०८ गुणके २८३५९ भगणांशके भागसे लब्ध कलादि गतिफल० । ४७ मकरादि केंद्रवशसे मध्यगतिमें ऋण करनेसे रवि स्पष्टगतिः ५८ । २१ अथ चन्द्रः—मध्यम चन्द्रः २ । १३ । २२ । ४५ मंदोच्च ८ । ११ । ४६ । २६ मंदकेंद्र ५ । २८ । २३ । ४१ भुज ० । १ । ३६ । १९ भुजज्या ९६ । १९ भुजज्यांतर २२५ स्पष्टमंदपरिधिः ३१ । ५९ । २६ मंदफल कलादि ३ । २५ मेषादि केंद्र होनेसे मध्यम चन्द्रमें धन किया जब स्पष्टचंद्रः २ । १३ । २६ ।१०अथ गतिः चन्द्रमध्यमगतिः ७ । ० । ३५ में उच्चगति १६ । ४१ हीनकिया मंदकेन्द्रगतिः ७८३ । ५४ को स्पष्ट परिधि ३ । ५९ । २६ से गुणके २५० ८८ भगणांशके भागसे लब्ध कलादि १९ । ४२ कर्कादि केन्द्रवशसे मध्य गतिमें धनकिये चंद्रस्पष्टगतिः ८६० ।१६ अथ भौमः—भौम मध्यमः १० ।२५। ० । ४० भुजज्या २२८१ । ४० शीघ्रोच्चं० । ६ । ३४ ।

५८ शीघ्रकेन्द्रं १ । ११ । ३४ । १८ भुज १ । ११ । ३४ । १८ कोटि १ । १८ । २४ । ४२ भुजज्या ३२८१ । ४० दोर्ज्यांतर १६४ कोटिज्या २२७१ । ४२ कोटिज्यांतर १५४ स्पष्टशीघ्रपरिधिः २३३ । ० भुजज्या कोटिपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल १४७ ६२१ एवं कोटिफल १६६५ । ३१ मकरादि केन्द्रसे त्रिज्याधन ५१० २ । ३१ हुवा इसका वर्ग २६०३५६७६ । २० भुजफलके वर्ग २ । ७९६०९ । १९ दोनों वर्गों के योग २८ । २१५२८५ । २९ इसका मूल चलकर्ण ५३११ । ४८ यह हुवा त्रिज्यागुणित भुजफल ५०७५६९० । १८ के चलकर्णके भागसे लब्ध १५५ । ३३ इसका धनु, वही शीघ्र फल कलादि १६८ । ३६ इसका आधा ८४ । १८ मेषादिकेन्द्रसे मध्यम भौममें धन किये प्रथम कर्म संस्कृत भौम ११ । ३ । ४ । ५८ अथ द्वितीय कर्म मांदसंज्ञकः प्रथम कर्मसंस्कृत भौमः ११ । ३ । ४ । ५८ मंदोच्च० । १० । २ । २२ मन्दकेन्द्र ५। ६ । ५७ । २४ भुज० । २३ । २ । ३६ भुजज्या ९३४४ । ४१ भुजज्यांतर २०५ स्पष्टमंदपरिधि ७३ । ५० परिधिसे गुणके भुजज्याको फिर भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल २७५ । ४७ इसका आधा १३८ मेषादि केन्द्र वशसे प्रथम संस्कृत भौममें धनाकिये द्वितीयक० सं० भौमः ११ । ५ । २१ । ५८ अथ तृतीयकर्ममांदसंज्ञकः द्वितीय कर्मज भौमः ११ । ५ । २२। १८ मंदोच्च ४ । १० । २ । २९ मंदकेंद्र ५ । ४ । ३९ । २४ भुज० । २५। २० । ३६ भुजज्या १४७०।२६ भुजज्यांतर २०५ स्पष्टमंदपरिधिः७३। ४३।परिधिसे गुणके भुजज्याको भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल ३०१ । ५ इसीकी धनु यही लिप्तादिमंदफल ३०१ । २३ को मेषादि केंद्रवशसे मध्यम भौममें धन किये मंद स्पष्ट भौमः ११ । ० । २।३ अथचतुर्थ कर्मशीघ्रसंज्ञकमंदस्पष्टभौमः ११ । ० । २ । ३ शीघ्रोच ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रकेंद्र १ । ६ । ३२ । ५५ भुज १ । ६ । ३२ । ५५ कोटि

१ । २३ । २७ । ५ भुजज्या २४६ । ३४ दोर्ज्यांतर १८३ कोटिज्या २७६१ । ४१ कोटिज्यांतर १३१ स्पष्टशीघ्रपरिधि २३३ । ३ भुजफल १३२५४८ कोटिफल १७८८ । ४७ मकरादिकेंद्रवशसे त्रिज्यामें धनकिये ५२२६ । ४७ इसका वर्ग २७३१९२६४ । ३ भुजफलवर्ग १७५७७४५ दोनोंके योग २९०७७००९ । ३८ इसका मूलचलकर्ण ५३९२ । १८ इस्से धन किया जब कलादिशीघ्रफल ८५४ । ४ मेषादिकेंद्रवशसे तृतीयकर्मजभौममें धन किये स्पष्टभौमः ११ । १४ । ९६ । ७ अथ भौमगतिः-मध्यमगतिः३१ । २६ शीघ्रोच्चगतिः ५९ । ८ में ऊनकिये प्रथम केन्द्रगतिः २७ । ४२ शीघ्रफलकोटिज्या ३३०१ । १० चलकर्ण ५३ । ४८ इनके विवर २०१०३३ से गुणके ५५६९४५ फिर चलकर्णके भागसे लब्ध १० । २९ आधा ५ । १० यह शीघ्रफलके अर्द्धकर्णकोटिज्याके अधिकता वशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथम कर्मगतिः ३६ । ४१ इस्को मंदोच्चगति०।० में हीनकिये मंदकेन्द्रगतिः ३६ । ४१ यहां द्वितीयमंदफलावसरमें दोर्ज्यांतर २०५ से गुणके ७५२० । ५ फिर तत्त्वनेत्र ३२५ के भागसे लब्ध ३३ । २५ को स्वमंदपरिधिः ७३ । ५० से गुणके २४६७ ।'० भगणांशके भागसे लब्ध कला ६ । ५१ इसका आधा ३ । २५ वहां कर्कादिकेन्द्र वशसे जोडनेसे प्रथम द्वितीय कर्मगतिः ४० । ६ इस्को मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये तृतीय मंदकेंद्रगति ४० । ७ इस्को दोर्ज्यातर २०५ से गुणके २२०० । ३० तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ३६ । ३२ इस्को स्वमंदपरिधि ७३ । ४३ से गुणके ३२०४४७ भगणांशके भागसे लब्ध कला ८५४ इसको कर्कादिकेन्द्रके कारण मध्यम गतिमें धनकिये मंदस्पष्टगतिः४०।२०अथ चतुर्थकर्म इस्को शीघ्रोच्चगतिः५९।८में हीनकिये १८ । ४८ हुये शीघ्रफल कोटिज्या ३३३१ । २४ कर्ण ५३९२ । १८ इन्होंको विवर २०६० ।५४ से गुणके ३८७४५ चलकर्णके भागसे लब्ध ७ ।, ११ यहां शीघ्रफल कोटिज्याकर्णसे अधिक होनेके कारण

कर्म ११ । २५ । ५६ । १३ अथ द्वितीय कर्मः—प्रथम कर्म ११ । २५ । ५६ । १३ मंदोच्च ५ । २१ । २१ । ४ मंदकेंद्र ५ । २५ । २४ । ५१ भुज ० । ४ । ३५ । ९ भुजज्या २७ । ४ । ५५ दोर्ज्यांतर २२४ । स्पष्टमंदपरिधि३२।५५ स्पष्टमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २५।८इसका धनु वही मंदफल २५।८ इसका आधा १२।३४ मेषादिकेंद्रसे प्रथमकर्ममें धन किये द्वितीय कर्म ११।२६ । ८ । ४७ अथ तृतीयकर्म द्वितीयकर्म ११ । २६ । ८ । ४७ मंदोच्च ५ । २१ । २१ । ४ मंदकेंद्र५ । २५ । १७ । १७भुज० । ४ । ४७ । ४३भुजज्या २८ । २६ दोर्ज्यांतर करके जिसका चाप [illegible] वही मंदफल २६।१७ को स्पष्टमंद परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २६ । १७ इसको मेषादि केंद्रसे मध्यम गुरुमें धनकिये तृतीय कर्म ११ । २५ । २५ । ५१ अथ चतुर्थ कर्म तृतीयकर्म ११ । २५ । २५ । ५१ शीघ्रोच्च ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रकेन्द्र ० । ११ । ९ । ७ भुज० । ११ । ९ । ७ कोटि २।१८ ५० । ५३ भुजज्या ६६५ । १२ कोटिज्या ३३७२ । ५८ स्पष्टशीघ्रपरिधिः ७० । २३ भुजफल १३० । ४ कोटिफल ६५९ । २७ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये ४०९७ । २७इसका वर्ग १६७८९०९६ भुजफलवर्ग १६९१७। २० दोनोंका योग १६८०६०१३ । ५० इसका मूल चलकर्ण ४०९९ । ३० त्रिज्याभ्यस्तभुजफलके चलकर्णको भागसे लब्ध २३३ । २९ इसका धनु वही शीघ्रफल १३३ । २९ मेषादिकेंद्रसे मंदस्पष्टगुरुमें धनकिये गुरुस्पष्टः ११ । २७ । ३९ । २० अथ गतिः गुरुमध्यमगतिः ४ । ५९शीघ्रोच्चगतिः १५।८ शीघ्रकेंद्रगतिः ५४।९ शीघ्रफलको टिज्या ३४।३५।२८ चलकर्ण ४०९८ । ५१ दोनोंका विवरसे ६६४ । २३गुणके३५९९७६।२१चलकर्णके भागसे लब्ध८।४७इसका आधा४। २३ चलकर्णवशासे मध्यगतिमें धनकिये प्रथम कर्मगति ९।११अथ द्वितीयकर्म प्रथमकर्मगतिको मंदोच्च ० । ० गतिमें हीनकिये मंदकेन्द्र ९ । २१ इसको दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध९ ।१९को स्वमं-

दपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध० । ५१ इसका आधा ० । २५ कर्कादिकेन्द्रसे प्रथमकर्म गतिमें धनकिये द्वितीय कर्मगति ९ । ४७ अथ तृतीय कर्ममंदकेंद्रगति ९ । ४७ को दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ९ । ४४ को स्पष्टमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध १ । १० कर्कादिकेंद्रसे मध्यगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति ६ । ९ अथ चतुर्थ कर्म मंदस्पष्टगति ६।९ शीघ्रोच्चगतिमें शोधस शीघ्रकेंद्रगति ५३ । ० शीघ्रफलकोटिज्या ३४३३ । ५० चलकर्ण ४०९९३०२ दोनोंका अंतर-को ६६५ । ४० णके ३५२८० । २० चलकर्णके भागसे लब्ध ८।३५ कर्णवशसे मंदस्पष्टगतिमें धनकिये स्पष्टगुरुकी गति १४ । ४४ अथ शुक्र स्पष्टः शुक्रमध्यम ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रोच्च ८ । १८ । ४२ । ० शीघ्रकेंद्र ८ । १२ । ७ । २ भुज २ । १२ । ७ । २ कोटि ० । १७ । ५२ । ५८ भुजज्या ३२७१ । ० कोटिज्या १०५५ । १७ स्पष्ट शीघ्र-परिधि२६०।३भुजफल८५२६५।४०दोनोंका योग १२७४३८।३३।२८ ६०५।३३इसका वर्ग ७२५८५६७४८ भजफलवर्ग५८५२६५ । ४० दोनोंका योग१२७४३८३३२८इसका मलचलकण ३५६९।५१ त्रिज्या-भ्यस्त भुजफलके चलकर्णके भागसे लब्ध२२७६।४इसका धनु वही भुजफल २४८७।३०इसका आधा१२४३।४५तुलादि केंद्रसे मध्यम शुक्रमें ऋण-किये प्रथम कर्म ११ । १५ । ११ । १३ अथ द्वितीय कर्म मंदोच्च २ । १९ । ५१ । ३१ मंदकेन्द्र ३ । ४ । ०।१८भुज २ । १५ । ५९ । ४२ भुजज्या ३४२९ । ३० दोर्ज्यांतर २१ स्पष्टमंदपरिधि ११ । ० स्पष्टमंद-परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध १०४ । ४७ इसका चापकिये वही मंदफल १०४ । ४७ इसका आधा ५२ । २४ मेषादिकेन्द्रसे प्रथम कर्ममें धनकिये द्वितीयकर्म ११ । १६ । ४३ ।३७ अथ तृतीयकर्म मंदोच्च २ । १९ । ५१ । ३१ मंदकेन्द्र३ । ३ । ७ । ५४ भुज २ ।२६ ।५२। ६ भुजज्या ३४ । ३२ । ९ दोर्ज्यांतर ७ स्पष्टमंदपरिधि ११ भुज-

मंद स्पष्टगतिमें धनकिये भौमकी स्पष्टगतिः ४७ । ३१ अथ बुधस्पष्टक-
रनेकी विधि–बुधमध्यम ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रोच ८ । ० । ५३ ।
३२ शीघ्रकेंद्र ७ । २४ । १८ । ३४ भुज १२४ । १८ । ३४ कोटि
१ । ५ । ४१ । २६ भुजज्या २७९२ । १३ कोटिज्या २००४ । ४२
स्पष्टशीघ्रपरिधि १३२ । १२ भुजफल १०२५ । ० कोटिफल ७३६ ।
१० कर्कादिकेन्द्र होनेसे त्रिज्यामें ऋण किये २००१।५० इसका वर्ग७२९
९९०३। २१ भुजफलवर्ग १०५०६२५ । ३ दोनोंका योग ८३५०५२
८२१ इसका मूल वही चलकर्ण २८८९ । ३४ त्रिज्याभ्यस्त भुज
फल ३५२३९५० । ० के चलकर्णके भागसे लब्ध १२१९२८
इसका धनु वही लिप्तादि शीघ्रफल १२४७।३८ इसका आधा ६२
३।४९ तुलादिकेंद्रसे मध्यम बुधमें ऋणकिये प्रथम कर्म ११।२६।११।
९ अथ द्वितीयकर्म प्रथम कर्मज बुधः ११।२६।११।९ मंदोच्च ७।१० ।
२७।४९ मंदकेंद्र ७।१४।१६।४०भुज ११।४।१६।४० भुजज्या १३
९९।२४ दोर्ज्यांतर १६४ स्पष्टमंदपरिधिः २८।३५ भुजफल १९०।३०
इसका धनु वही कलादि मंदफल १९।३० इसका आधा ९।४५ तुलादिकें-
द्रसे प्रथम कर्ममें ऋणकिये द्वितीय कर्म ११।२४।३५।५४ अथ तृतीय
कर्म द्वितीयकर्म ११।२४।३५।५४ मंदोच्च ७।१०।२७।४९ मंदकेन्द्र७ ।
१५।५१।५५ मंदपरिधि २८।३४ भुजफल १९।४७ इसका धनु वही मंद-
फल १९५।१० तुलादिकेन्द्रसे मध्यमबुधमें ऋणकिये तृतीयकर्म ०।३।
१९।४७ अथ चतुर्थ कर्म ०।३।१९।४७ शीघ्रोच्च ८।०। ५३।३२ शीघ्र-
केन्द्र ७।२७।३३।४५ कोटि १।२।२६।१५ भुजज्या २९००।३९
कोटिज्या १८४३।८ स्पष्टशीघ्रपरिधिः १३२।१० भुजफल १०६४।
५४ कोटिफल ६७६।४०कर्कादिकेन्द्रसे त्रिज्याऋण २७६११२० इसका
वर्ग ७६२४९६११४७ भुजफलवर्ग ११३४१०२ दोनोंका योग ८७५८
९७३।४७ इसका मूलचलकर्ण २९५५९।३३ त्रिज्याभ्यस्त भुजफल ३६

६११२३।१२ के चलकर्ण भागसे लब्ध १२३७।३ इसका धनु वही लिप्तादिशीघ्रफल १२६६।२८ तुलादिकेन्द्रसे मंदस्पष्टमें ऋणकिये स्पष्टबुधः ११। १२।१३।९। अथ बुधगति लानेकी विधि—बुधमध्यमगतिः५९।८शीघ्रोच्चगतिः २४५।३२ शीघ्रकेन्द्रगतिः १८६।२४ शीघ्रफल कोटिज्या ३२१२। ५६ चलकर्ण २८८९।४३ दोनोंके अंतरके चलकर्णके भागसे लब्ध २० ५ इसका आधा १०।२५ कर्ण वशसे मध्यगतिमें ऋणकिये प्रथम कर्म गति ४८।४३ अथ द्वितीय कर्म मंदोच्चगतिमें० हीन प्रथम कर्मगतिको किये मंदकेन्द्रगति ४८।४३दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ३५।३० स्वमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २।४९ इसका आधा १।२४ केंद्रवशसे प्रथम कर्ममें धन किये. द्वितीय कर्म गतिः ५०। ७ अथ तृतीय कर्म द्वितीय कर्म गति ५०। ७ को मंदोच्च गतिमें हीनकिये ५०।७ इसको दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्रके भागसे लब्ध ३४।१७ को फिर स्वमंद परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे तृतीय कर्मगति ६१।५१ अथ चतुर्थ कर्म इसको शीघ्रोच्च गतिमें हीनकिये चतुर्थ शीघ्रकेंद्रगति १८ ३।४१ शीघ्रफलकोटिज्या ३२०६।१९ चलकर्ण १२९५९।३३ इसका विवर करके फिर उक्त शीघ्रकेंद्रगतिको गुणके चल कर्णके भागसे लब्ध १५। १९ चलकर्णवशसे मंदस्पष्टगतिमें ऋणकिये बुधस्पष्टगतिः ४६।३२ अथ गुरुः स्पष्टगुरुमध्यम ११५९।५९।३४शीघ्रोच्च ०।६।३४।५८ शीघ्रकेन्द्र ०।११।३५।२४।भुज० । ११ । ३५२४ कोटि २। १८। २४। २६ भुजज्या ६९०। ५६ कोटिज्या ३३६७ । २२ स्पष्टशीघ्रपरिधि ७०२४ भुजफल १३५ । ७ कोटिफल ६५९ । ३० मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यादि धनकिये ४०९६। ३० इसका वर्ग १६७८२३२२। १५भुजफलवर्ग १८२५६। ३१ दोनोंका योग १६८००५६८। ४६ के चलकर्णके भागसे लब्ध ११३। १९ इसका चाप धनु शीघ्रफल ११३। १९ इसका आधा ५६ । ५९ मेषादि केन्द्रसे मध्यम गुरुमें धन किये प्रथम

फल १०४ । ५१ इसका चाप वही मंदफल १०४५ । ५२ मेषादिकें-द्रसे मध्यम शुक्रमें धनकिये तृतीय मंदस्पष्टशुक्र कर्म ०।८।१९।५० अथ चतुर्थकर्ममंदस्पष्ट ०।८।१९।५० शीघ्रोच्च ८।१८।४२। ० शीघ्रकेंद्र ८ । १० । २२ । १० भुज २ । १० । २२ । १० कोटि ० । १९ । ३७ । ५० भुजज्या १२३७ । २७ कोटिज्या ११५४। १८ स्पष्ट शीघ्रपरिधिः २६० । ७ भुजफल ३३३९ । १२ कोटिफल ८३४ । २ कर्कादि केन्द्रसे त्रिज्यामें ऋणकिये २६०४ इसका वर्ग ६७ ००८१६ भुज फलवर्ग ५४७१८५६ । ३८ दोनोंका योग ७१२६२६ ७२५४ इसका मूल चलकर्ण ३५०० । २२ त्रिज्याभ्यस्त भुजफल ७१ ८५८०४२१६९। ३६ चलकर्णके २२९७।३१ भागसे लब्ध २२९७। ३१ इसका चाप वही शीघ्रफल कलादि २५१६ । ५२ तुलादिकेंद्रसे मंद स्पष्टशुक्रमें ऋणकिये स्पष्टशुक्रः १० ।२६ । ५२। ५८ अथ गतिः मध्य-मगतिः ५९ । ८ शीघ्रगतिः ९६ । ८ शीघ्रकेंद्रगतिः ३७ । ० शी-घ्रफल कोटिज्या २५७६ । ४० चलकर्ण ३५६९ । ५१ इन्होंके विव-रसे शीघ्रकेंद्रगतिको गुणके २३०७। ३४ चलकर्णके भागसे लब्ध ० । ३८ इसका आधा ० । १९ कर्णवशसे मध्यगति में धनकिये प्रथम कर्म गति ५९ । २७ अथ द्वितीयकर्म इसको मंदोच्चगति ० । ० में हीनकिये द्वितीयमंदकेंद्र गति ५९ । २७ दोर्ज्यांतर २२ से गुणके १३०७ । ५४ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ५ । ४८ को स्वमंदपरिधिसे गुणके ६३। ४८ भगणांशके भागसे लब्ध ० । ११ इसका आधा ० । ५ कर्कादि केंद्र से प्रथमकर्म में धनकिये द्वितीयकर्म गति ५९ । ३९ अथ तृतीयकर्म मंद केंद्रगति ५९ । ३२ को दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध को लब्ध परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध ० । ३ मध्यगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति ५९ । ११ शीघ्रोच्च गति में शोधित किये चतुर्थ शीघ्रकेंद्रगति ३६ । ५७ शीघ्रफल कोटिज्या २५५६

। १५ चलकर्ण ३५००। २२ इन्होंका पूर्वोक्त कर्म करनेसे शुक्र स्पष्टगतिः ६९ । १५ अथ शनिःस्पष्टः— मध्यमशनिः११ । १७ । २९ । ५७ शीघ्रोच्च ० । ६ ।३४ । ५८ शीघ्रकेंद्र ० । १९ । ५ । १ भुज० । १९। ५ । १ कोटि २ । १० ।५४ । ५९ भुजज्या ११२३ ।४० कोटिज्या ३२ । ४८ । ५८ स्पष्टशीघ्रपारिधि ३९ । २० भुजफल १२२।४६ कोटिफल ३५४ । ५८ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये ३७९२ । ५८ इसका वर्ग १४३८६५९६ ।८ भुजफलवर्ग १५०७१। ३९ इन दोनोंका योग १४४०१६६७ । ४७ इसका मूल चलकर्ण ३६९४ । ५७ त्रिज्याभ्यस्त भुजफलको चलकर्णके भागसे लब्ध ११४। १३ इसका धनु स एव शीघ्रफल ११४ । १३ इसका आधा ५७ । ६ मेषादिकेंद्रसे मध्यमशनिमें धनकिये प्रथम कर्म ११ । १८ ।०।३ अथ द्वितीय कर्म, मंदोच्च ७ ।२६। ३७ । ३० मंदकेंद्र ८ । ८।१०।२७ भुज २ । ८। १० । २७ भुजज्या ३१९१ । १२ दोर्ज्यांतर ७९ स्पष्टमंद परिधि ४८ ।५ उक्त प्रकारसे भुजफल ४२६ । १४ इसका धनु वही मंदफल ४२७। ८ इसका आधा २१३ । ३४ तुलादि केंद्रसे प्रथम कर्ममें ऋणकिये द्वितीय कर्म११। १४ । ५३।१९ अथ तृतीयकर्म मंदोच्च ७ । २६ । ३७ । ३० मंदकेन्द्र ८ । ११ । ४४।१ भुज २ । ११ । ४४ । १ भुजज्या ३२६४ । २३ दोर्ज्यांतर ६५ स्पष्टमंदपरिधिः ४८ । ४ से गुणके भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल ३४५ । ५१ का धनुपएव मंदफल ४३६ । ४७ तुलादि केन्द्रसे मध्यमशनि में ऋणकिये तृतीय मंदकर्मज शनिस्पष्टः ११ । १०।१३ । ० अथ चतुर्थकर्म तृतीय कर्म ११।१० । ३ । १० शीघ्रोच्च ० । ६।३४। ५८ शीघ्रकेंद्र ० । २६ । २१ । ४८ भुज, ० । २६ । २१।४८ कोटि २ । ३।३८ । २ भुजज्या १५२६ । ० कोटिज्या ३०८० । ४७ स्पष्ट शीघ्रपरिधि ३९ । २६ भुजफल १६७।९ कोटिफल ३३७।२८ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये पीछे इसका वर्ग१४२५४१४८।३ ३भुजफलवर्ग

२७९३९।७दोनोंका योग१४२८२०८७।४०इसका मूलचलकर्ण ३७७ ९।९ त्रिज्याभ्यस्त भुजफलके कर्णके भागसे लब्ध१५२।४इसका चाप वही शीघ्र फल१५२।४ मेषादि केंद्रसे मंदस्पष्टमें धनकिये शनि स्पष्ट ११।१२। ५५।१४अथ गतिः शनिमध्यगतिः२।० शीघ्रोच्चगति ५९।८शीघ्रकेंद्रगतिः ५७।८शीघ्रफलकोटिज्या३४३४।२६ चलकर्ण३६९४।५७इन्होंके अंतर २६।३१से गुणके१४८७४।११चलकर्णके भागसे लब्ध४।०इसका आधा २।०कर्णके वशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथमकर्मगति ४। ० अथद्वितीय कर्म मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये द्वितीयमंदकेंद्रगति ४ । ० दोर्ज्यांतर ७९ से गुणके २।६० तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध१।२४ स्वमंदपरिधिसे ४८।५० गुणके ६७ । १९ भगणांशके भागसे लब्ध ०।११ इसका आधा ० । ५ कर्कादिकेंद्रसे प्रथम कर्ममें धनकिये द्वितीय कर्मगति ४ । ५ अथ तृतीयकर्म मंदोच्चगति ० । ० में हीनकिये तृतीय मंदकेंद्रगति ४ । ५ दोर्ज्यांतरसे ६५ गुणके २६५ । २५ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध १ । १० को स्वमंदपरिधि ४८ । ४ से गुणके ५६ । ५ भगणांशके भागसे लब्ध ० । ९ कर्कादिकेंद्रसे मध्यमगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति मंदस्पष्ट २ । ९ अथ चतुर्थकर्म मंदस्पष्टगति २ । ९ से पूर्वोक्तगणित करके चलकर्ण ३७७९ । ९ इसके अंतरसे ३४४ । २० गुणके १९६२ ७।० चलकर्णके भागसे लब्ध ५।१० कर्णके वशसे मंदस्पष्ट गतिमें धनकिये शनि स्पष्टगति ७ । १९ सब इकठा ग्रहस्पष्ट यहां लिखेहैं. सूर्य ० । ८ । ४० । १६ गति ५८ । २१ चंद्र २ । ३० । २६ । १० गति.८६ ० । १८ मंगल ११ । १४ । १६ । ७ गति. ४० । ३१ बुध ११ । १२ । १२ । १९ गति ४६ । ३२ गुरु ११ । २७ । ३९ । २० गति. १४ । ४४ शुक्र १० । २६ । २२ । ५८ गति ६९ । ७ शनिः ११ । १२ । ५५ । १४ गतिः ७ । १९ ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे स्वभाषाविभूषिते ग्रहस्पष्टीकरणं नाम नवमविनोदः ॥ ९ ॥

अथ भौमादिकोंके पातस्पष्टकरनेकी विधि—भौमः १।१०। ३ ।२४ चतुर्थशीघ्रफल १४ । १४ । ४में युक्तकिये स्पष्ट भौमपातः ० । २ । १७ । १८ अथ बुधपातः ० । २० । ४१ । २३ तृतीयमंदफल ३ । १५। १० युक्तकिये स्पष्टबुधपात १० । २३ । ५६ । ३३ और गुरुपात. २ । १९ । ४० । २ को चतुर्थ शीघ्रफल २ । १३ । २९ में युक्तकिये स्पष्टगुरुपात २ । २१ । ५३ । ४९ । और शुक्रपात १ । २९ । ४० । ३९ में तृतीयमंदफल ० । ४४ । १२ में ऋणकिये स्पष्ट शुक्रपातः १ । २८ । ५६।२७ और शनिपात ३ । १० । २१ । ४२ में चतुर्थ शीघ्रफल २ । ३२ । ४ युक्तकिये स्पष्टशनिपात ३ । १२ । ५६ । ४६ ॥

अथ चंद्रादिकोंके विक्षेपानयनविधिः—स्पष्टचंद्रः २ । १३। २६।१० चंद्रपात ७ । १८ । २९ । ५० चंद्रोनपातकेन्द्र ५। ४। ५३ । ४० भुज ० । २५ । ६ । २० भुजज्या १४५७। २६ चंद्रमेषादिके वशसे याम्य विक्षेप ११।२८ चंद्रकी स्पष्टलिप्ता २७० से गुणके ३९३५०७। ० फिर त्रिज्याके भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रवशसे याम्यचंद्र विक्षेप ११४ । २८ अथ भौमविक्षेपलानेकी विधिः—भौमस्पष्ट ११।१४।१६ । ७ भौमपात १ । २४ । १७ । २८ भौमोनपातकेंद्र २ । १० । १ । २० इसकी भुजज्या. ३२३०१८ भौमविक्षेपलिप्ता ९० से गुणके २९०७१२ । ० चलकर्ण ५३९२। १८ के भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्य भौमविक्षेपः५३ । ५४ अथ बुधशीघ्रोच्च० । ०।५३ । ३२ बुधपात १० । २३ । ५६ । ३३ शीघ्रोनपातकेंद्र ४ । २३ । ३ । १ भुज १ । ६ । ५६ । २९ भुजज्या २०६६ । ९ बुधविक्षेपलिप्ता १२० से गुणके २४७९३८ । ० फिर चलकर्ण २९५९ । २३ के भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्यबुधविक्षेप ८३ । ४६ अथ गुरुः स्पष्टगुरुः ११ । २७ । ३९ । २० स्पष्टपात २ । २१ । ५३ । ४९ गुरूनपातकेंद्र २ । ४ । १४ । २९ भुजज्या ३४ । १९ । १३ गुरुविक्षेपलिप्ता ६० से गुणके २०५१५३।० चलकर्णके ४०९९।३० भागसे लब्ध मेषादिकेंद्रसे याम्यगुरुविक्षेप ५०।२

अथ शुक्रःशुक्रशीघ्रोच८।१८।४२।०स्पष्टपात १।२७।५५।४७शीघ्रोनपातकेंद्र५।९।१३।४७भुज२।२०।४६।१३भुजज्या१२१८०८को शुक्रविक्षेपलिप्ता१२०से गुणके१४६१७६१७६।०चलकर्ण३५००२२के भागसे लब्ध मेपादिकेंद्रसे याम्यशुक्रविक्षेप ४७।४५ अथ शनिः शनिःस्पष्टः ११। १३ । ४५ । १४ स्पष्टशनिपात ३ । १२ । ५२ । ४६ शन्यूनपातकेन्द्र ४ । ० । ८ । ३२ भुज १ । २९ । ५१ । २८ भुजज्या २९७३। २९ शनिविक्षेपलिप्ता १२० से गुणके ३५६८१८।० फिर चलकर्ण३७७९। ९ के भागसे लब्ध मेषादिकेन्द्रसे याम्यशनिविक्षेपः ९४ । २५ ॥

अथ सूर्यादिकों के क्रांतिसाधनविधिः–स्पष्टरविः ० । ८ । ३८ । १८ सायन० । २४ । ५४ । १८ भुजज्या १४४६ । २८ परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके २०२०७१३ । ५६ फिर त्रिज्याके भागसे लब्ध सूर्यक्रांतिज्या ५८७ । ४५ इसका धनुः वही सायन सूर्य के मेषादिसे सूर्यकी उत्तर क्रांति लिप्ता ५९० । ३७ अथ चन्द्रः–स्पष्टसायनचंद्रः२ । २९ । ५९ । १० भुजज्या ३४३८ । ० क्रांतिज्या १३९७ इसका धनु वही सायन मेपादिसे उत्तरचंद्र क्रांतिलिप्ता १४४० अथ भौमः–सायनभौम ०। ० । ३२ । ७ भुजज्या ३२ । ७ को परमापक्रमज्यासे गुणके ४४८६७ । ० त्रिज्यासे लब्ध १३ । ३ इसका चाप वही सायन मेपादि भौमके उत्तरक्रांतिलिप्ता. अथ बुधः–सायनबुधः ११ । २८ । २९ । १९ भुज० । १ । ३० । ३१ भुजज्या ९०३१ परमक्रांतिज्या ३६ । ४७ फिर उक्त गणितसे चाप वही सायन बुधके तुलादिवशसे याम्य क्रांतिलिप्ता ३६ । ४७ अथ गुरुः सायनगुरुः ०। १३ । ५५ । २० भुजज्या ८२४ । ५५ क्रांतिज्या ३३५ । ११ उक्तगणितसे चाप वही सायन गुरुके मेपादिवशसे सौम्यक्रांतिलिप्ता ३३५ । ४२ अथ शुक्रः सायनशुक्रः ११ । १२ ३८ । ५८ भुज ० । १७ । २१ । २ भुजज्या १०२४ । ४४क्रांतिज्या ४१६ । ८ इसका चाप वही सायन शुक्रके तुलादिवशसे याम्य क्रांतिलिप्ता

४१७। ० अथ शनिः सायनशनि ११। २९। १। ४० भुज ०। ०। ५८। २० भुजज्या ५८। २० क्रांतिज्या २३ इसका चाप वही तुलादि शनिसायन दिवससे याम्य क्रांतिलिप्ता २३। ५३ अथ इन्होंके स्पष्टक्रांति करनेकी विधि रविके शरको अभाव होनेसे क्रांति पूर्वोक्त है वही स्पष्ट है. अथ चंद्रः चंद्रयाम्य विक्षेप ११४। २८ सौम्य क्रांतिलिप्ता १४४० क्रांति की और विक्षेपकी भिन्नदिशावशसे दोनोंका अंतरकिये स्पष्ट चंद्रक्रांतिः १३ २५। ३२ अथ भौमः भौमयाम्यविक्षेपः ५३। ५४ सौम्य भौमकी क्रांति- लिप्ता १३। २ उक्त दोनोंके दिग्भेदसे अंतरकिये स्पष्ट भौम क्रांति ४०। ५२अथ बुधः बुधयाम्यविक्षेप ८३। ४६ बुधकी याम्य क्रांतिलिप्ता ३६। ४७ उक्त दोनोंके समानदिशावशसे योगकिये बुधकी क्रांतिलिप्ता १२०। ३३ अथ गुरुः याम्यगुरुविक्षेप ५०। २ सौम्यगुरुक्रांति ३३५। ४२ उक्त दोनोंके दिग्भेदसे अंतरकिये स्पष्टगुरुक्रांतिः २८५। ४० अथ शुक्रः याम्यशुक्रविक्षेप ४१। ४५ याम्यशुक्रक्रांति ४१७। ० उक्त दोनोंके एक दिशासे योगकिये स्पष्ट शुक्रक्रांतिः ४८५। ४५ अथ शनिः याम्य- शनिविक्षेप ९४। २५ शनियाम्य क्रांति २३। ५३ क्रांतिविक्षेपकी सम- जातिवशसे योगकिये स्पष्ट शनिक्रांति ११८। १८ अथ सूर्यादिकोंके दिनमानके लानेकी विधिः सायन सूर्य ०। २४। ५४। ३८ सूर्यकी स्पष्टगतिः ५८। २७ को ग्रहमाणोंसे १३२५ गुणके ७७३१३। ४५ खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ४२। ५८ को चक्रासुमें २१६०० युक्तकिये रविका स्वाहोरात्रसव २१६४२। ५७ रविकी स्पष्टक्रांति ५९०। ३७ इसकी क्रमज्या ५८७। ४५ उत्क्रमज्या ५२। ७ इन्होंमें हीन त्रिज्याको किये दिन व्यास दल उत्तर३३७९।३४इन्होंके १२भागसे लब्ध कुज्या२८१। ३८को त्रिज्यासे गुणके ९६८२५५। २४ द्युज्याके ३३८५५३भागसे लब्ध चरज्या२८५।५८इसका चाप वही उत्तर चरासव। ।२८।६।१४यहां उत्तर चरासवके कारण स्वाहोरात्र चतुर्भागमें १४१०।४४

रवि दिनार्द्धासव १६९६।५८ और उक्त चरासवको हीनकिये रात्र्यर्द्धासव ५१२४।३० दिनार्द्धासवको द्विगुणा किये दिनमानासव ११३९३।५६ और उक्त रात्र्यर्द्धासवको द्विगुणित किये रात्रिमानासव १०२४९।० दिनार्द्ध १५।४९।३० दिनमान ३१।३९ रात्र्यर्द्ध घटि १४।१४।५ रात्रिमान २८।२८। १० अहोरात्रिमान घटिका ६०।७।१० अथ चन्द्रः॥ सायनचंद्र २।२९।५२।१० स्पष्टगति ८।६०।१६ को ग्रहोदयप्राणों १८२० से गुणके १५६६५६८५।२० फिर खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ८६९।४९ को चक्रासुमें २१६०० योगकिये चंद्रके स्वाहोरात्रासव २२४६९।४९ चंद्र उत्तरक्रांति स्पष्ट १३।२५।३३ इसकी क्रमज्या १२९२। ९ उत्क्रमज्या २४२। ६४ इनको त्रिज्यासे हीनकिये दिनव्यास दल उत्तर द्युज्यासंज्ञक ३१८५। ३६ क्रांतिज्या १२९२। २ को विषुवद्भा ५। ४५ से गणके १४२९। ५२ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या ६१९। को त्रिज्यासे गुणके २१२८६३७। ४२ फिर द्युज्या ३१८५। ३६ के भागसे लब्ध चरज्या ६६८।१२ इसका चापकिये चरासव सौम्य ६७२।९ यहां क्रांतिके कारण स्वाहोरात्रचतुर्भागमें ५६। ७।२७ युक्त किये चंद्रका दिनार्द्धासव ६२८९। ३६ और उत्तर चरासवकोही नकिये रात्र्यर्द्धासव ४९४५। १८ अथ भौमः सायन भौम ०। ०। ३२। ७ स्पष्टगति ४७।३१ को ग्रहोदयप्राणों १३२५ से गुणके ६२९५९। ३५ फिर खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ३४। ५८ को उक्त चक्रासुमें युक्तकिये भौमका स्वाहोरात्रासव २१६३४। ५८ हुवा भौमकी स्पष्टक्रांति १४०। ५२ इसकी क्रमज्या वही ४०। ५२ उत्क्रमज्या १। ११इसीको हीन त्रिज्यामें किये द्युज्या ३४३६। ४२ क्रांतिज्या ४०।५२ को विषुवद्भासे ५। ४५ गुणके २३५। ० फिर १२भागसे लब्ध कुज्या १९।३५ को त्रिज्यासे गुणके ६७३२७। ३० द्युज्याके भागसे लब्ध चरज्या १९। ३६ इसका चाप वही चरासव याम्य १९।३६ इनको स्वाहोरात्र चतुर्भाग

५४०८ । ४४ में हीन किये भौम दिनार्द्धासव ५३८९ । ८ और योगकिये राज्यर्द्धासव ५४२८ । २० अथ बुधः॥ सायनबुधः ११ । २८ २९ । १९ स्पष्टगति ४६।३२ को ग्रहोदय प्राण १३२५ से गणके ६१६ ।४० खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध १५ । ३५ को उक्त चक्रासुमें युक्तकिये बुधका स्वाहोरात्रासव २१६१५ । ३५ स्पष्टगुरुक्रांति २८ ५ । ४० इसकी क्रमज्या २८ । ४० । २३ उत्क्रमज्या १२ । ५६ इसीको हीनत्रिज्यामें किये दिनव्यासदल उत्तर द्युज्यासंज्ञकः३४२४ ।४ क्रांतिज्या २८ ५ । २३ को विषुवद्भासे ५ । ४५ गुणके १६४० । ५७ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या १३६ । ४५ को त्रिज्यासे गुणके ४७०१४६ । ३० द्युज्याके ३४२५ । ४ भागसे लब्ध चरज्या १३७ । १६ इसका चाप वही चरासव उत्तर १३७ । १६ को क्रांतिउत्तर के वशसे स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४०२ । ४३ युक्तकिये गुरुका दिनार्द्धासव ५५३९ । ५९ और उक्त स्वाहोरात्रचतुर्भागमें हीनकिये गुरुका राज्यर्द्धासव ५२५६२७ अथ शुक्रः॥ सायनशुक्रः ११।१२ । ३८ । ५८ स्पष्टगतिः ६९ । ७ को ग्रहोदयप्राणों १३ । २५ से गुणके ९१५७९ । ३५ खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ५० । ५२ को चक्रासुमें युक्तकिये चक्रके स्वाहोरात्रासव २१६५० । ५२ शुक्रकी दक्षिण स्पष्टक्रांति ४५८ । ४५ इसकी क्रमज्या ४५७ । ३८ उत्क्रमज्या ३० । २६ इसीको त्रिज्यामें हीनकिये दिन व्यासदल दक्षिण. द्युज्यासंज्ञक ३४०७ । ३४ क्रांतिज्या ४५७ । ३८ को विषुवद्भा ५।४५ से गुणके २६२१।३३ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या २१९ । १७ को त्रिज्यासे गुणके ७५३८९६।६ फिर द्युज्याके ३४०७। ३४ भागसे लब्ध चरज्या२२१।१५इसका चाप वही दक्षिणचरासव२२१। १५ को शनिकी दक्षिण क्रांतिवशसे स्वाहोरात्रचतुर्भाग ५४१२ । ४३ में हीनकिये दिनार्द्धासव ५१९८ । २८ युक्तकिये राज्यर्द्धासव ५६६३ । ५८ अथ शनिः॥सायनशनिः ११।२९ । १ । ४० स्पष्टगति ७ ।२० को

ग्रहोदयप्राणोंसे १३२५ गुणके ९७१६ । ४० खखाष्टैक १८०० भागसे लब्ध ५ । २४ को चक्रासुमें युक्तकिये शनिके स्वाहोरात्रासव २१६०५ । २४ शनिकी स्पष्ट दक्षिणक्रान्ति ११८ । १८ को विषुवद्भा ५ । ४५ से गुणके ६८० । १४ फिर १२ भागसे लब्ध कज्या ५६।४७ को त्रिज्यासे गुणके १९४८७१ । १८ द्युज्याके ३४३४ । १९ भागसे लब्ध चरज्या ५६।४४ इसीका चाप वही याम्य चरासव ५६।४६को क्रांतिके दक्षिणवशसे स्वाहोरात्रचतुर्भागमें ५४०११२१हीन किये दिनार्द्धासव५३४४।३५और युक्तकिये रात्र्यर्द्धासव५४५८ । ७ इति दिनमानम् ॥

अथ अयनांश लानेकी विधिः– दिनगण ७१४४०४००७८७१ को युगायनांश भगणसे ६००गुणके४२८६४२४०४२२६०० कल्प भदिन १५७७९१७८२८के भागसे लब्ध भगण२७१६५०भगणशेष१०२६७ ४६४०० को१२गुणके१२३२०९५६८००उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः७राशिशेष१२७५५३२००४ को३०गुणके ३८२६५९६०१२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश२४अंशशेष३९५९३२२४८को६०गुणके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला१५कलाशेष८७१६७४६०को६०गुणके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला३विकलाशेष४९६२९४११६एवं भगणादि अयनग्रह २७१६५० । ७ । २४ । १५ । ३ इसकी भुज १।२४। १५ । ३ को ३ गुणके फिर अंशकिये ५४ । १५ । ३ । इसको३ गुणके १६२ । ४५।९ भाग १० से लब्ध अयनांशाः१६ । १६।३१ अथ लंबज्या और अक्षांश लानेकी विधिः–त्रिज्याको १२ गुणके ४१२५६ विषुवत्कर्ण १३ । १८ । १३ के भागसे लब्ध लंबज्या ३१०० इसका चापकिये वही दक्षिण लंबांशा ६४ । २४ । ५० फिर त्रिज्या ३४। ३६ को विषुवत्प्रभा ५ । ४५ से गुणके १९७६८ । ३० विषुवत्कर्णके भागसे लब्ध अक्षज्या १४८५ । ३८ इसका चाप वही अक्षांशाः २५ । ३७ । १७ अथ विषुवत्प्रभा लानेकी विधिः–वैशाख कृष्ण ३० भौमदिन

मध्याह्नकी छाया ३ । ५१ इसीको भुज समझके इससे त्रिज्याको गुणके १३२३६ । १८ स्वकर्ण १२ । ३६ । ९ के भागसे लब्ध १०५७ । १८ को चापकिये याम्यनत लिप्ता १०६७ । ४५ सायन तात्कालिक रवि ० । १९ । ३३ । २२ क्रांतिलिप्ता उत्तर ४९ । २१ याम्य नतलिप्ता और क्रांतिलिप्ताकी भिन्नजातिसे योगकिये अक्षांश लिप्ता १५३७३१७ इसकी ज्या १४८५ । २९ यही अक्षज्या कहलाती है. इसका वर्ग २२०६ ६० । ४५ को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ९६७३१८३।१५ इसका मूल लंबज्या ३१०० ।·३० अक्षज्या १४८५ । ३८ को १२ गुणके १७८२७ । ३६ लंबज्याके भागसे लब्ध विषुवत्प्रभा ५ । ४५ ॥

अथ छायार्कसाधनविधिः— स्वदेश अक्षलिप्ता १५३७ । १७ वैशाख वदि ३० भौमदिन मध्याह्ननतलिप्ता १०६७ । ४५ नताक्षेप की, समजातिके कारण अंतर किये शेषापक्रम ४६९ । ३२ इसकी ज्या४६९। १६ को त्रिज्यासे गुणके १६०९९००४८ परमापक्रमज्या १९७ के भागसे लब्ध ११५२ ।२४ को चाप किये मेषादिकारण से मध्याह्न स्पष्ट छायार्कः११७५४७ अथ मध्यमार्क लानेकी विधिः— स्पष्टरविः ० । ३ १-१८ । ५२ मंदोच्च २ । १७ । १६।५२ मंदकेंद्र २ । १३ । ५८ । १ भुजज्या ३३०३ । २२ परिधि १३।४० । ४९ भुजफल १२५ । ३१ को चाप करके मेषादि केंद्रके कारण स्पष्ट रविमें ऋणकिये मध्यम रवि ० १।१३।२० फिर मंदोच्च २ । १७ । १६।५२ मंदकेंद्र २ । १६ । २३ । ३२ भुजज्या ३३३५ । १४ परिधि १३ । ४० । २६ भुजफल १२६ । ० चापरूप इसी को मेषादि केंद्रके कारण स्पष्ट रविमें ऋणकिये-मध्यम रवि स्थिर ० । १ । १२ । ६॥

अथ मध्याह्न छाया और कर्णके लानेकी विधिः—वैशाख वदि ३० भौमदिन काशीकी याम्य अक्षलिप्ता १५३७ । १७ रविकी. उत्तर क्रांति ४६९ । २१ इन दोनोंके दिग्भेदसे अंतर किये नत लिप्ता दिनार्द्ध याम्य

१०६७ । ५६ यही भुजलिप्ताको चक्रलिप्ता ५४०० से हीनकिये कोटि-लिप्ता ४३३२ । ४१ भुजज्या १०५० । २८ कोटिज्या ३२७ । २९ भुजज्याको १२ गुणके १२६०५ । ३६ कोटिज्याके भागसे लब्ध इष्ट छाया ३ । ५१ त्रिज्याको १२ गुणके ४१२५६ कोटिज्याके भागसे लब्ध इष्ट दिनमध्यकर्ण १२ । ३६ । २४ नत लिप्ताके दक्षिण कारणसे उत्तरा मध्यच्छाया समझलेनी ।

अथ इष्टदिनमें अर्काग्र लानेकी विधिः—मध्याह्न क्रांतिज्या ६६८ । ५ को विषुवत्कर्ण १३ । १८ । २३ से गुणके ६२२८ । ३१ कोटिज्या ३२७२ । २९ के भागसे लब्ध मध्याह्नकी अर्काग्रांगुल ५४ अथ उसी दिनकी इष्टाग्र लानेकी विधि इष्टछाया ९ को इष्टकर्ण १५ से गुणके मध्याग्रा २८ । ३० के मध्यकर्ण १२ । ३६ । २४ के भागसे लब्ध इष्टाग्रांगुल २ । १५ उत्तर गोलके कारण यही विषुवच्छायामें हीनकिये शेष उत्तर भुज ३ । ३० इष्ट कालकी मध्याह्न छाया वही मध्यान्ह भुज ३ । ५१ अथ सममंडल कर्ण लानेकी विधिः—लंबज्या ३१०० । २८ को विषुवच्छाया ५ । ४५ से गुणके क्रांतिज्या ४६८ । ५ के भागसे लब्ध सम मंडल कर्ण ३८ । ५ अथ प्रकारांतरसे सममंडल कर्णके लानेकी विधिः—जब उत्तर क्रांति स्वदेशाक्षलिप्तासे स्वल्प रहै तब सम मंडल कर्ण का संभव समझना चाहिये वैशाख कृष्ण ३० भौमदिन मध्याह्न कर्ण १२ । ३६ । २४ को विषुवच्छायासे गुणके ७२ । २९ । १८ मध्याग्रा १ । ५४ के भागसे लब्ध इष्टदिनका सम मंडल कर्ण ३८ । ८ अथ फिर अर्काग्रलानेकी विधिः—क्रांतिज्या ६३८ । ५ को त्रिज्यासे गुणके १६० ९२७० । २० लंबज्याके भागसे लब्ध मध्याह्नाग्रा १ । ५४ को इष्ट मध्य कर्ण १२ । ३६ । २४ से गुणके ६५४३ । १७ त्रिज्याके भागसे लब्ध मध्याह्नाग्रा १ । ५४ अथ अग्रज्यासे कोण शंकु छाया कर्ण साधनविधिः—त्रिज्यावर्गार्द्ध ५९०९९२२ को अग्रज्या वर्ग २६९३ ।

९५। ३६ में हीनकिये ५६४०५२६। २४ इसको १२ गुणके ६७६८ ६३१६। ४८ फिर १२ गुणे ८२२३३५८०१। ३६ वर्गार्द्ध ७। २। ० को विपुवद्वर्ग ३। ३। ३ में युक्त किये १०। ५। ३ इसके भागसे लब्ध करणी ७७३१८९७। १२ विषुवच्छायाको १२ गुणके ६९। ० फिर अग्रज्या ५११। २ से गुणके ३८८१३। १८ पूर्वानीत शंकुवर्गार्द्ध संयुत ३२ विपुवद्वर्ग १०५। ३ के भागसे लब्ध फल ३४०। ५५ इसका वर्ग ११६२२४। १० में करणी युक्तकिये ७८४८१२१२२ फिर इसका मूल २८०१। २७ उक्त फल ३४०। ५५ में उत्तरगोलके कारण युक्त किये आग्नेय कोणगत रवि शंकु ३१४२। २२ इसका वर्ग ९८७४ ४६८। १६ त्रिज्यावर्ग ११८१९८४४ इन दोनों वर्गोंका अंतर १९४ ५३७। १२ के स्वशंकुके भागसे लब्ध वैशाख वदि ३० दिन अर्कांगुल शंकु छाया ५। २० त्रिज्याको १२ गुणके ४१७५६ स्वशंकुके ३१४ २। २२ भागसे लब्ध उसी दिनका कर्ण १३। ८ अथ इष्टघटीकी छाया और कर्ण साधनकी विधिः—वैशाखवदि ३० दिन गत घटी १० सूर्य ०। ३। १३। २० सायन ०। १९। २९। ५१ भुजज्या ११४६। ५१ क्रांतिज्या ४६६। ० उत्तर क्रांतिकला ४६७१३ क्रांति क्रमज्या ४६६ । ० उत्क्रमज्या ३१। ५० इसीसे हीन त्रिज्याको किये दिनव्यासदल उत्तर द्युज्या संज्ञक ३४०६। १० क्रांति ४६६। ० को विपुवद्भासे गुणके ३६७५। ३० फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या २२३। १८ त्रिज्यासे गुणके ७६७७०५। २४ द्युज्या ३४०६। १० के भागसे लब्ध चरज्या २२५। २३ उत्तरमें त्रिज्यायुक्त किये अंत्याख्य ३६६३। २३

अथ तात्कालिक नत लानेकी विधि—रविको स्वाहोरात्रासव२१६४३। ८ इनका चतुर्थांश ५४१०। ४२ में चरासु २२५। २३ युक्त किये दिनार्द्धासव ५६३। १० इसीको इष्टघटिकासुमें ३६०० हीनकिये प्राक्नतासव २०। ३६। १० इसकी उक्त क्रमज्या ५८५। ३० इसीसे हीन

किये ३०७७ । ५३ फिर द्युज्या ३४०६ । १० से गुणके १०४८३ त्रिज्याके भागसे लब्ध छेद ३०४९ । २३ को लम्बज्या ३१०० । २८ से गुणके ९५५४९११ । २३ त्रिज्याके भागसे लब्धशंकु ७०५० । ० इसका वर्ग ७५६२५० । ० इसको त्रिज्या वर्गमें ११८१९८४४ हीन-किये शेष ४२५७३४४ इसका पद वही द्युज्या २०६३। २० को १५ गुणके २४७६० । ० स्वशंकुके २७५० । ० भागसे लब्ध छाया ९०० । १३ त्रिज्याको १२ गुणके ४१२ शंकुके भागसे लब्ध करण १५।८ ।

अथ इष्ट छायासे घटी लानेकी विधिः—छायांगुल ९ । ० इससे त्रिज्याको गुणके ३०९४२०० इष्ट कर्णके १५ भागसे लब्ध दृग्ज्या २०६२ । ४८ इसका वर्ग ४२५५१४३ । ५० इसको त्रिज्या वर्गसे १८१९८४४ हीन करके इसका मूल लेना वही शंकु २७५०। २४ कह-लाताहै इसको त्रिज्यासे गुणके ९४९५६०० । २३ लंबज्याके ३१००। २८ भागसे लब्ध छेद ३०४९ । ४४ को त्रिज्यासे गुणके १०४८३६ ७९८३ । ५६ द्युज्याके ३४०६ । १० भागसे लब्ध उन्नतज्या ३०७७ । ३९ इसीको अंत्या ३६३३ । २३ में हीनकिये शेष १८५ । १६ ३० इससे उत्क्रमज्याके खंडांस धनु साधितकिये जब ननासव २०३६।१० नतघटी ५ । ३९ । २ । १० दिनार्द्धमें हीनकिये दिनगत घटी १० । ०॥

अथेष्टाग्रासे छायार्कसाधनविधिः—इष्टाग्रा २ । १५ इससे लम्बज्या-को गुणके ६०७६ । ३ इष्ट कर्णांगुल१५ के भागसे लब्ध क्रांतिज्या ४६ ५। ४ कोटिज्यासे गुणके १५९८८९९१२ परमापक्रमज्या १३९७ के भागसे लब्ध ११४४ । ३१ इसका चाप ११६७ । २० इसका राश्यादि ० । १९ । २७ । २० यही स्पष्ट रवि है.

अथ प्रत्येक राशि तिनके स्वाहोरात्रार्द्ध लानेकी विधिः—एकराशि क्रांतिज्या ६९५३० इसका वर्ग ४८७९०२ । १९ को त्रिज्यावर्गमें ११ १९८४४ हीन किये शेष ११३३१९४१ । ४९ इसका मूल वही एकरा-

शिका स्वाहोरात्रार्द्ध ३३ । १८ हुवा राशिद्वयक्रांतिज्या १२१० । ५२ इसका वर्ग १४६४३०१ । ४० इसको त्रिज्यावर्ग से शोधके शेप १०३ ५४२५५ । २० का मूललिया वही राशिद्वयका स्वाहोरात्रार्द्ध ३२१८ । ० राशित्रय क्रांतिज्या १३९७ इसका वर्ग १९५१६०९ इसको त्रिज्या-वर्गमें हीनकिये ९८६८३५ इसका मूल वही रात्रि तृतीयको स्वाहोरात्रार्द्ध ३३६६ के भागसे लब्ध १६४ इसका चाप १६७० एकराशि द्विराशि-ज्या २९७८ त्रिभद्युकर्णार्द्ध ३१४१ से गुणके ९३५७९८ स्वाहोरात्रार्द्ध-के भागसे लब्ध २९०६ । ४४ इसका चाप राशिद्वयात्मक ३४६५१५ त्रिज्या ३४३८ को त्रिमधुक वर्गार्द्ध ३१४१ से गुणके १७९६०५८ स्वाहोरात्रार्द्ध के ३१४१ भागसे लब्ध ३४३८ इसका चाप ५४०० राशित्रयात्मक हुवा. एक राशिचाप लंकामेपासव १६७० एकराशिचाप ३४६५ हीनकिये वृपासव १७९५ एवं द्विराशिचाप ५४०० से हीनकिये शेप लंकामिथनासव १९३५ इनको विलोम कर्कादि तीनके जान लेना चाहिये. और एवं आगे तुलादि राशियोंके विलोम क्रमसे यही असु जान लेना अथ स्वदेशी लग्न करनेकी विधिः—इसके पहले चरखंडके लानेकी विधि.एकराशि क्रांति कला७०४इसकी क्रमज्या ६९० । ३० उत्क्रमज्या७२।३४इनको हीन त्रिज्यामें किये दिनव्यासदल ३६६५ । २६ क्रांतिज्या ६९० । ३० को विपुवद्भासे गुणके३९७०।२२ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या ३३०५२ इसको त्रिज्यासे गुणके १३३७ ५११ । ३६ द्युज्याके भागसे लब्ध चरज्या ३३८ इसका धनु३३८।३० द्विराशि क्रांतिकला १२३७ । ३७ क्रांतिक्रमज्या १२१०५ उत्क्रमज्या २२१ । ३१ इसको हीन त्रिज्यामें किये दिनव्यासदल ३२१६ । २९ कुज्या ५७ । ५० चरज्या ६१९ । ४५ इसका धनु ४२३ । २ द्विराशि चर यह हुवा तृतीय राशिकी क्रांतिकलाः १४४० इसका क्रमज्या१३९७ उत्क्रमज्या २९८११२ दिनव्यास दल ३१३९४८ कुज्या ६६९ । २४

चरज्या ७३२ । ५८ इसका चाप वही त्रिराशिचर ७३८४० हुवा एक-राशिचाप प्रथम खंड३३८ । ३० को द्विराशिचापमें हीनकिये द्वितीय खंड ८४ । ३३ फिर द्विराशिचापको त्रिराशिचापमें हीनकिये शेष तृतीय खंड ११५ । ३७ लंका मेपासव १६७० में प्रथमखंड ३३८ । ३० हीनकिये स्वदेशी मेपासव १३३१ । ३० लंकावृषासु १७९५ में द्वितीय चरखंड २८४ । ३३ हीनकिये स्वदेशी वृपासव १५१० । २३ और लंकामिथुनासव १९३५ में तृतीयखंड ११५ । ३७ हीनकिये स्वदेशमिथुनासव१८१९ । २३ एवं लंकाकर्कटासव १९३५ में तृतीय खंड युक्त किये स्वदेशी कर्कटासव २०५० । ३७ लंका सिंहासव १७९५ में द्वितीय चरखंडमें युक्तकिये स्वदेशी सिंहासव २०७९ । ३७ लंका कन्यासवमें१६७०प्रथम खंड युक्तकिये स्वदेशी कन्यासव २००८ । ३० इसको विलोम क्रमसे तुलादि छः राशियोंके स्वदेशी आसव जान लेना.अथ इष्टकालसे लग्नसाधन विधिः-इष्टघटी १० तत्कालरविः ० । ३ । १३ । २० सायन ० । २९ । २९ । ५१ मेप भोग्यांशा १० । ३० । ९ को स्वदेश मेपासुसे १३३१ गुणके १३९७९ फिर ३० भागसे लब्ध मेप भोग्यासव ४६६ को इष्टघटी कासव ३६०० में हीनकिये शेष ३१३४ को वृपासुमें हीनकिये शेष१६२४ को ३० गुणके ४८७२ अशुद्धमिथुनासु १८१९ के भागसे लब्ध अंशादि २६ । ४७ । २ इसके मिथुन अशुद्धयुक्त २ । २६। ४७। २ करके फिर अयनांश हीन किये लग्न २ । १० । ३० । ३१ ।

अथ मध्यलग्न लानेकी विधिः-पूर्ववत घटी५।३९ । १ तत्काल सायन रवि ०। १९ । २९ । ५१ रवि मेपके भुक्तांशा १९ । २९ । ५१ को लंका मेपासु १६७० से गुणके ३२५६१ फिर ३० के भागसे लब्ध १०८५ मेप भुक्तासव को नतासवमें २०३४ हीनकिये शेष९४९को ३०गुणके २८४७० फिर विलोम अशुद्धलंकामीनासुके१६७० भागसे लब्ध अंशादि १७ । २ । ५२ अशुद्धलंका मीनाम भागादि सायन रविमें हीनकिये मध्य

लग्न सायन १ । १२ । ५७ । ८ इसमें अयनांश १६ । १६ । ३१ हीन-किये मध्यलग्न ० । २६ । ४० । ३७ हुवा.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते त्रिपष्ठकथनं नाम दशमविनोदः समाप्तः ॥ १० ॥

अथ चंद्रग्रहण लानेकी विधिः-संवत् १६४१ शक १५०६ कार्तिक शुदि १५ शनिदिन सृष्टचब्द १९५५८८४६८५ युगाद्यहर्गण ७११४६० मध्यमरविः ७ । ९ । ३० । २२ मध्यमचंद्र १ । ९ । २८ । ६ चंद्रोच्च ९ । ५ । ४९ । ३६ पात ७ । ७ । ३ । ३९ स्पष्टरवि ७ । ८ । ९ । २६ गति ६० । ५४ चंद्रस्पष्ट ५ । १२ । ४७ । ० गति ८२७ । २० मिश्रप्रमाण ४३ । २४ इष्टघटी ५७ । १४ व्यास अथ चंद्रबिंब लानेकी विधिः— चंद्रमंडल मध्य व्यास ४८० को स्पष्टगति ८२७ । २० से गुणके ३९७ १२ मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध स्पष्टचंद्रमंडलव्यास ५०२ । १९ के १५ भागसे चंद्रमानलिप्ता ३३ । २९ अथ तमोमान लानेकी विधिः— भूव्यास १६०० को स्पष्टचंद्र गति ८२७ । २० से गुणके १३२२७३३ । २० मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध सूची १६ ७४ । २२ रवि मध्यव्यास ६५०० को स्पष्टगति ६० । ५४ से गुणके ३८५८५० मध्यगति ५९ । ८ के भागसे लब्ध रविमंडल स्पष्ट व्यास ६६९४ । ११ महाव्यास १६०० इन दोनोंका अंतर ५०९४ । ११ को मध्येंदुव्याससे ४८० गुणके २४४५२०८ मध्यार्क व्यास ६५०० के भागसे लब्ध ३७ । १ को पूर्वोक्त सूची १६७४ । २२ में हीनकिये शेष १२९८ । ११ के १५ भागसे लब्ध तमोमान लिप्ता ८६ । ३३ मान योगार्द्ध ६१ । १ अथ समालिप्ति करनेकी विधिः— रविफल १४ । २ धन चंद्र फल धन ३ । १० । ४५ पातफल ऋण ० । ४४ पर्वांतरविः ७ । ८ । २३ । २८ पर्वांतचंद्र १ । ८ । २३ । २८ पर्वांत पात ७ । ७ । २ । ५५

अथ पर्वांत विक्षेप (शर) और ग्रास लानेकी विधिः—पर्वांत चन्द्र १।८।२३। २८ पर्वांतपात ७।७।२।५५ चंद्रोनपात केंद्र ५।२८।३९। २७ भुज ०। १। २०।२३ भुजज्या ८०। ३३ को चंद्रविक्षेप मध्यम २७० से गुणके २१४८३३० त्रिज्याके भागसे लब्ध स्पष्ट विक्षेप ६।१९ चंद्रोनपात केंद्रके मेषादिवशसे उत्तर (शर) विक्षेप यह समझना चाहिये. इसको मानयोगार्द्ध ६०।१ में हीनकिये शेषग्रास २०।१३ अथ स्थित्यर्द्ध लानेकी विधिः— मानयोगार्द्ध ६०।१ का वर्ग ३६०। २ में शरवर्ग ३९।५४ हीन किये शेष ३५६।६ मूल ५९।४२ को ६० गुणके ३५८१ व्यर्केंदुगतिके ७६६।२६ भागसे लब्ध स्थित्यर्द्ध ४।४० अथ मर्दार्द्ध लानेकी विधिः—मानांतरार्द्ध २६। ३२ का वर्ग ७०४।१ में विक्षेपवर्ग ३९।५४ हीन किये शेष ६६४।७ का मूल २५।४६ को ६० गणके १५४६ रवींदु भुक्त्यंतरके ७६६।२६ भागसे लब्ध मर्दार्द्ध २।१ अथ स्थित्यर्द्ध स्थिरकरनेकी विधिः— अर्ध रात्रिके ऊपर इष्टघटी १३।५० में स्थित्यर्द्ध ४।४०हीनकिये ९।१० तत्काल चंद्र १।७।१९।७ पात ७।७।३।१० चंद्रोनपातकेंद्र ५।२९।४४।३ भुज०।१५।५७ भुजज्या १५।५७ को चंद्रविक्षेप २७० से गुणके ४३०६।३० त्रिज्याके भागसे लब्ध स्पष्ट विक्षेप दक्षिण१।१५ इसका वर्ग१।३४ को मानयोगार्द्ध वर्गमें हीन किये३६००२६पीछे इसका ६०। को मूल।६० गुणके ३६०० भुक्त्यंतरके ७६६।२६ भागसे लब्धास्थितिदल ४।४२ पर्वांत १३।५० में स्थित्यर्द्ध ४।४२ हीनकिये ९।८ तत्काल चंद्र १।७।१८।४० पात ७।७।३।१० चंद्रोनपातकेंद्र ५।२९।४४।३० भुज ०।०।१५।३० भुजज्या १५।३० विक्षेप १।१३ वर्ग १।२९ को मानयोगार्द्ध वर्गमें ३६०२ हीन किये शेष ३६००।३१ मूल ६० को ६० गुणके ३६० भुक्त्यंतर के भागसे लब्ध स्थितिदल यह ४।४२ स्थिरहुआ अथ मोक्षस्थित्यर्द्ध स्थिर

करनेकी विधिः—अर्द्धरात्रिसे ऊपर इष्टघटी १३ । ५० को स्थितिदल ४। ४० में युक्तकिये १८ । ३० तत्काल चंद्रः १।९ ।२७ । ४९ पात ७ । ७ । २। ४० चंद्रोनपातकेंद्र ५ । २७ । ३४ । ५१ भुज ० । २५।९ भुजज्या १४५।९ को चंद्रमध्य विक्षेप २७० से गुणके १९० । ३० त्रिज्याके भागसे लब्ध ११ । २४ स्पष्ट विक्षेप इसका वर्ग १२९ । ५७ को मानयोगार्द्ध ३६०२ में हीन किये शेष ३४७२ । ३ का मूल ५८ । ५५ को ६० गुणके ३५३५ रवींदुस्पष्ट भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध स्थिति दल४।३७फिर स्थितिदलको स्थिर करते हैं पर्वात १३।५० स्थित्यर्द्ध ४ । ३७ में युक्तकिये १८ । २७ तत्कालचंद्र १।९।२७। ८पात७।७।२।४९ केंद्र ५ । २७ । ३३ । ३२ भुज० । २ । २४ । २८ भुजज्या १४४ । २८ ऐसे उक्त पूर्ववत् याम्यविक्षेप ११ । २० इसका वर्ग १२८ । २७ को मानयोगार्द्ध वर्गमें ३६० । २ हीनकिये शेष ३४७२। ३३ का मूल ५८ । ५६ को ६० गुणके ३५३६ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध मोक्षस्थित्यर्द्ध स्थिर ४ । ३७ हुवा ॥

अथ स्पार्शिकमर्दार्द्ध स्थिर करनेकी विधिः—पर्वात१३।५० में विमर्दार्द्ध २ । १ हीन किये शेष ११ । ४९ तत्काल चन्द्र १ । ७ । ५५। ४० पात ७ । ७ । २ । २१ चन्द्रोनपातकेंद्र ५ । २९ । ७ । २१ भुज ० । ०।५२ । ३९ भुजज्या ५२ । ३९ पूर्वकी तुल्य याम्य विक्षेप ४ । ८ इसका वर्ग १७ । ५ मानपातार्द्धवर्ग ७०४ । १ इन दोनोंका अंतर ६८६ । ५६ का मूल २६ । १३ को ६० गुणके १५७३ भुक्त्यंनरके भागसे लब्ध मर्दार्द्ध २ । ३ स्थिर हुवा. अथ मोक्षिकस्थित्यर्द्धमर्दार्द्ध स्थिर लानेकी विधिः—पर्वात १३ । ५० को मर्दार्द्ध २ । १ में युक्त किये १५ । ५१ तत्काल चन्द्र १ । ८ । ५१ । १६ पात ७ ।७ । २ । ४९ केंद्र ५ । २८ । ११ । ३३ भुज ० । १ । ४८ । २७ भुजज्या १०८ । २७ पूर्वतुल्य स्पष्ट दक्षिण विक्षेप ८ । ३१ इसका वर्ग ७२ । ३२

मानांतरार्द्धवर्गमें ७१ । १ हीन किये शेष ६३१ । २९ इसका मूल २५ । ८ को ६० गुणके १५०८ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध स्पष्ट मर्दार्द्ध १।५८ यह स्थिर हुवा. सूर्योदयसे इष्टघटी ५७ । १४ मध्यकालमें स्पर्शस्थित्यर्द्ध ४ । ४२ हीन किये स्पर्शकालः ५२ । ३२ और मोक्ष स्थित्यर्द्ध४।३७ युक्त किये मोक्षकाल ६१ । ५१ अथेष्टस्पर्शग्रास लानेकी विधिः–स्पर्शेष्ट नाडी २ को स्पर्शस्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष २ । ४२ को रवींदुभुक्त्यंतरसे गुणके २०६९ । २२ फिर ६० के भागसे कोटि लिप्ता ३४ । २९ तत्कालचन्द्रः १ । ७ । ४६ । १५ पात ७ । ७ । ३ । ४ केंद्र ५ । २९ । १६ । ४९ भुज० । ० । ४३ । ११ भुजज्या ४३११ स्पष्ट याम्य विक्षेप ३ । २३ इसीको भुज समझके इसका वर्ग ११ । २७ कोटि लिप्ता वर्ग ११९९ । ६ इन दोनोंका योग १२०० । ३३ इसका मूल कर्ण ३४ । ३९ इसको मानयोगार्द्ध ६० । १ में हीनकिये शेष स्पर्श इष्टग्रास २५ । २२ अथ मोक्षेष्टग्रास लानेकी विधिः–मोक्षेष्ट नाडीको मोक्ष स्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष २ । ३७ को भुक्त्यंतरसे गुणके २००५ । ३० फिर ६० भागसे लब्ध कोटिलिप्ता ३३ । २५ तत्काल चन्द्र १ । ८ । ५१ । ३ पात ७ । ७ । २ । ४८ केंद्र ५ । २८ । ११ । ४५ भुज० । १ । ४८ । १५ भुजज्या १०८ । १५ पूर्वतुल्य याम्य विक्षेप ८ । ३० इसका वर्ग ७२ । १५ कोटि वर्ग १११६ । ४० इन दोनोंका योग ११८८ । ५५ इसका मूलकर्ण ३४ । २९ इसको मानयोगार्द्धमें हीन किये शेष मोक्ष ग्रासः २५ । २२ अथ इष्ट ग्राससे इष्ट घटीके लानेकी विधिः–स्पर्श इष्टग्रास २५ ।२२ इसको मानयोगार्द्धमें हीन किये शेष ३४ । ३९ का वर्ग १२०० । २३ में तत्काल विक्षेप वर्ग ११ । २७ हीन किये शेष ११८९ । ६ इसका मूल वही कोटिलिप्ता ३४ । २९ को ६० गुणके २०६९ । २२ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध २ । ४२ को स्थित्यर्द्धमें हीन किये स्पार्शिक इष्टकाल २ । ० अथ मोक्षग्राससे मोक्ष इष्ट

कालसाधन विधिः—मोक्ष इष्टग्रास २५ । ३२ को मानयोगार्द्धसे हीन-किये शेष ३४ । २९ इसका वर्ग ११८८ । २९ तत्कालीनशर वर्ग ७२ । १५ दोनोंका अंतर १११६ । ४० इसका मूल ३३ । २५ को ६० गुणके २००५ । ३० भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध मोक्ष इष्टनाडी २ । ३७ **अथ स्पर्शकालीन वलन लानेकी विधिः**—स्पर्शकाल २५ । ४४ पश्चिम नत ९ । ८ नतासव ३२८८ इसकी ज्या २८०८ । २० को अक्षज्या १४८६ से गुणके ४१७३१८३ । ६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १२१३ । ५० इसका धनु यहां नतके उत्तर कपाली होनेके कारण याम्यनत लिप्ता १२ । ४१ । ३६ स्पार्शिक चन्द्र १ । ७ । १८ । ४० सत्रिभसायन ४ । २३ । ३५ । ११ भुज १६ । २४ । ४९ भुजज्या २०४० । ० क्रांतिज्या ८२८ । ५६ इसका धनु यहां सायन सत्रिभके भुजमेषादि होने-के कारण उत्तरक्रांतिलिप्ता. ८३७ । १६ नतलिप्ता और क्रांति लिप्ताके भिन्न जातिके कारण अंतर किये शेष याम्य ४०४ ।२० इसकी ज्या वही वलनज्या ४०३ । ३३ इसके ७० के भागसे लब्ध स्पार्शिक याम्यव-लनांगुल ५ । ४६ **अथ मध्य वलन लानेकी विधिः**—मध्यकाल ३०। २६ अपरनत १३।५० नतासव ४९८० इसकी ज्या ३४११।५६ को अक्षज्यासे गुणके ५०७०१३२ । ५६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १४७ ४२ । ४४ का धनु यहां नत अपर कपाली होनेके कारण याम्यनतलिप्ता १५२५ । १९ मध्यकालिक चंद्र १ । ८।२३ । २८ सत्रिभ सायन ४ । २४ । ३९ । ५९ भुज १ । ५ । २० । १ भुजज्याका धनु किये उत्तर क्रांतिलिप्ता ७९३ । ३८ यहां नतलिप्ता और क्रांतिलिप्ताके भिन्न जातिके कारण अंतर किये शेष याम्य १३५५ । २० इसकी ज्या किये वही याम्य वलनज्या १३९९ । ५१ को ७० के भागसे लब्ध मोक्षवलनांगुल दक्षिण १९ । ५८ हुवा. अथ विक्षेपादिमान लिप्ताओंके अंगुल करनेकी विधि—मध्यकाल परनत १३ । ५० को रात्र्यर्द्ध १६।३६ में हीन किये

शेप उन्नत २ । ४६ को और रात्र्यर्द्धमान १६। ३६ को रात्रिमान ३३। १२ में युक्त किये ५२ । ३४ इसके रात्र्यर्द्ध १६ । ३६ के भागसे लब्ध छेद ३ । १० स्पर्शविक्षेप. लिप्ताके ११३ छेदके भागसे लब्ध स्पर्श याम्य विक्षेप अंगुल ० । २३ मध्य काल विक्षेप लिप्ताके छेदके भागसे लब्ध मध्ययाम्य. विक्षेप अंगुल २ । ० मोक्षविक्षेप लिप्ताके ११ । २० छेदके भागसे लब्ध मोक्षयाम्यविक्षेप अंगुल ३ । ४५ चंद्रबिंबलिप्ता ३३ । २९ के छेदके भागसे लब्ध चंद्रबिंबांगुल १० । ३४ तमोमानलिप्ता ८६ । ३३ के छेदके भागसे तमोमानांगुल २७ । १९ मानार्द्धलिप्ता ६० । १ के छेदके भागसे मानयोगार्द्ध अंगुल १८ । ५७ ग्रास लिप्ताके ५३ । ४२ छेदके भागसे लब्ध ग्रासांगुल १६।५७ खग्रास लिप्ताके २० । १३ छेदके भागसे लब्ध खग्रासांगुल ६ । २३ स्पर्शेष्ट ग्रासलिप्ताके २५ । २५ छेदके भागसे लब्ध स्पर्शेष्टग्रासांगुल ८ । ० मोक्षेष्टग्रास लिप्ताके २५ । ३२ छेदके भागसे लब्ध मोक्षेष्टग्रासांगुल ८ । ३ हुवा

इति श्रीमनुरचिते देवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते चंद्रग्रहणसाधन-
विधिर्नाम एकादशविनोदः ॥ ११ ॥

अथ सूर्यग्रहणके साधनकी विधिः–संवत् १९३९ शाके १८०४ आषाढवदि ३० बुधदिन इष्ट १३ । १९ सृष्टयब्द १९५५८८४९८३ कलिगताब्द ४९८३ सृष्टयाद्यहर्गण ७१४४०४००७२१६ कलियुगण १७१०५८९ प्रातः स्पष्टरविः २ । २० । ९ । ३२ प्रातः स्पष्टचंद्रः २ । १७ । २२ । १६ रविगति ५६ । ५० चंद्रगति ८१० । २६ अमांत १३ । १९ तात्कालिक रविः २ । २०।२२।९ तत्कालचंद्रः २।२० । २२ । ९ पात ८ । २३ । १४ । ० अथ रविमंडल लानेकी विधिः–रवि-मंडल परममध्यव्यास ६५०० को स्पष्टगति ५६ । ५० से गुणके ३६९ ४१६ । ४० मध्यगति ५९ । ८ के भागसे लब्ध स्पष्ट रविव्यास ६२४

७ । ११ को रविभगण ४३२०००० से गुणके २६९९७८३२००० चंद्रभगण ५७७५३३३६ के भागसे लब्ध चंद्रकक्षापे रविमंडल मध्यव्यास ४६७ । २८ स्पष्ट इसके १५ भागसे लब्ध रवि मानलिप्ता ३१ । ९ ॥

अथ चंद्रमंडलसाधनविधिः—चंद्रमंडलमध्यव्यास ४८० को स्पष्ट गति ८१० । ३६ से गुणके ३८९००८ । ० मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध स्पष्टचंद्रव्यास ४९२ । ३ फिर १५ भागसे लब्ध चंद्रमान लिप्ता ३२ । ४८ मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ ॥

अथ पर्वांतलंबन लानेकी विधिः—पर्वांतकाल१३।९ तत्कालरविः२ । २० । २२ । ९ सायन ३ । ६ । ३६ । ४० कर्कके भोग्यपल २६६ को इष्टघटी पलोंमें हीन किये शेष५३३ में फिर सिंहमान हीन किये शेष१८८ को ३० गुणके अशुद्ध कन्यामानके भागसे लब्ध अंशादि १६ । ५०।९ भुक्तराशियुक्त किये पर्वांतलग्न ५ । १६ । ५०।९ इसकी ज्या ७८२ । ४७ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके १०९४८ । १९ लंबज्या ३१०० के भागसे लब्ध उदयज्या ३५२ । ४५ अथ मध्यलग्न लानेकी विधिः—प्राङ्नत३ । ३९ तत्काल सायन रवि ३ । ६ । ३६ । ४० कर्ककी भुक्तपल ७१ भोग्यपलों २१९ में हीनकिये शेप १४८ को ३० गुणके ४४४० अशुद्ध लंका मिथुनमानके भागसे लब्ध अंशादि १३ । ४४ । ४५ तीन राशिमें हीन किये शेप मध्य लग्न२ । १६ । १५। १५ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १३९५ । २५ स्वदेशाक्षलिप्ता याम्य १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्नजातिके कारण अंतरकिये शेषयाम्य नतलिप्ता १४१ ५२ इसकी ज्या वही मध्ययाम्यज्या ४१ । ५२ इसकी उदयज्यामान ३५ २ । ४५ से गुणके ५००४३ । २८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १४ । १३ इसका वर्ग २०२ मध्यज्या वर्ग २००२६ । ९ इन दोनोंका अंतर १९९ २४ । ३ इसका मूल दृक्क्षेप १४१ । ७ इसका वर्ग १९९२४ । ३ त्रिज्या वर्ग ११८१९८४४ इन दोनोंका अंतर १७९९१९ । ५७ इसका मूल

दृग्गतिः ३४३५ । ५ एकराशिज्या १७७९ इसका वर्ग २९५४९६१ इसके दृग्गतिके ३४३३ । ३५ भागसे लब्धछेद ८६० । ३६ मध्य लग्न २ । १६ । १५ । १४ सूर्यः ३ । ६ । ३६ । ४० इन दोनोंका अंतर ० । २० । २१ । २५ ज्या ११९५ के छेदके ८६० । ३६ भागसे लब्ध प्रथमपर्वांतलंबन १ । २३ मध्य लग्नसे सूर्य अधिक होनेके कारण पर्वांत १३ । १९ में हीन किये शेष ११ । ५६ इससे फिर लंबन लानेकी विधि तत्काल रविः २ । २० । २० । ५० सायन ३ । ६ । ३५ । २१ सायन लग्न ५ । ९ । १८ । ४८ इसकी ज्या १२१३ । २७ को परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके १६९५१८९ । ३९ लंबज्या ३१०० के भागसे लब्ध उदयज्या ५४६ । ५० तत्काल प्राक्त ५ । २ सायन सूर्य ३ । ६ । ३५ । २१ सायन मध्यलग्न २ । ८ । ३२ । ४२ उत्तरक्रांति १३३३ । ४८ स्वदेशाक्षलिप्ता १४३७ । १७ इन दोनोंकी भिन्न जातिके कारण अंतरकिये याम्य नतलिप्ता २०३ । २९ इसकी ज्या किये याम्य मध्यज्या २०३ । २९ इसको उदयज्या ५४६ । ५० से गुणके १११२ ७१ । २८ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३२ । २२ इसका वर्ग १०४७ । ३६ मध्यज्या वर्ग४११४०५।२८दोनोंका अंतर४०३५७।५२इसका मूल विक्षेप २००५३इसका वर्ग४०३५७।५२त्रिज्या वर्ग११८१९४४ इन दोनोंका अन्तर११७७९४८६।८इसका मूल दृग्गति ३४३२।७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ इसके दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद८६०।५८मध्य लग्न और रविका अंतर ० । २८ । २ । ३९ इसकी ज्या १६१५ । १० के छेदके भागसे लब्ध लंबन १ । ५२ को पर्वांत १३।१९ में हीन किये शेष ११ । २७ तत्कालरविः २ । २० । २० । १३ तत्काल सायन लग्न ५ । ६ । ४२ । ५९ ज्या १३५७ । ५० को परमापक्रमज्यासे १८९८३ । १० गुणके लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ६११५४ प्राक्त ५ । ३१ सायन सूर्य ३ । ६ । ३४ । ५४ सायन मध्य लग्न २ । ५ । ५१ ।५ मध्यलग्नो-

त्तरक्रांति १३० । ६ । २४ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ दोनोंके दिग्भेदके कारण अंतर किये शेष याम्य नतलिप्ताको ज्याकिये दक्षिणमध्यज्या २३० । ५१ उदयज्या ६११ । ५४ से गुणके १४१२५७। ७ त्रिज्याके भागसे लब्ध ४ । १५ इसका वर्ग १६८७। ५० मध्यज्या वर्ग५३२९१ । ४३ दोनोंका अंतर ५१६०३। ५३ त्रिज्या वर्ग ११८१९८४४ दोनोंका अंतर ११७६४२४० । ० इसका मूल दृग्गति ३४३०। २९ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद८६१ । २३ मध्यलग्नार्क अंतर १ । १ । ५६ । ३ इसकी ज्या १८। ७। ३१ छेदके भागसे लब्ध लंबन २ । ६ पर्वांत १३ । १९ में हीनकिये शेष ११ । १३ तत्कालरवि २ । २० । २० । १० सायन ३ । ६ । ३४ । ४१ सायन उदयलग्न ५ । ५ । २७ । ४५इसकी ज्या १४२६। २३को अंत्यापक्रमज्यासे गुणके ११९२६९५७ । ३१ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ६४२ । ४७ प्राग्ल ५।४५सायन मध्य लग्न २।४।३३।४ मध्य लग्नोत्तरक्रांति १२९२।२२ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिसे अंतरकिये याम्यनतलिप्ता २४४ । ५५ इसकी ज्या वही मध्यज्या दक्षिणा २४४। ४९ को उदयज्यासे गुणके १५७३८४ । ४ त्रिज्याके भागसे लब्ध ४५। ४७ इसका वर्ग २०९७ मध्यज्यावर्ग ५९९३५।१२ इन दोनोंका अंतर ५७८३९ । ५ इसका मूल स्थिरस्पष्ट दृक्क्षेप २४० । ३० इसका वर्ग ५७८३९ । ५ इसको त्रिज्या वर्गसे हीन किये शेष ११७६२००४ । ५ इसका मूलदृग्गति ३४२९ । ३४ एक राशिज्यावर्ग २९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६१।३७ मध्य लग्नार्कांतर १ । २ । १ । ३७ इसकी ज्या १८२२। १४ छेदके भागसे लब्ध लंबन-स्थिर २ । ६ हुवा ॥

अथ अवनति लानेकी विधिः—पर्वांतस्थिर दृक्क्षेप २४० । ३० मध्य-

भुक्त्यंतर ७६१ । २७ से गुणके २०५९१३ । १४ फिर १५ गुणके त्रिज्याके ५१५७० भागसे लब्ध याम्य अवनति ३ । २५ ॥

अथ चन्द्रविक्षेप लानेकी विधिः—स्थिर लंबन संस्कृतपर्वांत ११।१३ तत्कालचन्द्रः २ । १९ । ५३ । ४७ पात ८ । २३ । १४ ।७ चन्द्रोनपात केंद्र ६ । ३ । २० । २० भुज ० । ३ । २० । २० भुजज्या२०० । २० को चंद्रविक्षेप २१० से गुणके ५४०९० त्रिज्याके भागसे लब्ध चंद्रविक्षेप सौम्य १५ । ४४ याम्यावनति ३ । २५ शर और अवनतिके दिग्भेदसे अंतर किये स्पष्ट अवनति लिप्ता १२ । १९ इसको मानयोगार्द्ध ३१।५८ म हीन किये शेष ग्रासलिप्ता १९। ३९ ॥

अथ स्थित्यर्द्ध लानेकी विधिः—मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ इसका वर्ग १०२१ । ५२ में विक्षेप वर्ग १५१ । ४२ हीन किये ८७० ।१० इसका मूल २९।३० को ६० गुणके १७७० रवींदुभुक्त्यंतरके ७५३।३६भागसे लब्ध स्थित्यर्द्ध २ । २१॥अथ स्पार्शिक लंबन लानेकी विधिः—गणितागततिथ्यन्त ३६ । १९ में स्थित्यर्द्ध २ । २१ हीनकिये शेष १०। ५८ रवि २।२०।१९।५५ सायन ३ । ६ । २६। ३४ सायन उदय लग्नकी भुजज्या१४९९। ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके २०९५२२० ३६ लंबज्याके भागसे लब्ध उदय भुजज्या १४९९ । ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके२०९५२२०३६ लंबज्या के भागसे लब्ध उदयभुजज्या १४९९ । ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके २०९ ५२२०३६ लंबज्या के भागसे लब्ध उदयज्या ६७५७ भाक्त ६ । ० सायन सूर्य ३ । ६ । ३४ । २६ मध्य लग्न २ ।३ । ९ । २९ इसकी ज्या ३०६७ । १६ को परमापक्रमज्यासे गुणके ४२८४९७२३२ त्रिज्याके भागसे लब्ध क्रांतिज्या २२३६ । ३१ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अन्तरकिये शेष याम्यनत लिप्ता को पूर्वोक्त क्रमसे वर्ग २६२६३४ मध्यज्यावर्ग ६१९७७ दोनोंका अंतर ६५३२० ३३ इसका मूल दृक्क्षेप २५ । ३२ वर्ग ६५३२०३३ त्रिज्यावर्ग२३८१

९८४४ वर्गांतर ११७५४५२३३७ इसका मूल दृग्गति ३४२८२९ एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६१। ५३ मध्य लग्नार्कांतर १।३।२४।५७ इसकी ज्या १८२९।५८ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिस्पार्शिक प्रथम लंबन २।१२ मध्य लग्नसे भानु अधिक होनेके कारण स्थित्यून तिथ्यंत १०।५८ में हीनकिये शेष ८।४६ तत्काल रविः २।२०।२७।५० सायन ३।६।३२। २१ सायन उदय लग्न ४।२२।१८।० इसकी ज्या २०९१५६ को परमापक्रमज्यासे गुणे२९२२४३० इसकी ज्या वही मध्यज्या याम्य २६०४० को उदयज्या से ८७५।५० गुणके १७६१०५।५५ त्रिज्याके भागसे लब्ध क्रांतिज्या ८१२ ॥

अथ मध्य लग्न लानेकी विधिः—प्राप्त ८।१२ सायनरवि ३।६। ३२।२१ सायनमध्यज्या ४४७।६ को उदयज्यासे गुणके ४२१४८ ८।३७ त्रिज्याके भागसे लब्ध १२२।३६ इसका वर्ग १५०३०।४६ मध्यज्या वर्ग १९९८९। २५दोनोंका अंतर १८६६७।३९ इसका मूल ४२९११५८ इसका वर्ग १८४८६७।२१ इसका मूल दृग्गति ३४।११।० एक राशिज्या वर्ग२९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६६१८मध्यलग्न १।२०।३।१ रवि४।६।३२।२१ दोनोंका अंतर १।१६।२८।२०। इसकी ज्या २४९१।२७ के छेदके भागसे लब्ध स्पार्शिक द्वितीय लंबन २। ५२ को स्थित्यून पर्वांतमें हीन किये शेष ८।६ तत्काल रविः २।२०।१७। १३ सायन ३।६।३१।४४ सायन उदय लग्न ४।१९।२।३६ इसकी ज्या २२५२३ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२४७९७६। ३२ लंबज्या-के भागसे लब्ध उदयज्या १०१५२७ प्राप्त ६। ५२ सायन सूर्य ३। ६।३१।४४ सायनमध्य लग्न १। १६।२३ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १०२०४८ याम्य नतलिमा १५३७।१७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके

कारण अंतर किये शेषयाम्यनत लिप्ता ५१६ । २९ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५१४ । ३८ को उदयज्यासे गुणके ५२२५८४ । २५ त्रिज्याके भागसे लब्ध १५२ । ० इसका वर्ग २३१०४ मध्यज्या वर्ग २६४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७४३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१४ इसका वर्ग २३२४४ मध्यज्या वर्ग ३६४८४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७१३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१ । ४० इसका वर्ग २४२७४३ । २८ को त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५७८१००३२ इसका मूल दृग्गति ३४०२४०३१४४ इन दोनोंका अंतर १३१२८३१ इसकी ज्या २६५०४७ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिक स्पार्शिक तृतीय लंबन ३ । ३ को स्थित्युन पर्वांत में हीनकिये शेष ७ । ५७ तत्काल रविः २ । २० । २७ । १ सायन ३ । ६ । ३१ । ३३ सायन उदय लग्न ४ । १८ । ५ । १३ इसकी ज्या २२९५५९ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२०७४८८ । ४३ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३४ । ४० प्राक्नत ९ । ५६ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १००१२६ याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १७ यहां क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष नतयाम्य लिप्ता ५३५५१ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३३ । ४७ को उदयज्यासे गुणके ५५२२०२ । ३६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६०३७ इसका वर्ग २५७९७ । ४३ मध्यज्या वर्ग २८४८३५ । ४१ दोनोंका अंतर ७५९०३७ । ५८ इसका मूल दृक्क्षेप ५०८ । ५० इसका वर्ग २५९०३७ । ५८ त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५६०८०६ । २ इसका मूल दृग्गति ३४००७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९५ मध्यलग्न और रविका अंतर २१३४३३ इसकी ज्या २३९२४५ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक चतुर्थ लंबन ३ । ६ को स्थित्यूनपर्वांतमें हीन किये शेष ७ । ५२ तत्काल रवि २ । २० । १७ । ० सायन ३ । ६ । ३१ । ० सायन उदय लग्न ४ । १७ । ४९ । ३४

इसकी ज्या२३०७ । २४ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२२३४३७४८ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३९ । ४९ प्राक्नत ९ । ६ सायन रविः ३ । ६ । ३१ । ३१ कर्क भुक्त पल ७० सायन मध्यलग्न १ । १४ । ३८ । ५६ मध्य लग्नोत्तर क्रांति ९९५ । ४९ याम्यलिप्ता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिके वशसे अंतर किये शेष याम्य नतलिप्ता ५४१ । २८ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३९ । १५ को उदयज्यासे गुणके ५६०७२१ । ८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६३ । ६ इसका वर्ग २६६०१३७ मध्यज्यावर्ग २९०७९०३४ दोनोंका अंतर २६४१८८ । ५७ इसका मूल दृक्क्षेप १३५९ इसके वर्ग २६४१८८।५७ को त्रिज्यावर्ग में हीन किये शेष ११५५६५३ इसका मूल दृग्गति ३३९९ ।२२ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९। १६ मध्यलग्न १ । १४ । ३६ । ५६ रवि ३ । ६ । ३१ । ३१ दोनोंका अंतर १ । २१ । ५१ । ३५ इसकी ज्या २७०४ । १३ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक पंचमस्थिर लंबन ३ । ६ अथ मोक्षलंबन लानेकी विधिः—गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ स्थित्यर्द्ध २ । २१ युक्त किये १५ । ४० तत्काल रविः २ । २० । २४ । २३ सायन ३ । ६ । ३८ । ५४ कर्क भोग्य पल २६६ इष्टघटिपलों ९४० से हीन किये शेष ६७४ इसमें सिंहमान ३४५ शोधन किये शेष ३२९ को ३० गुणके अशुद्ध कन्या मानके भागसे लब्ध अंशादि २९ । २७ । ४५ भुक्तराशि युक्त कि सायन उदयलग्न ५ । २९ । २७ । ४५ इसकी भुजज्या ३२ । १५ को परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके ४५०५३ । १५ लंबज्याके ३१०० भागसे लब्ध उदयज्या १४ । ३२ मध्यलग्न २ । २९ । २१ । ० इसकी भुजज्या ३४३६ । ४७ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके ४८०११८६ । १२९ त्रिज्योके भागसे लब्ध १३९६। ३० इसका चाप मध्य लग्नोत्तर क्रांति उ१४३४ । २७ स्वदेशाक्षलिप्ता १५

कारण अंतर किये शेषयाम्यनत लिप्ता ५१६ । २९ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५१४ । ३८ को उदयज्यासे गुणके ५२२५८४ । २५ त्रिज्याके भागसे लब्ध १५२ । ० इसका वर्ग २३१०४ मध्यज्या वर्ग २६ ४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७४३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१४ इसका वर्ग २३२४४ मध्यज्या वर्ग ३६४८४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७१३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१ । ४० इसका वर्ग २४२७ ४३ । २८ को त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५७८१००३२ इसका मूल दृग्गति ३४०२४०३१४४ इन दोनोंका अंतर १३१२८३१ इसकी ज्या २६५०४७ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिक स्पार्शिक तृतीय लंबन ३ । ३ को स्थित्यून पर्वांत में हीनकिये शेष ७ । ५७ तत्काल रविः २ । २० । २७ । १ सायन ३ । ६ । ३१ । ३३ सायन उदय लग्न ४ । १८ । ५ । १३ इसकी ज्या २२९५९९ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२०७४८८ । ४३ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३४ । ४० प्राक्नत ९ । ५६ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १००१२६ याम्याक्षलिप्ता १५३ ७ । १७ यहां क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष नतयाम्य लिप्ता ५३५५१ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३३ । ४२ को उदयज्यासे गुणके ५५२२०२ । ३६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६०३७ इसका वर्ग २५७९७ । ४३ मध्यज्या वर्ग २८४८३५ । ४१ दोनोंका अंतर २५ ९०३७ । ५८ इसका मूल दृक्क्षेप ५०८ । ५० इसका वर्ग २५९०३७ । ५८ त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५६०८०६ । २ इसका मूल दृग्गति ३४००७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९५ मध्यलग्न और रविका अंतर ७१३४३३ इसकी ज्या २६ ९२४५ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक चतुर्थ लंबन ३ । ६ को स्थित्यूनपर्वांतमें हीन किये शेष ७ । ५२ तत्काल रवि २ । २० । १७ । ० सायन ३ । ६ । ३१ । ० सायन उदय लग्न ४ । १७ । ४९ । ३४

इसकी ज्या२३०७ । २४ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२२३४३७४८ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३९ । ४९ भाङ्गत ९ । ६ सायन रविः ३ । ६ । ३१ । ३१ कर्क भुक्त पल ७० सायन मध्यलग्न १ । १४ । ३८ । ५६ मध्य लग्नोत्तर क्रांति ९९५ । ४९ याम्यलिप्ता १५३ ७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिके वशसे अंतर किये शेष याम्य नतलिप्ता ५४१ । २८ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३९ । १५ को उदयज्यासे गुणके ५६०७२१ । ८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६३ । ६ इसका वर्ग २६६०१३७ मध्यज्यावर्ग २९०७९०३४ दोनोंका अंतर २६४१८८ । ५७ इसका मूल दृक्क्षेप १३५९ इसके वर्ग २६४१८८।५७ को त्रिज्यावर्ग में हीन किये शेष ११५५६५३ इसका मूल दृग्गति ३३९९ ।२ २ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९। १६ मध्यलग्न १ । १४ । ३६ । ५६ रवि ३ । ६ । ३१ । ३१ दोनोंका अंतर १ । २१ । ५१ । ३५ इसकी ज्या २७०४ । १३ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक पंचमस्थिर लंबन ३ । ६ अथ मोक्षलंबन लानेकी विधिः—गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ स्थित्यर्द्ध २ । २१ युक्त किये १५ । ४० तत्काल रविः २ । २० । २४ । २३ सायन ३ । ६ । ३८ । ५४ कर्क भोग्य पल २६६ इष्टघटिपलों ९४० से हीन

३७।१३क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतरकिये शेषयाम्यनत लिप्ता९७। ५० इसकी ज्या वही मध्यज्या दक्षिण ९७ । ५० को उदयज्या १४।३२ से गुणके १४ । २१ । ५१ त्रिज्याके भागसे लब्ध ० । २४ इसका वर्ग ९५७।२ त्रिज्या वर्ग११८१९८४४इन दोनों वर्गोका अंतर ११८१०२ ७२४८ इसका मूलदृक्क्षेप९२५० इसकी ज्या३४३६।३६ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५१मध्यलग्न२। ९ । २१ । ० रविः ३ । ६ । ३८ । ५४ दोनोंका अंतर ० । ७।२७। ५४ इसकी ज्या ४३६ । ५७ के छेदके भागसे लब्ध घटिकादि प्रथम लंबन मौक्षिक ० । ३० मध्यलग्नसे भानु अधिकके कारण गणितागतमें १५ । ४० हीनकिये १५ । १० तत्कालरविः २ । २० । २३ । ५७ सायन ३ । ६ । ३८ । २८ सायन उदय लग्न ५ । २६ । ४३ । ३४ इसकी दोर्ज्या १९३ । २६ को परमापक्रमज्यासे गुणके २७०२६।२२ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ८७ । १० भाक्रांत १ । ४८ सायनरविः ३ । ६ । ३८ । २८ कर्कभुक्तपल ७१ सायन मध्यलग्न २ । २६ । ३३। ४९ मध्यलग्नोत्तरक्रांति १४३७ । ७याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १५क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतर किये शेष याम्यनतलिप्ता १००।१० इसकी ज्या वही मध्यज्या १०० । १० को उदयज्यासे गुणके ८७३२।१२ त्रिज्याके भागसे लब्ध२ । ३२ इसका वर्ग ६ । २५ मध्यज्या वर्ग १००। ३३ । २२ दोनोंका अंतर१०० । २६ । ५७ त्रिज्या वर्गसे हीनकिये शेष ११८०९८१७ । ७ इसका मूल दृग्गति ३४३६ । ३२एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५८५० मध्यलग्नार्कांतर ० । १० । ४ । ३८इसकी ज्या६०१ । ३४छेदके भागसे लब्ध मौक्षिक द्वितीय लंबन ० । ४२ को स्थित्यर्द्धमें युक्तकिये गणितागत १ । ४०में हीनकिये शेष[illegible] शेष ७ विः २ । २० । २३ । ४३ सायन [illegible] सायन ३ । ६ । ३१ । ० सा[illegible]य लग्न ५ । २५ । ४२ । ५ इसकी

भुजज्या २४७। ४६ का परमापक्रमज्यासे गुणके ३६०१००।२ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ११६। १० सायन मध्यलग्न २।२५ ।२६। ५७ मध्यलग्नोत्तरक्रांति १४३४। ६ याम्याक्षलिप्ता १५३७।१७ क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतरकिये शेष याम्यनतलिप्ता १०२।३१ इसकी ज्या वही मध्यज्या १०२। ३७ को उदयज्यासे गुणके ११९०९ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३। २८ इसके वर्ग १०४९१। ३९ को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ११८०९३४६।२१ इसका मूल दृग्गति३४३६।२८ एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५३ मध्यलग्न और रविका अतर ०। १। १। १७ इसकी ज्या ६६०२० छेदके भागसे लब्ध घटिकादि मौक्षिक तृतीयलंबन ०। ४६ स्थित्यर्द्धयुत गणितागत १५। ४० म हीनकिये शेष १४। ५४ तत्कालरविः २।२०। २३। ३९ सायन ३। ६। ३८। १० सायन उदयलग्न ५। २५।२०। ३६ इसकी ज्या २७।९। ९ को परमापक्रांतिज्यासे गुणके ३८३८।१० सायन मध्यलग्न २। २५। ४। ३९ मध्यलग्नोत्तरक्रांति ४४३३। ४९ याम्याक्षलिप्ता १५३७। १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष याम्यनत लिप्ता १०३२० इसकी ज्या वही मध्यज्या १० को उदयज्या से गुणके २३०१६। ६ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३। ४७ इसका वर्ग १४। १९ मध्यज्यावर्ग १०७७४। २६ दोनोंका अंतर १०७६०। ७ इसका मूल दृक्क्षेप १०३। ४७ इसके वर्ग१०७६०।७को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ११८०९०८३। ५३ का मूल वही दृग्गति ३४३६। २६ एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५३ मध्यलग्नार्क अंतर १२३३। ३१ इसकी ज्या ६८९। १ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि मौक्षिक चतुथ लंबन ०। ४८ स्थित्यर्द्धयतगणितागत १५। ४० में हीनकिये शेष १४।५२ तत्काल रवि १। २०। २३। ३७ सायन ३। ६। ३८ सायन उदयलग्न ५। २५। ९।

५१ इसकी ज्या १३० । ३७ प्राकृत-२ । ६ सायन रविः ३ । ६ । ३८ सायनमध्यलग्न २ । २४ । ३ । ३० मध्यलग्नोत्तरक्रांति २४ । ३३ । १९ याम्याक्षलिप्ता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्नजातिके कारण अंतर किये शेष याम्यनतलिप्ता १०३ । ५८ को उदयज्यासे गुणके १३ ५७९ । ४६ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३ । ५२ इसका वर्ग १०७९३ मध्यज्यावर्ग १०३ । ५८ को उदयज्यासे गुणके १३५७९ । ४६ त्रिज्या-के भागसे लब्ध १०८९ । ४ दोनोंका अंतर १०७९३ । २८ इसका मूल दृग्गति ३४३६ । २५ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९ । ५३ मध्यलग्न और सूर्यका अंतर १२४४ । ३८ इसकी ज्या ६९९५० छेदके भागसे लब्ध घटिकादिस्थिर मौक्षिक पंचम लंबन ० । ४८ ॥ अथ स्थित्यर्द्धके लंबनांतर संस्कार देनेकी विधिः—स्पर्शकाल लंबन ३ । ६ मध्यकाललंबन २ । ६ मोक्षकाल लंबन ० । ४८ स्पर्शमध्य लंबनका अंतर १ । १८ इकपाली मध्यलंबनसे स्पार्शिक लंबनके अधिक होनेके कारण मध्य स्पर्श लंबनका अंतरकिये १ । ० स्थित्यर्द्ध २ । २१ में युक्तकिये ३ । ३९ गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ मध्यलग्नसे सूर्य अधिक होनेके कारण स्थिर मध्य लंबन २ । ६ को हीनकिये पर्व मध्यकाल ११ । १३ स्पार्शिक स्थित्यर्द्धहीनकिये स्पर्शकाल ७ । ५२ मध्यकाल ११ । १३ में मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३९ युक्तकिये मोक्ष-काल १४।५२ अथ इष्टग्रास लानेकी विधिः—स्पर्श इष्ट घटी२ को स्पर्श-स्थित्यर्द्ध ३ । २१ में हीनकिये शेष १ । २१ । इसको रवींदुभुक्त्यंतर ७५३ । ३६ से गुणके १०१७ । २२ षष्टि ६० भागसे लब्ध कोटिलिप्ता १६ । ५७ मध्यस्थित्यर्द्ध ३ । २१ से गुणके ३९ । ५० स्पष्ट स्थित्यर्द्ध ३।२१ के भागसे लब्ध कोटिलिप्ता ११५३ अथ इष्टकालीन विक्षेप लानेकी विधिः—इष्टकालीन रविः२।१८।५३सायन३।६।३३।१६सायन उदय लग्न ४।२८।१५।४०इसकी भुजज्या१८०७।०को परमापक्रमज्यासे गुणके२५

२५१७० । ३८ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ८२५।३४ प्राक्तघटी ७ । ६ सायनरविः ३।६ । ३३ । २६ सायन मध्यलग्न १ । २६ ।४७ मध्यलग्नोत्तर क्रांति ११९३ । १४ स्वदेशाक्षलिप्ता १५३७ । १७ याम्य-नतलिप्ता ३४४ । ३ इसकी मध्यज्या ३४३ । ३१ याम्य परमापक्रमज्या से गुणके २७९८१७ । १४ त्रिज्याके भागसे लब्ध ८१ । २३ इसका वर्ग ६६२३ । ५ मध्यज्यावर्ग ११८००३ । ४३वर्गांतर ११३८० ।२७ इसका मूल स्पर्शेष्ट क्षेप ३३३ । ४४ मध्यभुक्त्यंतरसे गुणके २४४१०९ । १५ तिथिघ्न त्रिज्याके भागसे लब्ध याम्य अवनति ४ । ४४ इष्टकालीन चंद्र २ । १९ । ३५ । ३३ तत्कालपात ८ । ३ । १४ । ११ चंद्रोनपात केंद्र ६ ।३।३८ । ३८ भुजज्या २ । ८ । ३८ चंद्रमध्यविक्षेप २७० से गुणके ५९०३१ त्रिज्याके भागसे सौम्य विक्षेप १२ । २६ विक्षेपवर्ग १५४ । ३५ स्पष्टकोटिलिप्तावर्ग १४१ । १४ दोनोंका योग २९५ ।४८ इसका मूलकर्ण १७ । ४३ मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ में हीनकिये शेष स्पर्श ग्रासलिप्ता १७ ।४५ ॥

अथ मोक्षेष्टग्रासलानेकी विधिः—मोक्षेष्ट घटी १ । ३९ मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३९ में हीनकिये शेष २।० इसको रवींदुभुक्त्यंतर ७५२ । ३६ से गुणके १५०७ । ५२ षष्टि ६० के भागसे लब्ध कोटिलिप्ता २५ । ७ को मध्यस्थित्यर्द्ध २।२१ से गुणके ५९ । १ स्पष्ट मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३४ के भागसे लब्ध स्पष्ट कोटिलिप्ता २६ । १० अथ इष्टकालीन विक्षेप लानेकी विधिः—तत्काल रविः २ । २० । २१ । ४४ सायन ३ । ६ । ३६ । १५ सायनउदयलग्न ५।१४।१९ ।५२ इसकी भुजज्या ९२८। ३० को परमापक्रमज्यासे गुणके १२९७११४ । ३० लंबज्यासे लब्ध उदयज्या ४१८२५ प्राक्त ४ । ६ याम्यनतलिप्ता १५९ । १० सायनोर्कः ३ । ६ । ३६।१५ सायन मध्य लग्न २ । १३ । ४४।४७ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १३०८ । ७ याम्यनतलिप्ता १५९ । १० मध्यज्यायाम्या १५९ ।

ज्या १४८६ से गुणके ४१६२८०६।६ त्रिज्याके भागसे लब्ध१२१०। ४९ इसका धनु वही सौम्यनतलिप्ता १२३८। २२ स्पर्शकालीनरविः २। २०।१७। ० राशित्रययुत ५। २०। १७। ० अयनांश १६।१४।३१ युत ६। ६। ३१। ३१ याम्यभुजज्या ३९०। ४६ क्रांतिकलाः १५८। ४ सौम्यनतलिप्ता १२३८। २२ नत और क्रांतिकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये १०७९। ३५ इसकी ज्या वही सौम्य वलनज्याके १०६१३८ सतंतर७७ के भागसे लब्ध स्पार्शिक सौम्यवलनांगुल १५।९ अथ मध्यकालीन वलन लानेकी विधिः—मध्यकाल ११। १३ प्राङ्गत घटी ५। ४५ नतासव २०७० नतज्या सौम्यसंज्ञकके चाप करनेस सौम्य मध्यनतलिप्ता ८५०। २ तात्कालीन रविः २। २०। २०। ९ साधन और राशित्रययुत ६। ६।३४। ३१ इसकी भुजज्या ३९३। ५५ सौम्यक्रांति कला १६०।४ सौम्यनतलिप्ता ८५०।२नत और क्रांतिके दिग्भेदके कारण दोनोंका अंतरकिये ६८८। ५ इसकी ज्या वही वलनज्या ६८४। ३४ इसके ७० भागसे लब्ध मध्य सौम्यवलनांगुल ९। ४७॥

अथ मोक्षकालीन वलन लानेकी विधिः—मोक्षकाल १४। १५प्राङ्गत-घटी २। ६ नतासव ७५६ नतज्या ७५९। ५० को अक्षज्यासे गुणके १११४२५२। २० त्रिज्याके भागसे लब्ध ३२४। ६ इसका चापकिये सौम्यमोक्ष नतलिप्ता ३२४। ३२ तत्कालरविः २। २०। २३। ३७ सायन और राशित्रययुत ६। ६। ३८। ८ इसकी भुजज्या ३९७।२२ याम्यक्रांति कला १६१।२८ सौम्यनतलिप्ता ३२४३२ नत और क्रांतिके दिग्भेदके कारण अंतरकिये १६३। ४ इसकी ज्या वही सौम्यमोक्षवलनज्या १६३। ४ के ७० भागसे लब्ध सौम्य मोक्षवलनांगुल २। २० अथ स्पार्शिक शर लानेकी विधिः—स्पार्शिकस्थिर दृक्क्षेप५१३।५९को मध्य-भुक्त्यंतरसे गुणके ३७५९५३। ६ फिर १५ गुणके त्रिज्याके भागसे लब्ध याम्य अवनति ७। १२ तत्काल चन्द्र २। १९। ८। ३९ पात

८ । २३ । १४ । १७ केंद्र ६ । ४५ भुजज्या २४५ । ४० चन्द्र-विक्षेपसे गुणके ६६३३० । ० त्रिज्याके भागसे लब्ध सौम्यविक्षेप १२।०॥

अथ मोक्षविक्षेप (शर) लानेकी विधिः—मोक्षस्थिर दक्क्षेप १०३।३ को मध्य भुक्त्यंतरसे गुणके ५५९८५।२८ तिथि १५ ग्रत्रिज्याकें भागसे लब्ध याम्य अवनति १ । २७ तत्काल चंद्र २ । २० । ४३ । ५ पात ८ । २३ । १३ । ५५ केंद्र ६ । २ । ३० । ५० भुजज्या १५०। ३० को विक्षेपसे गुणके ४०७२५ । ० त्रिज्याके भागसे लब्ध सौम्य विक्षेप ११ । ५० याम्य अवनति १ । २७—विक्षेप और अवनतिके दिग्भेदके कारण अंतरकिये मौक्षिक स्पष्ट सौम्य विक्षेप १० । २२ ॥

अथ विक्षेपादिकोंके अंगुलीमान करनेकी विधिः—मध्यकालोन्नत ११ । १३ को दिनमान और—दिनार्द्ध १६ । ५८ सहितकिये ६२ । ७ फिर दिनार्द्ध १६ । ५८ के भागसे लब्ध छेद ३ । ४० स्पर्श विक्षेप लिप्ता १२ । ० छेदके भागसे स्पार्शिक सौम्य विक्षेपांगुल ३ । १६ मध्य विक्षेप लिप्ता १२। १९ छेदके भागसे लब्ध मध्यविक्षेपांगुल ३।२१ मोक्ष विक्षेप लिप्ता १० । २२ छेदके भागसे लब्ध सौम्य मोक्ष विक्षेपांगुल २ । ४९ रविमान लिप्ता ३१ । ९ छेदके भागसे लब्ध रविबिंबांगुल ८ । ४३ और इसीप्रकारसे छेदके भागसे चंद्रबिंबांगुल ८ । ५६ मानयोगार्द्धांगुल ८ ।४३ ग्रासलिप्ता १९ । ३९ छेदके भागसे लब्ध ग्रासांगुल १२ । ० स्पर्शेष्टग्रास-लिप्ता १४ । ४५ छेदके भागसे लब्ध स्पर्शग्रासांगुल ४ । १ मोक्षेष्टग्रास लिप्ता १२ । ० छेदके भागसे लब्ध मोक्षेष्टग्रासांगुल ३ । १६ ।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते सूर्यग्रहण-गणितकथनं नाम द्वादशविनोदः ॥ १२॥

अथ ग्रहयुद्धोदाहरणं व्याख्यास्यामः—ग्रहोंका युद्ध चार प्रकारका है. यह युद्ध १ भेद २ उल्लेख ३ अंशमर्द ४ और असव्य इन चारप्रकारसे पराशरआदि मुनियोंने कहाहै जब दोनों ग्रह एक दीखपडें अर्थात् ऊपर

वाले ग्रहोंको नीचेका ग्रह ढक लेवे उसका युद्ध नाम भेद है. १ एक ग्रह दूसरे ग्रह बिंबकी परिधि मात्रको स्पर्श करे ढके नहीं वह उल्लेख नामका युद्ध है २ दोनों ग्रहोंका स्पर्श तो न होय परन्तु इतने समीप दोनों होजायँकी एक बिंबसदृश दीखे वह उल्लेख युद्ध कहलाता है. एक ग्रह दूसरे ग्रहके दक्षिण में बरोबर रहे और दूसरा उत्तरमें रहे इसका नाम असव्य युद्ध है ४ संवत् १६४१ शाके १५०६ ज्येष्ठ शुदि ११ रविदिन सृष्ट्यब्दाः १९ ५५८८४६८५ सिद्धांत अहर्गण ७१४४०४००७९०६ कलिगताब्द ४६८५ कलि अहर्गण १७११२७९ रविमध्यम १ । १ । १६।४३ गुरुमध्यम ११ । २७ । ५४ । ३ शुक्रशीघ्रोच १० । १४ । ४६ । २९ स्पष्ट सूर्य १ । १२ । २४ । २९ गति ५७ ।१८ स्पष्टगुरुः ० । ५ ।२८ । ७ गति १३ । १५ स्पष्टशुक्र ० । ७ । २९ । २१ गति ७१ । १५

अथ गुरु और शुक्रके समलिप्तिका करनेकी विधिः—स्पष्टगुरुः ० । ५ । २८ । ७ स्पष्टशुक्र ० । ७ । २९ । २१ दोनोंके अंतरकी कला १२१ । १४ के भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध दिनादि २ । ५ । २४ ग्रहांतर १२१ । १४ को शुक्रस्पष्ट गतिसे गुणके ८६३७ । ५३ भुक्त्यंतरके ५९ । ० भागसे लब्ध संयोगी गत होनेके कारण भृगुफलऋणात्मक १४८ । ५५ इसको स्पष्ट शुक्रमें हीन किये समकलकाली भृगुः ० । ५ । ० । २६ एवं ग्रहांतर १२१ । १४ को स्पष्टगुरु भुक्तिसे गुणके दोनों भुक्त्यंतरके भागसे लब्धलिप्तादि गुरुफल संयोगी गत होनेके कारण ऋणात्मक २७ । ४१ फलको स्पष्ट गुरुमें हीन किये समकलकाली गुरुः ० । ५ । ० । २६ एवं दिनादि फल २ । ५ । ४३ इष्टवारादि० । ४६ । ५० में हीन किये शेप वारादि ६ । ४१ । २६ ज्येष्ठ शुदि ९ शुक्र दिन ४१ । २६ के इष्ट ऊपर गुरुस्पष्ट ० । ५ । ० । २६ तत्काल रविस्पष्ट १ । १० । २४ । ४४ अथ रवि और गुरु शुक्रके दिनमान लानेकी विधिः—सायन रविः १ । २६ । ४१ । १५ गति ५७ । १८ सायन गुरु-

सुसे गुणे ८७०१० । ४२ रविकी उत्तर क्रांति कला ११९१ । ४९ इसकी क्रमज्या ५५९ । २१ को त्रिज्यासे गुणके १९२३०४५१८ द्युज्या-के भागसे लब्ध चरज्या ५९४ । ५४ इसका धनु वही चरासव सौम्य ५९७ । ५२ स्वाहोरात्र चतुर्भाग ३५४ । ५ में युक्तकिये सूर्यका दिनार्द्धासव ६००९ । ५७ ऊनित किये रात्र्यर्द्धासव ४८१४ । १३ दिनार्द्ध-घट्यादि १६ । ४१ रात्र्यर्द्ध १३ । २३ मिश्रप्रमाण ४६ । ४४ अथ गुरुदिनमान लानेकी विधिः—सायनगुरुः० । २१ । १६ । ५७ गति १३ । १५ सायन मेषासुसे गुणके ११५५६ ।१५ खखाष्टेन्दु १८००के भाग-से लब्ध ९ । ४५ स्वाहोरात्रासव २१६९ । ४५ गुरु सौम्य क्रांतिकला ५०८ । २५ स्पष्ट गुरु पात २ । २६ । १७ । ५४ तत्कालगुरु ० । ५ । ० । २६ केंद्र २ । २१ । १७ । २८ भुजज्या ३३९७ । ४ याम्यगुरु विक्षेप ५१ । २१ क्रांति और विक्षेपके दिग्भेदके कारण अंतर किये स्पष्ट सौम्य गुरु क्रांति ४५७ । ४ इसकी क्रमज्या ४५५ । ५८ कुज्या २१८। २९ चरज्या २२० । २४ इनका स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४०२ । २६ युक्त किये गुरुदिनार्द्धासव ५६२२ । ५० ऊन किये रात्र्यर्द्धासव ५१८२ । २ गुरु दिनार्द्ध घटी १५ । ३० रात्र्यर्द्ध घटी १४ । २४ शुक्रका स्वाहोरात्रासव २१६५२ । १७ शुक्रकी सौम्य क्रांतिकला ५०८ । २६ शुक्रका स्पष्ट पात १२८ । १२ । ५५ भृगु ० ।५। ० । २६ भृगु-पात केंद्र १ । २३ । १२ । २९ भुजज्या २७५२ । ४४ याम्यविक्षेप ७६ । ३१ विक्षेप और क्रांतिके दिग्भेदके कारण अंतर किये स्पष्ट सौम्य भृगु क्रांति ४३१ । ५५ क्रमज्या ४३० । ५९ उत्क्रमज्या २७ । १२ द्युज्या ३४१० । ४८ कुज्या २०६ । ३० चरज्या २०८ । ८ इसका चाप वही चरासव सौम्य २० । ८ । ८ स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४१३ । ७ रात्र्यर्द्धघटिका युक्त किये भृग वा दिनार्द्धासव १६२१ । १५ ऊनित किये रात्र्यर्द्धासव ५२०४ । ५९ शुक्रदिनार्द्ध घटी १५ । ३१ रात्रिमें

समकालीन होनेके कारण सपक्ष ७ । २६ । ४१ । १५ गुरुः ४ । २१ । १६ । ५७ रविसे अधिक होनेके कारण वृश्चिककी भुक्तपल ३०७ गुरुके ऊन होनेके कारण तुलाकी भोग्य पल ९७ इन दोनोंका योग ४०४ ग्रह-सूर्यातराल घटी ६ । ४४ सूर्यास्त पीछेकी इष्ट घटी ५८ । ५ इन दोनोंका योग १४ । ४८ यह ग्रहास्त पीछेकी इष्ट घटीकोही गुरुरात्रिमानसे २८ । ४८ हीन किये गुरुशेप रात्रिघटी १४ । ० इसमें गुरु दिनार्द्ध युक्त किये गुरु प्राक्नत घटी २९ । ३७ खाग्नि ३० से हीन किये उन्नत घटी ० । २३ सायन रविः सपक्ष ७।२६।४१।१५ सायन सपक्ष शुक्र ६।२१ ।२६। ५७ भुक्तपल ३०७ भोग्यपल ९७ दोनोंका योग ४०४ शुक्र सूर्यांतराल घटिका ६।४४ सूर्यास्त पीछेकी इष्टघटी ।१३ दोनोंका योग १४।३८शुक्रास्त पीछे-का इष्टकाल १४ । ४८ शुक्रकी रात्रिमानसे २८ । ५४ हीन किये शेष रात्रिघटी १६ इसको शुक्रदिनार्द्धमें युक्तकिये शुक्रकी प्राऽतघटी २९ । ४३ खाग्नि ३० से हीनकिये उन्नत घटी ० । १७ अथ गुरुकी दृक्कर्म-साधनकी विधिः-गुरुयाम्यविक्षेप ५१ । १२ को विपुवच्छाया ५।४१ से गुणके २९५ । १६ द्वादश १२ के भागसे लब्ध २४ । ३६ को गुरुनत घटी २९ । ३२ से गुणके ७२८ । ३४ गुरुदिनार्द्ध १५ । ३७ के भागसे लब्धलिप्तादि ६ । २९ दृकपाली याम्यविक्षेप होनेके कारण धनकिये आक्षज संस्कृत गुरुः ० । ५ । ४७ । ५ सायन सत्रिभगुरुः३ । ११। ५७ सौम्यक्रांत्यंश २२ । ५ । २३ को याम्य विक्षेप कलासे ५१२१ गुणके ११५३ षष्टि ६० भागसे लब्ध आयन फल १९ । २३ क्रांति और विक्षे-पकी दिग्भेद कारण आक्षजगुरुमें उक्त फल युक्त किये दृक्कर्मजगुरुः ० ।६। ६ । ८ अथ दृक्कर्मशुक्रके साधनविधिः-शुक्रके याम्य विक्षेप ७६ । ३१ को विपुवच्छायासे गुणके ४३९ । ४८ द्वादश १२ भागसे लब्ध ३६।४० को शुक्रकी नत घटिकासे ३९ । ४३ गुणके ६१०८९ । ३७ शुक्रके दिनार्द्ध १५ । ३० के भागसे लब्ध ६९ । ४६ शुक्रका याम्यविक्षेप २९

लिप्तादिके कारण शुक्रमें युक्तकिये आक्षज संस्कृत गुरुः० । ६ । १०।१० १२ सायन सत्रिभगुरुः ६ । २१ । १६ । ५७ सौम्यक्रान्त्यंश २१ । १५ २३ को विक्षेपलिप्ता ७६ । ३१ से गुणके १७०३ षष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि २८ । २३ क्रांति और विक्षेपके दिग्भेद होनेका कारण अक्षज संस्कृत भृगुमें युक्तकिये दृक्कर्मसंस्कृत भृगुः ० । ६ । ३८ । ३५ दृक्कर्मगुरुः ० । ६ । १६ । ८ दोनोंके अंतरकी कला ३२ । २७ के भुक्त्यंतर के भागसे लब्ध दिनादि ० । ३३ । ३४ इष्टकाल ४१ ।२६ से हीनकिये शेष ७ । ५२ एवं ज्येष्ठशुदि ९ शुक्रके दिन सूर्योदयसे इष्टघटी ७ । ५५ समय गुरु और शुक्रका युद्धहुवा. ग्रहांतरकी कला ३२ । २७ को गुरुगति १३। १५ से गुणके ४९ । ५७ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध ७ । २४ को दृक्कर्म दत्त शुक्रमें हीनकिये गुरु ० । ५ । ५८ । ४४ एवं ग्रहांतरको शुक्र गतिसे गुणके भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध ३९ । ५२ दृक्कर्मज भृगुमें हीनकिये भृगु ० । ५ । ५८ । ४४ अथ तात्कालीन गुरुविक्षेप लानेकी विधिः गुरुः० ।५। ५८ । ४४पात२ । २६ । १७ । ५४केंद्र २ । २० । १९ । १०भुजज्या ३३८७ । २९ को विक्षेपसे गुणके २०३२४९ चलकर्णके भागसे लब्ध याम्यविक्षेप ११ । १३ अथ शुक्रविक्षेप लानेकी विधिःशुक्र० । ५ ।५८। ४८ पात १ । २२ । १४ । ११ भुजज्या २७१७।२६ को विक्षेप ३२ ६१५२से गुणके चलकर्णके भागसे लब्ध शुक्रयाम्यविक्षेप७५ । ३४ विक्षेपोंके दिशा साम्यताके कारण अंतरकी शेष २४ । २१ अथ गुरु और शुक्रके स्पष्टविष्कंभ लानेकी विधिः–गुरुमध्यविष्कंभ ५२ । ३० द्वि २ गुणके १०५ फिर त्रिज्यासे गुणके ३६०९९० त्रिज्यांत कर्णके योगके ७७५४ । ५१ भागसे लब्ध चंद्र कक्षापे स्पष्ट शुक्र विष्कंभ ५३ । १२ तिथि १५ के भागसे लब्ध शुक्रमानलिप्ता ३ । ३२ गुरुविष्कंभ ४८ । ४४ के तिथि १५ के भागसे लब्ध गुरुमानलिप्ता३।१५मानयोगार्द्धलिप्ता३ । २४

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषा विभूषिते ग्रहयुद्ध गणित विधिवर्णननाम त्रयोदश विनोदः ॥१३॥

अथ ग्रह और नक्षत्रके योग होनेकी गणितविधिः—यहां रोहिणी और शुक्रके योग होनेका उदाहरण लिखा जाताहै संवत् १६४१ शक १५०६ द्वितीय आषाढवदि १ रविदिन सृष्टयब्द १९५५८८४६८५सिद्धांत सृष्टया-घहर्गण ७१४४०४४००७९४१कलियुगाब्दाः ४६८५ कलिअहर्गण१७ ११३२८ अर्द्धरात्रिके इष्टपे देशांतर संस्कृत मध्यमरविः२ । १५।३६।२९ शुक्रशीघ्रोच्च ०।१०।५०।५६ स्पष्टरविः२।१५।४०।२४ गति ५६ । ५० शुक्रस्पष्ट१।१९।१३।४३गति ७२ ।६शुक्रके चतुर्थ चलकर्ण५०।१४।५३ स्पष्टभृगुपात ।१९।५।३५ अथ शुक्र और रोहिणीके सम लिप्ता करनेकी विधिः—रोहिणी ध्रुव १ । १९ । ३० । ० स्पष्ट शुक्र १ । १९ । २३ दोनोंके अंतर लिप्ता ६ । १७ शुक्रकी स्पष्ट गतिके भागसे लब्ध दिनादि० । ५ । १३ यहां रोहिणीसे शुक्र स्पष्ट न्यून होनेके कारण इष्ट घटीमें युक्त किये ५१ । २२ समलिप्ता रोहिणी १ । १९ । ३० शुक्र १ । १९ ।३० तत्कालरविः २ । १५ । ४५ । ३० अथ रवि और शुक्र रोहिणीके दिनमान लानेकी विधिः—रविका स्वाहोरात्रासव २१६५७ । २८ रविकी सौम्यक्रांति १४३८ । १९ क्रांतिज्या १३९ । २८ उत्क्रमज्या २९७ । ३० द्युज्या ३१४० । ३० कुज्या ६६८ । ३९ चरज्या ७३१ । ५९ चरासव ७३७ । ३७ दिनार्द्धासव ६१५१ । ५९ रात्र्यर्द्धासव ४६७ ६ । ४५ दिनार्द्धघटी १७ । ५ रात्र्यर्द्धघटी १२ । ५९ अहोरात्रघटी ६० । ८ अथ शुक्रके दिनमान लानेकी विधिः—स्वाहोरात्रासव २१ ६७२ । ५४ भृगुयाम्यविक्षेप ६१ । १६ सौम्यक्रांति १३०५ । ३० विक्षेपसंस्कृत स्पष्ट क्रांति १२४४ । १४ क्रांतिज्या १२१६ । १७ क्रमज्या २३३ । ५१ द्युज्या ३२२४ । ९ क्षितिज्या ५८२ । ४८ चरासव ६२६ । ४४ दिनार्द्धासव ६०४४ । ५८ रात्र्यर्द्धासव ४७९१ । ३० दिनार्द्धघटी १६ । ४७ रात्र्यर्द्धघटी १३ । १८ अथ रोहिणीके दिनमान लानेकी विधिः—रोहिणीका स्वाहोरात्रासव २१६०० रोहिणी याम्य विक्षेप ३०० क्रांति १३०५ । ३० रोहिणी स्वाहोरात्र सौम्य वि-

क्षेपसंस्कृत स्पष्ट क्रांति१००५ । ३० क्रांतिज्या ९९० । ४९ उत्क्रमज्या १४७ । २८ द्युज्या ३२९०।३२ क्षितिज्या ४७५ । ३५ चरज्या ४९६ । ५४ चरासव ४९७ । ५४ दिनार्द्धासव ५८९७ । ५४ रात्र्यर्द्धासव ४९०२ । ६ दिनार्द्धघटी १६ । २३ रात्र्यर्द्धघटी १३ । ३७ अथ नतोन्नतसाधनविधिः—सायन रवि ३ । २ । १ । ५१ सायन रोहिणी और शुक्र २ । ५ । ४६ । ३१ रात्रिके इष्टके कारण सषड्‌ रविः ९ । २ । १ । ५१ शुक्र ८ । ५ । ४६ । ३१ अंतरघटी ४ । २८ रात्रिगत घटीमें १८ । १२ युक्त किये २२ । ४० सूर्य रात्र्यर्द्ध घटीमें हीन करनेसे उन्नत घटी २० । २४ रोहिणी नतघटी २० । १९ ·अथ दृक्कर्मसाधनकी विधिः—शुक्र याम्य विक्षेप ६१ । १६ को विषुवद्भासे गुणके ३५२ । १७ द्वादश १२ भागसे लब्ध २९ । २१ को नतघटी २० । २४ से गुणके ५९८ । ४४ स्वदिनार्द्धके १६ । ४७ भागसे लब्ध ३५ । ४० शुक्रमें युक्तकिये आक्षज संस्कृत भृगुः १ । २० । २४ सायनत्रिभ भृगुः ५ । ५ । ४६ । ३१ भुजज्या १४०९ । १७क्रांतिज्या ५७२ । ३९ क्रांतिसौम्य ५७५ । २८ भागादि ९ । ३५ । १८ को विक्षेपलिप्तासे ६१ । १६ गुणके ५८७ षष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि ९।४७ आक्षज भृगुओं में युक्तकिये दृक्कर्मज भृगुः १ । २० । १५ । २७ रोहिणी याम्यविक्षेप ३०० को विषुवद्भासे गुणके १७२५।० द्वादश १२ भागसे लब्ध १४३ । ४५ नतघटी २० । १९ से गुणके २९२० । ३० दिनार्द्ध १६ । २३ के भागसे लब्ध १७८ । १६ कलादि ब्राह्य ध्रुवमें युक्त किये आक्षज ब्राह्य ध्रुवकः १ । २२ । २८ । १६ सत्रिभ सायनध्रुवः ५ । ५ । ४६ । ३१ क्रांति सौम्य अंशादि ९ । ३५ । १८ विक्षेप लिप्ता ३०० से गुणके विकला २८७७ कलादि ४७५७ अक्षज ध्रुवमें युक्त किये दृक्कर्मसंस्कृत ब्राह्य ध्रुवकः १ । २६ । ३६ । १३ दोनोंकी अंतर कला १८०४६ लब्ध दिनादि ३० । २५ पूर्वानीत समकल कालमें युक्त किये १ । ५१ । २२ ब्राह्य भृगुका युक्तकाल ४ । २२ । ४७ द्वितीयापाढ वदि ४ बुधे सूर्योदयसे घटी २२ । ४७ शुक्र और रोहिणीका योग हुवा अथ तत्काल

विक्षेप लानेकी विधिः—तत्काल मध्यम रविः २। १८।९।५२ शुक्र शीघ्रोच्च ०। १५। ०। १७ चतुर्थ चलकर्णकः ५०५७। ८ स्पष्ट पात १। २९। १०। ५९ याम्यविक्षेप ५६। ५० रोहिणी याम्य विक्षेप ३०० दोनोंके दिक्तुल्यके कारण अंतर किये ब्राह्म्य भृगुकी अंतर कला २४३। १७ तीन ३ के भागसे लब्ध अंगुलात्मक अंतर ८१। ३ चौबीस २४ के भागमें लब्ध हस्तात्मक अंतर ३। ९। ३॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहनक्षत्र-
युतिकथनं नाम चतुर्दशविनोदः ॥ १४ ॥

अथ ग्रहोदयास्तविधिं व्याख्यास्यामः—संवत् १६४१ भाद्रपद वदि ५ रविदिन सिद्धांत अहर्गणः ७१४४०४०० कलि अहर्गणः १७११३९१ उस दिन देशांतर संस्कृत रवि मध्यमः ४। १६। ५१। ४२ शुक्र शीघ्रोच्च ३। २०। ३४। ५५ रविस्पष्ट ४। १५। ४। ४० स्पष्टगति ५७। ५७ मंदफल ऋण १। २२। ३४ स्पष्टशुक्र ४। ५। ६। ३ गति ७३। ५२ चलकर्ण ५७९४। १० स्पष्टभृगुपात २। १। ३ सौम्य विक्षेप५४।९शुक्र की सौम्य क्रांति८२१।१३शर संस्कृतस्पष्टक्रांति ९३५। २२भृगुओंका स्वाहोरात्रासव२१६८४५६क्रांतिज्या ९३६।४७ क्रांतिका उत्क्रमज्या १२३।१३ द्युज्या३१०।४७क्षितिज्या४४२।३९चरज्या४५९। ३८ चरासव ४६०। ४६ दिनार्द्धासव ५८८२। ० रात्र्यर्द्धासव ४९६०। २० दिनार्द्धघटी १६। २० रात्र्यर्द्धघटी १३। ४७ सायन रवि ५। १। २१। ११ इसकी ज्या ६६९। १९ उत्क्रमज्याद्युज्या ३३७२। २७ क्षितिज्या ४४२। ३९ चरज्या ३२६। ५८ चरासव ३२७। २५ दिनार्द्धासव ५७८३। ५४ रात्र्यर्द्धासव ५०९९। ४ दिनार्द्धघटी १५। ५७ रात्र्यर्द्धघटी १४। ८ सायन रवि ५। १। २१। ११ सायन भृगु ४। २१। २२। ३० अथ शुक्रके दृक्कर्मसाधनविधिः—शुक्रकी भाक्षज्ञ १४। २५ विक्षेप ५४। ९ को विपुवद्भासे गुणके ३११। २२ द्वादश १२ के भागसे लब्ध २५। ५७ नतमे गुणके ३७४। ७

दिनार्द्धके भागसे लब्ध २२ । ५५ कलादि शुक्रमें ऋणकिये आक्षज भृगुः ४ । ४ । ४३ । ८ याम्य क्रांत्यंश १८ । ३० । २५ को विक्षेपसे गुणके १००२ षष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि १६।४२ आक्षज शुक्रके क्रांतिविक्षेपकी भिन्नदिशाके कारण योगकिये दृक्कर्मजभृगु ४ । ४ । ५९ । ४०

अथ रवि और शुक्रके अंतर प्राणसाधनकी विधिः—सायनाक्षज रविः५। १ । २१ । ११ सायन दृक्कर्मभृगुः ४ । २१ । १६।२१ दोनोंका अंतर प्राण ६९० के षष्टि ६० भागसे लब्ध कालांशा ११। ३० शुक्रका दृश्यांश १० इन दोनोंका अंतर कला ९० मध्यकालांशको हीनकिये आगतकालांश अधिक होनेके कारण इष्टावधिसे आगे शुक्रका अस्त होना संभव है.

अथ रवि और शुक्रकी कालगति लानेकी विधिः—रविगति ५७। ५७ की सिंहासु २०७० से गुणके ११९९५६ । ३० अष्टादशशत १८०० के भागसे लब्ध रविकालगति ६६ । ३८ शुक्रकी स्पष्टगति १३ । ५२ की सिंहासु २०७० से गुणके १५२९०४ । = खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध शुक्रकालगति ८४ । ५६ कालगति दोनोंका अंतर १८ । १८ स्पष्टमध्य कालका अंतर ९० के कालगत्यंतरके भागसे लब्ध दिनादिफल ४ । ५५ धन हुवा जिससे भाद्रपदवदि ९ गुरुके दिन ५५ घटीऊपर पूर्वमें शुक्रास्त हुवा. अथ नक्षत्रोदयास्तसाधनविधिः—द्वितीयाषाढवदि ११ बुधदिन चांद्रनक्षत्रोदयसाधनविधि लिखतेहैं. सिद्धांत अहर्गण ७१४४ ०४००७९५१ कलिअहर्गण १७११३२४ रविमध्यमोदय कालिक २ । २४ । ४१ ।४९ रविस्पष्ट २ । २४ । २४ । ३२ गति ५६ । ५१ मृगध्रुवक ३७८० राश्यादि २ । ३ । ० । ० सायन २ । १९ । १६ । ३१ इसकी ज्या ३२७७ । १० क्रांतिज्या १३७२ । १६ क्रांतिसौम्य १४१२ । ५१ मृगयाम्यविक्षेप लिप्ता ६०० शरसंस्कृत स्पष्ट क्रांतिसौम्य ८१२ । ५१ क्रांतिज्या ८०५ । १० क्रांतिउत्क्रमज्या९७ । १४ द्युज्या ३३४० । ४६ क्षितिज्या ३८५ । ४८ चरज्या ३९७ । २ चरासव सौम्य ३९७ । ४८ दिनार्द्धासव ५७९७ । ४ रात्र्यर्द्धासव

५००२ । १२ दिनार्द्धघटी १६ । ६ रात्र्यर्द्धघटी १३ । ५४ सायन सूर्य ३ । १० । ४१ । ८ इसकी ज्या ३३७७ । ३४ क्रांतिज्या १३७२ । ३६ क्रांतिसौम्या १२ स्वाहोरात्रासव २१६४ । ४८क्रांतिज्या १३७२ । २६ क्रांति उत्क्रमज्या २८७ । ३ द्युज्या ३१५० । ५७ क्षितिज्या ६५७ । ४२ चरज्या ७१७ । ३७ चरासव ४६९३ । १७ दिनार्द्धघटी १७ । ३ रात्र्यर्द्धघटी १३ । २ अथ इन दोनोंके अंतरप्राणसाधनकी विधिः—सायनरविः ३ । १० । ४१ । ८ सायन मृग ध्रुवक २ । १९ । १६ । ३१ दोनोंकी अंतरघटी ३ । ५१ अथ दृक्कर्मसाधनविधिः-मृगकी प्राङ्गत १२ । १५ याम्यविक्षेप लिप्ता ६०० को विषुवद्भासे गुणके ३४५० । ० द्वादश १२ भागसे लब्ध २८७ । ३० को नतघटीसे गुणके ३५२१ । ५२ दिनार्द्ध १६ । ६ के भागसे लब्ध कलादि २१८ । ४५ अंशादि ३ । ३८ । ४५ याम्यविक्षेप और प्राङ्गतके कारण धनात्मक आक्षजफल हुवा सत्रिभ सायन मृग ध्रुवक ५ । १९ । १६ । १९ इसकी ज्या ६३९ । ५४ क्रांतिज्या २६० । ० क्रांति२६० । ९ अंशादि ४ । २० । ९ विक्षेप लिप्तासे गुणके विकला २६०१ कलादि ४३ । २१ क्रांति और विक्षेपकी भिन्नदिशाके कारण धनात्मक आयन फलहुवा अयन और अक्षजकी समजातिके कारण योगकिये ४ । २२ । ६ मृगध्रुवमें युक्तकिये दृक्कर्मज मृग ध्रुवक २७ । २२ । ६ सायन दृक्कर्मज ध्रुवक २ । २३ । ३८ । ३७ सायनरवि ३ । १० । ४१ । ८ रविभुक्तप्राण ७३२ ध्रुवकका भोग्यप्राण ३८४ दोनोंका योग १११६ पष्टि ६० के भागसे लब्ध कालांशा १८ । ३६दृश्यांशसे हीन होनेके कारण गम्य उदय होगा.स्पष्टमध्य कालांशकी अंतरकला,१४४ रवि कालगति ६४ । ४८ के भागसे लब्ध दिनादि २।१३ जिससे द्वितीयाषाढवदि १३ शुक्रके दिन घटी १३ के समयमें मृगशीर्ष नक्षत्रका उदयहुवा अथ चंद्रशृंगोन्नतिसाधनविधिः-संवत् १९४१प्रथम आषाढ शुदि १ शनिदिन सृष्टिगताब्द १९५५८८४६८५ सृष्टि अहर्गण ७१४४०४००७९२६ कलिगताब्द ४६८५ कलि अहर्गण १७११२

१९ अस्तकालीन रविमध्य २ । ० । ३६ । ३३ अस्तकालीन चंद्रमध्यम २ । १५ । ११ । ५८ उच्च ८ । १७ । ५२ । ३२ पात ७ । १५ । ३५ । ३३ रविस्पष्ट २ । १ । १४ । ३८ गतिः ५८ । ५७ चंद्रस्पष्ट २। १४ । ५७ । ४२ गति ८६० । ११ चंद्रकी याम्य विक्षेपलिमा १३२ । २२ सायन चंद्र ३ । १ । १४ । ३३ इसकी ज्या ३४ । ३५ । ३७ क्रांतिज्या १३९६ । ३ सौम्यक्रांति १४३८ । ५७ शर संस्कृत स्पष्ट-क्रांति १३०६ । ३५॥

अथ चंद्रदिनमान लानेकी विधिः—स्वाहोरात्रासव २२५८० । ३६ क्रांतिज्या १७२७४ । २८ क्रांतिउत्क्रमज्या २४५ । ४५ दिन व्यासदल ३१९२ । १५ क्षितिज्या ६१० । ४१ चरज्या ६५७ । ४२ चरासव ६६१ । ३१ दिनार्द्धासव ६३०६। ४० रात्र्यर्द्धासव ४९८३ । ३८दिना-र्द्धघटी १६ । ११ रात्र्यर्द्धघटी १३ । १५ अथ चंद्रदृक्कर्मसाधनविधिः—चंद्रकी पश्चिमनत १५ । ११ विक्षेप १३३ । २२ को विपुवद्भासे ७६१ । ६ गुणके द्वादश १२ के भागसे लब्ध ६३ । २५ को नतघटीसे गुणके ९६२ । ५२ स्वदिनार्द्ध १७ । ३१ के भागसे लब्धकलादिफल ५४।४८ याम्यविक्षेप और पश्चिमनतके कारण आक्षज फल ऋण हुवा सायन सत्रिभ चंद्र ६ । १ । १४ । १३ इसकी ज्या ७४ । १३ क्रांतिज्या ३० । ९ क्रांति ३० । ९ भागादि ० । ३० । ९ को विक्षेपलिप्तासे गुणके विकला ६७ कलादि १ । ७ क्रांतिविक्षेपकी एक दिशाके कारण ऋणात्मक अयन फल हुवा. आक्षज और आयन फलकी समान दिशाके कारण योगकिये ५६ । ५ दृक्कर्म फल ऋणको चंद्रमें हीनकिये दृक्कर्मज चंद्र २ । १४ । १। ३७ अथ स्पष्टकालांशसाधनविधिः-सायन रवि सपड्ग ८ । १७।३१। ९ सायन सपड्ग दृक्कर्म चंद्र९।०।१८।८दोनोंका अंतर भाग८७०को षष्टि६० भागसे लब्ध कालांश १४।३०मध्य कालांशके अधिक होनेके कारण गतोदय हुवा.चंद्रकी कालगति८७१।३९सूर्य कालगति ६४।५९ स्पष्ट मध्य कालांश की अंतर कला १५०के गत्यंतर८६०।४४के भागसे लब्ध दिनादि०।५।२९

जिससे सूर्योदय घटी५।२९ चंद्रोदयभुक्ति ४०० कलादि६।४३रविफलको अंतर घटीसे गुणके चंद्रभुक्ति ५२९९ चंद्रफल अंशादि १ । २८ । १९ फलयुक्तरवि ९ । ४ । ४१ । ५८ फलयुक्तचंद्र १० । २१ । २६ । ३४ अंतरघटी ७ । १७ स्थिरसायनरविः ३ । ४ । ३५ । ५ सौम्यक्रांति १४३४ । ३४ चंद्रकी स्पष्ट क्रांति याम्य ५४७ । ४७ क्रांतिके दिग्भेदसे योग ११८८१ । २१ इसकी ज्या १८७३ ।४७ याम्य अथ मध्याह्न चंद्र की प्रभा और कर्ण लानेकी विधिः—चंद्रभुक्ति ७४८ । ३ को नत घटी २२ । २७से गुणके अंशादि ४ । ३९ । ५४ सायनकालीनदृक्कर्मज चंद्रमें युक्त किये मध्याह्न समय स्पष्टचंद्र १० । ८ । १९ । २१ सायन १० । २४ । ३५।५२ याम्य क्रांति ८१७ । ८ मध्याह्न पात ७ । १४ । ३७ । ६ सौम्य विक्षेप २६८ । १९ याम्य स्पष्ट क्रांति ५४८ ।४१ एकदिशि कारण योग २०८५ । ५८ इसकी ज्या १९४९ ।३५ कोटिज्या २८२ ३ । ३० भुजज्या को १२ गुणके २३३९५ । ० कोटिज्या के भागसे लब्ध छाया ८ । १७ त्रिज्याको १२ गुण ४१२५६ के कोटिज्याके भागसे लब्ध कर्ण १४।३६ पूर्वानीतज्या १८७३ । ४७को कर्णसे गुणके २७३५७ । १४ फिर १२ गुणके अक्षज्या १७८३२ दोनोंका योग ४५१८९ । १४ लंबज्याके भागसे लब्ध याम्य बाहु १४ । ३४ इसका वर्ग २१२ । ११ कोटि १२ इसका वर्ग १४४ दोनोंका योग ३५६ । १ १ इसका मूल कर्ण १८ । ५२ सपङ्गरविः ८ । १८।१८।३४ दृक्कर्म चंद्र १० । ३।३९।२७ में सूर्य हीनकिये १ । १५ । २० । ५३ इसकी कला २७२०।५३ नवशत ९०० के भागसे लब्ध शुक्ल ३ । १ चंद्रबिंब १० । ६ से शुक्लको गुणके ३० । २८ द्वादश १२ के भागसे लब्ध स्पष्ट शुक्ल २। ३२ अथ शृंगोन्नतिव्याख्यानं—जिस दिनको चंद्रशृंगोन्नति देखै उस दिन सायंकालीन रवि और चंद्रस्पष्ट करके फिर दृक्कर्म संस्कार चंद्रमाके देना उस की स्पष्ट क्रांति करनी यदि क्रांतिकी दिक्साम्यता हो तो अंतर करना. भिन्न दिशा हो तो योग करना. फिर जो गणित हो जिसकी ज्या कर लेनी

चाहिये सूर्यसे चंद्रमा जिस दिशामें हो उसी दिशा की ज्या होती है. फिर चंद्रकी नतघटीसे चंद्रभुक्ती गुणके फिर षष्टि ६० भागसे लब्धकलात्मक फल प्राप्त हो वह प्राक्पाली चंद्रदक्कर्म चंद्रमें युक्त करदेना. यदि प्रत्यक्पाली चंद्र हो तो हीन करनेसे चंद्र मध्याह्न समयमें स्पष्ट चंद्र होताहै. फिर नतघटिकासे प्रात चंद्रको माध्याह्निक करके फिर उसकी क्रांति कर लेनी फिर त्रिप्रश्नाधिकारमें जिस विधिसे छाया और कर्णसाधन किया उस विधिसे कर्ण साधके ज्याको गुण लेनी चाहिये. वह ज्या यदि उत्तर हो तो द्वादश १२ से अक्षज्याको गुणके फिर उत्तज्या इसमें हीन किये याम्य शेष होताहै. लंबज्याके भागसे याम्य भुज होताहै. यदि द्वादश गुणित अक्षज्यामें कर्णगुणित उत्तरज्या हीन होय तो विलोमविधिसे शोधन किये शेष सौम्य होताहै. द्वादशांगुल शंकुका वर्ग करके फिर भुजवर्ग करलेना दोनों वर्गोंका योग करके उसका मूल लेना वस उसीका नाम कर्ण है. सूर्य हीन करके फिर उसी चंद्रमाकी कला करलेनी फिर उसके नवशत ९०० के भागसे मध्यम शुक्ल होता है फिर मध्यशुक्लमानको चंद्रबिंबांगुलसे गुणके द्वादश १२ भागसे लब्ध स्पष्ट शुक्ल होताहै. फिर जलवद् समान भूमिपे दिक्साधन करके सूर्यसंज्ञक बिंदुचिह्नकरके सौम्य भुज हो तो सौम्य देना याम्यभुज हो तो याम्य देना चाहिये. फिर भुजसे पश्चिमाभिमुख द्वादशांगुलात्मक कोटि देनी चाहिये सूर्यसंज्ञक बिंदुके और कोटिके अग्रभागके मध्यमें कर्ण देना. कोटि और कर्णके योगमें चंद्रबिंबार्द्धांगुल मंडल लिखना उसी जगे मंडलमें कर्ण सूत्र करके दिक्सिद्धि कल्पना करनी कर्ण और बिंबके योगमें मंडल मध्य कर्ण सूत्रमार्ग करके शुक्ल देदेना चाहिये. शुक्लाग्रसे याम्योत्तर रेखा करनी चाहिये. फिर रेखाके अग्रभाग जहां लगे तहां बिंदुका चिन्ह देना. फिर बिन्दुके सम्मुख दक्षिणोत्तर रेखामें बिंदुका चिन्ह करना वही दक्षिणोत्तर बिंदुसे मत्स्यसाधना चाहिये मत्स्यके मध्यमें सूत्र प्रसारना चाहिये. सूत्र और बिंदुका जहां योग तहां बिंदु विधान करना कोटिकर्णादि साधनविधिमेंही भुजांत उन्नत शृंग चंद्रमाकी जाननी कोटिको ऊंची

उठाके चंद्रमाकी आकृति नलिकामें देखलेनी चाहिये अथ चतुर्थ केंद्रके वक्रारंभभागाः—मंगलके १६४ बुधके १४४ गुरुके १३० शुक्रके ८३ शनिके ११५ अथ चतुर्थ केंद्रके मार्गारंभभागाः—मंगलके १९६ बुध-के २१६ गुरुके २३० शुक्रके २२७ शनिके २४५ एक युगमें ६०० भगण अयन ग्रहेके हैं. अथ ग्रहों के आर्यसिद्धांतके मतसे बिंबव्यासाः—सूर्य के ६५०० चंद्रके ४८० हैं और मंगल १३ बुध २१ गुरु ३१ शुक्र ६३ शनि १५ अथ नक्षत्र कलादिध्रुवाः—अश्विनी ४८ भरणी ४० कृ-त्तिका ६५ रोहिणी ५७ मृगशीर्ष ५८ आर्द्रा ४ पुनर्वसु ७८ पुष्य ७६ आश्लेषा १४ मघा १४ पूर्वाफाल्गुनी ६४ उत्तराफाल्गुनी ५० हस्त ६० चित्रा ४० स्वाती ७४ विशाखा ७८ अनुराधा ६४ ज्येष्ठा १४ मूल ६ पूर्वाषाढा ४ उत्तराषाढा ० अभिजित् ० श्रवण० धनिष्ठा० शततारा ८० पूर्वाभाद्रपदा ३६ उत्तराभाद्रपदा ३२ रेवती ७९ अथ नक्षत्रोंके ग्रह विक्षेप (शर) भागा.—अश्विनीउ. १० भरणी उ. १२ कृत्तिका उ. ५ रोहिणी दक्षि०५ मृगशीर्ष १० आर्द्रा ९ पुनर्वसु ६ पुष्य ० आश्लेषा द.७ मघा ३० पू.फा.१२उ.फा.१३ हस्त द. ११ चित्रा २ स्वाती उत्तरा ३७ विशाखा दक्षिण १॥ अनुराधा द.३ ज्येष्ठा द. ४ मूल द. ९ पू.षा द.५॥ उ. षा द. ५ अभिजित् उ. ६० श्रवण उ. ३० धनिष्ठा उ. ३६ शततारा द.॥ पूर्वाभाद्रपदा उ. २० उ. भा. उ. २६ रेवती० अगस्तिभाग द. ८० कर्कादि भागमें है. ध्रुव ३ राशिलुब्धक ध्रुव २.राशि २० अंश दक्षिण ४ भागपर है. और वृषराशिके २२ के अंश ऊपर अग्नि और ब्रह्म हृदयको ध्रुव है. अग्नि ८ ब्रह्म हृदय ३० का विक्षेप उत्तरकी तरफ है. अथ रोहि-णीके वेध जाननेकी विधिः—वृषराशिके ७ अंश ऊपर ग्रह प्राप्त होवे और उस ग्रहको दक्षिण शर २ अंशतक होवै तो निश्चय ग्रह रोहिणी को भेदन करता है. नहीं तो नहीं करता है. अथ ग्रहनक्षत्रके बरोबर आजावे सो जाननेकी विधिः—पू. फा. उ. फा. पू. भा. उ. भा. पू. षा. उ. षा. विशा-खा अश्विनी मृगशीर्ष इनका योग तारा उत्तरके हैं. हस्तका पश्चिमोत्तर

द्वितीय तारा है. धनिष्ठाके पश्चिम तारा ज्येष्ठा श्रवण अनुराधा. पुष्यके मध्यम तारा (बीचके) है. भरणी, कृत्तिका, मघा, रेवती इनके दक्षिण योगतारा है. रोहिणी, मृगशीर्ष, मूल और आश्लेषा इनके पूर्वके योग तारा है उक्त योग तारा पुष्ट और तेजयुक्त है. अथ ग्रह और नक्षत्रोंके कालांश जाननेकी विधिः—चंद्रका १२मंगलका १७बुधका पूर्वमें १२ पश्चिममें १४ गुरु ११शुक्रका पूर्वमें८पश्चिममें १०शनि १५स्वाति अगस्त्य मृगव्याध चित्रा ज्येष्ठा पुनर्वसु अभिजित् ब्रह्महृदय इन्होंको १३हस्त श्रवण फाल्गुनी दोनों धनिष्ठा रोहिणी मघाके १४विशाखा अश्विनीके १४कृत्तिका अनुराधा मूल आश्लेषा-आर्द्रा . पू. षा. उ. षा. के १५ भरणी पुष्य मृगशीर्षके २१शततारा. पूर्वोत्तराभाद्रपदा रेवती अग्नि ब्रह्मा अपांवत्स इन्होंके १७ अंश सूर्यके अंतरसे उदयास्त होताहै और अभिजित् ब्रह्महृदय स्वाति श्रवण धनिष्ठा उत्तराभाद्रपद यह नक्षत्र उत्तर दिशामें जियादा होनेसे और उनका उत्तरशर जियादा होनेसे सूर्यसे अस्त नहीं होतेहैं.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते उदयास्तादि-
कथनं नाम पंचदशविनोदः ॥ १५ ॥

अथ कालज्ञानम्—यह कालज्ञान शास्त्रकारोंनें अनेक रीतियोंसे लिखाहै और जिसके लिये अनेक यंत्र लिखे और बनायेहैं परंच यह यंत्र सूर्यसे ही कालसूचना कर सकेहैं. सूर्यास्त होने पीछे यंत्रोंकी कुछ उपाय चलसक्ता नहीं और रात्रिमें कालका ज्ञान चंद्रमासे वा तारागणोंसे भी लिखाहै. परंच जब बद्दल होजावें तब दिन वा रात्रि इन दोनोंहीमें कौन यंत्र वा शंकु काम देवेगा. अतएव ऐसी दशाके बीच इष्टज्ञान होना बड़ा मुष्किल है.जिसके लिये जलकी घटीयंत्र एक एक गांवमें पंचायतसे वा राज्यस्थानसे जरूर होना चाहिये अथवा (स्वयंभ्रमण) इंग्रेजी घटी होनी चाहिये जिससे इष्टज्ञान की भूल न रहै क्योंकि कालज्ञानके विना संसारका कोई भी काम ठीक ठीक नहीं बनसक्ता। इति कालज्ञानम्. अथ चंद्रदर्शनम्—यह चंद्रमा अमावस

के दिन हमेशा सूर्यके तुल्य राशिअंश कला विकला समान होके सूर्यके साथ ही उदयहोके और सूर्यके साथही अस्तहोताहै, जिससे पृथ्वीकी प्रजाको नहीं दीखसकता और दूसरे दिन१२अंशोंका अंतर पाके फिर उदय होगा तो फिर भी सूर्यके समीपही रहनेसे नहीं दीख सकेगा, और जब द्वितीयाके दिन २४ अंशोंके अंतरसे चंद्रमा सूर्यके प्रकाशसे सायंकालमें किंचित् दीखपरेगा फिर तृतीयाको कुछ विशेष चतुर्थीको उससे कुछ विशेष ऐसे प्रतिदिन विशेष दीखता २ पूर्णमासीके दिन सूर्य अस्त होगा जब उसीसमय चंद्रमाका उदय होगा. जिससे सूर्यका प्रकाश चंद्रमाके परिपूर्णबिंबमें समसूत्रके आजानेके कारणही चंद्रबिंब प्रजाको पूर्णिमाकी रात्रिभर परिपूर्ण दिखलाई देतारहेगा और फिर सूर्यके सम सूत्रकी न्यूनता होती जायगी त्योंत्यों हीन कलाभी चंद्रमाकी होती चलीजायगी.उक्त चंद्रमाका प्रकाश सूर्यसेही केवल आरसी-वत् है,स्वतःप्रकाशी नहींहै किंतु यह चंद्र परप्रकाशी है, इति चंद्रदर्शनम् ॥

अथ त्रैराशिकगणितकी व्याख्याः—यह त्रैराशिक गणित सबगणितोंमें व्याप्त होरहाहै. व्यक्त और अव्यक्त गणित जितने प्रकारके हैं वे सब त्रैरा-शिककेही आश्रित हैं जिसकारण ज्योतिर्विदको चाहिये कि, त्रैराशिक गणितका प्रथम अभ्यास वारंवार करै उक्त गणितका अनुभव जिसको स्पष्ट होजायगा तो वह पुरुष कभी कोई गणितमें न ठगावेगा उक्त त्रैराशिक गणित लोम विलोम दोप्रकारसे है १ फल १ इच्छा २ सजातिमान् ३ इन तीन भेदोंसे विभूषित है. अमुकको इतना मिलै तो इतनेको कितना मिलै ऐसे अमुक तो सजातिमान्-इतना फल २ और इतनेको कितना मिलै यह इच्छा कहलाताहै ३ जब कोई भी गणितविषयमें इच्छासे फलको गुणके और सजातिमानके भागसे लब्ध लेवे इसीका नाम तो लोम त्रैराशिक है और सजा-तिमान्से इच्छाको गुणके फलके भागसे लब्ध अंक लेना इसका नाम विलोम-त्रैराशिक है अब इन दोनोंका थोडा उदाहरण लिखतेहैं. ऐक रुपयेकी ५ शेर

१ एक रुपयेकी ५ शेर वस्तु मिले तो ५ रुपयेकी पचीस शेर मिले. और तीन वर्षके बैलका १००रुपया तो १० वर्षके बैलका ३० रुपया क्योंकि [redacted] बुढाहुवाहै ।

वस्तु मिले तो पाँच रुपयेकी कितनी मिले ? यह त्रैराशिक लोम कहलाताहै और ३ वर्षके बैलका १०० रुपया तो १० वर्षके बैलका क्या ? यह विलोम त्रैराशिक कहलाता है विशेष लिखना तो व्यर्थ है परंतु जैसे विष्णु सर्व चराचरके व्यापक हैं ऐसे त्रैराशिक गणितभी सब गणितोंमें व्यापक होरहाहै

अथ परिकर्माष्टक समझेनकी विधिः—उक्त गणितके आठ भेद हैं. वे क्रमसे १ वियुक्त २ युक्त ३ गुण ४ भाग ५ वर्ग ६ वर्गमूल ७ घन और ८ घनमूल. जिनमें एक अंकमें दूसरे अंकको निकाल देनेका नाम वियुक्त गणित है १ एकमें दूसरे अंकको जोडदेनेका नाम युक्तगणित है २ इसके बराबर इतनातक कितना होय यह गुणाकार कहलाता है ३ और अमुक गणित का इतना भाग करदेना वही भागाकार कहलाताहै ४ और दोनों अंक समानका गुणक वर्ग कहलाताहै ५ यह कितना अंक परस्परमें गुणा हुवाहै जिसको जान लेनेका नाम मूल कहलाता है ६ एक अंकको गुणके फिर उस अंकसे गुणाहुवा अंकको फिर गुणना वह अंक घन कहलाता है ७ और उक्त घन कितने अंकसे गुणाहुवा है ऐसे जान लेना बस यही घनमूल कहलाता है.

अथ भगणादिमानम्—एक महायुगमें सूर्य बुध शुक्रके ४३२०००० (राशि) भगण हैं. मंगल शनि और गुरु शीघ्रोच्चके भी ४३२०००० पूर्वोक्त भगण हैं. चन्द्रके ५७७५३३३६ मंगलके २२९६८३२ बुध शीघ्रके १७९३७०६० गुरुके ३६४२२० शुक्र शीघ्रके ७०२२३७६ शनिके १४६५६८ चन्द्रोच्चके ४८८२०३ राहुके २३२२३८ सप्त ऋषियोंके १६०० नक्षत्रोंके १५८२२३७८२८ भगण हैं और ऐसे ही एकमहायुग में १५७७९१७८२८ सावनदिन (सूर्य उदय) होते हैं और उक्त महायुगमें चांद्रदिन १६०३०००००८० होतेहैं. अधिमास १५९३३३६ होते हैं. क्षयतिथि दिन २५०८२२५२ और रविमास ५१८४०००० होतेहैं. **अथ मंदोच्चभगणाः**—एक कल्पमें सूर्यके ३८७ मंगलके २०४ बुधके ३६८ गुरुके ९०० शुक्रके ५३५ और शनिके ३९ मंदोच्च भगण

होतेहैं. अथ पातभगणाः—मंगल पातके २१४ बुधके ४८८ गुरुके १७४ शुक्रके ९०३ और शनि पातके ६६२ भगण एक कल्पमें होते हैं. अथ ज्यार्द्धखंडाः—प्रथम ६११९४४९२२५ द्वितीय १३१५११०५८९० तृतीय १७१८१५२० चतुर्थ २०८३१८१० पंचम २४३१३२६७ षष्ठ २७२८२५८५ सप्तम २९७८२८५८ अष्टम ३१७८३०८४ नवम ३४०८३३७२ दशम ३४३८३४३१ अथ उत्क्रमज्यार्द्धखंडाः—प्रथम ७६६२८७ द्वितीय ३२४२६११८२ तृतीय ८२३७१०२७९ ४६० चतुर्थ १११११००७ पंचम १५२८१३४५ षष्ठ १९१८१८ १९ सप्तम २३३३२१२३ अष्टम २७६७२२४८ नवम ३२१३२९ ८९दशम३४३८अथ परमापक्रमज्या१३८७—अथ ग्रहोंके परिध्यंशाः—रविके मंदपरिध्यंशाः १४ चन्द्रके ३२ यह युग्मांत मंद परिध्यंश कहलाता है. और सूर्यके १३ । ४० चन्द्रके ३१ । ४० यह ओजांत परिध्यंश कहलाताहै. युग्मांत मंदपरिध्यंश भौमके ७५ बुधके ३० गुरुके ३३ शुक्रके १२ शनिके ४९ ओजांत मंदपरिध्यंश भौमके ७२ बुधके २८ गुरुके ३२ शुक्रके ११शनिके ४८ युग्मांत. शीघ्र परिध्यंश भौमके २३५ बुधके १३३ गुरुके ७० शुक्रके २६२ शनिके ३९ ओजांत शीघ्र परिध्यंश मंगलके २३२ बुधके १३२ गुरुके ८२ शुक्रके २६० शनिके ४० ओजांत शीघ्र परिध्यंश समझना चाहिये. अथ न्यूनाधिकमासकी व्याख्या. सौरवर्ष ३६५ दिनोंके लगभगसे अपनी अपनी ऋतुवोंका धर्म सृष्टिमें वर्ता रहा हैं. और चांद्रवर्ष ३५४ दिनोंके लगभग दर्श पूर्णिमायाग जो कि, वैदिक धर्मको सृष्टि में वर्ता रहा है जब सौर वर्ष और चांद्र वर्ष इन दोनोंके मिलनेसे वसंतादि ऋतुवोंमें वैदिक धर्मोंकी सदैव प्रवृत्ति होती है. जिसमें चांद्रवर्षकी परिपूर्णता हुये पश्चात् दिन११सौर वर्ष अधिक होनेके कारणसे तीसरे वर्ष अधिक मासका अवश्य संभव है. और उक्त सौर चांद्रकी गडबडसे ही क्षयमासका संभव है उक्त क्षयमास होनेके पश्चात् १४१ वर्पसे फिर वही क्षयमासका संभव हैं फिर १९ वर्पसे संभव होके उक्त वर्षोंमें ही फिर संभव होताहै.

अथ भूकंपलक्षणम्–इस पृथ्वीमें गंधक हरताल आदि धातु वगैरे और ज्वालामुखी पर्वतोंसे युक्त जहां गर्मभूमी है. तहां भूमिगत जल गर्म होके उसकी बाफरूप वायु बाहिर निकसती है इस वायु के कहीं पर्वतादिकोंके रोक टोकसे निकासको मार्ग नहीं मिलनेके कारण भूकंप होता है.और उस बाफके जोरसे पर्वतादि जमीन फाटनेके कारण शब्द होताहै.जहां पर्वत नहींहै उस जगे भूकंपही केवल होताहै शब्द नहीं होता. पर्वतोंकी जमीनमें शब्द सहित भूकंप होताहै. अथ महामारीलक्षणम्. उक्त बाफरूप वायु कहीं विष आदि दुष्टवस्तुवोंसे स्पर्श करतीहुई पृथ्वीकी प्रजाको अनेक प्रकार के रोगोंसे परिपीडित करके प्राणबाधा देतीहै जिसको महामारी कहतेहैं और वही बाफरूप वायुके साथ जल का सूक्ष्म बिंदु आकाशमें चढके फिर भूवायुकी अधिक शीतलताके कारण दृढ बर्फ रूप होके सूर्यके प्रकाशसे चंद्रवत् प्रकाशित अनेक भेदोंसे प्रजाको दीख पडतेहैं उसको ऊंचेसे लंबा होनेके कारण तो शिखायुक्त केतु कहतेहैं और नीचेसे लंबाईके कारण पुच्छयुक्त केतु कहते हैं. फिर औरभी इस बाफरूप वायुसे गंधर्वनगर इंद्रधनुष और सूर्य चंद्रादिकोंका मंडल परिवेष आदि बहुतसे विकार बनते हैं और सूर्य चंद्रादिकोंके ग्रहणोंमें कोई समय अंतर आजाता है वे सब इसी भाफरूप वायुके कारणसेही है. और कितने भोले भाले मनुष्य बीज संस्कार देते हैं वे सब कपोलकल्पितही समझना चाहिये. और बादल वर्षाभी इसी भाफरूप वायु सूर्य के तेजकाही बनजाताहै. और जिस बद्दलोंमें प्राप्त हुवा जल स्वतः नहीं वर्ष सक्ता किंतु वह जल वर्षना भूवायुके आश्रितहै. कहीं भी बद्दलके मुँहसे वायु बद्दलके अभ्यंतर प्रवेश करके फिर भंग छाननेवाला पुरुष

---

१ तत्त्वविवेके. ये केतवोरिष्टफलप्रदाः खेभूदाश्च भूकंप इहास्ति लोके ॥ मारीमहाख्या नरकप्रपातं सर्वमित्थं किल बाष्पतोऽत्र॥ २ अनेकवर्णं विपरीतमिंद्रचापं महाः समंतात्परिवेषउक्तः ॥ तथैव भानोः पतनं न विद्यत्तथैव गंधर्वपुरं विचित्रम् ॥ ३ ऊर्ध्वं पुनस्तादय एव याम्येभूवायुरस्त्यत्र सदैव शीतम् ॥ महत्कृतांभोरपि योजनैःसद्वाष्पांबुद्वार्य जनयत्यपूर्वम् ॥ ३ ॥

४ प्रमाण. यजुर्वेदमें आपस्तंबशाखाकी संहिताके दूसरे अष्टकके चौथे अध्यायके ग्यारहवें अनुवाकमें है. अग्निर्वापुतो वृष्टिमुदीरयति मरुतः सृष्टां नयंति यदा खलु वा असावादित्योन्यङ् रश्मिभिःपर्यावर्ततेऽथ वर्षति ।

जैसे वस्त्रमें हाथ डालके हिलावे वैसे वह वायु बद्दलको हिलानेसे अतिशय वर्षा वर्षतीहै और कभी कोई जलयुक्त बद्दलमें वायुको उसके अभ्यंतर जाने का मार्ग नहीं मिलनेके कारण वह बद्दलका जल जमके बर्फ होजाताहै फिर कोई दिन वायुके अतिशय जोरसे उस बद्दलके मार्ग होके उक्त वायुसे उस बर्फके खंड खंड होके पृथ्वीपर आनके वर्षतेहैं वे माडवारमें ओले कहलातेहैं भाफरूप वायु और भूवायु यह दोनों परस्परमें भिडके और उसके अंदर सूर्यकी किरणोंसे बिजली बनतीहै और जितने विकार हैं वे सब भाफ और वायुके कारणसेही हैं और इसमें दूसरा कारण कोईभी नहीं.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते (मिश्रप्रकरणकथनं) विविधवर्णनं नाम षोडशविनोदः समाप्तः ॥ १६ ॥ श्रीरस्तु.

अथ पंचांग बनानेकी विधि प्रारंभः-तिथि वार नक्षत्र योग और करण इन पांचोंका गणित है वह पंचांग कहलाताहै उक्त पंचांगका गणित सिद्धांतसे लाना बडा कठिन है प्रथम तो सिद्धांतविद्या आज कलके लोग पढतेही नहीं और कोई पढाभी है तो गणित करनेके आलस्यसे कुछ नहीं करसकता. यदि आलस्य छोडके उक्त सिद्धांतगणितसे तिथ्यादि पंचांग बनावेगा तो वह महाशय कितने दिनोंतक गणित करता करता थक जावेगा और आखिर एक वर्ष भरका बनाभी लेगा तो दूसरे वर्षमें उसको छोडनाही होगा. क्योंकि इतना बडा गणितका काम प्रतिवर्षका करना बड़ा मुष्किल है इसके लिये यहां गणेशदैवज्ञकृत पंचांग बनानेकी विधि इस ग्रंथमें लिखते हैं. उक्त पंचांग बनाने के ग्रंथ तो और भी अनेक हैं. परंच उनका गणित आज कलके समयमें ठीक ठीक नहीं मिलता. क्यों कि, संवत् १९४७ के वैक्रमीय वर्षमें सूर्यग्रहणका गणित सूर्यसिद्धांतवालोंका और ग्रहलाघव वालोंका ही यथार्थ मिला और चंद्रशृंगोन्नत्यादि वा चंद्रमाका उदयास्त इसी से ही यथार्थ दृष्टपै मिलता है और कोंकण, मालव, मेवाड, द्राविड, और महाराष्ट्र आदि मुंबई देशोंमें ग्रहलाघवीय पंचांगहीकी मान्यता है और बटेघटे

श्रीमानोंके जन्मपत्रमें भी ग्रहलाघवसेही ग्रह स्पष्ट उत्तम ज्योतिर्विदोंका कराहुवा देखनेमें आयाहै. और हमारे बड़ेबूढे महात्मा पुरुषाओंके मुखसेभी हमने सुनाहै कि, ग्रहलाघव का गणित सब और गणितोंसे फिर भी अच्छा है. ऐसी ऐसी बातोंपर विश्वास धरके ग्रहलाघवका गणित यहां लिखते हैं क्योंकि, इसमें ब्रह्म १ सौर २ आर्य २ तीनों पक्षके ग्रह जो जिस पक्षमें दृग्गणितसे ठीक मिला वही रक्खा है.जिसमें मयदानवको सूर्यांश पुरुषनें वर्णन किया ऐसे सूर्यसिद्धांतगणितके अनुकूल गणितहै वह तो सौरपक्षका कहलाता है. और ब्रह्मा नारद के संवादका शाकल्यसंहितोक्त ब्रह्मसिद्धांतका भी गणित सूर्यसिद्धांतके (सदृश) तुल्यही आता है परंच ब्रह्मगुप्तनाम आचार्यका बनायाहुवा एक ब्रह्मसिद्धांत है जिसका गणित इससे निराला है वह गणित ब्रह्मपक्षका कहलाताहै. और आर्यभट्टकृत कुसुमपुरमें जो कि आर्य सिद्धांत बनाया उसका गणित आर्यपक्षका समझना चाहिये अब यहां सूर्य स्पष्ट सौर पक्षसे चंद्रोच्च श्रीसौरपक्षसे और नवकला ऊन चंद्र सौर पक्षसे गुरु आर्यपक्षसे और मंगल राहू भी आर्यपक्षसे सिद्धदृक् अल्प किया है बुधकेंद्र ब्रम्हसिद्धांतसे दृक्तुल्य लिया और शनि स्पष्ट आर्यसिद्धांतसे करके फिर पांच अंश इस में और युक्त करके दृक्तुल्य माना है शुक्रकेंद्रका गणित आर्यसिद्धांतसे और ब्रह्मसिद्धांतसे स्पष्ट करके इन दोनोंका योग करके फिर उसका अर्द्धभाग लेके दृक्तुल्य मानाहै इसी प्रकार जिस समयमें उक्त ग्रंथकी रचना हुईथी उस समयमें तो सारे ग्रह दृक्तुल्यही थे परंच कोई महाशय कहतेहैं कि कुछ अंतर आने लगगया परंच और .करणके ग्रंथोंसे तो फिरभी ठीक गणित आताहै.अब पंचांग रचना करनेवालोंको प्रथम उस वर्षका उपकरणसाधन करना चाहिये जिसकी विधि गणेशदैवज्ञकृत लघुतिथिचिंतामणिसे लिखतेहैं जिस वर्षका पंचांग बनावे उस शाकेमें १४४७हीन कराहुवा शेषांकको १००७ से गुणके समौघसमझके फिर ८०० के भागसे लब्ध तीन स्थानमें अंक लेवे फिर समौघके ४३ भागसे लब्ध अंकसे पूर्वानीत अधस्थ पलोंसे जोडके फिर ४ । ४५ । २७ और युक्त करनेसे

अब्दप होताहै. इसके देशांतर संस्कार देना चाहिये वह मध्यरेखा लंका, देवकन्या कांची शीतपर्वत पर्यली, वत्सगुल्म, उज्जैन, गर्गराट, वैराट, ढोसी, कुरुक्षेत्र, और सुमेरुके सूत्रतक गई हुई है. उक्त रेखाके ग्रामों से देशांतरयोजन में चतुर्थांश हीन करके पूर्व बसनेवाला अब्दपकी पलों में युक्त करै और पश्चिमका बसनेवाला अब्दपकी पलोंमें उक्त देशांतर पलोंको हीनकिये स्पष्ट अब्दप होताहै अथ तिथिशुद्धि लानेकी विधिः— समौघको ११ गुणके दो जगे रखके एक जगेसे६००० के भागसे लब्ध अंशादिकसे तीन अंक लेके दूसरी जगहोंके अंकमें हीन करके फिर समौघके १५के भागसे अंशादि तीन अंक लब्ध लेके उसमें युक्त करे और ५। ५४। २४ फिर युक्त करके ऊपरि अंक ३० के भागसे शेष करनेसे शुद्धि होती है. अथ ध्रुव लानेकी विधिः—शुद्धिके केवल घटीपलोंको षष्टि शोधित किये तिथि ध्रुव होता है. और शुद्धिको दोजगे रखकर एक जगे दशके भागसे लब्ध लेके दूसरी जगेके अंकमें हीन करके फिर उक्त घटी पलोंको षष्टि शोधित करके ऊपरवाले अंकमें एक और युक्त किये नक्षत्र और योगका एकही ध्रुव होताहै. अथ तिथिमध्य केंद्र लानेकी विधिः— समौघके चारके भागसे शेष अंकको ७ से गुण फिर समौघके ६ के भागसे लब्ध तीन अंक लेके उसमें युक्त करे और समौघके ३२१ भागसे लब्ध में तीन अंक इसीमें हीन करके फिर ४। ३४। १५ जोडके उपरि अंकके २८ भागसे शेष किये तिथिमध्यकेंद्र होताहै अथ नक्षत्र और योग मध्य केंद्र लानेकी और स्फुटकरनेकी वि०—तिथिमध्य केंद्रको दोजगे रखके एक जगेसे ३६ के भागसे लब्ध तीन अंकलेके दूसरी जगेके अंकमें हीन किये नक्षत्र मध्यकेंद्र होताहै. और उक्त तिथिमध्य केंद्रकोही दोजगे रखके एक जगे२२ भागसे लब्ध तीन अंक लेके दूसरी जगेके अंकमें युक्तकिये योगमध्य केंद्र होताहै. और तिथि नक्षत्र और योग मध्य केंद्र की घटी पलोंमें अपनी अपनी ध्रुव घटी पल युक्त किये तिथि, नक्षत्र और योगके स्पष्ट केंद्र होते हैं. अथ भोगसाधनविधिः—तिथि ध्रुवके उपरि

अंकको त्यागके फिर उसकी घटी पल दोजगे रखके एक जगेके ६४ के भागसे दो अंक लेके दूसरी जगेके अंकमें हीन करके फिर अब्दपमें युक्त किये तिथि भोग होताहै. नक्षत्र ध्रुवकी उक्त घटी पल दोजगे रखके एक जगे ८४ के भागसे लब्ध दो अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त करके फिर अब्दपमें युक्त किये नक्षत्रभोग होता है. ऐसेही योग ध्रुवकी उक्त घटीपल दोजगे रखके एक जगे १७ के भागसे लब्ध दोअंक लेके दूसरे अंकमें हीन करके फिर अब्दपमें युक्तकिये योग भोग होताहै. अथ भभोगसाधनविधिः—नक्षत्र स्पष्टकेंद्रके उपरि अंकको दोजगे रखके एक जगे ८४ के भागसे लब्ध तीन अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त करके फिर उपरि चारादि अंकके ७ के भागसे शेष करके नक्षत्र भोगमें हीन किये भभोग शुद्ध होता है। इति उपकरण बनानेकी विधिः ॥ अथ कोष्ठक बनानेकी विधिः—चैत्र शुदि प्रतिपदासे गत तिथियोंमें तिथि ध्रुवके उपरि अंकको हीन किये कोष्ठक होताहै. उक्त तिथि कोष्ठकको दोजगे रखके ३६ भागसे लब्ध एकअंक लेके दूसरेमें हीनकिये नक्षत्रकोष्ठक होताहै. और उक्त तिथिकोष्ठकको दोजगे रखके २२ के भागसे लब्ध एक अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त किये योग कोष्ठक होताहै.अथ पराख्यसाधनविधिः—अपने अपने तिथि नक्षत्र और योगस्पष्टकेंद्रके उपरि अंकको अपने अपने उक्त कोष्ठकोंमें युक्त करनेसे पराख्य कोष्ठक होताहै. अथ तिथिसाधनविधिः—तिथिकोष्ठकसारिणीमें तिथिभोग युक्त करके फिर तिथिपराख्य कोष्ठकमें पराख्य घटी पल ऋण धन जैसी हो तैसीकर देनी चाहिये.फिर उक्त तिथिस्पष्टकेंद्र घटीपलके पराख्य कोष्ठक के नीचे हार घटीके भागसे लब्ध दो अंक लेके उक्त तिथिकी पराख्य संस्कारित घटी पलोंमें ऋण धन जैसा हार हो वैसा संस्कार देनेसे तिथिकी वार घटी और पल स्पष्ट होतेहैं ॥ अथ नक्षत्रसाधनविधिः—नक्षत्रपराख्यकोष्ठकसारिणीमें भभोग युक्त करके फिर नक्षत्र स्पष्ट केंद्रकी घटी पलोंके पराख्य कोष्ठकके नीचेकी हार घटीके भागसे लब्ध घटी पल दोअंक लेके जैसा ऋण धन हार है वैसा संस्कार देनेसे नक्षत्रका वार घटी

और पल स्पष्ट होतेहैं. इसके पराख्यसंस्कार नहीं देना चाहिये अथ योगसाधनविधिः—योगकोष्ठकसारिणीमें योग भोग युक्त करके फिर उक्त तिथि सदृश पराख्य और हार संस्कार देनेसे योगकी घटी पल होते हैं.अथ तिथिवृद्धि और क्षय जाननेकी विधिः—जब तिथि स्पष्ट होते होते अनुक्रमका वार छोडके अधिक वार गणितमें आजावे तो वह तिथि पूर्वदिन६०घटी भोगके फिर दूसरे दिनभी उक्त घटी पलोंतक भोगेगी. इसको तिथिवृद्धि समझना चाहिये. और क्रमसे प्रतिदिन वार तिथि स्पष्टके जो आताहै वह वार दूसरे दिन भी आजावे जब तो उसको क्षयतिथि समझना चाहिये. उक्त क्षय तिथिकी घटी पलोंमें पूर्व तिथिकी घटीपल हीन करके फिर पंचांगमें रक्खी जातीहै.॥

अथ नक्षत्र और योगके स्पष्ट गणनाविधिः—नक्षत्र और योग ध्रुवको निज निज कोष्ठकमें युक्त करके फिर २७ के भागसे शेष रहै उसको वर्तमान उस दिनका नक्षत्र और योग समझना चाहिये इनकी क्षय वृद्धि उक्त तिथि सदृशही होतीहै. ऐसे प्रतिदिन एक एक कोष्ठक बढानेसे तिथि वार नक्षत्र योग स्पष्ट होताहै. और उक्त तिथिके भोगको आधा करनेसे कर्ण स्पष्ट भोग होताहै.

अथ अधिक मास और क्षयमास स्पष्ट जाननेकी विधिः—चैत्र शुदि प्रतिपदासे एक एक माससे अमावस्यापर्यंत जब उक्त मेष आदि संक्रांति नहीं आवे तो चैत्र आदि उसको अधिक मास और उक्त एक मासमें दो संक्रांति हों जिसको क्षयमास समझना चाहिये. और पंचांगका प्रारंभ गणित मेषसंक्रांतिसे दो दिन पीछे होता है. जिसके पहले का गणित पूर्व वर्षके उपकरणोंसे ही कर लेना चाहिये. जब पंचांग करते करते पराख्य वा हार कोष्ठक की समाप्ति होजावे तो सारिणीके प्रारंभ कोष्ठकसेही ज्योतिर्विद पराख्य और हारकोष्ठक ले लेवेंगे.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते पंचांगस्पष्टविधिवर्णनं नाम सप्तदशविनोदः ॥ १७ ॥

प्रतिवर्षे उपकरणसारिणी ध्रुवा ।

अ-ब्दप	ति. शु	ति. ध्रु	न. ध्रु.	यो. ध्रु.	ति. म.	न. म.	यो म.	ति. स्प	न. स्प	यो. स्प.	ति. भो.	न. भो.	यो. भो.	भ. भो.
१	११	१०	१०	१०	७	६	७	७	७	७	१	१	१	१
१५	३	५६	२	२	९	५७	२९	६	०	३१	११	१८	१७	१३
३१	४८	१२	३५	३५	४९	५२	२१	१	२३	५६	४८	९	५७	९

ब्रह्मपक्षे उपकरणसाधनार्थं धनऋणचालकक्षेपकाः ।

अब्द	शुद्धि	ति.ध्रु.	न.ध्रु.	यो.ध्रु.	ता.के.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भो.	न.भो.	यो.भो.
ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	१	१	१	३	५	५	५	१	२	२
१०	३६	३६	३६	३६	५४	२५	२१	१४	५६	३	९

आर्यपक्षे उपकरणसाधनार्थं धनऋणचालकक्षेपकाः ।

अब्दप	शुद्धि.	ति.ध्रु	न. ध्रु	यो.ध्रु	ता.के.	ति.के.	न. के.	यो.के	ति.भो.	न.भो.	यो.भो.
ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.	ध.	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	८	८	७	७	१०	१०	१०	११	१	१	०
२९	३१	३१	४०	४०	१३	०	३७	८	५४	१६	४४

सौरपक्षे उपकरणसाधनार्थम् ऋणचालकक्षेपकाः साध्यंते.

अब्दप	शुद्धि.	ति ध्रु.	न.ध्रु.	यो.ध्रु.	ता.क.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भो.	न.भो.	यो.भो
ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	१७	१७	१७	१७	०	०	०
२४	५	५	५	५	५९	५३	५४	५४	२९	२९	२८

अधिक और क्षयमास सारिणी।

अधिकमासाः								क्षयमासाः
ज्ये १६०१	वै १६०४	श्रा १६०६	भा १६०९	वै १६१२	भा १६१४	आ १६१७	आ १६०३	मार्ग १६०३
१६२०	अ १६२२	१६२५	१६२८	१६३१	१६३३	१६३६		
१६३९	१६४१	१६४४	१६४७	१६५०	१६५२	१६५५		
१६५८	१६६०	१६६३	१६६५	वै १६६९	१६७१	१६७४		
१६७७	१६७९	१६८२	ज्ये १६८५	१६८८	श्रा १६९०	१६९३		
वै १६९६	आ १६९८	१७०१	१७०४	१७०७	१७०९	१७१२		
१७१५	१७१७	१७२०	१७२३	१७२६	१७२८	१७३१		
१७३४	१७३६	१७३९	१७४२	१७४५	१७४७	१७५०	आ १७४४	मार्ग १७४४
१७५३	१७५५	श्रा १७५८	१७६१	१७६३	१७६६	ज्ये १७६९		पौ १७६३
१७७२	१७७४	१७७७	१७८०	१७८२	१७८५	१७८८		
१७९१	१७९३	१७९६	१७९९	१८०१	१८०४	१८०७		
वै १८१०	१८१२	१८१५	१८१८	१८२०	१८२३	१८२६		
१८२९	श्रा १८३१	१८३४	वै १८३७	आ १८३९	१८४२	१८४५		
१८४८	१८५०	१८५३	१८५६	१८५८	१८६१	१८६४		
१८६७	१८६९	१८७२	१८७५	१८७७	१८८०	१८८२		
१८८६	१८८८	१८९२	१८९४	१८९६	श्रा १८९९	१९०२	अ १८८५	मार्ग १८८५
अ १९०४	१९०७	ज्ये १९१०	१९१२	१९१५	१९१८	१९२१	भा १९०४	पौ १९०४
१९२३	१९२६	१९२९	१९३२	१९३४	१९३७	१९४०		
१९४२	१९४५	१९४८	वै १९५१	१९५३	१९५६	१९५९	का १९५०	मा १९५०
१९६१	भा १९६४	१९६७	फा १९६९	श्रा १९७२	१९७६	वै १९७८	का १९६१	मा १९६१
आ १९८०	१९८३	१९८६	१९८८	१९९१	१९९४	१९९७		
१९९९	२००२	२००५	२००७	२०१०	२०१२	२०१६	का २००७	मा २००७
२०१८	२०२१	२०२४	अ २०२६	२०२९	२०३२	२०३५	का २०२६	मा २०२६
२०३७	२०४०	वै २०४३	भा २०४५	२०४८	ज्ये २०५१	२०५४	का २०४५	पौ २०४५
२०५६	२०५९	ज्ये २०६२	२०६४	२०६७	२०७०	२०७२		

अथ मेषेऽर्कः ॥ तिथ्यादिकों की सारिणी ॥ मेषेरविः ॥

ऊर्ध्वांक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
तिथि वारादि.	० १० ४३	१ ९ ४५	२ ८ ४८	३ ७ ५०	४ ६ ५१	५ ५ ५२	६ ४ ५३	० ३ ५४	१ २ ५५	२ १ ५७	३ ० ५७	३ ५९ ५८	४ ५८ ५९	५ ५८ ०	६ ५७ १	० ५६ २	१ ५५ ३	२ ५४ ३	३ ५३ ३	४ ५२ १	५ ५० ५२
परारूय घटी.	धं. ५५	६ ५३	१२ ३०	१७ २०	२१ ४	२३ ३०	२४ ४४	२४ ३८	२३ ११	२० ५६	१७ ३८	१३ ३२	८ ५८	४ धं. ०	१ ऋ. ३	६ ५	१० ४८	१५ १७	१९ १	२२ ५८	२६ ०
हार.	ध ३०	३०॥	३२॥	३६	२५	ध. ४८	ऋ. ६००	४५	२५	१८	१५	१३	१२	१२	१२	१३॥	१३॥	१६	२०	२०	ऋ ५०
नक्षत्र वारादि.	६ ५९ ४४	१ ६ १२	२ १२ १६	३ १७ ३८	४ २२ ०	५ २५ १०	६ २७ ४	० २७ ५०	१ २७ २४	२ २५ ३७	३ २३ १०	४ २० ०	५ १६ १८	६ १२ १७	० ८ १०	१ ४ ९	२ ० २२	२ ५७ ३	३ ५४ २६	४ ५२ ३५	५ ५१ ४१
हार.	ध १२॥	११	१३	१६	२४	ध ५०	०	ऋ ४६	२५	१८॥	१५	१३॥	१२॥	१२।	१२॥	१३।	१५।	१८	२३	४०	ऋ १९०
योग वारादि.	६ ५१ १	० ४७ ३२	१ ४४ ४	२ ४० ३६	३ ३७ १९	४ ३३ ४३	५ ३० १८	६ २६ ५१	० २३ २४	१ १९ ५८	२ १६ ३२	३ १३ ६	४ ९ ४०	५ ६ १५	६ २ ४९	६ ५९ २४	० ५५ ५७	१ ५२ ३२	२ ४९ ७	३ ४५ ४१	४ ४२ १६
परारूय. घटी.	ऋ. ४६	ध. ४ १५	९ ०	१३ १०	१६ ४२	१९ १२	२० ४१	२१ २५	२१ २	१९ ४४	१७ ३५	१४ ४७	११ २२	७ ३२	३ २६ ध.	० ४८ ऋ.	४ ५६	९ ४	१२ ४५	१५ ५६	१८ ३५
हार.	१२ ध.	१३॥	१४	१७	२४	३८	ध. ४००	ऋ. १६०	४७	२८	२१	१८	१६	१५	१४	१४	१४॥	१६	१९	२२	३५

कृत्तिकार्कः वृ. सं. रोहिण्यर्कः

ऊर्ध्यांक	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
तिथि. वाराद्वि.	६ ४९ ५७	० ४८ ५७	१ ४७ ५६	२ ४६ ५४	३ ४५ ५३	४ ४४ ५२	५ ४३ ४८	६ ४२ ४६	० ४१ ४४	१ ४० ४२	२ ३९ ३९	३ ३८ ३७	४ ३७ ३४	५ ३६ ३२	६ ३५ २९	० ३४ २५	१ ३३ २२	२ ३२ १९	३ ३१ १५	४ ३० १२	५ २९ १०
पराख्य. घटी.	२४ ५८	२४ ४४	२३ ३	२० १६	१५ ५७	१० ४९	५ ८ क्षं.	० ५३ धं.	६ ५१	१२ २३	१७ १७	२१ १	२३ ४७	२४ ४४	२४ २९	२३ ३१	२१ २०	१७ ४४	१३ ४०	९ २	४ ९ धं.
हार.	२५० धं.	३६	२२	१४	११॥	१०॥	१०	१०	११	१२	१६	२५	४७ धं.	७०० क्षं.	४७	२७	१८	१५	१३	१२	१२
नक्षत्र. वारादि.	६ ५२ १३	० ५३ ५०	१ ५६ ४३	३ ० ४८	४ ५ ५६	५ ११ ५४	६ १८ २१	० २४ ४७	१ ३१ २	२ ३६ २८	३ ४१ ६	४ ४४ ३८	५ ४६ ५२	६ ४७ ४६	० ४७ ४२	१ ४६ ७	२ ४३ ५४	३ ४० ४९	४ ३७ १६	५ ३३ १८	६ २९ २९
हार.	५६ धं.	२८	१७	१३॥	११॥	१०॥	१०।	१०॥	१२॥	१५	२१	४०	४०० धं.	७० क्षं.	२६	२०	१६	१४	१३	१२।	१२.
योग. वारादि.	५ ३८ ५१	६ ३५ ५८	० ३२ ३	१ २८ ३८	२ २५ १५	३ २१ ५२	४ १८ २५	५ १५ २	६ ११ ३१	० ८ १५	१ ४ ४८	२ १ २६	२ ५८ ३	३ ५४ ४२	४ ५१ १९	५ ४७ ५८	६ ४४ ३५	० ४१ ११	१ ३७ ५०	२ ३४ २७	३ ३१ ५
पराख्य. घटी.	२० १९	२१ १२	२१ १०	२० ८	१८ ५	१५ ४	११ १७	६ ४६	१ ५५ क्षं.	२ ५८ धं.	७ ४६	१२ ६	१५ ४७	१८ ३८	२० २०	२१ १६	२२ ७	१९ ५७	१८ १	१५ २०	१२ ८
हार.	७० क्षं.	०	६० धं.	३०	२०	१६	१३	१२।	१२।	१२॥	१४	१६	२१	३५	५४ धं.	४०० क्षं.	५०	३१	२२	१९	१६

मृगोर्के: सिं० संक्रा.

अर्घांक.	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
तिथि. घटादि	६ २८ ६	० २७ २	१ २५ ५७	२ २४ ५१	३ २३ ४६	४ २२ ४१	५ २१ ३५	६ २० २९	० १९ २६	१ १८ १९	२ १७ १३	३ १६ ८	४ १५ २	५ १३ ५७	६ १२ ५१	० ११ ४५	१ १० ३९	२ ९ ३४	३ ८ २७	४ ७ २२	५ ६ १६
प्रारम्भ. घटी.	० ५२ फ.	५ ५३	१० ४०	१५ ७	१८ ५३	२१ ५२	२३ ५६	२४ ५५	२४ २४	२३ ३	२० २२	१६ ६	११ ०	५ १९ फ.	० ४१ घ.	६ ३७	१३ १३	१७ ६	२० ५३	२२ ४४	२४ ४४
धार.	१२	१२॥	१३॥	१४	२०	२९	६० फ.	१२० घ.	४५	३१	१५	२२	१०॥	१०	१०	१०॥।	१२	१६	२४	४५ घ.	०
नक्षत्र. घटादि.	० २५ ८	१ २१ २२	२ १७ ५३	३ १५ ०	४ १२ ४	५ ११ ५७	६ १२ ११	० १३ २५	१ १६ ०	२ १९ ५३	३ २४ ४७	४ ३० ३०	५ ३६ ५२	६ ४३ २०	० ४९ ४०	१ ५५ २७	३ ० ७	४ ३ ५५	५ ६ २४	६ ७ ३३	० ७ ५०
धार.	१२	१४	१६	२२	३२	१२० फ.	१२० घ.	३२	३०	१४	१२	१०॥	१०॥	१०४	१२	१५	२०	३४	२५० घ.	१२० फ.	२१
योग घटादि	४ २७ ४०	५ २४ १७	६ २० १४	० १७ ३४	१ १४ १७	२ १० ४७	३ ७ २४	४ ४ २	५ ० ४१	५ ५७ १९	६ ५३ ५७	० ५० ३५	१ ४७ १०	२ ४३ ४७	३ ४० २६	४ ३७ २	५ ३३ ४१	६ ३० १	० २७ ४१	१ २३ ४१	२ २० १९
प्रारम्भ. घटी.	८ २२	४ २३	० ७ घ.	४ ३ फ.	८ १	११ ५२	१५ १५	१८ ०	१९ ५५	२१ १	२१ ८	२० २४	१८ ३५	१५ ४६	१२ ५	७ ४७	२ ५६ फ.	१ ३६ घ.	६ ४७	११ १९	१५ ७
धार.	१५	१४	१४	१५	१६	१८	२२	३१	५४	१०० फ.	८० घ.	३२	२१	१६	१४	१२।	१२।	१२॥	१२	१५॥	२०

	आर्द्रार्कः																	पुनर्वस्वर्कः			
उर्व्यंक	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३
तिथि. वारादि	६ ५ १	० ४ २	१ २ १५	२ १ ४८	३ ० ४२	३ ५९ ३६	४ ५८ २९	५ ५७ २३	६ ५६ १६	० ५५ ११	१ ५४ ४	२ ५२ ५८	३ ५१ ५२	४ ५० ४६	५ ४९ ३९	६ ४८ ३२	० ४७ २३	१ ४६ १६	२ ४५ ९	३ ४४ २	४ ४२ ५४
परागम्य.	२४ ५१	२३ २८	२१ २०	१७ ५८	११ ५७	९ २३	४ ३९ धं	० २१ ऋ.	५ ३१	१० २९	१४ ५०	१८ ३९	२१ ४१	२३ ४८	२४ ५१	२४ ४३	२३ ७	२० २२	१६ २४	११ २२	५ ४३ ऋ.
हार.	४८ ऋ.	२६	१२	१५	१२	१३।	१२	१२	१२।।	२३	१६	२०	२९	६० ऋ.	४०० ध.	३८	२२	१५	१२	१०।।	१०
नक्षत्र. वारादि.	१ ६ २९	२ ४ २७	२ १ ३३	३ ५८ १०	४ ५४ २९	५ ५० ७	६ ४६ ०	० ४२ ६	१ ३८ ३३	२ ३५ २४	३ ३३ २३	४ ३१ ५७	५ ३१ ५७	६ ३२ ५२	० ३५ १४	१ ३८ ४६	२ ४३ ३७	३ ४० ५७	४ ५५ १५	६ १ ४३	० ८ ५
हार.	२२	१६	१४	१३	१२।।	१२।	१३	१४	१६	२०	२७	८० ऋ.	३०० धं.	३६	२१	१५	१२।।	१०।।	१०।।	१०।।	१२
योग. वारादि.	३ १७ ०	४ १३ ३४	५ १० १९	६ ६ ५९	० २ ३९	१ ० ६	१ ५६ ४७	२ ५३ ३६	३ ५० १२	४ ४६ ४७	५ ४३ २८	६ ४० ८	० ३६ ४९	१ ३३ २८	२ ३० ६	३ २६ ४३	४ २३ २२	५ २० ०	६ १६ ३८	० १३ १६	१ ९ ५४
परागम्य	१८ ११	२० ४	२२ १५	२२ २५	२० १७	१८ २२	१५ ५६	१२ ३९	९ ९	५ ८	० ५७ ध	३ १७ ऋ	७ २४	११ १६	१४ ४२	१७ ३२	१९ ४३	२१ ०	२१ १५	२० ४२	१९ ५
हार.	३२	५० धं.	०	६० ऋ.	३४	२३	१९	१६	१५	१४।	१४	१४।।	१६	१८	२१	२८	४७	२४० ऋ.	१२० ध.	३७	२३

कर्क सं. पुष्येर्कः

ऊर्ध्वांक	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४
तिथि. वारादि	५ ४१ ४६	६ ४० ३८	० ३९ ३२	१ ३८ २३	२ ३७ १६	३ ३६ ८	४ ३५ ०	५ ३३ ५४	६ ३२ ४८	० ३१ ४०	१ ३० ३३	२ २९ २५	३ २८ १८	४ २७ १०	५ २६ ५	६ २४ ५७	० २३ ५१	१ २२ ४४	२ २१ ३८	३ २० ३१	४ १९ २४
पलात्मक	० ध १९	६ ११	११ ५२	१६ ४७	२० ३९	२३ २७	२४ ४४	२४ ४८	२३ ३७	२१ २२	१८ १५	१४ १८	९ ४८	५ध. ०	० ३ ऋ.	५ ५	९ ५४	१४ २७	१८ २०	२१ २९	२३ ३८
हार.	१०	१०॥।	१२	१५॥	२२	४०ध	०	५० ऋ.	२७	१९	१५	१३	१२॥	१२	१२	१२॥	१३	१५॥	१९	२७	५२ ऋ.
नक्षत्र. वारादि.	१ १३ ५४	२ ११ १०	३ २३ ३	४ २५ ४५	५ २७ १२	६ २७ ४२	० २९ ४२	१ २४ ४४	२ २२ ०	३ १८ ४२	४ १४ ४८	५ १० ४७	६ ९ ३८	० २ ३९	० ५९ ०	१ ५५ ५०	२ ५३ २६	३ ५१ ४१	४ ५१ ३०	५ ५२ ९	६ ५४ ११
हार.	१४	१८	३१	८०ध.	२५९ ध.	४८	२२	१६	१५	१३	१२॥	१२।	१२॥	१३॥	१५।	१९	२५	४० ऋ.	७०० ध.	४३	२४
योग. वारादि.	२ ९ ३३	३ ३ ११	३ ५९ ४१	४ ५६ २८	५ ५३ ९	६ ४९ ४५	० ४६ २४	१ ४२ ०	२ ३९ ३९	३ ३६ १८	४ ३२ ५६	५ २९ २४	६ २६ १२	० २२ ४८	१ १९ २८	२ १६ ९	३ १२ ४४	४ ९ ३२	५ ६ १	६ २ ३७	६ ५९ १६
पलात्मक.	१६ २७	१२ ५६	० ४२	३ ५७ ऋ	१ ० ध	५ ५२	१० ३०	१४ २४	१७ ४०	१९ ५८	२१ १०	२१ २२	२० ३७	१८ ५८	१६ ३१	१३ २६	९ ५२	५ ५१	३ ४० ध.	२ ३३ ऋ	६ ४२
हार.	१७	१४	१२॥	१२	१२	१३	१५	१८	१८	४२	३०० ध.	८० ऋ.	३६	२४	१९	१७	१५	१४॥	१४	१४॥	१५

आश्लेषार्कः

ऊर्ध्वांक.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५
तिथि. वारादि.	५ १८ १८	६ १७ ११	० १६ १३	१ १४ ५९	२ १३ ५०	३ १२ ४३	४ ११ ३८	५ १० ३१	६ ९ २५	० ८ १९	१ ७ १२
परारम्भ.	२५ ४८	२४ ४३	२२ २१	२० ३३	१६ ४१	११ ४५	६ ६	०ऋ. ६	५ धं. ५४	११ ३३	१६ ३१
हार.	७० धं	४०	२२	१५॥	१२॥	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१५
नक्षत्र. वारादि.	० ५७ २४	२ १ ४८	३ ७ ११	४ १३ २०	५ १९ ४५	६ २६ १०	० ३२ ८	१ ३७ १८	२ ४१ ४०	३ ४४ १३	४ ४६ २९
हार.	१६	१३	११	१०॥	१०॥	११॥	१३	१६	२६	धं. ५६	०
योग. वारादि.	० ५५ ५४	१ ५२ ३२	२ ४९ ८	३ ४५ ४६	४ ४२ २३	५ ३९ ०	६ ३५ ३८	० ३२ १६	१ २८ ५५	२ २५ ३२	३ २२ १०
परारम्भ.	१० ३८	१५ ११	१७ ८	१९ २८	२० ५३	२१ २३	२० ५८	१९ ३१	१७ ५	१३ ४५	९ ३५
हार.	१७	२०	२६	४३	१२० ऋ.	१४० धं.	४२	२४	१८	१४॥	१३

ऊर्ध्वांक.	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५
तिथि. वारादि.	२ ६ ६	३ ४ ५९	४ ३ ५३	५ २ ४७	६ १ ४२	० ० ३६	० ५९ ३०	१ ५८ २४	२ ५७ २०	३ ५६ १४
परारम्भ.	२० १५	२३ १०	२४ ४४	२४ ५१	२३ ४५	२१ ३५	१८ ३१	१४ ३८	१० ११	५ १४
हार.	२२	४०	धं. ५००	ऋ. ५४	२८	२०	१५॥	१३॥	१२॥	१२
नक्षत्र. वारादि.	५ ४७ १०	६ ४६ २३	० ४४ ४१	१ ४२ १०	२ ३८ ५६	३ ३५ १०	४ ३१ ६	५ २६ ५८	६ २१ ५५	० १९ १०
हार.	४० ऋ.	२५	१८	१६	१३	१२॥	१२।	१२।	१३	१५
योग. वारादि.	४ १८ ४८	५ १५ २५	६ १२ ३	० ८ ३८	१ ५ १३	२ १ ४६	२ ५८ २१	३ ५४ ५८	४ ५१ ३३	५ ४८ ८
परारम्भ.	५ ० ऋ.	० ०	५धं. ०	१ ३८	१३ ४४	१७ ९	१९ ३४	२१ २	२१ ३०	२० ५७
हार.	१२	१२	१३	१५	१८	२५	४०	२४० धं.	११० ऋ.	४०

चित्रार्कः तुलासंक्रांति.

जर्ध्यांक.	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	१८१	१८२	१८३	१८४	१८५	१८६	१८७	१८८
तिथि. वारादि.	४ ११ ४८	५ १० ५१	६ ९ ५४	० ८ ५५	१ ७ ५७	२ ७ ०	३ ६ २	४ ५ ४	५ ४ ७	६ ३ ९	० २ १३	१ १ १७	२ ० २०	२ ५९ २४	३ ५८ २८	४ ५७ ३२	५ ५६ ३७	६ ५५ ४१	० ५४ ४६	१ ५३ ५०	२ ५२ ५६
परारब्ध.	ऋ.० ३१	धं.५ २६	११ ९	१६ १०	२० १०	२२ ५	२४ ४५	२४ ५७	२३ ५३	२१ ५१	१८ ५३	१५ ३	१० २६	५ ५७	धं.० ४८	ऋ.४ १८	९ ९	१३ ४७	१७ ५०	२१ ५	२३ २४
हार.	१०	१०॥	१२	१५	२०	३६	धं. ३००	ऋ. ५६	३०	२०	१५॥	२३॥	१२॥	१२	१२	१२	१३	१५	१८	२६	ऋ ५०
नक्षत्र. वारादि.	२ २१ ३६	३ २३ ५७	४ २४ ५७	५ २६ ४	६ २३ ३६	० २२ १८	१ १८ २६	२ २४ १३	३ १० १७	४ ९ ५२	५ २ ४२	५ ५८ ५०	६ ५५ १७	० ५२ ३०	१ ५० १३	२ ४८ ५०	३ ४८ ५३	४ ४९ ३१	५ ५२ १६	६ ५५ ५५	१ ० ३७
हार.	४०	ध १८०	ऋ ४००	२८	२१	१५	१४	१३	१२।	१२	१३	१४	१६	२०	२९	ऋ. ९०	ध. २००	३४	२०	१५	१२
योग. वारादि.	४ ११ ५०	५ १६ २०	६ १२ ५०	० ९ २१	१ ५ ५०	२ २ १९	२ ५८ ४१	३ ५५ १८	४ ५१ ४७	५ ४८ १७	६ ४४ ४५	० ४१ १२	१ ३७ ४४	२ ३४ ११	३ ३० ३९	४ २७ ५	५ २३ ३४	६ २० १	० १६ २९	१ १२ ५६	२ ९ २२
परारब्ध.	२१ २९	२१ ३५	२० ३०	१८ ३०	१५ ३१	११ ३८	७ ९	२ऋ. २०	२ध. ४६	७ ३३	११ ५६	१५ ३८	१८ ३५	२० २५	२१ २६	२१ १७	२० २०	१८ १७	१५ २१	१२ १४	८ ३१
हार.	ध ३६	३०	२०	१५	१४	१२॥	१२	१२॥	१४	१६	२०	२३	ध. ६०	ऋ ४००	५४	३२	२२	१८	१८	१६	२०॥

स्वात्यर्कः — विशाखार्कः

ऊर्ध्वांक	१८९	१९०	१९१	१९२	१९३	१९४	१९५	१९६	१९७	१९८	१९९	२००	२०१	२०२	२०३	२०४	२०५	२०६	२०७	२०८	२०९
तिथि. घटादि.	३ ५२ ०	४ ५१ ६	५ ५० १२	६ ४९ १७	० ४८ २४	१ ४७ ३०	२ ४६ ३५	३ ४५ ४२	४ ४४ ४९	५ ४३ ५५	६ ४३ ३	० ४२ १०	१ ४१ १६	२ ४० २३	३ ३९ ३२	४ ३८ ३९	५ ३७ ४८	६ ३६ ५७	० ३६ ४	१ ३५ १३	२ ३४ २२
परारभ्य.	२४ ३८	२४ ४१	२३ २४	२० ४७	१७ ५	१२ ५५	६ ३७	० ऋ. ३९	५ ध. २६	११ १०	१६ १०	२० १०	२३ ५	२४ ४५	२४ ५७	२३ ५०	२१ ४९	१८ ५१	१५ १	१० ३४	५ ४५
हार.	०	४० ध.	२५	१६	१२॥	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१५	२१	३६	ध. ३००	ऋ. ९०	२१	२०	१५॥	१३॥	१२॥	१२।
नक्षत्र. घटादि.	२ ६ ८	३ १२ २७	४ १८ ५१	५ २५ १२	६ ३१ ५०	० ३५ ५१	१ ३९ ५६	२ ४२ २५	३ ४३ ४२	४ ४४ ६	५ ४१ ५८	६ ४० ५५	० ३८ ५	१ ३४ ४२	२ ३० ४७	३ २६ ४५	४ २२ ३३	५ १८ ३३	६ १४ ५५	० ११ ४६	१ ९ २६
हार.	११	१०॥	१०॥	१२	१४॥	१८	३०	ध. २००	ऋ. १८०	३२	२२	१७	१५	१३	१२॥	१२	१३	१४	१६	२०	२६
योग. घटादि.	३ ५ ४८	४ २ १५	४ ५८ ४१	५ ५५ २	६ ५१ ३४	० ४८ ०	१ ४४ २७	२ ४० ५३	३ ३७ १९	४ ३३ ४५	५ ३० ८	६ २६ ३२	० २२ ५८	१ १९ २३	२ १५ ४८	३ १२ १३	४ ८ ३८	५ ५ ३	६ १ २८	६ ५७ ५४	० ५४ १८
परारभ्य	४ २२	० ध. २२	४ ऋ. ४०	८ ७	११ ५३	१५ २६	१८ २	२० ५	२१ १८	२१ २७	२० ४६	१९ ३	१६ १८	१२ ४१	८ २०	३ ऋ. ३८	१ ध. २५	६ १४	१० ४८	१४ ४१	१७ ५०
हार.	१४।	१४	१४॥	१६	१८	२२	३०	५०	ऋ. ४००	ध. १२०	३५	२२	१७	१५	१३	१२	१२॥	१३	१५	१९	२८

पूर्वार्कः

ऊर्ध्वांक.	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६
तिथि. वारादि.	४ ५५ ८	५ ५४ ५	६ ५३ ०	० ५१ ५५	१ ५० ५०	२ ४९ ४७	३ ४८ ४२	४ ४७ ३९	५ ४६ ३५	६ ४५ ३०	० ४४ २७	१ ४३ २३	२ ४२ २१	३ ४१ १५	४ ४० १२	५ ३९ ९	६ ३८ ६	० ३७ ४	१ ३६ १	२ ३४ ५९	३ ३३ ५७
गताल्प.	धृ. ० २५	ऋ. ४ ३७	९ २९	१४ ५	१८ ४	२१ ११	२३ ३१	२४ ४३	२४ ४२	२३ १४	२० ५२	१६ ५६	१२ ५	६ २६	० २८ ऋ.	५ ३५ धृ.	११ ४५	१६ ११	२० १४	२१ ४६	२४ ४४
हार.	१२	१३।	१२	१५	१९	२६	५० ऋ.	०	४० धृ.	२४	१९	१३।	१०।।	१०	१०	१०।।	१२	१५	१६	२७	३०० धृ.
नक्षत्र. वारादि.	१ १५ ५०	२ १२ ४	३ ११ २५	४ १० ४६	५ ११ १२	६ १२ ५४	० १५ ५०	१ १९ ५९	२ २५ १२	३ ३१ १३	४ ३७ २८	५ ४३ ५५	६ ५० ५	० ५५ २५	१ ५९ ५७	३ ३ २०	४ ५ २३	५ ६ ११	६ ५ ५३	० ४ १८	१ १ ५६
हार.	१८	२४	४३	ऋ. १३३	धृ. ६०	२७	१७	१३	११	१०।।	१०।।	११	१३	१९	२२	४४	धृ. ६००	ऋ. ६०	२६	१९	१६
योग. वारादि.	६ ४४ ४१	० ३१ २०	१ ३७ ५४	२ ३४ ३१	३ ३१ ७	४ २७ ४२	५ २४ १७	६ २० ५३	० १७ २६	१ १४ २३	२ १० ३६	३ ७ २०	४ ३ ४५	५ ० १९	५ ५६ ५३	६ ५३ २७	० ५० १	१ ४६ ३६	२ ४३ ८	३ ३९ ४१	४ ३६ १५
गताल्प.	११ २७	१७ ८	१४ ७	१० ३१	६ ४०	३ २० धृ.	१ ४६ ऋ.	५ ५१	१ ५८	१३ ३४	१६ ४१	१९ १२	२० ४६	२३ ३३	२१ १८	२० ६	१७ ५२	१४ ३१	१० ५०	६ ४	२ २ ऋ.
हार.	१९	२०	१७	१५	१४	१४	१४।।	१५	१७	११	२४	३१	७५ ऋ.	२४० धृ.	५०	२७	१९	१५	१३	१२	१२

उत्तरार्कः कन्यासंक्रांति.

ऊर्ध्वांक	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७
तिथि. वारादि.	४ ३२ ५६	५ ३१ ५३	६ ३० ५२	० २९ ४९	१ २८ ४८	२ २७ ४६	३ २६ ४४	४ २५ ४४	५ २४ ४३	६ २३ ४२	० २२ ४२
परारब्ध.	२४ ५६	२३ ५३	२१ ४७	१७ ४७	१४ ५८	१० ३०	५ ४५	० ध. ४३	४ ऋ. १९	९ ३१	१३ ५०
हार.	ऋ. ६०	२९	२०	१६	१३॥	१२॥	१२	१२	१२॥	१३	१५
नक्षत्र. वारादि.	१ ५८ ५०	२ ५५ ९	३ ५१ ७	४ ४६ ५९	५ ४२ ५४	६ ३९ २	० ३५ ३८	१ ३२ ४९	२ ३० ५३	३ २९ ५१	४ २९ ५५
हार.	१४	१२॥	१२॥	१२।	१३	१४	१७	२३	३५	ऋ. १३०	ध. ७५
योग वारादि	५ ३२ ४१	६ २९ २२	० २५ ५४	१ २२ २७	२ १९ ०	३ १५ ३६	४ १२ १०	५ [illegible] ४२	६ ५ १३	० १ ४६	० ५८ १८
परारब्ध.	ध. ३ ५	८ ३४	१२ ५४	१६ ३०	१९ १०	२० ४६	२१ ३९	२१ ९	१९ ४७	१७ ३८	१४ ४५
हार.	१२॥	१४	१७	२३	३८	ध. ८०	ऋ. १६०	४५	२८	२१	१८

ऊर्ध्वांक	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७
तिथि. वारादि.	१ २१ ४१	२ २० ४१	३ १९ ४१	४ १८ ४१	५ १७ ४१	६ १६ ४२	० १५ ४२	१ १४ ४३	२ १३ ४५	३ १२ ४७
परारब्ध.	१७ ५२	२१ ७	२३ २६	२४ ३१	२४ ४२	२३ २५	२० ४७	१७ ४	१२ १४	६ ६
हार.	१८	२६	ऋ. ५०	०	ध. ४१	२४	१६	१२॥	१०॥	१०
नक्षत्र. वारादि.	५ ३१ ३३	६ ३४ २	० ३८ ०	१ ४३ ६	२ ४८ ४२	३ ५५ २	५ १ २६	६ ७ ४१	० १३ १३	१ १७ ५७
हार.	३०	१८	१४	१२	१०॥	१०॥	१०॥	१२।	१५	२०
योग वारादि	१ ५४ ४९	२ ५१ २०	३ ४७ ५१	४ ४४ ३२	५ ४० ५३	६ ३७ २३	० ३३ ५४	१ ३० २३	२ २६ ५०	३ २३ २०
परारब्ध.	११ २०	७ २८	३ ध. १८	० ऋ ५४	५ ३	९ ९	१२ ४७	१६ २	१८ ४०	२० २८
हार.	१५॥	१४॥	१४	१४॥	१५	१७	१९	२३	३३	ऋ. ६०

वृश्चि० सं०   अनुरा० कं:

अर्घ्यांक	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	२२०	२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०
तिथि. वारादि.	२ ३३ ३१	४ ३२ ४०	५ ३१ ४९	६ ३० ५८	० ३० ९	१ २९ १७	२ २८ २७	३ २७ ३८	४ २६ ४९	५ २५ ५७	६ २५ ७	० २४ १८	१ २३ २९	२ २२ ४०	३ २१ ५१	४ २१ २	५ २० १३	६ १९ २४	० १८ ३५	१ १७ ४६	२ १६ ५८
परात्व्य.	० ध. ४२	४ ऋ. २१	९ १६	१३ ५३	१७ ५६	२० १०	२३ २५	२४ ३८	२४ ४१	२४ १२	२० ४२	१६ ५७	१२ ५	६ २६	० ऋ. २५	५ ध. ४०	११ २२	१६ २१	२० १८	२३ १०	२४ ४५
हार.	१२	१२	१३	१५	११	२७	ऋ. ५०	०	ध. ४०	२४	१६	१२॥	१०॥	१०	१०	१०॥	१२॥	१५	२१	३८	४०० ध.
नक्षत्र. वारादि.	२ ७ ११	३ ७ ३७	४ ८ १९	५ १० ३०	६ १२ ४९	० १८ १६	१ २२ ४२	२ २९ ५२	३ ३६ १५	४ ४२ ३७	५ ४८ ३०	६ ५३ ४९	० ५७ ५२	२ ० ४४	३ २ २३	४ २ ५८	५ २ ७	६ ० १९	६ ५७ ३८	० ५४ २५	१ ५० ३२
हार.	ऋ. ६४	०	ध. ५०	२४	१५	१२॥	११	१०॥	१०॥	१०॥	१३	१७	२७	ध. ६०	ऋ. ५००	४०	२२	१८	१६	१३	१२॥
योग. वारादि.	१ ५० ४१	२ ४७ ५	३ ४० २०	४ ३१ ५४	५ ३६ १७	६ ३२ ४२	० २९ ४	१ २५ ३०	२ २१ ५४	३ १८ १७	४ १४ ३९	५ ११ ३	६ ७ २४	० ३ ५१	१ ० १२	१ ५६ ५७	२ ५२ ४४	३ ४९ १०	४ ४५ ३६	५ ४२ ५४	६ ३८ २४
परात्व्य.	२० ०	२१ ११	२१ ३३	२० ३६	१८ ४३	१६ २३	१२ १२	९ ३६	५ ३४	१ ध. ३६	२ ऋ. ४७	६ १४	१० ५०	१४ १९	१७ १९	१९ ३४	२१ ०	२१ २८	२२ २	१९ ३६	१७ ९
हार.	४८	ध. ४००	ऋ. ८०	३५	२४	१९	१७	१५	१४॥	१४	१४॥	१५	१७	२०	२७	४२	ऋ. १२०	ध. १४०	४९	२४	१९

ज्येष्ठार्कः											
अर्घ्यांक.	२३१	२३२	२३३	२३४	२३५	२३६	२३७	२३८	२३९	२४०	२४१
तिथि. घटादि	३ १६ १०	४ १५ २२	५ १४ ३४	६ १३ ४६	० १२ ५८	१ १२ ११	२ ११ २४	३ १० ३७	४ ९ ५०	५ ९ २	६ ८ १४
परारव्य.	२४ ५४	२३ ४७	२१ ३८	१८ ३७	२४ ४२	१० ११	५ २३	० धृ. २१	४ ऋ. ४१	१ ३६	१४ ६
हार.	ऋ. ५४	२८	२०	१५	१३	१२॥	१२	१२	१२	१३	१५
नक्षत्र. घटादि	२ ४९ ३०	३ ४२ २९	४ ३८ १७	५ ३४ ३३	६ ३१ १७	० २८ ४४	१ २६ ५९	२ २६ २४	३ २६ २४	४ २८ ४४	५ ३१ ५५
हार.	१२।	१२॥	१३	१५	१८	२४	४८	ऋ. ३००	धृ. ५२	२६	१७
योग. घटादि.	० २४ ३५	१ ३० ५८	२ २७ १८	३ २३ ४०	४ २० ३	५ १६ २३	६ १२ ४३	० ९ ६	१ ५ २६	२ १ ४८	२ ५८ ९
परारव्य.	१२ ४८	९ ३९	५ ४	० ऋ. ६	४ धृ. ५४	९ ३४	१३ ३९	१७ ४	१९ ३१	२१ २	२३ ३२
हार.	१४	१३	१२	१२	१३	१५	१८	२४	४०	धृ. १२०	ऋ. १२०

मूले घनेर्कः										
अर्घ्यांक.	२४२	२४३	२४४	२४५	२४६	२४७	२४८	२४९	२५०	२५१
तिथि. घटादि	० ७ २७	१ ६ ४०	२ ५ ५४	३ ५ ६	४ ४ १९	५ ३ ३३	६ २ ४६	० २ ०	१ १ १३	२ ० २७
परारव्य.	१८ ११	२१ २०	२३ २४	२४ ४२	२४ ४०	२३ ७	२० २९	१६ ४१	११ ४१	६ ०
हार.	१९	२७	ऋ. ५२	०	धृ. ४०	२३	१६	१२	१०॥	१०
नक्षत्र. घटादि	६ ३६ ०	० ४१ १६	१ ४७ १९	२ ५३ ३८	४ ० ४	५ ६ १०	६ ११ २९	० १५ ५४	१ १९ ११	२ २१ ८
हार.	१३	११	१०॥	१०॥	११	१२॥	१६	२३	धृ. ४८	०
योग. घटादि.	३ ५४ ३१	४ ५० ५२	५ ४७ १२	६ ४३ ३२	० ३९ ५४	१ ३६ १६	२ ३३ ३८	३ २८ ५८	४ २५ १८	५ २१ ४०
परारव्य.	२१ ९	१९ ३६	१७ १४	१४ १४	१० ४३	६ ५०	२ धृ. ३९	१ ऋ. ३९	५ २८	९ ४२
हार.	४०	२६	२०	१७	१५	१४।	१४॥	१४॥	१५	१७

पूर्वाषा-कैः

ऊर्ध्वांक.	२५२	२५३	२५४	२५५	२५६	२५७	२५८	२५९	२६०	२६१	२६२
तिथि. घटादि.	२ ५९ ४०	३ ५८ ५४	४ ५८ ४	५ ५७ २१	६ ५६ ३६	० ५५ ५१	१ ५५ ६	२ ५४ १८	३ ५३ ३४	४ ५२ ४७	५ ५२ २
परारब्य.	० ऋ. २	५ ध. ५८	११ ४१	१६ ३८	२० ३१	२२ २७	२४ ४५	२४ ५०	२२ ३८	२१ १५	१८ २०
हार.	१०	१०॥	१२	१५॥	२२	४०.	ध. ७००	ऋ. ६०	२७	२०	१५
नक्षत्र. वारादि.	३ २१ ५२	४ २१ २१	५ १९ ४१	६ १७ १७	० १४ १०	१ १० २४	२ ६ २८	३ २ २०	३ ५८ १३	४ ५४ २२	५ ५१ ०
हार.	ऋ. ५०	२९	१९	१५	१३॥	१२॥	१२।	१२।	१३	१५	१७
योग. वारादि.	६ १८ १	० १४ २१	१ १० ४०	२ ६ ५८	३ ३ १६	३ ५९ ३५	४ ५५ ५५	५ ५२ ११	६ ४८ ३३	० ४४ ५४	१ ४१ १३
परारब्य.	१३ १७	१६ २६	१९ ०	२० ३७	२१ ३७	२१ १८	२० १२	१८ ५	१५ ०	११ ५	६ ३४
हार.	१९	२२	३७	ऋ. ७०	ध. ४००	५४	२८	२१	१५	१३	१२॥

ऊर्ध्वांक.	२६३	२६४	२६५	२६६	२६७	२६८	२६९	२७०	२७१	२७२
तिथि. घटादि.	६ ५१ १६	० ५० ३०	१ ४९ ४२	२ ४९ ०	३ ४८ १४	४ ४७ २९	५ ४६ ४३	६ ४५ ५७	० ४५ १२	१ ४४ २८
परारब्य.	१४ २२	९ ५१	५ ध. ०	० ऋ. ७	५ ११	१० ३	१४ ३३	१८ ३०	२१ ३५	२३ ४३
हार.	१३	१३॥	१२	१२	१२।	१३	१५	२०	२८	६० ध
नक्षत्र. वारादि.	६ ४८ १८	० ४६ २२	१ ४५ २८	२ ४५ ४६	३ ४७ १४	४ ५० ०	५ ५४ ५	६ ५९ ६	१ ४ ५८	२ ११ २१
हार.	२२	३७	ऋ. १५०	ध. ८०	३०	१८	१४	१३॥	१०॥	२०॥
योग. वारादि.	२ ३७ ३३	३ ३३ ५४	४ ३० १५	५ २६ ३४	६ २२ ५४	० १९ १५	१ १५ ३४	२ ११ ५३	३ ८ ११	४ ४ ३१
परारब्य.	१ ऋ. ४२	३ ध. ११	८ २	१२ २२	१६ ०	१८ ५०	२० ३२	२१ २७	२१ ११	२० ०
हार.	१२	१३	१४	१६	३५	४२	ध. ६५	ऋ. २००	५०	३०

उत्तराषा० मकरसं० श्रवणेर्कः

ऊर्ध्वांक.	२७३	२७४	२७५	२७६	२७७	२७८	२७९	२८०	२८१	२८२	२८३	२८४	२८५	२८६	२८७	२८८	२८९	२९०	२९१	२९२	२९३
तिथि. वारादि.	२ ४३ ४२	३ ४२ ५७	४ ४२ १२	५ ४१ २८	६ ४० ४२	० ३९ ५६	१ ३९ २	२ ३८ २५	३ ३७ ४०	४ ३६ ५३	५ ३६ ८	६ ३५ २३	० ३४ ३८	१ ३३ ५३	२ ३३ ६	३ ३२ २१	४ ३१ ३६	५ ३० ५०	६ ३० ४	० २९ २०	१ २८ ३३
पराख्य	२४ ४९	२४ ४०	२३ २	२० १६	१६ १७	११ १७	५ ३५ ऋ.	० २७ ध.	६ २७	१२ ४	१६ ५७	२० ४६	२३ २२	२४ ४५	२४ ४५	२३ २७	२१ ९	१७ ५८	१३ ५५	९ २१	४ २५ ऋ.
हार.	ध. ६००	२७	२४	२५	१२	१०॥	१०	१०	१०॥	१२	१६	२६	ध ४३	०	४७ ऋ.	२६	११	२५	१३	१२	१२
नक्षत्र. वारादि	३ १७ ४८	४ २४ ४	५ २९ ३१	६ ३४ ११	० ३७ ४८	१ ४० ४	२ ४० ५१	३ ४० ५९	४ ३९ ३०	५ ३७ १९	६ ३४ १६	० ३० ४४	१ २६ ४६	२ २२ ४०	३ १८ ३३	४ १४ ४१	५ ११ २३	६ ८ २५	० ६ २५	१ ५ २	२ ५ १३
हार.	११	१२॥	१५	२०	४०	ध. ३००	ऋ. ८०	२७	२०	१६	१४	१३	१२॥	१२॥	१३	१४	१६	२२	३०	ऋ. १००	ध. १८०
योग. वारादि.	५ ० ५४	५ ५७ १४	६ ५३ २३	० ४९ ५४	१ ४६ २५	२ ४२ ३४	३ ३८ ५४	४ ३५ १५	५ ३१ ३५	६ २७ ५४	० २४ १६	१ २० ३७	२ १७ ०	३ १३ १८	४ ९ ३८	५ ५ ५९	६ २ १९	६ ५८ ३९	० ५५ ०	१ ५१ २२	२ ४७ ४२
परारब्ध.	१८ ०	१५ १४	११ ५७	८ १२	४ ध. ८	० ऋ. ३०	४ १२	८ १८	१२ १	१५ २१	१८ ६	२० ४	२१ ११	२१ १७	२० ३४	१८ ४८	१६ २	१२ २१	८ ३	३ ऋ. १५	१ ध. २
हार.	२२	१८	१६	१५	१४।	१४॥	१५	१६	१८	२२	३०	५३	ऋ. ६००	ध ८०	३४	२२	१६	१४	१२॥	१२	१२।

धनिष्ठार्कः											कुंभ-सं०									शत०र्कः	
ऊर्ध्वांक	२९४	२९५	२९६	२९७	२९८	२९९	३००	३०१	३०२	३०३	३०४	३०५	३०६	३०७	३०८	३०९	३१०	३११	३१२	३१३	३१४
तिथि. वारादि.	२ २७ ४७	३ २७ ४७	४ २६ १५	५ २५ १९	६ २४ ४३	० २३ ५५	१ २३ ७	२ २२ २२	३ २१ ३६	४ २० ५०	५ २० ३	६ १९ १७	० १८ २७	१ १७ ४२	२ १६ ५५	३ १६ ८	४ १५ २१	५ १४ ३५	६ १३ ४६	० १२ ५८	१ १२ १०
परारब्ध.	ऋ. ४१	५ ४२	१० ३३	१५ १	१८ ५२	२१ ५१	२२ ५३	२४ ५१	२४ ३१	२२ ५५	२० ३	१५ ५५	१० ४८	५ ऋ. ४	० ध. ५७	६ ५४	१२ ३०	१७ २०	२१ ३	२३ ३३	२४ ४६
हार.	१२	१२॥	१३॥	१६	२०	३०	ऋ. ६०	ध. ३००	३५	२१	१४	१२	१०॥	१०	१०	१०॥	१२॥	१६	२४	ध. ५०	ऋ. ७००
नक्षत्र. वारादि	३ ६ १५	४ ८ ४७	५ १२ ३६	६ १७ २४	० २३ ३	१ २९ २४	२ ३५ ५१	३ ४२ ११	४ ४७ ५२	५ ५२ ४७	६ ५६ ३१	० ५९ १२	२ ० २७	३ ० ४०	३ ५९ ३१	४ ५७ ३१	५ ५४ ३८	६ ५१ १६	० ४७ २२	१ ४३ २३	२ ३९ १३
हार.	३३	११	१५	१२	१०॥	१०॥	१०॥	११॥	१४	१९	३०	ध. १२०	ऋ. १५०	३०	२२	१६	१४	१३	१२॥	१२	१२
योग. वारादि.	२ ४४ ०	४ ४० २३	५ ३६ ४५	६ ३२ ७	० २९ २६	१ २५ ४७	२ २२ ८	३ १८ २९	४ १४ ५०	५ ११ १२	६ ७ ३४	० ३ ५५	१ ० १८	१ ५६ ४७	२ ५३ २	३ ४९ २५	४ ४५ ४६	५ ४२ ९	६ ३८ ३०	० ३४ ५१	१ ३१ १५
परारब्ध.	६ २६	११ ०	१४ ५०	१८ १	१९ ५८	२१ १४	२१ १९	२० ३९	१८ ४८	१६ २७	१३ ३३	९ ३९	५ ३६	१ ध. २६	२ ऋ. ५२	६ ५०	१० ४५	१४ १४	१७ १०	१९ २९	२० ४९
हार.	१२	१६	२१	३०	४८	ध. ७००	ऋ. ९०	३३	२४	२०	१७	१५	१४॥	१४॥	१२	१५	१७	२०	२६	४१	ऋ. १४०

पूर्वाभाद्र० कः

ऊर्ध्वांक	३१५	३१६	३१७	३१८	३१९	३२०	३२१	३२२	३२३	३२४	३२५	३२६	३२७	३२८	३२९	३३०	३३१	३३२	३३३	३३४	३३५
तिथि. वारादि.	२ ११ २१	३ १० ३५	४ ९ ४७	५ [illegible] ५९	६ ८ ९	० ७ २१	१ ६ ३१	२ ५ ४२	३ ४ ५४	४ ४ ४	५ ३ १५	६ २ २५	० १ ३५	१ ० ४५	१ ५९ ५७	२ ५९ ८	३ ५८ १७	४ ५७ २६	५ ५६ ३५	६ ५५ ४५	० ५४ ५४
परारव्य	२४ ४०	२३ १८	२० ५५	१७ ४१	१३ ३०	८ ५४	३ घ ५५	१ ऋ ९	६ ९	११ ०	१५ २६	१९ १०	२२ ५	२४ ३१	२४ ५५	२४ ३१	२२ ४९	१९ ५९	१५ ३८	१० २८	४ ऋ. ४४
हार.	४५	२५	१९	१४	१३	१२	१२	१२	१२॥	१४	१६	२१	३०	ऋ. ७०	घ. २२०	३३	२०	१४	११॥	१०॥	१०
नक्षत्र. वारादि.	३ ३५ १६	४ ३१ ४१	५ २८ ४०	६ २६ २४	० २५ ५४	१ २५ ५०	२ २९ ३८	३ २७ ५५	४ ३१ २२	५ ३६ ०	६ ४१ २८	० ४७ ४४	१ ५४ ११	३ ० ३६	४ ६ २९	५ ११ ४१	६ १५ ४७	० १८ ३८	१ २० १२	२ २० ४९	३ १९ ५१
हार.	१४	१६	२०	२६	ऋ. ७५	घ. ६००	३७	२२	१५	१२॥	११	१०॥	१०॥	१०॥	१३	१८	१९	घ. ७०	ऋ. ४००	३६	२३
योग. वारादि.	२ २७ १८	३ २४ ०	४ २० २३	५ १६ ४४	६ १३ ८	० ९ ३२	१ ५ ५५	२ २ १९	२ ५८ ४२	३ ५५ ५	४ ५१ ४४	५ ४७ ५९	६ ४४ १५	० ४० ४०	१ ३७ १४	२ ३३ २९	३ २९ ५२	४ २६ १६	५ २२ ४२	६ १९ ६	० १५ ३१
परारव्य.	२१ १५	२० ५७	१९ ५४	१६ ५७	१३ ३७	९ ३१	४ ऋ. ५३	० ०	४ घ. ५४	९ ३४	१३ ३८	१७ ०	१९ २५	२० ५७	२१ २४	२० ५४	१९ १८	१७ १३	१४ १८	१० ५१	६ ५१
हार.	घ. १५०	४२	२४	१८	१५	१३	१२।	१२	१३	१५	१८	२५	४०	घ. १४०	ऋ. १२०	४२	२७	२१	१७	१५	१४॥

मीनसंक्रांति उत्तराभाद्र०र्कः रेवत्यर्कः

अर्ध्यांक.	३३६	३३७	३३८	३३९	३४०	३४१	३४२	३४३	३४४	३४५	३४६	३४७	३४८	३४९	३५०	३५१	३५२	३५३	३५४	३५५	३५६
तिथि. वारादि.	१ ५४ १	२ ५२ ११	३ ५२ २०	४ ५१ २८	५ ५० ३६	६ ४९ ४५	० ४८ ५२	१ ४८ ०	२ ४७ ९	३ ४६ १६	४ ४५ २३	५ ४४ ३०	६ ४३ ३७	० ४२ ४४	१ ४१ ५०	२ ४० ५६	३ ४० २	४ ३९ ८	५ ३८ १४	६ ३७ १०	० ३६ २६
परारव्य.	१ध. २०	७ १६	१२ ४७	१७ ३६	२१ १४	२३ ३८	२४ ४५	२४ ३६	२३ ९	२० ४१	१७ २३	१३ १०	८ ३३	३ध. ३६	१ ऋ. २८	६ ३०	११ १५	१५ ३८	१९ २२	२२ १४	२४ ९
हार.	१०	११	१२॥	१७	२५	ध. ५४	ऋ. ४००	४१	२४	१८	१४	१३	१२	११	१२	१२॥	१४	१६	२१	३१	७० ऋ
नक्षत्र. वारादि	४ १८ ०	५ १५ १९	६ १२ ४	० [illegible] १३	१ ४ १२	२ ० ५	२ ५६ ७	३ ५३ २७	४ ४९ ३७	५ ४६ ५०	६ ४५ ९	० ४४ ४५	१ ४५ २१	२ ४७ ३१	३ ५० २८	४ ५४ ५१	६ ० १२	० ६ १८	१ १२ ४०	२ १९ ११	३ २५ १४
हार.	१७	१५	१३	१२॥	१२	१२॥	१२॥	११	१९	२५	४५	ऋ. ४००	ध. ४७	१७	१६	१२	१२	१०॥	१०।	११	१३
योग. वारादि	१ ११ ५६	२ ८ २०	३ ४ ४७	४ १ १४	४ ५७ ३८	५ ५४ ०	६ ५० २६	० ४६ ५३	१ ४३ २१	२ ३९ ४७	२ ३६ १३	४ ३२ ३८	५ २९ ५	६ २५ ३३	० २२ ०	१ १८ २७	२ १४ ५४	३ ११ २१	४ ७ ४९	५ ४ १६	६ ० ४३
परारव्य.	२ ५१ ध.	१ ११ ऋ.	५ २७	९ ३२	१२ ८	१६ १५	१८ ४८	२० २७	२१ १५	२१ ६	१९ ५१	१७ ५१	१४ ४७	१० ५७	६ २५	१ ऋ ३५	३ ध ११	८ ४	१२ २२	१६ ३	१८ ४६
हार.	१४॥	१४॥	१५	१७	१९	२३	३६	ऋ. ५५	ध. ४००	५४	२८	२०	१६	१३	१२॥	१२	१३	१४	१६	२२	३६

ऊर्ध्वांक	३५७	३५८	३५९	३६०	३६१	३६२	३६३	३६४	३६५	३६६	३६७	३६८	३६९	३७०	३७१	३७२	३७३	३७४	३७५	३७६	३७७
तिथि. वारादि.	१ ३५ ३१	२ ३४ ३६	३ ३३ ४१	४ ३२ ४५	५ ३१ ४९	६ ३० ५४	० २९ ५६	१ २९ २	२ २८ ६	३ २७ ९	४ २६ १२	५ २५ १५	६ २४ १८	० २३ २२	१ २२ २५	२ २१ २८	३ २० ३१	४ १९ ३६	५ १८ ४०	६ १७ ४४	० १६ ४८
पराख्य	२४ ५८	२४ ३८	२२ ४७	१९ ४४	१५ १७	१० १४	४ ऋ. २२	१ ध. ३६	७ २६	१३ १४	१७ ४५	२१ ४६	२३ ४१	२४ ४६	२४ ४५	२२ ७	२० ३९	१७ ११	१३ ९	८ २४	३ ध. २९
हार.	ध. १८०	३२	२०	१४	११॥	१०॥	१०	१०।	११।	१२॥	१७	२५	ध. ५९	ऋ. ३६०	४१	२६	१८	१४	१२	१२	१२
नक्षत्र. वारादि	४ ३० ३४	५ ३४ ५५	६ ३८ ५	० ४० ०	१ ४० ४५	२ ४० ७	३ ३८ २९	४ ३६ ९	५ ३२ ४४	६ २९ १०	० २५ १०	१ २१ ४	२ १७ ०	३ १३ १४	४ ९ ५५	५ ७ १८	६ ५ २९	० ४ ४३	१ ५ ७	२ ६ ४५	३ ९ २५
हार.	१६	२४	७० ध.	०	४४ ऋ.	२५	१९	१५	१४	१२॥	१२।	१२॥	१३	१५	१८	२३	४०	ऋ. १८०	ध. ६९	२८	१८
योग. वारादि.	६ ५७ १२	० ५३ ३८	१ ५० ८	२ ४६ ३७	३ ४३ ६	४ ३९ ३३	५ ३६ ३	६ ३२ ३२	० २९ १	१ २५ २९	२ २१ ५८	३ १८ २७	४ १४ ५७	५ ११ १७	६ ७ ५७	० ४ २६	१ ० ५६	१ ५७ २७	२ ५३ ५८	३ ५० २९	४ ४७ ०
पराख्य	२० २६	२१ १६	२१ ४	१९ ५२	१७ ५३	१५ ३१	११ २९	८ १३	४ १२	० ध. २	४ ऋ. २६	८ ११	११ १५	१५ १४	१८ ५	१९ ५६	२० ५७	२१ ४	२० १८	१८ २८	१५ ४०
हार.	ध. ७०	ऋ. १००	५०	३७	२२	११	१६	१५	१४॥	१४॥	१५	१६	१८	२२	३१	६०	ऋ. ५००	ध. ८०	३३	२१	१७

अर्घ्यांक	३७८	३७९	३८०	३८१	३८२	३८३	३८४	३८५	३८६	३८७	३८८
तिथि. वारादि.	१ १५ ५२	२ २४ ५६	३ २४ ०	४ १३ ४	५ १२ ८	६ ११ १२	० १० १६	१ ९ २०	२ ८ २४	३ ७ २८	४ ६ ३२
परारब्य.	१ क्ष. ३३	६ ३४	१० २१	१५ ४५	१९ २५	२२ १६	२४ १०	२४ ५८	२४ २८	२२ ४६	१९ ४४
हार.	१२	१२॥	१३॥	१६	२१	३२	क्ष. ७५	ध. १००	३२	२०	१४
नक्षत्र. वारादि.	४ १३ ४५	५ १८ ५४	६ २४ ५२	० ३१ १७	१ ३७ ४७	२ ४४ १	३ ४९ २८	४ ५४ ४	५ ५७ ३५	६ ५९ ४७	१ ० ०
हार.	१४	१०॥	१०॥	१०॥	११	१२	१५॥	२२	४०	ध. ४००	क्ष. ७०
योग. वारादि.	५ ४३ ३१	६ ४० १	० ३६ ३३	१ ३३ ५	२ २९ ३४	३ २६ ५	४ २२ ३८	५ १९ १०	६ १५ ४२	० १२ १५	१ ८ ४१
परारब्य.	१२ २	७ ४६	२ क्ष ५१	१ध ५२	६ ४५	११ १४	१५ ६	१८ ८	२० २	२१ १२	२१ १३
हार.	१४	१२॥	१२।	१२॥	१३	१४॥	२०	३२	ध. ५०	०	क्ष ६४

अर्घ्यांक	३८९	३९०	३९१	३९२	३९३	३९४	३९५	३९६	३९७	३९८
तिथि. वारादि.	५ ५ ३६	६ ४ ३६	० ३ ३४	१ २ ४८	२ १ ५२	३ ० ५६	४ ० ०	४ ५९ ४	५ ५८ ८	६ ५७ १२
परारब्य.	१५ २८	१० १६	४ क्ष. ३१	१ध. ३२	७ २५	१३ ०	१७ २७	२१ १८	२२ ४१	२४ ४५
हार.	११।	१०॥	१०॥	१०	११	१२॥	१७	२५	ध ५५	क्ष ४००
नक्षत्र. वारादि.	२ ० ३३	२ ५८ ५८	३ ५७ ३०							
हार.	२६	२१	१८							
योग. वारादि.	२ ५ २३	३ २ १	३ ५८ ३५	४ ५५ ९	५ ५१ ११	६ ४७ ३०	० ४३ ३१	१ ३९ ४१	२ ३५ ५१	३ ३२ १०
परारब्य.	२० १७	१८ ३५	१६ ६	१३ ०	९ २१	५ २२	१ध. १२	३ क्ष ०	७ ६	११ ०
हार.	३५	२४	२०	१७	१४॥	१४॥	१४।	१५	१५	१७

अथ अहर्गण करने की विधि.

वर्तमान शालिवाहन शाके में १४४२ हीन करके ११ भाग सें लब्ध जो अंक आवे वह चक्र कहलाता है. फिर शेषांक कों १२ से गुण के चैत्र शुदि १ सें गतमास युक्त कर के उसकों दो जगे रखे पश्चात् चक्र को द्विगुण करके उसमें १० और युक्त करके फिर एक जगे के अंक में युक्त करके ३३ भाग सें लब्ध अधिकमास आवे सो दूसरी जगे के अंक में युक्त करना यदि उस वर्ष में अधिकमास होवे तो अधिकमास के पहले के दिनों का अहर्गण करना हो तो उक्त अधिकमास का गणित आवे जिसमें एक न्यून करके फिर युक्त करना चाहिये और अधिकमास सें आगे के महीनों में अहर्गण करनेवाला जैसा गणितागत है उसी कों ही युक्त करने से मासगण होता है. इसको ३० से गुण के गततिथि उसमें युक्त करे पश्चात् चक्र का निरंश षष्ठ्यंश युक्त करके उसको दो जगे रखे फिर एक जगे ६४ के भाग सें लब्ध अवमदिन आवे सो दूसरी जगे के अंक में हीन किये अहर्गण होता है. अथ वार लाने की विधिः चक्र को ५ से गुण के अहर्गण में युक्त किये पश्चात् ७ के भाग से शेष १ आदि बचे भौमवार से गणना चाहिये. यदि जिस दिन के वार तुल्य अहर्गणागत वार नहीं मिले तो अहर्गण में एक न्यूनाधिक करने से शुद्ध अहर्गण होता है. यह वार की न्यूनाधिक्यता सो सिद्धांत गणितागत अहर्गण में ही आती है. जब शकादि अहर्गण में होना तो संभव ही है. अथ सारिणी में मध्यम ग्रह करने की विधि. अहर्गण कों ६० के भाग से लब्धांक आवे सो मध्यमग्रह सारिणी में लब्धि कोष्ठक और उक्त भाग से शेष बचे सो सारिणी में शेषांककोष्टक कहलाता है इन दोनों को युक्त करके फिर चक्रांक के कोष्ठक के अंक को योग किये मासमध्यमग्रह होते हैं. अथ तात्कालिक मध्यम ग्रह करने की विधि. स्पष्ट घटी तुल्य घटी और पलतुल्य पल निज निज सारिणी में देख के मध्यम ग्रह में युक्त किये तात्कालिक मध्यमग्रह होते हैं और उक्त घटी पलों को राहु में हीन किये स्पष्ट राहु होता है. अथ सूर्य स्पष्ट करने की विधि. सूर्य मंदोच्च २।१८।०।० में तात्कालिक मध्यमसूर्य को हीन करने से वह मंद-

केंद्र कहलाताहै. इस केंद्र की भुज करनी चाहिये वह तीनसें न्यून (कम) राशि भुज कहलाती है और तीनराशि से अधिक को ६ सें शोधन करना चाहिये. यदि ६ से अधिक ९ तक हो तो ६ अंक उसमें हीन करना चाहिये और ९ से अधिक को १२ से शोध करना चाहिये बस यहीप्रकार से भुज बनाके उसका अंश अर्थात् वह भुजांश कहलाता है. सूर्यस्पष्ट सारिणी में उक्त भुजांश के तुल्य कोष्ठक में सूर्य मंद फल को लेके और उस के नीचे गुणक के अंक से भुजांश के अधस्थ घटी पलों को गुण के फिर पलों को ६० सें ऊंची चढ़ा के ऊपरिघटि के भाजक के भाग सें लब्धपल लेके उक्त मंदफल में जोड के फिर मेषादि केन्द्र के कारण मध्यमसूर्य में वह मंदफल धन और तुलादि केंद्र वस से ऋण किये मंदस्पष्ट सूर्य होता है.

अथ चरसंस्कार देने की विधि.

सायनसूर्य की राशि अंश के कोष्ठक सारिणी में देख के तुलादि रवि में युक्त और मेषादि रवि में हीन किये स्पष्टसूर्य होताहै. अथ सूर्य की गति लाने की विधि. भुजांशकोष्ठक मंद फल अधस्थसारिणी में गति फल सूर्य की मध्यम गति ५९।८ में कर्कादि केंद्र के कारणयुक्त और मकरादि केंद्र के कारण हीन किये सूर्य की गति स्पष्ट होती है. अथ स्थूल अयनांश पलभा, चरखंडा, और चरपल करने की विधि. शाकेसें ४४५ हीन करके पश्चात् शेषांक कों ६० से भागदेनेसे लब्ध अयनांश और शेष

१ सायंकाल में चरपल के विलोमसंस्कार देने का कारण यह है कि लंका में सूर्य काउदय और स्वदेश में सूर्य का उदय इनदोनो के अन्तर का नाम चरपल है सो लंका के क्षितिज की तो उन्मंडल संज्ञा और देशांतर के क्षितिज की क्षितिज संज्ञा है अतएव मेषादिराशियों का रवि प्रथम क्षितिज में उदय होके फिर पीछे उन्मंडल में उदय होताहै और प्रथमही उन्मंडल में अस्तहोके फिर पीछे क्षितिज में अस्त होताहै जिससे दिन के इष्ट में चरपल कों रवि में ऋण और सायंकाल मे धन करनी चाहिये एवं तुलादि दक्षिण गोल में उन्मंडल में प्रथम सूर्य दीखके फिर पीछे से क्षितिज में दीखता है और प्रथमही क्षितिज में अस्त होके फिर पीछे उन्मंडल में अस्तहोता है जिससें दिन के इष्ट में चरपल धन करनी और सायंकाल में ऋण करनी चाहिये.

बचे सो घटी और चैत्रादि प्रतिमास को ५ पल भी इसके नीचे ले लेनी चाहिये और मेष के सायनसूर्य के दिन द्वादशांगुल शंकु के मध्यान्ह की छाया पलभा कहलाती है. फिर उक्त पलभा को तीन जग्गे रख के पहले १० दूसरे ८ और तीसरे अंक को १० से गुण के उक्त यह तीनो चरखंड कहलाता है. परंच तीसरे चरखंड को ३ के भाग से लब्ध कर लेना चाहिये फिर सायनसूर्य के भुज की राशि तुल्यगत् चरखंड लेके फिर भोग्य चरखंड से अधस्य अंशादिकों को गुण के फिर ३० के भाग से लब्धगत चरखंड में युक्त किये चरपल होती है. उक्त चरपल देश देश की पृथक् पृथक् होती है जिसमें रामगढ की चरपल १३१ से अधिक नहीं है.

अथ चन्द्रमा के त्रिफलसंस्कार देने की विधि.

भूमध्य रेखा के योजनान्तर के ६ भाग से लब्ध घटी पल लेके रेखा से पश्चिम बसने वाला तात्कालिक मध्यम चन्द्रमा में युक्त और पूर्व वासी हीन किये एक फल संस्कृत चन्द्र होता है. चरपल को द्विगुणित करके ९ के भाग से लब्ध घटी पल लेके सूर्य में हीनयुक्त चरपल की उस विधि से ही रेखा संस्कृत चन्द्र में हीनयुक्त किये द्विफल संस्कृत चन्द्र होता है और सूर्य मन्दफल के २७ भाग से लब्ध अंशादि सूर्य सदृश विधि से ही द्विफल संस्कृत चन्द्र में हीनयुक्त किये त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा होता है.

अथ चन्द्र स्पष्ट करने की विधि.

त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा को तात्कालिक चन्द्रोच्च में हीन किये चन्द्रमंदकेंद्र कहलाता है. उसकी भुज फिर उसका अंश करके चन्द्रस्पष्ट सारिणी में उक्त भुजांश कोष्टक में चन्द्रमा का मन्दफल लेके फिर भुजांश के अधस्थ की घटी पलों को गुणक से गुण के हर के भाग से लब्धफल लेके मन्दफल में युक्त किये पश्चात् मन्दकेन्द्र मेष तुलादि वस से त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा में धन ऋण किये स्पष्ट चन्द्रमा होता है.

अथ चन्द्रमा की गति लाने की विधि.

भुजांश कोष्टक में मन्दफल अधस्थ चन्द्रगति फल लेके उसके नीचे

गुणक से भुजांश के अधस्थ घटी पलों को गुण के फिर षष्टिभाग से लब्ध पलों को गतिफल में हीन करके चन्द्र मध्यमगति ७९०।३५ में कर्क मकरादि केंद्र वस से धन ऋण किये चन्द्र की गति स्पष्ट होती है.

अथ उक्त दोनों से सूक्ष्म पंचांग बनाने की विधि

चन्द्र में सूर्य हीन करके फिर शेषराशि का अंश कर लेना फिर १२ के भाग से लब्ध गततिथि होती है. शेषांक को १२ से शोधित किये तिथि का भोग होता है उस अंश को ६० से गुण के उसमें घटी युक्त करके फिर ६० से गुण के उसमें पल युक्त करके फिर ६० से गुण के चन्द्र सूर्य की गत्यंतर के भाग से लब्ध वर्तमान तिथि की घटी पल होती है. ऐसे ही स्पष्ट चन्द्रमा की घटी करके ८०० के भाग से लब्ध गत नक्षत्र होता है. शेषांक को ८०० से शोधित अंक को ६० से गुण के अधस्थ पल युक्त करके फिर ६० से गुण के ८०० के भाग से लब्ध भोग्य नक्षत्र की घटी और पल होती है. एवं सूर्य और चन्द्रमा का योग करके उसकी घटी बना के फिर ८०० के भाग से लब्ध गत योग होता है. शेषांक को ८०० से शोधित करके फिर घटी ६० से गुण के अधस्थ पल युक्त करके फिर ६० से गुण के चंद्र सूर्य की गति योग के भाग से लब्ध वर्तमान योग की घटी पल होती है. यहां कर्ण की घटी पल पूर्ववत् समझनी चाहिये.

अथ भौमादि पांचों के स्पष्ट करने की विधि.

तात्कालिक भौम गुरु और शनि को तात्कालिक मध्यम रवी में हीन किये अपना अपना शीघ्र केंद्र होता है और बुध और शुक्र इन दोनों का शीघ्र केन्द्र तात्कालिक मध्यमही को पूर्वोक्त समझना चाहिये उक्त शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से अधिक होतो १२ से शोध के फिर उसका अंश बना के शीघ्र फल सारिणी के अंश तुल्य सूत्र कोष्ठक में शीघ्र फल लेके फिर शीघ्र केन्द्र की कला के कोष्ठक में कला और विकला के कोष्ठक में विकला लेके उक्त सारिणी में ऋण धन देख के शीघ्र फल में ऋण धन करके उस फल को आधा करके तात्कालिक मध्यमग्रह में मेषादि शीघ्र केंद्र के कारण तो धन और तुलादि केंद्र के वस में ऋण किये शीघ्रार्द्ध फल संस्कृत-

ग्रह होता है.

अथ मंदस्पष्ट ग्रह करने की विधि.

शीघ्रार्द्ध फल संस्कृत ग्रह को निज निज मंगल ४ बुध ७ बृहस्पति ६ शुक्र ३ शनि ८ के मन्दोच्चांक राशी में हीन किये मन्दकेन्द्र होता है. इस मन्दकेन्द्र का उक्त विधि से भुजांश बना के मन्दफल सारिणी में भुजांश कोष्ठक के सूत्र में ग्रह का मन्दफल लेके फिर मन्दकेन्द्र की कला के तुल्यकला और विकला के कोष्ठक में विकला सारिणी से लेके मन्द फल में युक्त कर के फिर मेष तुलादि मन्दकेन्द्र के कारण उक्तविधि से तात्कालिक मध्यम ग्रह में क्रम से धन ऋण किये मन्दस्पष्ट ग्रह होता है.

अथ स्पष्ट ग्रह करने की विधि.

उक्त मन्दफल को ग्रह में धन किया होतो ऋण और ऋण किया होतो धन शीघ्र केन्द्र में किये निज निज ग्रह का द्वितीय शीघ्र केन्द्र होता है. इस को ६ राशि से अधिक हुए १२ मे शोध के उक्तविधि से अंश कर के शीघ्रफल सारिणी के सूत्र कोष्ठक में शीघ्र फल लेके उक्त द्वितीय शीघ्रकेन्द्र की कला तुल्य कला और विकला तुल्य विकला ऋण धन सारिणी से लेके शीघ्र फल के उक्त विधि से संस्कार देके फिर मेष तुलादि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के कारण क्रम से धन ऋण मन्द स्पष्टग्रह में करने से ग्रहस्पष्ट होता है.

अथ भौमादिकों की गति स्पष्ट करने की विधि.

मन्द स्पष्ट फल सारिणी में जिस ग्रह का गतिफल हो वह कर्कादि केन्द्र के कारण तो धन और मकरादि केन्द्र के कारण ऋण संज्ञक कह लाता है और शीघ्र फल सारिणी में गतिफल ऋण धन जैसा है वैसा- उसी जगे लिखा हुया है. अव यहां दोनों ठौर धन धन हो तो धनकरता

और एक गतिफल तो धन हो और दूसरा ऋण हो तो दोनों के अन्तर किये ग्रह की स्पष्ट गति होती है.

अथ इन पांचों के उदयास्त वक्र-मार्ग जानने की विधि.

उक्त भौमादि ग्रह द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश के वस से उदयास्त वक्र-मार्ग होते हैं. जिसमें मंगल २८, बुध २०५ गुरु १४ शुक्र १८३ शनि १७ यह शीघ्रांशों पर पूर्व में उदय होते हैं. और मंगल ३३२ बुध १५५ बृहस्पति ३४६ शुक्र १७७ शनि ३४३ इन शीघ्रांशोंपर पश्चिम में अस्त होते हैं. मंगल १६३ बुध १४५ गुरु १२५ शुक्र १६७ शनि ११३ इन अंशों पर वक्र होते हैं. और मंगल १९७ बुध २२५ बृहस्पति २३५ शुक्र १९३ शनि २४७ इन अंशों पर मार्ग होतेहैं बुध ५० अंशोंपर पश्चिम में उदय होके फिर ३१० शीघ्रांशों पर पूर्वमें अस्त होता है. और शुक्र २४ अंशोंपर पश्चिम में उदय होके फिर ३३६ शीघ्रांश पर पूर्व में अस्त होता है. बाकी और ग्रह सदैव पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होते हैं.

अथ उदयास्त वक्र मार्ग के दिन और इष्ट लाने की विधि.

जिस दिन इष्ट घटी पर ग्रह का द्वितीय शीघ्रांश उक्त वक्र मार्ग उदयास्त अंशों से न्यूनाधिक्य हो जिसका अन्तर करके भौम के अंशों को दुना बुध के अंशों को ३ के भाग से लब्ध लेने. गुरु के अंश दो जगे रख के एक जगे ९ के भाग से लब्ध ले के दूसरी जगे के अंक में युक्त करदेना चाहिये. शुक्र के अंशों को १० से गुण के ६ के भाग से लब्ध लेवे और

१. दूरस्थितः स्वशीघ्रोच्चाद्ग्रहः शिथिलरश्मिभिः। सव्येतराकृष्टतनुर्भवेद्वक्रगतिस्तदा ॥ इति सूर्य सिद्धांते. अर्थात् अपने शीघ्रोच्च से ग्रह दूर परजाने के कारण शिथिल रश्मि होके कुछ पीछा हटता है यह वक्री कहलाता है. स्वशीघ्रोच्च के नजीक आनेसे फिर आगे चलताहै जिससे मार्गी ग्रह कहलाता है.

शनि का शीघ्र भागांतर जैसा है वैसा उक्त शीघ्रभागों से अधिक होतो ऋण और कम होतो धन इष्ट शरादि में करनेसे ग्रह का उदयास्त वक्र मार्ग दिनादि होते हैं ॥ इति श्री मनु रचिते दैवज्ञ विनोदे सुभाषा विभूषिते सारिणीनो ग्रहस्पष्टीकरण विधि कथनं नाम अष्टादश विनोदः॥१८॥

मुख्य नगरों के अक्षांश पलभा रेखांतर पलानि.

शहर	रेखा	अक्षः	पलभा	शहर	रेखा	अक्षः	पलभाः	शहर	रेखा	अक्षः	पलभाः
काश्मीर	पू ८	३४।६	७।५९	ग्वालियर	पू ३४	२६।१२	५।५४	पूना	प १९	१८।२९	४।०
लाहोर	प ५	३१।३३	७।२२	उदयपुर	प २०	२४।३७	५।३०	बीकानेर	प २४	२८।१	६।२३
दिल्ली	पू १४	२८।३७	६।३२	उज्जैन	०	२३।१	५।७	अमृतसर	पू ९	३१।३७	७।२३
नेपाल	पू ९२	२७।४३	६।१८	कलकत्ता	पू १२८	२२।३६	४।४९	जंबू	पु ७	३२।४४	७।४२
जयपुर	प १	२६।५६	६।६	मुंबई	प २९	१८।५७	४।७	द्वारका	प ७१	२३।१४	४।५५
जोधपुर	प २२	२६।२०	५।५९	मदरास	पू ४१	१३।४	२।४७	नागपुर	पू ३३	२१।८	४।३९
सीकर	प ११	२७।४	६।१०	रामेश्वर	पू ३५	९।२५	१।५७	सिंहपुर	पू २८३	१।२०	०।१७
रामगढ़	प १२	२७।१०	६।१२	लंडन	प ७५०	५१।३१	१३।६	कांची	०	१५।६	२।६
काशी	पू ७२	२५।२०	५।४५	काबुल	प ६६	३४।२७	८।३	जबलपुर	पू ४४	२३।९	५।७
सिंधहै.	प ७४	२५।२४	५।४१	जगन्नाथ	पू १०१	१९।४६	४।२१	भडोच	प २७	२१।४१	४।४६
हैदराबाद नि.	पू २८	१७।१०	३।४४	पारीस	७१४	४८।५०	१३।४३	ढाका	पू १४७	२३।४४	५।१७

प्रसिद्ध देश वा नगरों के लग्नमान.

लग्न	लंका	जयपुर	जोधपुर	सीकर	श्रीनगर	लाहोर	दिल्ली	नेपाल
मी. मे.	२७८	२१७	२१९	२१७	२०३	२०५	२११	२१५
कुं. वृ.	२९९	२५१	२५२	२५०	२३६	२४०	२४७	२४९
म. मि.	३२३	३०३	३०४	३०३	२९७	३०१	३०२	३०२
ध. क.	३२३	३४३	३४२	३४३	३४९	३४५	३४४	३४४
वृ. सिं.	२९९	३४७	३४६	३४८	३६२	३५८	३५१	३४९
तु. कं.	२७८	३३९	३३७	३३९	३५४	३५१	३४१	३४१

लग्न	काशी	सिंधहै०	हैदराबाद	ग्वालियर	उदयपुर	उज्जैन	कलकत्ता	मुंबई
मी. मे.	२२१	२२२	२४१	२१९	२२३	२२७	२३०	२३७
कुं. वृ.	२५३	२५४	२७०	२५२	२५५	२५९	२६१	२६७
म. मि.	३०४	३०५	२०२	३०४	३०५	३०६	३०७	३१०
ध. क.	३४२	३४१	३३५	३४२	३४१	३४०	३३९	३३६
वृ. सिं.	३४५	३४४	३२८	३४६	३४३	३३९	३३७	३३१
ध. कं.	३३५	३३४	३१५	३३७	३३३	३२९	३२६	३१९

लग्न	मदरास	गंगद्वार	लंडन	काबुल	जगन्नाथ	पारीस	पूना	बीकानेर
नी. मे.	२५१	२५९	१२७	१९८	२३५	१४१	२२८	२१५
कुं. वृ.	२७७	२८४	१७९	२३५	२६५	१९०	२६७	२५८
म. मि.	३१४	३१७	२७३	२९७	३०९	२७८	३१०	३०२
ध. क.	३३२	३२९	३७३	३४१	३३७	३६८	३३९	३४४
वृ. सिं.	२९१	३१४	४१९	३६३	३३३	४०८	३३१	३५०
ध. कं.	२०५	२९७	४२९	३५८	३२१	४२५	३१८	३४१

देशांतरलग्नमानसारिणी.

अमृतसर	जंबू	द्वारका	नागपुर	सिंहपुर	कांची	जबलपुर	भडोच	ढाका	रामगढ	लग्नमान
२०५	२०१	२२९	२३२	२७६	२५७	२२७	२३१	२२६	२१६	मे. मी.
२५०	२३८	२६०	२६२	२९७	२८३	२५८	२६१	२५७	२५०	ट. कुं.
२९९	२९८	३०७	३०८	३३३	३१६	३०६	३०८	३०६	३०३	मि. म.
३४७	३४८	३३९	३३८	३२३	३३०	३४०	३३८	३४०	३४३	क. ध.
३५८	३६०	३३८	३३६	३०१	३२५	३४०	३३७	३४१	३४८	सिं. वृ.
३५१	३५५	३२७	३२४	२८०	२९९	३२९	३२५	३३०	३३६	कं. तु.

प्रसिद्ध नगरों के चरखंडा.

श्रीनगर	७१।६३।२६	काशी	५७।४६।१९	मद्रास्	४७।३२।१९	अमृतसर	७३।५९।२४
लाहौर	७१।५९।२२	सिंधहैद्रा०	५६।४५।१७	रामेश्वर	११।१५।१६	जंबू	७७।६१।२५
जोधपुर	५९।४७।१९	द.हैदराबाद	३७।२९।१२	लंडन	१९१।१२०।५०	द्वारका	४९।३९।१६
जयपुर	६१।४८।२०	ग्वालियर	५९।४७।१९	काबुल	८०।६४।२६	नागपुर	४६।३७।१५
रामगढ	६२।४९।२०	उदयपुर	५५।४४।१८	जगन्नाथ	४३।३४।१४	कांची	२१।१६।७
सीकर	६१।५१।२०	उज्जैन	५२।४०।१७	पारीस	१३७।१०९।४५	जबलपुर	५२।४१।१७
दिल्ली	६५।५२।२१	कलकत्ता	४८।३८।१६	पूना	४०।३२।१३	भडोच	४७।३८।१६
नेपाल	६३।५०।२१	मुंबई	४१।३२।१३	बीकानेर	६३।५१।२१	सिंहपुर	२।२।०

सूक्ष्मगतिचक्रम्.

सूर्य.	चन्द्र.	उच्च.	राहु.	भौम.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१३	०	०	०	१	०	०	०
५९	१०	६	३	३१	६	४	३६	२
८	३४	४०	१०	२६	२४	५९	५९	०
१०	५३	५१	४८	३१	८	८	४०	३३
२७	५६	२६	२५	३	७	३४	६	४
९	०	०	०	०	०	०	०	०
५९ ८	७९० ३५	६ ४१	३ ११	३१ २६	१८६ २४.	५ ०	९७ ०	२ ०

द्वि. पंचाशदवधौराम दुर्गे चर पलं अय० २३।०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
५७ मा.	६१	७२	८३	९४	१०५	११३	११७	१२२	१२६	१२९	१२५	११९	११६	११३	१०६	९९	
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३२	३४	
८४	७२	६२	४७	३३	१९	६ ऋ.	६ ध.	२२	३७	५०	६५	७६	९५	१०७	१११	११५	
३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
११८	१२४	१२९	१२४	१२०	११६	११३	१०५	९२	८१	६५	५५	४१	२६	१२ ध.	३ ऋ.	१६	३०

त्रयोदश दिनात्मक चाल. १३

र.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	५	०	११	०	१	०	०	०
१२	२२	१	२९	६	१०	१	८	०
४८	१७	२६	१८	४८	२३	४	०	२६
४६	३१	५१	३९	४५	१४	४९	५८	५

चतुर्दश दिनात्मक चालनं १४

सू.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	६	०	१२	०	१	०	०	०
१३	४	१	१९	७	१२	१	८	०
४७	१८	३३	१५	२०	२९	९	३७	२८
५५	८	३२	२९	११	२०	४०	५५	६

पंचदश दिनात्मक चालन. १५

र	चं	उ	रा.	मं	बु.	गु.	शु.	श.
०	६	०	११	०	१	०	०	०
१४	२७	१	२९	७	२६	१	१	०
४७	३८	४०	२२	५१	३६	२४	२४	२०
२	४३	२१	१८	३८	२	५०	५५	६

षोडशदिनात्मक चालन. १६

र.	चं.	उ.	रा.	मं.	बु	गु.	शु.	श.
०	०	०	११	०	१	०	०	०
१५	०	१	२९	८	१९	१	१	०
४६	४१	४६	९	२३	४२	१९	५१	३२
११	१८	५७	७	५	२६	४६	५५	६

सप्त दिनात्मक चालन.

सू.	मं.	बु.	ए.	गु.	शु.	रा.	चं.	चंउ.
०	०	०	०	०	०	०	३	०
६	१	२१	०	४	०	०	२	०
५१	४७	४४	३४	१८	१४	२२	१४	४६
५७	६	४९	३४	५८	२	१६	४	४६

वक्रमार्गोदयास्त भागाः

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रहाः
२८	२०५ पू.उ. १० प उ	९४	२५ प उ. १८२ पू.उ	१७	उदय
३१२	१९९ प. अस्त ३१० पू अस्त	२४६	१७७ प अस्त ३१६ पू.अस्त	३४३	अस्त
२६३	१४५	१२५	१६७	११३	वक्र.
२९७	२२५	२३५	१९३	२४७	मार्ग.
१७	१९	११	९	१५	कालां.

सूर्यलब्धिकोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
सूर्य लब्धि	०	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९
	०	२२	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१७	१६	१५
	०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८
	०	२०	२०	३०	४१	५१	२	१२	२२	३३	४२	५३	३	१३	२५	३४	४४	५४
कोष्ठ	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
सूर्य लब्धि.	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	८
	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	४	३	२	१	०	२९
	२७	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६
	५	१५	२६	३७	४६	५५	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२९	३९	५०	०
कोष्ठ	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
सूर्य लब्धि	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८
	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१४
—	५७	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१५	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२
	१०	२०	३१	४१	५१	२	१३	२२	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	४
को.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
सूर्य लब्धि	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	५	६
	१३	१२	११	१०	९	९	८	७	६	५	४	३	२	२	१	०	२९	२८
	२१	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	३४	४

सूर्यशेषांक कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
सूर्यशेषांक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७
	०	८	१६	२५	३३	४१	५०	५०	५	१४	२२	३०	३८	४६	५४
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
सूर्य शेषांक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४
	३	११	१९	२०	३५	४२	५२	५२	८	१६	२५	३०	४१	४९	५७

सूर्य शेषांक कोष्ठक.

कोष्ठ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
सूर्य-शेषांक	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१
	५	१४	२३	३१	३८	४६	५४	०	२१	१९	२७	३५	४३	५१	५९

कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
सूर्य-शेषांक	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	९
	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२

चन्द्रलब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	२	४	७	९	११	२	४	६	९	११	१	४	६	८	११	०	२
अं.	०	१०	२१	१	१२	२२	३	१४	२४	५	१५	२६	६	१७	२८	८	१९	२९
क.	०	३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३८	१३	४८	२३	५८	३३	८	४२	१७	५२
वि.	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५५	४७	३९	३१	२३	१५	७	५९	५१	४३

को.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	६	[illegible]	७	९	३	६	८	१०	१	३	४	८	१०	०	३	५	९	१०
अं.	१७	२२	१	१२	२२	३	१३	२४	४	१५	६	६	१७	२८	८	१९	२९	१०
क.	२७	२	३७	१२	४७	२१	५६	३१	६	४३	६	५१	२५	०	३५	१०	४५	२०
वि.	३५	२७	१९	११	३	५४	४६	३८	३०	२२	१४	६	५८	५०	४२	३४	२६	१८

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	०	३	५	७	१०	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	११	२	४
अं.	२०	१	१२	२३	३	१३	२४	४	१५	२६	६	१७	२७	८	११	२१	१०	२०
क.	५५	३०	५	३९	१८	४९	२४	५९	३४	०	४३	१८	५३	२८	३	३८	१२	४७
वि.	१०	२	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५	५७	४९	४१	३३	२५	१०	९	१	५२

कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	७	९	११	२	४	६	९	११	१	४	६	८	११	१	३	५	७	१०
अं.	१	११	२२	३	१३	२४	४	१५	२६	६	१७	२७	८	१८	२९	१०	२०	१
क.	२१	५७	३२	७	४२	१७	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५६	३०	५	४०	१५
वि.	४४	३६	२८	२०	१२	४	५१	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८

चन्द्र शेष कोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६
अं.	०	१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२४	८	२१	४
क.	०	१०	२३	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८
वि.	०	३५	१०	४४	१९	५४	२९	४	३९	१४	४९	२४	२८	३३	८

कोष्ठ	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	०	०
अं.	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	१९	३	१६	२९	१२	१५	८	२२
क.	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५२	३	१३	२४	३५	४५	५६	६
वि.	४३	१८	५३	२८	२०	३७	६२	४७	२२	५७	३२	७	४१	१६	५१

कोष्ठ	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
अं.	५	१८	१	१४	२७	११	२४	७	२०	३	१७	०	१३	२६	९
क.	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४२	५२	३	१३	२४	३४	४५
वि	२६	१	३६	११	४५	२०	५५	३०	५	४०	१५	४९	२४	५९	३४

कोष्ठ	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	०	०	१	१	१
अं.	२२	६	१९	२	१५	२८	११	२५	८	२१	४	१७	१	१४	२७
क	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	२	१३	२४
वि	९	४४	१९	५४	२८	२	३८	१३	४८	२३	५८	३२	७	४५	१७

उच्च लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३
अं.	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	२३	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	२३
क.	०	४०	२२	२	४३	२४	५	४६	२६	७	४८	२९	१०	५१	३२	१२	५३	३४
वि.	०	५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५१	४३	३४

कोष्ठ.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७
अं.	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३
क.	१५	५६	३०	१८	५८	१९	२०	१	४२	२३	४	४४	२५	६	४७	२८	९	५०
वि.	२५	१७	९	०	५१	४२	३४	२६	१७	९	०	५१	४२	३४	२६	१७	८	०

उच्च लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठ	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
अं.	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२४
क.	३०	११	५२	३३	३४	५५	३६	१६	५७	३८	१९	०	४१	२२	२	४३	२४	५
वि.	५१	४३	३४	२५	१७	९	०	५१	४२	३४	२६	१७	८	०	५१	४३	३४	२६

कोष्ठ.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३
अं.	०	७	१४	२०	२७	[illegible]	१०	१७	२४	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२५
क.	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२	१२	५४	३४	१५	५६	३७	१८	५९	४०	२०
वि.	१७	८	०	५१	४३	३४	२६	१७	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	४६

उच्च शेष कोष्ठक

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
क.	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३
वि.	०	४१	२२	३	४३	२४	५	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२

कोष्ठ.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
क.	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५३	०	७	१३
वि.	१३	५४	३४	१५	५६	३७	१८	५९	३९	२१	१	४२	२३	४	४५

कोष्ठ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क.	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३
वि	२६	७	४७	२८	९	५०	३१	१२	५३	३३	१४	५५	३६	१७	५८

कोष्ठ.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
क.	०	७	१४	२०	२७	३४	४३	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४
वि.	३९	१९	०	४१	२२	३	४४	२५	५	४६	२७	८	४९	२९	११

राहु लब्धि कोष्ठक.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
अं.	०	२६	२३	२०	१७	१४	१०	७	४	१	२८	२५	२१	१८	१५	१२	९	५
क.	०	४१	३८	२७	१६	५	५५	४४	३५	२२	११	१	५०	३९	२८	१७	७	५६
त्रि.	०	१२	२४	३५	४६	५८	१०	२१	३५	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७
को.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८
अं.	२	२९	२६	२३	२०	१६	१३	१०	७	४	०	२७	२४	२१	१८	१५	११	[illegible]
क.	४५	३४	२३	१२	२	५१	४०	२९	१९	८	५७	४६	३५	२४	१४	३	५२	४१
वि.	२९	४०	५२	४	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४६
को.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६
अं.	५	२	२९	२५	२२	१९	१६	१२	९	६	३	०	२७	२४	२०	१७	१४	११
क.	५०	२०	९	५८	४७	३६	२६	१५	४	५३	४२	३२	२१	१०	५१	४८	३८	२७
वि.	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३२	५१	९	१४
कोष्ठ	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४
अं.	८	५	१	२८	२५	२२	१९	१६	१२	९	६	३	०	२६	२३	२०	१७	१४
क.	१६	५	५४	४६	३३	२२	११	०	४९	३९	१८	१७	६	५५	४५	३४	२३	१२
वि.	२६	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२२	३४	४८	५८	१०	२२	३४	४६

राहु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	०	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९
क.	०	५६	५३	५०	४७	४४	४०	३७	३४	३१	२८	२५	२१	१८	१५
वि.	०	४१	३८	२८	१७	७	५५	४४	३४	२३	१२	२	५०	३९	२९
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२३	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	२९	२९	२९	२९	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
क.	१२	९	५	२	५९	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३७	३४	३०	२७
वि.	१८	७	५६	४५	३५	१३	२३	२	५१	४१	३०	१९	८	५७	४७

राहुशेषकोष्ठक.

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
क.	२४	२१	१८	१५	११	८	५	२	५९	५५	५२	४९	४६	४३	४०
वि.	३६	२५	१४	३	५३	४२	३१	३०	९	५८	४८	३७	२६	१५	४
कोष्ठक	**४५**	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**
रा.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२६	२६	२६
क.	३६	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४	११	८	५	१	५८	५५	५२
वि.	५४	४३	३२	२१	१०	५९	४९	३८	२७	१६	६	५५	४४	३३	२२

भौमलब्धिकोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	०	१	२	३	४	५
अं.	०	१	२	४	५	७	८	१०	११	२	१४	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२४
क.	०	२६	५३	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५२	१८	४४	११	३७	४	३०
वि.	०	३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	४२	१२	४४	१४	४६	१७	४८
कोष्ठ.	**१८**	**१९**	**२०**	**२१**	**२२**	**२३**	**२४**	**२५**	**२६**	**२७**	**२८**	**२९**	**३०**	**३१**	**३२**	**३३**	**३४**	**३५**
रा.	६	७	८	१०	११	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	[illegible]
अं.	२५	२७	२८	०	१	२	४	६	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०
क.	५७	२३	५०	१६	४३	९	३६	२	२९	५५	२२	४९	१५	४२	८	३५	१	२८
वि.	१९	५०	२१	५२	२३	५४	२५	५६	२७	५८	३०	२	३२	३	३४	५	३६	७
कोष्ठ	**३६**	**३७**	**३८**	**३९**	**४०**	**४१**	**४२**	**४३**	**४४**	**४५**	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**
रा.	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	०	१	२	३	४	५	६	७
अं.	२१	२३	२४	२६	२७	२९	०	३	३	४	५	७	९	१०	१२	१३	१४	१६
क.	५४	२१	४७	१४	४०	७	३३	०	२६	५३	२०	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५
वि.	३८	९	४०	११	४२	१३	४४	१५	४७	१८	४९	२०	५२	२२	५३	२४	५५	२६
कोष्ठ.	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**	**६०**	**६१**	**६२**	**६३**	**६४**	**६५**	**६६**	**६७**	**६८**	**६९**	**७०**	**७१**
रा.	८	९	१०	११	०	१	२	३	४	६	७	८	९	१०	११	०	१	२
अं.	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२६	२७	२९	०	२	३	५	६	८	९	१०	१२
क.	५१	१८	४४	११	३८	४	३१	५७	२४	५०	१७	४३	१०	३६	३	२९	५६	२२
वि.	५७	२८	५९	३०	१	३२	३	३५	६	३६	६	३६	६	३६	६	३६	६	३६

भौम शेष कोष्टक.

कोष्टक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
क.	०	३१	२	३४	५	३०	८	४०	११	४२	१४	४५	१७	४८	२०
वि.	०	२७	५३	२०	४६	१३	३९	६	३२	५९	२५	५२	१८	४५	११
कोष्टक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
ग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५
क.	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	८	४०	११
वि.	३८	४	३०	५७	२४	५०	१७	४३	१०	३६	३	२९	५५	२२	४९
कोष्टक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
ग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३
क.	४३	१४	४६	१७	४९	२०	५१	२३	५४	२६	५७	२९	०	३२	३
वि.	२६	४२	९	३५	२	२८	५४	२१	४८	१४	४१	७	३४	०	२७
कोष्टक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
ग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	०	०
क.	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१४	४६	१७	४९	२०	५२	२३	५५
वि.	५३	२०	४६	१२	३९	६	३२	५८	२५	५२	१८	४५	११	३८	५

बुध लब्धि कोष्टक.

कोष्ट.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
ग.	०	६	०	६	०	७	१	७	१	७	२	८	२	८	२	९	३	९
अं.	०	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८
क.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१३	३७	१	२५	४९	१३	३७	२	२६	५०
वि.	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५६	४	१३	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८
कोष्ट	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
ग.	३	१०	४	१०	४	१०	५	११	५	११	५	०	६	०	६	१	७	१
अं.	२५	१	७	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२	१८	२४	१	७	१४
क.	१४	३८	२	२६	५०	१५	३९	३	२७	५१	१५	३९	४	२८	५२	१६	४०	४
वि.	२६	३४	४२	५०	५८	७	१४	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४

बुधलब्धिकोष्ठक.

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	७	१	८	२	८	२	८	३	०	३	९	४	१०	४	१०	४	११	५
अं	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९
क.	२८	२३	१७	४१	५	२९	५३	१७	४१	६	३०	५४	१८	४२	६	३०	५५	१९
वि.	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	०	१०

को.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	११	५	११	६	०	६	०	७	१	७	१	७	२	८	२	८	२	९
अं	१५	२२	२८	४	११	१७	२४	०	६	१३	१९	२६	२	८	१५	२१	२८	४
क.	४३	७	३१	५५	१९	४३	८	३२	५६	२०	४४	८	३२	५६	२१	४५	९	३३
वि.	१०	२७	३४	४२	५१	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६

बुधशेषकोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
अं	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	१	४	७	१०	१३
क.	०	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९
वि.	०	२४	४८	२	३६	१	२५	४९	१३	३७	१	२५	५०	१४	३८

कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अं	१६	१९	२२	२५	२९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	०
क.	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५
वि.	२	२६	५०	१४	३९	३	२७	५१	१५	३९	३	२८	५२	१६	४०

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४
अं	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	१	४	७	१०	१३	१६
क.	११	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१
वि.	४	२८	५२	१६	४१	५	२९	५३	१७	४१	५	३०	५४	१८	४२

कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६
अं	१९	२२	२६	२९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	०	३
क.	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७
वि.	६	३०	५५	१९	४३	७	३१	५५	१९	४३	७	३२	५६	२०	४४

गुरु लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	१	१	१	२	२	२	२	२
अं.	०	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४
क.	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५
वि.	०	९	१७	२६	३५	४३	५१	०	९	१८	२६	३४	४३	५२	०	९	१७	२६

कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५
अं.	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४
क.	४४	४३	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	३०
वि.	३४	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५२	०	९	१७	२६	३४	४३	५२	०

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
अं.	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४
क.	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४
वि.	९	१७	२६	३४	४३	५२	०	९	१७	२६	३५	४३	५२	०	२	१७	२६	३४

कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
अं.	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	४	९	१४	१९	२३
क.	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	१	०	५९	५९
वि.	४३	५२	१९	९	१७	२६	३४	४३	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४

गुरु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
क.	०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९
वि.	०	५९	५८	५७	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५१	५१	४९	४८

कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
क.	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४
वि.	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३५

शनि लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
अं.	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६
क.	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०
वि.	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५६	१८	४३	४	२८	५१	१३	३६	०	२३
कोष्ठक	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**	**६०**	**६१**	**६२**	**६३**	**६४**	**६५**	**६६**	**६७**	**६८**	**६९**	**७०**	**७१**
रा.	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
अं.	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
क.	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७
वि.	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८

शनि शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
वि.	०	०	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
कोष्ठक	**१५**	**१६**	**१७**	**१८**	**१९**	**२०**	**२१**	**२२**	**२३**	**२४**	**२५**	**२६**	**२७**	**२८**	**२९**
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क.	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
वि.	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११
कोष्ठक	**३०**	**३२**	**३२**	**३३**	**३४**	**३५**	**३६**	**३७**	**३८**	**३९**	**४०**	**४१**	**४२**	**४३**	**४४**
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
क.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
वि.	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१७	१७	१७
कोष्ठक	**४५**	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
क.	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
वि.	१७	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३

अयनांश और रविचक्र निघ्नध्रुवोनक्षेपकाः

अयनांश	१७ ४४	१७ ५५	१८ ६	१८ १७	१८ २८	१८ ३९	१८ ५०	१९ १	१९ १२	१९ २३	१९ ३४	१९ ४५	१९ ५६	२० ७	२० १८	२० २९
शक कोष्ठक	१५०८	१५१९	१५३०	१५४१	१५५२	१५६३	१५७४	१५८५	१५९६	१६०७	१६१८	१६२९	१६४०	१६५१	१६६२	१६७३
चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	११ ८ ४५ ५४	११ ६ ५६ ४३	११ ५ ७ ३२	११ ३ १८ २१	११ १ २९ १२	११ २९ ३९ ५९	१० २७ ५० ४८	१० २६ १ ३७	१० २४ १२ २६	१० २२ २३ १५	१० २० ३४ ४	१० १८ ४४ ५३	१० १६ ५५ ४२	१० १५ ६ ३१	१० १३ १७ २०	१० ११ २८ ९
अयनांश	२० ४०	२० ५१	२१ २	२१ १३	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५७	२२ ८	२२ १९	२२ ३०	२२ ४१	२२ ५२	२३ ३	२३ १४	२३ २५
शककोष्ठ	१६८४	१६९५	१७०६	१७१७	१७२८	१७३९	१७५०	१७६१	१७७२	१७८३	१७९४	१८०५	१८१६	१८२७	१८३८	१८४९
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	१० ९ ३८ ५८	१० ७ ४९ ४७	१० ६ ० ३६	१० ४ ११ २५	१० २ २२ १४	१० ० ३३ ३	९ २८ ४३ ५२	९ २६ ५४ ४१	९ २५ ५ ३०	९ २३ १६ १९	९ २१ २७ ८	९ १९ ३७ ५७	९ १७ ४८ ४६	९ १५ ५९ ३५	९ १४ १० २४	९ १२ २१ १३
अयनांश	२३ ३६	२३ ४७	२३ ५८	२४ ९	२४ २०	२४ ३१	२४ ४२	२४ ५३	२५ ४	२५ १५	२५ २६	२५ ३७	२५ ४८	२५ ५९	२६ १०	२६ २१
शककोष्ठ	१८६०	१८७१	१८८२	१८९३	१९०४	१९१५	१९२६	१९३७	१९४८	१९५९	१९७०	१९८१	१९९२	२००३	२०१४	२०२५
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	९ १० ३१ २	९ ८ ४२ ५१	९ ६ ५३ ४०	९ ५ ४ २९	९ ३ १५ १८	९ १ २६ ७	८ २९ ३६ ५६	८ २७ ४७ ४५	८ २५ ५८ ३४	८ २४ ९ २३	८ २२ २० १२	८ २० ३१ १	८ १८ ४२ ५०	८ १६ ५२ ३९	८ १५ ३ २८	८ १३ १४ १७
अयनांश	२६ ३२	२६ ४३	२६ ५४	२७ ५	२७ १६	२७ २७	२७ ३८	२७ ४९	२८ ०	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४४	२८ ५५	२९ ६	२९ १७
शककोष्ठ	२०३६	२०४७	२०५८	२०६९	२०८०	२०९१	२१०२	२११३	२१२४	२१३५	२१४६	२१५७	२१६८	२१७९	२१९०	२२०१
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	८ ११ २५ ६	८ ९ ३५ ५५	८ ७ ४६ ४४	८ ५ ५७ ३३	८ ४ ८ २२	८ २ १९ ११	७ ० ३० ०	७ २८ ४० ४९	७ २६ ५१ ३८	७ २५ २ २७	७ २३ १३ १६	७ २१ २४ ५	७ १९ ३४ ५४	७ १७ ४५ ४३	७ १५ ५६ ३२	७ १४ ७ २२

गुरु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	२	३	३	३	३
क.	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९
वि.	३४	३३	३२	३२	३१	३०	३०	२९	२७	२७	२६	२५	२४	२३	२२
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क.	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४
वि.	२१	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९

शुक्र लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
राशि	०	१	२	३	४	६	७	८	९	११	०	१	२	४	५	६	८	८
अं.	०	६	१३	२०	२७	४	११	१८	२५	२	९	१६	२३	०	७	१४	२२	२८
क.	५९	५९	५९	५९	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५४	५४
वि.	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२१	१	४१	२२	२	४२	२०	१	४२	२१
कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१०	११	०	१	३	४	५	६	८	९	१०	११	०	२	३	४	५	७
अं.	५	१२	२२	२६	३	१०	१७	२४	२	८	१५	१२	२९	६	१२	२०	२७	४
क.	५४	५३	५३	५३	५२	५२	५२	५१	५१	५१	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८
वि.	१	४१	२२	२	४१	२२	३	४३	२३	३	४३	२३	३	४३	२३	४	४४	२४
कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	९	१०	०	२	२	३	५	६	७	८	९	१०	०	१	२	४	५
अं.	११	१८	२५	२	९	१६	२३	०	७	१४	२१	२८	५	१२	१९	२६	२	१०
क.	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२
वि.	४	४४	२४	४	४४	२४	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४५	२५	६	४६	२६
कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	६	७	९	१०	११	०	१	३	४	५	६	८	९	१०	११	१	२	३
अं.	१७	२४	१	८	१५	२२	२९	६	१३	२०	२७	४	११	१८	२५	२	९	१६
क.	[illegible]२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३६	३६
वि.	६	४६	२६	६	४६	२७	७	४७	२७	७	४७	२७	७	४७	२७	[illegible]	४७	२७

शुक्र शेषकोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	[illegible]	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८
क.	०	३६	२२	५०	२७	४	४०	२८	५५	३२	९	४६	२३	०	३७
वि.	०	५९	५९	५९	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	९	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१७	१७
क.	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	४८	२४	१	३८	१५	५२
वि.	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५३	५३	५२	५२	५२	५१	५१	५१	५०
कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७
क	२९	६	४३	२०	५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७
वि	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४६	४६	४५
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
अं.	२७	२८	२८	२९	०	०	१	२	२	३	३	४	५	५	६
क.	४४	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२
वि.	४५	४५	४४	४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४२	४१	४०

शनि लब्धि कोष्ठक

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
अं.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०	२	४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६
वि.	०	२३	४६	९	१२	५५	१८	४१	५	२७	५७	१४	३६	५९	२३	४६	९	३२
कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
अं.	६	[illegible]	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०	२	४	६	८	१०
क.	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३
वि.	५५	१८	४१	४	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४२	५	२८

द्विपंचाशदवधिस्थोमध्यमोरविः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
११	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२
२७	४	११	१८	२५	२	९	१६	२३	२९	६	१३	२०
५१	४५	४०	३४	२८	२२	१६	१०	४	५८	५२	४६	४०
३०	५८	०	२५	२२	३०	४०	३६	३६	३४	३१	१६	१०
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
२७	४	११	१८	२५	२	८	१५	२२	२९	६	१२	२०
३४	२७	२१	१५	९	३	५७	५०	४४	३८	३२	२६	२०
३	५५	४८	३५	३२	१४	४	५४	४३	३४	२३	१४	५
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८
२७	४	११	१७	२४	१	८	१५	२२	२९	६	१३	१९
५३	७	१	५४	४७	४२	३६	३०	२३	१७	११	५	५८
५१	४०	२५	१०	५६	३९	२१	५	५१	३४	१७	५	५९
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०-	५१	५२
८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
२६	३	१०	१७	२४	१	८	१५	२२	२८	५	१२	१९
५३	४६	४०	३४	२८	२३	१७	११	५	५९	५३	४८	४२
०	४४	४२	४६	५३	०	५	४१	३६	५३	१०	२७	४५

मन्दफलं सूर्यस्य द्विपंचाशदवधौ.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
६	५	५९	५२	४३	३३	२२	९	५०	४१	२५	१०	६	२१	३६	५१	५
५०	२२	४६	३६	४०	३५	३	१८	३४	०	४५	३५	[illegible]	५०	५३	४८	५५
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१
१८	३०	४१	५०	५८	४	८	१०	१०	९	५	०	५३	४४	३४	२३	१०
५५	४८	२१	२८	११	०	७	१८	३८	५	३७	२०	२३	४३	३४	७	२९

३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
५६	४२	२७	११	४५	२०	३५	५०	४	१७	२९	४०	४९	५७	३	७	१०	१०
५२	२०	१०	२९	३४	२३	५२	४०	३८	४८	४५	२९	४७	३४	३२	४८	१२	४१

चन्द्रचक्रनिघ्नध्रुवोनक्षेपकाः

चक्र.	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	१० २६ २८ ५६	१० २२ ४२ ४३	१० १८ ५६ ३२	१० १४ १० २१	१० ११ २४ १०	१० ७ ३७ ५९	१० ३ ५२ ४८	१० ० ५ ३७	९ २६ १९ २६	९ २२ ३३ १५	९ १८ ४७ ४	९ १५ ० ५३	९ ११ १४ ४२	९ ७ २८ ३१	९ ३ ४२ २०	८ २९ ५६ ९
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	८ २६ ९ ५८	८ २२ २३ ४७	८ १८ ३७ ३६	८ २८ ५१ २५	८ ११ ५ १४	८ ७ १९ ३	८ ३ ३२ ५२	७ २९ ४६ ४१	७ २६ ० ३०	७ २२ १४ १९	७ १८ २८ ८	७ १४ ४१ ५७	७ १० ५५ ४६	७ ७ ९ ३५	७ ३ २३ २४	६ २९ ३७ १३
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	६ २५ ५१ २	६ २२ ४ ५१	६ १८ १८ ४०	६ १४ ३२ २९	६ १० ४६ १८	६ ७ ० ७	६ ३ १३ ५६	५ २९ २७ ४५	५ २५ ४१ ३४	५ २२ ५५ २३	५ १८ ९ १२	५ १४ २३ १	५ १० ३६ ५०	५ ६ ५० ३९	५ ३ ४ २८	४ २९ १८ १८
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	४ २५ ३२ ७	४ २१ ४४ ५७	४ १७ ५८ ४६	४ १४ १२ ३५	४ १० २६ २४	४ ६ ४० १४	४ २ ५४ ३	३ २९ ७ ५२	३ २५ २१ ४१	३ २१ ३५ ३०	३ १७ ४९ १९	३ १४ ३ ८	३ १० १६ ५७	३ ६ ३० ४६	३ २ ४४ ३५	२ २८ ५८ २४

उच्चचक्रनिघ्नध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	०	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
क्षेपक	० ० ० ०	११ १ ३ ०	१ २८ १८ ०	४ २५ ३३ ०	७ २२ ४८ ०	१० २० ३ ०	२ १७ १८ ०	४ १४ ३३ ०	७ ११ ४८ ०	१० ९ ३ ०	१ ६ १८ ०	४ ३ ३३ ०	७ ० ४८ ०	९ २८ ३ ०	० २५ १८ ०	३ २२ ३३ ०
चक्र	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
क्षेपक	६ १९ ४८ ०	९ १७ ३ ०	० १४ १८ ०	३ ११ ३३ ०	६ ८ ४८ ०	९ ६ ३ ०	० ३ १८ ०	३ ० ३३ ०	५ २७ ४८ ०	८ २५ ३ ०	११ २२ १८ ०	२ १९ ३३ ०	५ १६ ४८ ०	८ १४ ३ ०	११ ११ १८ ०	२ ८ ३३ ०

उच्चचक्रनिघ्नंध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
क्षेपक	५	८	११	१	४	७	१०	१	४	७	१०	६	४	७	९	०
	५	३	०	२७	२४	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	०	२७	२४
	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चक्र	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
क्षेपक	३	६	९	०	३	६	९	०	२	५	८	११	२	५	८	११
	२१	१९	१६	१३	१०	८	५	२	२९	२७	२४	२१	१८	१६	१३	१०
	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुचक्रनिघ्नंध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	६	११	४	९	१	६	११	४	९	२	७	०	५	१०	३	७
	१०	७	४	२	२९	२६	२३	२०	१७	१५	१२	९	६	३	०	२८
	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	०	७	१०	३	८	१	६	११	४	८	१	६	११	४	९	२
	२५	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	२९	२६	२४	२१	१८	१५	१२
	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	७	०	५	१०	२	७	०	५	१०	३	८	१	६	११	४	८
	९	७	४	१	२८	२५	२२	२०	१७	१४	११	८	५	३	०	२७
	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	१	६	११	४	९	२	७	०	५	९	२	७	०	५	१०	३
	२४	२१	१८	१६	१३	१०	७	४	१	२९	२६	२३	२०	१७	१४	१२
	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौमचक्रनिघ्नं ध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	११ ३ ५६ ०	९ ८ २४ ०	७ १२ १२ ०	५ १७ २० ०	३ २१ ४८ ०	१ २६ १६ ०	० ० ४४ ०	१० ५ १२ ०	८ ९ ४० ०	६ १४ ८ ०	४ १८ ३६ ०	२ २३ ४ ०	० ५७ ३२ ०	११ ५ ० ०	९ ६ २८ ०	७ १० ५६ ०
चक्र	२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	५ १५ २४ ०	३ १९ ५२ ०	१ २४ २० ०	११ २८ ४८ ०	१० ३ १६ ०	८ ७ ४४ ०	६ १२ १२ ०	४ १६ ४० ०	२ २१ ८ ०	० २५ ३६ ०	११ ० ४ ०	९ ४ ३२ ०	७ ९ ० ०	५ १३ २८ ०	३ १७ ५६ ०	१ २२ २४ ०
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	११ २६ ५२ ०	१० १ २० ०	८ ५ २८ ०	६ १० १६ ०	४ १४ ४४ ०	२ १९ १२ ०	० २३ ४० ०	१० २८ ८ ०	९ २ ३६ ०	७ ७ ४४ ०	५ ११ ३२ ०	३ १६ ० ०	१ २० २८ ०	११ २४ ५६ ०	९ २९ २४ ०	८ ३ ५२ ०
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	६ ८ २० ०	४ १२ ४८ ०	२ १७ १६ ०	० २१ ४४ ०	१० २६ १२ ०	९ ० ४० ०	७ ५ ८ ०	५ ९ ३६ ०	३ १४ ४ ०	१ १८ ३२ ०	११ २३ ० ०	९ २७ २८ ०	८ ३ ५६ ०	६ ६ २४ ०	४ १० ५२ ०	२ १५ २० ०

बुधचक्रनिघ्नं ध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	८ ८ ११ ०	४ ५ १४ ०	० १ ५७ ०	७ २८ ३० ०	३ २५ ३ ०	११ २१ ३६ ०	७ १८ ९ ०	३ २४ ४२ ०	११ ११ १५ ०	७ ७ ४८ ०	३ ४ २१ ०	११ ० ५४ ०	६ २७ २७ ०	२ २४ ० ०	१० १० ३३ ०	६ १७ ६ ०
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	२ १३ ३९ ०	१० १० १९ ०	६ ६ ४५ ०	२ ३ १८ ०	९ २८ ५१ ०	६ २६ २४ ०	१ २२ ५७ ०	९ १९ ३० ०	५ १६ ३ ०	१ १२ ३६ ०	९ ९ ९ ०	५ ५ ४२ ०	१ २ १५ ०	८ २८ ४८ ०	४ २५ २१ ०	० २१ ५४ ०

बुधचक्र निघ्नं ध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	८ १८ २७ ०	४ १५ [illegible] ०	० ११ ३३ ०	८ ८ ६ ०	४ ४ ३९ ०	० १ १२ ०	७ २७ ४५ ०	३ २४ १८ ०	११ २० ५१ ०	७ १७ २४ ०	३ १३ ५७ ०	११ १० ३ ०	७ ७ ३ ०	३ ३ ३६ ०	११ ० ९ ०	६ २६ ४२ ०

चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	२ २३ १५ ०	१० १९ ४८ ०	६ १६ ३१ ०	२ १२ ५४ ०	१० ९ २७ ०	६ ६ ० ०	२ २ ३३ ०	९ २९ ६ ०	५ २५ ३९ ०	१ २२ १२ ०	९ १८ ४५ ०	५ १५ १८ ०	१ ११ ५१ ०	९ ८ २४ ०	५ ४ ५७ ०	१ १ ३० [illegible]

गुरुचक्र निघ्नं ध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	१ २४ २८ ०	० २८ १० ०	० १ ५२ ०	११ ५ ३४ ०	१० ९ १६ ०	९ १२ ५८ ०	८ १६ ४४ ०	७ २० २२ ०	६ २४ ४ ०	५ २७ ४६ ०	५ १ २८ ०	४ ५ १० ०	३ ८ ५२ ०	२ १२ ३४ ०	१ १६ १६ ०	० १९ ५८ ०

चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	१० २३ ४० ०	१० २७ २२ ०	१० १ ४ ०	९ ४ ४६ ०	८ ८ २८ ०	७ १२ १० ०	६ १५ ५२ ०	५ १९ ३४ ०	४ २३ १६ ०	३ २६ ५८ ०	३ ० ४० ०	२ ४ २२ ०	१ ८ [illegible] ०	० ११ ४६ ०	११ १५ २८ ०	१० १९ १० ०

चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	९ २२ ५२ ०	८ २६ ३४ ०	८ ० १६ ०	७ ३ ५८ ०	६ ७ ४० ०	५ ११ २२ ०	४ १५ ४ ०	३ १८ ४६ ०	२ २२ २८ ०	१ २६ १० ०	० २९ ५२ ०	० ३ ३४ ०	११ ७ १६ ०	१० १० ५८ ०	९ १४ ४० ०	८ १८ २२ ०

चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	७ २ ४ ०	६ २५ ४६ ०	६ २९ २८ ०	५ ३ १० ०	४ ६ ५२ ०	३ १० ३४ ०	२ १४ १६ ०	१ १७ ५८ ०	० २१ ४० ०	११ २५ २२ ०	१० २९ ४ ०	९ २ ४६ ०	९ ६ २८ ०	८ १० १० ०	७ १३ ५२ ०	६ १७ ३४ ०

शुक्र चक्र निघ्नं ध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२
क्षेपक	१० २५ ५७ ०	९ ११ ५५ ०	७ २७ ५३ ०	६ १३ ५१ ०	४ २९ ४९ ०	३ १५ ४७ ०	२ १ ४५ ०	० १७ ४३ ०	११ ३ ४१ ०	९ १९ ३९ ०	८ ५ ३७ ०	६ २१ ३५ ०	५ ७ ३३ ०	३ २३ ३१ ०	२ ९ २९ ०	० २५ २७ ०

चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	११ ११ २५ ०	९ २७ २३ ०	८ १३ २१ ०	६ २९ १९ ०	५ १५ १७ ०	४ १ १५ ०	२ १७ १३ ०	१ ३ ११ ०	११ १९ ९ ०	१० ५ ७ ०	८ २१ ५ ०	७ ७ ३ ०	५ २३ १ ०	४ ८ ५९ ०	२ २४ ५७ ०	१ १० ५५ ०

चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	११ २६ ५३ ०	१० १२ ५१ ०	८ २८ ४९ ०	७ १४ ४७ ०	६ ० ४५ ०	४ १६ ४३ ०	३ २ ४१ ०	१ १८ ३९ ०	० ४ ३७ ०	१० २० ३५ ०	९ ६ ३३ ०	७ २२ ३१ ०	६ ८ २९ ०	४ २४ २७ ०	३ १० २५ ०	१ २६ २३ ०

चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	० १२ २१ ०	१० २८ १९ ०	९ १४ १७ ०	८ ० १५ ०	६ १६ १३ ०	५ २ ११ ०	३ १८ ९ ०	२ ४ ७ ०	० २० ५ ०	११ २६ ३ ०	९ २२ १ ०	८ ७ ५९ ०	६ २३ ५७ ०	५ ९ ५५ ०	३ २५ ५३ ०	२ ११ ५१ ०

शनि चक्र निघ्नं ध्रुवोनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	० ११ ९ ०	४ २५ २७ ०	९ ९ ४५ ०	१ २४ ३ ०	६ ८ २१ ०	१० २२ ३९ ०	३ ६ ५७ ०	७ २१ १५ ०	० ५ ३३ ०	४ २० ५१ ०	९ ४ ९ ०	१ १८ २७ ०	६ २ ४५ ०	१० १७ ३ ०	३ १ २१ ०	७ १५ ३९ ०

चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	११ २९ ५७ ०	४ १४ १५ ०	८ १५ ३३ ०	१ १२ ५१ ०	५ २७ ९ ०	१० ११ २७ ०	१२ २५ ४५ ०	७ १० ३ ०	११ २४ २१ ०	४ ८ ३९ ०	८ २३ ५७ ०	१ ७ १५ ०	५ २१ ३३ ०	१० ५ ५१ ०	२ २० ९ ०	५ ५ २७ ०

शनि चक्रनिघ्नंध्रुवोनक्षेपकः

चक्र.	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक.	११ १८ ४५ ०	४ ३ ३ ०	८ १७ २१ ०	१ १ ३९ ०	५ २५ ५७ ०	१० ० २५ ०	२ २४ ३३ ०	६ २८ ५१ ०	११ १३ ९ ०	३ २७ २० ०	८ ११ ४५ ०	० २६ ३ ०	५ १० २१ ०	९ २४ ३९ ०	२ ९ ५७ ०	६ २३ १५ ०
चक्र.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	११ ७ ३३ ०	३ २२ ५१ ०	८ ६ ९ ०	० २० २७ ०	५ ४ ४५ ०	९ १९ ३ ०	२ ३ २१ ०	६ १७ ३९ ०	११ १ ५७ ०	३ १६ १५ ०	८ ० ३३ ०	० १४ ५१ ०	५ २९ ९ ०	९ १३ २७ ०	१ २७ ४५ ०	६ १२ ३ ०

सूर्य तत्कालमध्यमघटीपलसारिणी.

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	० ०	० ५९	१ ५८	२ ५७	३ ५६	४ ५५	५ ५४	६ ५३	७ ५२	८ ५२	९ ५१	१० ५१	११ ५०	१२ ४९	१३ ४८	१४ ४७
पल.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
कोष्ठ.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
घटी.	१५ ४७	१६ ४६	१७ ४६	१८ ४५	१९ ४३	२० ४२	२१ ४१	२२ ४०	२३ ४०	२४ ३९	२५ ३९	२६ ३७	२७ ३६	२८ ३५	२९ ३४	३० ३३
पल.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
चक्र.	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
घटी.	३१ ३३	३२ ३२	३३ ३१	३४ ३०	३५ २९	३६ २८	३७ २७	३८ २६	३९ २६	४० २५	४१ २४	४२ २३	४३ २२	४४ २१	४५ २०	४६ १९
पल.	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
कोष्ठ.	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
घटी.	४७ १८	४८ १७	४९ १६	५० १५	५१ १४	५२ १३	५३ १२	५४ ११	५५ १०	५६ ९	५७ ८	५८ ७	५९ ०	० ०	० ०	० ०
पल.	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०

☞ इष्ट घटीपल के तुल्य सारिणी के घटीपल जोड़ने से तात्कालिक मध्यमग्रह होते हैं॥

तत्कालचन्द्रमध्यमकरण घटीपल.

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंशादि	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	३	३
	०	२३	२६	३९	५२	५	१९	२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७
	०	१०	२१	३२	४२	५२	२	१४	२४	३४	४५	५५	६	१६	२७	३५
घट्यादि	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	०	१३	२६	३९	५२	५	१९	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४४	१७
को.		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.		३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६
		३०	४४	५७	१०	२३	३६	४९	३	१६	२९	४२	५५	८	२१	३७
		४८	५८	९	२२	३१	४१	५२	२	४२	१३	२४	४५	५१	६	१७
पल		३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६
		३०	४३	५७	१०	२३	३६	४९	३	१६	२९	४२	५५	८	२२	३५
कोष्ठ.		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.		६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	९
		४८	१	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१२	२६	३९	५२
		२७	३८	४८	५९	९	२०	३२	४१	५२	२	१३	२४	३४	४५	५५
पल.		६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	९
		४८	२	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	३७	०	२४	२६	३९	५२
कोष्ठ.		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.		१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३
		६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०
		६	१६	२७	३८	४९	५९	१०	२२	३२	४७	५१	९	१२	२३	३५
पल.		१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३
		६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०

तत्काल उच्चकरण में घटी पल युक्त करना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१३	२०	२६	३३	४०

तत्कालउच्चकरणमें घटीपल युक्त करना

को.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
पल.	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
कोष्ठ.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	१ ४६	१ ५२	२ ०	२ ६	२ १३	२ २०	२ २६	२ ३२	२ ४०	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ६	३ १३	३ २०
पल.	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	२	३	३
कोष्ठ.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.	३ २६	३ ३३	३ ४०	३ ४६	३ ५३	४ ०	४ ६	४ १३	४ २०	४ २७	४ ३३	४ ४०	४ ४७	४ ५३	५ ७
पल.	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५
कोष्ठ.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	५ ७	५ १३	५ २०	५ २७	५ ३४	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २०	६ २७	६ ३४	६ ४१
पल.	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६

तत्कालराहु घटीपल हीन करना.

कोष्ठ.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३२	३५	३८	४२	४४	४७
पल.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कोष्ठ.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	० ५०	० ५३	० ५७	१ ०	१ ३	१ ६	१ ९	१ १२	१ १६	१ १९	१ २२	१ २५	१ २८	१ ३१	१ ३५
पल	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कोष्ठ.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.	१ ३८	१ ४१	१ ४४	१ ४७	१ ५०	१ ५४	१ ५७	२ ०	२ ३	२ ७	२ १०	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३
पल.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२

तत्कालराहु घटीपल हीन करना.

कोष्ठ.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी	२ २६	२ २९	२ ३२	२ ३६	२ ३९	२ ४२	२ ४५	२ ४८	२ ५२	२ ५५	२ ५८	३ १	३ ४	३ ७	३ ११
पल	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३

तत्काल भौम घटीपल युक्त करना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	० ३१	१ २	१ ३४	२ ३५	२ ३६	३ ८	३ ३९	४ ११	४ ४३	५ १४	५ ४५	६ १७	६ ४८	७ १९	७ ५१
पल.	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
कोष्ठ.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	८ २२	८ ५४	९ २५	९ ५६	१० २८	११ ०	११ ३२	१२ २	१२ ३३	१३ ५	१३ ३६	१४ ८	१४ २९	१५ २०	१५ ४२
पल.	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५
कोष्ठक	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी	१६ १४	१६ ४५	१७ १७	१७ ४८	१८ २०	१८ ५१	१९ २३	१९ ५४	२० २५	२० ५७	२१ २९	२२ ०	२२ ३१	२३ २	२३ ३४
पल.	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२
कोष्ठक	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	२४ ५	२४ ३६	२५ ८	२५ ३९	२६ ११	२६ ४३	२७ १४	२७ ४५	२८ १७	२८ ४८	२९ १९	२९ ५१	३० २२	३० ५४	३१ २६
पल.	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१

तत्काल बुध घटीपल युक्त करना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	३ ६	६ १२	९ १९	१२ २५	१५ ३१	१८ ३८	२१ ४४	२४ ५०	२७ ५७	३१ ३	३४ १०	३७ १७	४० २३	४३ २९	४६ ३६
पल.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५

तत्कालबुधघटीपलयुक्तकरना.

कोष्ठक	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	० ४९ ४२	० ५२ ४८	० ५५ ५५	० ५९ १	१ २ ८	१ ५ १५	१ ८ २१	१ ११ २७	१ १४ ३४	१ १७ ४०	१ २० ४६	१ २३ ५३	१ २६ ५९	१ ३० ५	१ ३३ ११
पल.	० ४८	० ५१	० ५४	० ५७	१ ०	१ ३	१ ६	१ ९	१ १२	१ २५	१ १८	१ २१	१ २४	१ २७	१ ३१
कोष्ठक	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.	१ ३६ १८	१ ३९ २४	१ ४२ ३१	१ ४५ ३७	१ ४८ ४३	१ ५१ ५०	१ ५४ ५६	१ ५८ २	२ १ ९	२ ४ १६	२ ७ २२	२ १० २९	२ १३ ३५	२ १५ ४१	२ १९ ४८
पल.	१ ३४	१ ३८	१ ४२	१ ४५	१ ४८	१ ५१	१ ५४	१ ५८	१ १	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १९
कोष्ठक	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	२ २२ ५४	२ २६ ०	२ २९ ७	२ ३२ १३	२ ३५ २०	२ ३८ २७	२ ४१ ३३	२ ४४ ३९	२ ४७ ४६	२ ५० ५१	२ ५३ ५८	२ ५७ ५	३ ० ११	३ ३ १७	३ ६ २४
पल.	२ २२	२ २६	२ २९	२ ३२	२ ३५	२ ३८	२ ४१	२ ४४	२ ४७	२ ५०	२ ५३	३ ५७	३ ०	३ ३	३ ६

तत्कालगुरुघटीपलयुक्तकरना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	० ५	० १०	० १५	० २०	० २५	० ३०	० ३५	० ४०	० ४५	० ५०	० ५५	१ ०	१ ५	१ १०	१ १५
पल.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
कोष्ठक	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	१ २०	१ २५	१ ३०	१ ३५	१ ४०	१ ४५	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २५	२ ३०
पल.	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
कोष्ठक	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.	२ ३५	२ ४०	२ ४५	२ ५०	२ ५५	३ ०	३ ५	३ १०	३ १५	३ २०	३ २५	३ ३०	३ ३५	३ ४०	३ ४५
पल.	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

तत्कालगुरुघटीपलयुक्तकरना.

कोष्ठक	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३५	४ ४०	४ ४५	४ ५०	४ ५५	५ ०
पल.	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५

तत्काल शुक्रघटीपलयुक्त करना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	० ३७	१ १४	१ ५१	२ २८	३ ५	३ ४२	४ १९	४ ५६	५ ३३	६ १०	६ ४७	७ २४	८ १	८ ३८	९ १५
पल.	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९
कोष्ठक	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी	९ ५२	१० २९	११ ६	११ ४३	१२ २०	१२ ५७	१३ ३४	१४ ११	१४ ४८	१५ २५	१६ २	१६ ३९	१७ १६	१७ ५३	१८ ०
पल.	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८
कोष्ठक	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.	१९ ७	१९ ४४	२० २१	२० ५८	२१ ३५	२२ १२	२२ ४९	२३ २६	२४ ३	२४ ४०	२५ १७	२५ ५४	२६ ३१	२७ ८	२७ ४५
पल.	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७
कोष्ठक	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	२८ २२	२८ ५९	२९ ३६	३० १३	३० ५०	३१ २७	३२ ४	३२ ४१	३३ १८	३३ ५५	३४ ३२	३५ ९	३५ ४६	३६ २३	३७ ०
पल	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३७

तत्कालशनिघटीपलयुक्तकरना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०
पल.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

तत्काल शनि घटी पलयुक्त करना.

कोष्ठक.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	० ३२	० ३४	० ३६	० ३८	० ४०	० ४२	० ४४	० ४६	० ४८	० ५०	० ५२	० ५४	० ५६	० ५८	१ ०
पल.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
कोष्ठक	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	१ ३०
पल.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कोष्ठक	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	२ ०
पल.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२

स्पष्ट सूर्य सारिणी.

कोष्ठक.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
मंदफल.	० ० ०	० २ १०	० ४ ४०	० ६ ५१	० ९ १८	० ११ ३७	० १३ ५५	० १६ १३	० १८ ३०	० २० ४६	० २३ २	० २५ २७	० २७ ३२	० २९ ४६	० ३१ ५९	० ३४ १२	० ३६ २५
गुणक.	७	७	७	७	७	२३	२३	२४	२४	२४	९	९	११	११	११	११	११
हरक.	३	३	३	३	३	१०	१०	१५	१५	१५	४	४	५	५	५	५	५
सा.सु.च.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
चर.प.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
गुणक.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
हरक.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
कोष्ठक.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
गति-फल.	२ १५	२ १५	२ १५	२ १५	२ १५	२ १३	२ १२	२ ११	२ १०	२ १०	२ ९	२ ८	२ ७	२ ६	२ ५	२ ५	२ ५
ध. क्र. म. ग.	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८

स्पष्ट सूर्य सारिणी.

कोष्ठक	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५	७	९	११	१३	१५
प.	३५	४५	५५	३	११	१८	२४	२८	३२	३५	३७	३७	३७	३५	३२	२८	२२	१६	८
गुण.	१३	१३	३२	३२	२१	२१	३१	३१	४२	२	२	२	५९	३९	२९	१९	१९	२८	११
हर.	६	६	१५	१५	१०	१०	१५	१५	२०	१	१	१	३०	२०	१५	१०	१०	१५	६
सा.सू.च.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
चरपल.	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५१	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६३	६५	६६
गु.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	१६	१६	१६	१६	१६
ह.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१५	१५	१५	१५	१५
भु.भा.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
म.फ.	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध.ऋ.	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४७	४६	४५
म.ग.	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३०	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४४	४५
प.	५८	४७	३५	२२	७	५२	३२	१२	५१	२८	३	३७	९	३९	८	३४	५९	२२	४५
गुणक.	१२	९	९	७	७	५	५	२३	८	१९	४७	२३	२	३	७	७	७	७	१३
हरक.	६	५	५	४	४	३	३	२०	५	१२	३०	१५	२	२	५	५	५	५	१०
मा.सू.च.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
चरपल.	६८	७०	७३	७४	७६	७७	७९	८१	८२	८४	८६	८७	८९	९१	९२	९४	९६	९७	९९
गुणक.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
हरक.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
भु.भा.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४
ग.फ.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध.ऋ.	४३	४२	४१	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३१	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१८	१६
म.ग.	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८	५९ ८

स्पष्टसूर्यसारिणी.

कोष्ठक	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४७	४८	४९	५०	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	२	२	२	३	४	५
प.	२	२१	३६	४९	१	१३	१८	२४	२६	३१	२७	२४	१९	११	१	४९	३५	१९	०
गुणक.	४	५	५	५	७	७	११	११	१	१	११	११	२	५	४	३	३	२	२
हरक.	३	४	४	६	६	६	१०	१०	२	१	१२	१२	१०	६	५	४	४	२	३
सा.सू.च.	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३
चरपल.	२०१	२०२	२०३	२०५	२०६	२०७	२०९	२११	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	२२०	२२१	२२२	२२३
गुणक.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
हरक.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
भु.भा.	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३
ग.फ.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.ऋ.	१५	१३	११	९	७	६	४	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०
म.ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८

कोष्ठक	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	ध.	ऋ.
अं.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०	६
घ.	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१	७
प.	४०	२६	५०	२३	५३	२०	४५	८	२८	४६	२	१५	२५	३४	४०	४३	४५	२	८
गुणक.	३	७	८	१	१	५	५	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	३	९
हरक.	५	१२	१५	२	९	१२	१२	३	१०	४	३	६	६	१०	१०	३०	१	४ ५	१० ११
सा.सू.च.	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	ध.	ऋ.
सा.च.	२२४	२२४	२२५	२२६	२२६	२२७	२२७	२२८	२२८	२२९	२२९	२३०	२३०	२३०	२३१	२३२	२३२	६ ७	० १
गुणक	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८ ९	२ ३
हरक	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१० ११	४ ५
भु.भा.	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	ध.	ऋ.
ग.फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३ ४	९ १०
ध.ऋ.	३८	३५	३३	३१	२९	२६	२४	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	२	०	५ ६	११ ०
म.ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	७	१
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	२

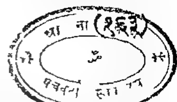
चन्द्र त्रिफल संस्कार सारिणी में सायन सूर्य के दिनों के तुल्य राशि सूत्र के कोष्ठक से त्रिफल घट्यादि लेके सारिणी में धन ऋण लिखाहो जैसेही मध्यम चन्द्रमा में धन ऋण कर देना चाहिये॥

रामदुर्गे चन्द्रत्रिफलसंस्कारसारिणी सायनरवि मेषादितः देशांतर डोंसी योजन १२ नारनोलसमीपे.

दिन.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
मेष.	६ध १८	५ ५२	५ २६	५ ०	४ ३४	४ ८	३ ४२	३ १६	२ ४९	२ २३	१ ५६	१ ३०	१ ३	० ३७	०ध १०	०ऋ ३२	१ ३	१ २९	१ ५६	२	२ ४९	३ १५	३ ४०	४ ८	४ ३५	५ ३	५ ३०	५ ५८	६ २६	६ ५४	७. १७
वृष.	७ ४०	८ ३	८ २६	८ ४९	९ १२	९ ३४	९ ५७	१० २०	१० ४३	११ ६	११ २९	११ ५२	१२ १६	१२ ४०	१३ ४	१३ २८	१३ ५२	१४ १६	१४ ४०	१५ ३	१५ २७	१५ ५१	१६ १५	१६ ३९	१७ ३	१७ २७	१७ ५२	१८ ११	१८ ३०	१८ ४९	१९ ८
मिथुन	१९ २७	१९ ४१	१९ ५८	२० १०	२० २२	२० ३४	२० ४६	२० ५८	२१ १४	२१ २७	२१ ४०	२१ ५४	२२ ७	२२ २१	२२ ३४	२२ ४८	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३९	२३ ५१	२४ ३	२४ १५	२४ २९	२४ ४३	२४ ५७	२५ ११	२५ २५	२५ ३९	२५ ५३	२६ ९
कर्क.	२६ १	२५ ५७	२५ ५१	२५ ४५	२५ ३९	२५ ३२	२५ २५	२५ १७	२५ ८	२४ ०	२४ ५१	२४ ४२	२४ ३५	२४ २६	२४ २७	२४ २८	२४ २९	२४ ३०	२४ ३२	२४ ३३	२४ ३४	२४ ३४	२४ ३३	२४ ३२	२४ ३१	२४ ३०	२४ २९	२४ २८	२४ २०	२४ ११	२४ ९
सिंह	२३ ५५	२३ ४६	२३ ३७	२३ २८	२३ १६	२३ ३	२२ ५०	२२ ३८	२२ २५	२२ १२	२१ ५९	२१ ३५	२१ १०	२० ४५	२० २०	१९ ५५	१९ ३०	१९ ५	१८ ५०	१८ ३५	१८ २०	१८ ५	१७ ५०	१७ ३५	१७ २१	१७ ६	१६ ५०	१६ ३४	१६ ९	१६ ३	१५ ४७
कन्या.	१५ ३१	१५ ८	१४ ४५	१४ २४	१४ १	१३ ३८	१३ १५	१२ ५१	१२ २४	११ ५७	११ ३०	११ ३	१० ३६	१० ९	९ ४२	९ १७	८ ५२	८ २७	८ २	७ ३७	७ १२	६ ४८	६ २५	६ २	५ ३९	५ १५	४ ५१	४ २७	४ ३	३ ३८	३ १२
तुल.	२ ४७	२ २१	१ ५६	१ ३०	१ ३	० ३७	०ऋ ९	०ध २४	० ५८	१ २२	१ ४६	२ ६	२ ३५	३ ४	३ ३३	४ २	४ ३१	४ ५९	५ २७	५ ५२	६ १८	६ ४४	७ १०	७ ३६	८ २	८ २७	८ ५७	९ २७	९ ५७	१० २७	१० ५८
वृश्चि.	११ १८	११ ५९	१२ २२	१२ ४५	१३ ८	१३ ३१	१३ ५४	१४ १८	१४ ४	१५ ११	१५ ४१	१६ १०	१६ ३९	१७ ६	१७ ३६	१८ ८	१८ ३४	१९ ०	१९ २६	१९ ५२	२० १९	२० ४४	२१ १०	२१ ३१	२१ ५२	२२ १३	२२ ३४	२२ ५५	२३ १६	२३ ३६	
धन.	२३ ४७	२३ ५९	२४ १०	२४ २२	२४ ३३	२४ ४५	२४ ५७	२५ ७	२५ १७	२५ २७	२५ ३७	२५ ४७	२५ ५७	२६ ६	२६ २२	२६ ३८	२६ ५४	२७ १०	२७ २६	२७ ४२	२७ ४९	२८ १३	२८ २७	२८ ४१	२८ ५५	२९ ९	२९ २४	२९ ४०	२९ ३८	२९ ३७	
मकर.	२९ ३७	२९ ३६	२९ ३६	२९ ३५	२९ ३५	२९ २९	२९ २३	२९ १७	२९ १०	२९ ३	२८ ५७	२८ ५०	२८ ४७	२८ ४४	२८ ४१	२८ ३८	२८ ३६	२८ ३३	२८ ३१	२८ ३०	२८ २९	२८ २८	२८ २७	२८ २६	२८ २५	२८ २४	२८ १४	२८ ४	२७ ५४		
कुंभ.	२७ ४४	२७ ३४	२७ २३	२७ १२	२६ ५४	२६ ३६	२६ १८	२६ ०	२५ ४१	२५ २२	२५ ३	२४ ४४	२४ २५	२४ ६	२३ ४७	२३ २८	२३ १०	२२ ५२	२२ ३१	२२ १०	२१ ४९	२१ २८	२१ ७	२० ४६	२० २५	२० ४	१९ ४३	१९ २३	१९ ३	१८ ४३	
मीन.	१८ २३	१८ ३	१७ ३८	१७ १३	१६ ४८	१६ २३	१५ ५९	१५ ३५	१५ १०	१४ ४५	१४ १८	१३ ५२	१३ २६	१३ ०	१२ ३४	१२ ६	११ ४१	११ १६	१० ५१	१० २७	१० २	९ ३८	९ १४	८ ५२	८ ३०	८ ८	७ ४६	७ २४	७ २	६ ४०	

भौमशीघ्रफलसारिणी.

घ.	० ०	० २३	० ४६	१ ९	१ ३३	१ ५६	२ १८	२ ४२	३ ५	३ २९	३ ५२	४ २५	४ ४८	५ ९	५ ३२	५ ४८
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६ २१	६ ३४	६ ५७	७ २१	७ ४४	८ ७	८ ३०	८ ५३	९ १७	९ ४०	१० ३१	१० २६	१० ४९	११ १३	११ ३६	११ ५९	१२ २२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२ ४५	१३ ९	१३ ३२	१३ ५५	१४ १८	१४ ४१	१५ ४	१५ १८	१५ ५२	१६ १४	१६ ३७	१७ १	१७ २४	१७ ४७	१८ १०	१८ ३३	१८ ५७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
१९ २०	१९ ४३	२० ६	२० २९	२० ५३	२१ १६	२१ ३९	२२ २	२२ २५	२२ ४९	२३ १२	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
अं.को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध्य
शु.घ. २२ ३६ फ	५ ४८ ०	६ ११ ३६	६ ३५ १२	६ ५८ ४८	७ २२ २४	७ ४६ ०	८ ९ ३६	८ ३३ १२	८ ५६ ४८	९ २० २४	९ ४४ ०	१० ७ ३६	१० ३१ १२	१० ५४ ४८	११ १८ २४	४२ १४
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ.	० ०	० २३	० ४७	१ ११	१ ३४	१ ५८	२ २१	२ ४५	३ ८	३ ३२	३ ५६	४ १८	४ ४३	५ ७	५ ३०	५ ५४
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	६ १७	६ ४१	७ ६	७ २८	७ ५३	८ १५	८ ३९	९ ३	९ २६	९ ५०	१० १३	१० ३७	११ १	११ २४	११ ४८	१२ ११
	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
	१२ २५	१२ ५९	१३ १२	१३ ४६	१४ ९	१४ ३२	१४ ५७	१५ १०	१५ ४४	१६ ७	१६ २२	१६ ५५	१७ १८	१७ ४२	१८ ५	१८ २९
	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
	१८ ५३	१९ १६	१९ ४०	२० ३	२० २७	२० ५०	२१ १४	२१ ३८	२२ १	२२ २५	२२ ४९	२३ १२	२३ ३६	० ०	० ०	० ०



भौम शीघ्रफलसारिणी.

अं.कौ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.ध.
फ	११ ४२ ०	१२ ४ ४८	१२ २७ २६	१२ ५० २४	१३ १३ १२	१३ ३६ ०	१३ ५८ ४८	१४ २१ ३६	१४ ४४ २४	१५ ७ १२	१५ ३० ०	१५ ५२ ४८	१६ १५ ३६	१६ ३८ २४	१७ १ १२	४२ ५०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध	० ०	० २२	० ४६	१ ८	१ ३२	१ ५४	२ १७	२ ४०	३ २	३ २५	३ ४८	४ १०	४ ३४	४ ५६	५ १९	५ ४२
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	६ ५	६ २८	६ ५०	७ १३	७ ३६	७ ५९	८ २२	८ ४४	९ ७	९ ३०	९ ५३	१० १६	१० ३८	११ १	११ २४	११ ४७
	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
	१२ १०	१२ ३२	१२ ५५	१३ १८	१३ ४१	१४ ४	१४ २६	१४ ४९	१५ १२	१५ ३५	१५ ५८	१६ २०	१६ ४३	१७ ६	१७ २९	१७ ५२
	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	०
	१८ १४	१८ ३६	१९ ०	१९ २२	१९ ४६	२० १८	२० ३१	२० ५४	२१ १७	२१ ४०	२२ २	२२ ५	२२ ४८	० ०	० ०	० ०

गुध २२ ४८

अं.कौ.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.ध.
फ.	१७ २४ ०	१७ ४५ ३६	१८ ७ १२	१८ २९ ४८	१८ ५० २४	१९ १२ ०	१९ ३३ ३६	१९ ५५ १२	२० १६ ४८	२० ३८ २४	२१ ० [illegible]	२१ २१ ३६	२१ ४३ १२	२२ ४ ४८	२२ २६ २४	४२ १४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० २२	० ४३	१ ५	१ २६	१ ४८	२ १०	२ ३१	२ ५३	३ १४	३ ३६	३ ५८	४ १९	४ ४१	५ २	५ २४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ ४६	६ ७	६ २९	६ ५०	७ १२	७ ३४	७ ५५	८ १७	८ ३८	९ ०	९ २२	९ ४३	१० ५	१० २६	१० ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	११ १०	११ ३१	११ ५३	१२ १४	१२ ३६	१२ ५८	१३ १९	१३ ४१	१४ २	१४ २४	१४ ४६	१५ ७	१५ २९	१५ ५०	१६ १२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१६ ३८	१६ ५५	१७ १७	१७ ३९	१८ ०	१८ २२	१८ ४३	१९ ५	१९ २६	१९ ४८	२० १०	२० ३१	२० ५२	२१ १४	२१ ३६	

गुध २१ ३६

चन्द्रस्पष्टसारिणी.

भु.भा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५३	५८	३	८	१३	१८	२३	२८	३३
	०	२२	४३	१	११	३७	४४	२	२४	३८	४९	३	९	१७	२४	२८	३१	२३	३३
गुणक.	१६	१६	१६	१६	२१	२१	२१	२१	२१	२६	२६	३१	३१	५१	५१	५	५	५	५
हरक.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	६	६	१०	१०	१	१	१	१
ग. फ.	६०	६०	६७	६७	६७	६६	६६	६६	६५	६५	६५	६४	६४	६४	६३	६३	६३	६२	६२
	१५	१	४४	२८	१०	५३	३७	१८	५९	४१	२०	५९	३५	१२	४९	२५	१	३४	८
गुणक.	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१८	२०	२१	२१	२२	२४	२३	२४	२५	२६	२५	२७	२८
भु.भो.	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
फ.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	३८	४३	४८	५३	५८	२	७	१२	१६	२०	२५	३०	३५	३९	४४	४८	५२	५७	१
	३१	२७	२१	२२	२	५०	३५	१८	१८	३७	१२	४५	१५	४०	७	२८	४७	४	१५
गु.	४९	४९	२९	३९	२४	१९	१९	१४	१४	२३	२३	९	१२	९	१३	१३	१७	१५	१५
हरक.	२०	२०	१६	१६	५	४	४	३	३	५	५	२	५	२	३	३	४	६	६
ग. फ.	६१	६१	६०	६०	५९	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५२	५१
	४७	१५	४५	१६	४६	१६	४५	१२	४०	७	३५	०	२६	४६	१०	३३	५५	३२	३६
गुणक.	२८	२७	२९	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३८	३९	३९	४०
भु.भो.	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
फ.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३६	४०	४७	४७	५०	५३	५७	०	२	६	९
	२४	३०	३१	३२	२७	१९	८	५२	३१	११	४४	१४	३८	५०	१६	२८	३६	४०	४०
गुणक.	४२	४	४	४७	२२	१९	२२	२	११	७	७	७	२०	१७	१६	२९	६१	३	१२
हरक.	१०	१	१	१२	६	५	५	१	२	२	२	२	३	५	५	६	३०	१	१२
ग. फ.	५०	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४५	४४	४३	४२	४२	४१	४०	३७	३८	३७	३६
	५६	१७	३५	३१	८	२४	४८	५५	९	२२	३५	४९	०	२१	११	२८	३८	४५	५२
गुणक	४१	४२	४२	४३	४४	४५	४६	४६	४६	४७	४८	४९	४९	५०	५१	५२	५२	५३	५३

चन्द्रस्पष्ट सारिणी.

भु.भा.	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
फ.	४ १२ ३५	४ १५ २५	४ १८ ११	४ २० ५२	४ २३ २४	४ २६ ०	४ २८ २७	४ ३० १३	४ ३३ ६	४ ३५ १८	४ ३७ २५	४ ३९ २७	४ ४१ २४	४ ४३ १६	४ ४५ ३०	४ ४६ ४३	४ ४८ २०	४ ४९ ५०	४ ५१ ५५
गुणक	१७	२१	८	११	५	५	७	९	११	१३	२	२	११	७	५	८	३	७	४
हरक.	६	४	३	५	२	२	३	४	५	६	१	१	६	४	१	५	२	५	३
ग.फ.	३५ ५८	३५ ४	३४ १३	३३ १५	३२ २९	३१ २०	३० २२	२९ २४	२८ २४	२७ २५	२६ २४	२५ २३	२४ २३	२३ २०	२२ १७	२१ ११	२० ९	१९ १	१७ १५
गुणक.	५४	५५	५५	५६	५७	५९	५९	५९	६०	६०	६१	६२	६३	६३	६३	६५	६६	६७	६७
भु.भा.	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	०	०	०
फ.	४ ५२ ३६	४ ५३ ५०	४ ५५ ९	४ ५६ २	४ ५७ १	४ ५७ ४९	४ ५८ ४२	४ ५९ २४	५ ० ०	५ ० ३०	५ ० ५५	५ १ १५	५ १ २२	५ १ ३७	५ १ ४०	५ ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
गुणक.	५	७	१	१	९	४	७	३	१	५	१	१	२	३१	०	०	०	०	०
हरक.	४	६	१	१	१०	५	१०	५	२	१२	३	४	१५	१	०	०	०	०	०
ग.फ.	१६ ४४	१५ ४	१४ ३२	१३ २५	१२ १५	११ ५	९ ५२	८ ४	७ २८	६ २५	५ १	३ ४६	२ ३१	१ १७	१ ०	० ०	० ०	० ०	० ०
गुणक	६७	६८	६९	७०	७०	७०	७२	७३	७३	७४	७५	७६	७६	७७	७७	०	०	०	०

भौम शीघ्रफल सारिणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ.
फ.	० ० ०	० २३ १२	० ४६ २४	१ ९ ३६	१ ३२ ४८	१ ५६ ०	२ १९ १२	२ ४२ २४	३ ५ ३६	३ २८ ४८	३ ५२ ०	४ १५ १२	४ ३८ २४	५ १ ३६	५ २४ ४८	४३ २
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

भौमशीघ्रफलसारिणी.

शु.ध. २० २४

अं.को	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
फ.	२२ ४८ ०	२३ ८ २४	२३ २८ ४८	२३ ४९ १२	२४ ९ ३६	२४ ३० ०	२४ ५० २४	२५ १० ४८	२५ ३२ १२	२५ ५१ ३६	२६ १२ ०	२६ ३२ २४	२६ ५२ ४८	२७ १३ १२	२७ ३३ ३६	४१ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० २०	० ४१	१ १	१ २२	१ ४२	२ २	२ २३	२ ४३	३ ४	३ २४	३ ४४	४ ५	४ २५	४ ४६	५ ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ २६	५ ४७	६ ७	६ २४	६ ४८	७ ८	७ २९	७ ४६	८ १०	८ ३०	८ ५०	९ ११	९ ३१	९ ५२	१० १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१० ३२	१० ५३	११ १३	११ ३४	११ ५४	१२ १४	१२ ३५	१२ ५५	१३ १६	१३ ३६	१३ ५६	१४ १७	१४ ३७	१४ ५८	१५ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१५ ३८	१५ ५९	१६ १०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४१	१८ १	१८ २०	१८ ४२	१९ २	१९ २३	१९ ४३	२० ४	२० २४	

शु.ध. १८ २४

अं.को	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.घ.
फ.	२७ ५४ ०	२८ १२ २४	२८ ३० ४८	२८ ५९ १२	२९ ७ ३६	२९ २६ ०	२९ ४४ २४	३० २ ४८	३० २१ १२	३० ३९ ३६	३० ५८ ०	३१ १६ २४	३१ ३४ ४८	३१ ५३ १२	३२ ११ ३६	४९ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० १८	० ३७	० ५५	१ १४	१ ३२	१ ५०	२ ९	२ २७	२ ४६	३ ४	३ २२	३ ४३	३ ५९	४ १८	४ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४ ५४	५ १३	५ ३१	५ ५०	६ ८	६ २६	६ ४५	७ ३	७ २२	७ ४०	७ ५८	८ १७	८ ३५	८ ५४	९ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	९ ३०	९ ४६	१० ७	१० २६	१० ४४	११ २	११ २१	११ ३९	११ ५८	१२ १६	१२ ३५	१२ ५३	१३ ११	१३ ३०	१३ ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१४ ७	२४ २५	२४ ४३	१५ २	१५ २०	१५ ३९	१५ ५७	१६ १५	१६ ३४	१६ ५२	१७ ११	१७ २९	१७ ४७	१८ ६	१८ २४	

भौमशीघ्रफलसारिणी.

अ.को	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.घ
फ.	३२ ३० ०	३२ ४५ ०	३३ २ ०	३३ १८ ०	३३ ३४ ०	३३ ५० ०	३४ ६ ०	३४ २२ ०	३४ ३८ ०	३४ ५४ ०	३५ १० ०	३५ २६ ०	३५ ४२ ०	३५ ५८ ०	३६ १४ ०	३९ २६
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	४ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ३६	५ ५२	६ ८	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	८ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	८ १६	८ ३२	८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	१२ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४	१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१४ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४४	१६ ०	
अ को.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	
फ.	३६ ३० ०	३६ ४१ १२	३६ ५२ २४	३७ ३ ३६	३७ १४ ४८	३७ २६ ०	३७ ३७ १२	३७ ४८ २४	३७ ५९ ३६	३८ १० ४८	३८ २२ ०	३८ ३३ १२	३८ ४४ २४	३८ ५५ ३६	३९ ६ ४८	३७ २
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	२ ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ५९	३ १०	३ २१	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	५ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	८ १३	८ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	८ ३५	८ ४६	८ ५८	९ ९	९ २०	९ ३१	९ ४२	९ ५४	१० ५	१० १६	१० २७	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १२	

भौम शीघ्रफल सारिणी.

	अं.को	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	गा.ध.
गु.घ. २ ४८	फ.	३९ १८ ०	३९ २० ४८	३९ २३ ३६	३९ २६ २४	३९ २९ १२	३९ ३२ ०	३९ ३४ ४८	३९ ३७ ३६	३९ ४० २४	३९ ४३ १२	३९ ४६ ०	३९ ४८ ४८	३९ ५१ ३६	३९ ५४ २४	३९ ५७ १२	३२ ५०
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	ध.	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	० ४२	
	क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	ध.	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २३	१ २४	
	क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	ध.	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	२ ६	
	क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	ध.	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४५	२ ४८	

	अं.को.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.धु.
गु.क्र.	फ.	४० ० ०	३९ ४७ १२	३९ ३४ २४	३९ २१ ३६	३९ ८ ४८	३८ ५६ ०	३८ ४३ १२	३८ ३० २४	३८ १७ ३६	३८ ४ ४८	३७ ५२ ०	३७ ३९ १२	३७ २६ २४	३७ १३ ३६	३७ ० ४८	२५ २
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	क्र.	० १३	० २६	० ३८	० ५२	१ ४	१ १७	१ ३०	१ ४२	१ ५५	२ ८	२ २१	२ ३४	२ ४६	२ ५९	३ १२	
	क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	क्र.	३ २५	३ ३८	३ ५०	४ ३	४ १६	४ २९	४ ४०	४ ५४	५ ७	५ २०	५ ३२	५ ४६	५ ५८	६ ११	६ २४	
	क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	क्र.	६ ३७	६ ५०	७ २	७ २५	७ २८	७ ४२	७ ५४	८ ६	८ १९	८ ३२	८ ४५	८ ५८	९ १०	९ २३	९ ३६	
	क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	क्र.	९ ४९	१० २	१० १४	१० २७	१० ४०	१० ५३	११ ६	११ १८	११ ३१	११ ४४	११ ५७	१२ १०	१२ २२	१२ ३५	१२ ४८	

भौमशीघ्रफल सारिणी.

अं.को	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	गध
फ.	३६ ४८ ०	३६ ० २४	३५ १२ ४८	३४ २५ १२	३३ ३३ ३६	३२ ५० ०	३२ २ २४	३१ १४ ४८	३० २७ १२	२९ ३९ ३६	२८ ५२ ०	२८ ४ २४	२७ १६ ४८	२६ २९ १२	२५ ४१ ३६	७ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ४८	१ ३५	२ २३	३ १०	३ ५८	४ ४६	५ ३३	६ २१	७ ८	७ ५६	८ ४४	९ ३१	१० १९	११ ६	११ ५४	
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
फ.	१२ ४२	१३ २९	१४ १७	१५ ४	१५ ५२	१६ ४०	१७ २७	१८ १५	१९ २	१९ ५०	२० ३८	२१ २६	२२ १३	२३ ०	२३ ४८	
क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
फ.	२४ ३६	२५ २३	२६ ११	२६ ५८	२७ ४६	२८ ३४	२९ २१	३० ९	३० ५६	३१ ४४	३२ ३२	३३ १९	३४ ७	३४ ५४	३५ ४२	
क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
फ.	३६ ३०	३७ १७	३८ ५	३८ ५२	३९ ४०	४० २८	४१ १५	४२ ३	४२ ५०	४३ ३८	४४ २६	४५ १३	४६ १	४६ ४८	४७ ३६	
अं.को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	
फ.	२४ ५४ ०	२३ १४ २४	२१ ३४ ४८	१९ ५५ १२	१८ १५ ३६	१६ ३६ ०	१४ ५६ २४	१३ १६ ४८	११ ३७ १२	९ ५७ ३६	८ १८ ०	६ ३८ २४	४ ५८ ४८	३ १९ १२	१ ३९ ३६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	१ ४०	३ १९	४ ५९	६ ३८	८ १८	९ ५८	११ ३७	१३ १७	१४ ५६	१६ ३६	१८ १६	१९ ५५	२१ ३५	२३ १४	२४ ५४	
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
फ.	२६ ३४	२८ १३	२९ ५३	३१ ३२	३३ १२	३४ ५२	३६ ३१	३८ ११	३९ ५०	४१ ३०	४३ १०	४४ ४९	४६ २९	४८ ८	४९ ४८	
क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
फ.	५१ २८	५३ ७	५४ ४७	५६ २६	५८ ६	५९ ४६	६१ २५	६३ ५	६४ ४४	६६ २४	६८ ४	६९ ४३	७१ २३	७३ २	७४ ४९	
क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	७६ २२	७८ १	७९ ४१	८१ २०	८३ ०	८४ ४०	८६ १९	८७ ५९	८९ ३८	९१ १८	९२ ५४	९४ ३७	९६ १७	९७ ५६	९९ ३६	

पृ ४ ३

अंत्यांकफलसारिणी.

धु.घ. १२ ० ऋ.

अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
फ.	० ० घ.	० १२ घ	० २४ घ	० ३६ घ	० ४८ घ	१ ० घ	१ १२ घ	१ २४ घ	१ २४ ऋ	१ १२ ऋ	१ ० ऋ	० ४८ ऋ	० ३६ ऋ	० २४ ऋ	० १२ ऋ	० ० ऋ
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	३ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	६ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६ १२	६ २४	६ ३६	६ ४८	७ ०	७ १२	७ २४	७ ३६	७ ४८	८ ०	८ १२	८ २४	८ ३६	८ ४८	९ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	९ १२	९ २४	९ ३६	९ ४८	१० ०	१० १२	१० २४	१० ३६	१० ४८	११ ०	११ १२	११ २४	११ ३६	११ ४८	१२ ०	

अंत्यांक गतिफलसारिणी.

अं.की.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
ऋ.	३ ३४ ऋ.	५ ० ऋ	६ २५ ऋ	७ ५१ ऋ	९ १७ ऋ	१० ४३ ऋ	१२ ८ ऋ	१३ १४ ऋ	१५ ० ऋ	१६ २५ ऋ	१७ ५१ ऋ	१९ १७ ऋ	२० ४३ ऋ	२२ ८ ऋ	२३ ३४ ऋ	० ० ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ऋ.	० १	० ३	० ४	० ६	० ७	० ९	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १७	० १९	० २०	० २१	० ०
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
ऋ.	० २३	० २४	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३१	० ३३	० ३४	० ३६	० ३७	० ३९	० ४०	० ४२	० ४३	० ०
क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
ऋ	० ४४	० ४६	० ४७	० ४९	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५५	० ५७	० ५८	१ ०	१ २	१ ३	१ ५	० ०
क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
ऋ.	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	१ १२	१ १३	१ १४	१ १६	१ १७	१ १९	१ २०	१ २२	१ २३	१ २४	१ २६	० ०

☞ धनधनयोर्योगः ऋणऋणयोर्योगः धनऋणयोरंतरं.

भौममन्दफलसारिणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.प.
फ.	० ० ०	० २१ ३६	० १३ १२	० ३४ ४८	० ४६ २४	० ५८ ०	१ ९ २६	१ २३ २९	१ ३२ ४८	१ ४४ २४	१ ५६ ०	२ ७ ३६	२ १९ १२	२ ३० ४८	२ ४२ २४	५ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० १२	० २३	० ३५	० ४६	० ५८	१ १०	१ २१	१ ३३	१ ४४	१ ५६	२ ८	२ १९	२ ३०	२ ४२	२ ५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ ६	३ १७	३ २९	३ ४०	३ ५२	४ ४	४ १५	४ २७	४ ३८	४ ५०	५ २	५ १३	५ २५	५ ३६	५ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६ ०	६ ११	६ २३	६ ३४	६ ४६	६ ५८	७ ९	७ २१	७ ३२	७ ४४	७ ५८	८ ७	८ १९	८ ३०	८ ४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	८ ५४	९ ५	९ १७	९ २८	९ ४०	९ ५२	१० ३	१० १५	१० २६	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १३	११ २२	११ ३६	

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
फ.	२ ५४ ०	३ ५ १२	३ १६ २४	३ २७ ३६	३ ३८ ४८	३ ५० ०	४ १ १२	४ १३ २४	४ २४ ३६	४ ३४ ४८	४ ४६ ०	४ ५७ १२	५ ८ २४	५ १९ ३६	५ ३० ४८	५ ३६
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	२ ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ५९	३ १०	३ २२	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	५ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३४	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २२	६ ३३	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	८ १३	८ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५०	६०	
	८ ३५	८ ४६	८ ५८	९ ९	९ २०	९ ३१	९ ४२	९ ५४	१० ५	१० १६	१० २७	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १२	

भौममंदफलसारिणी.

	अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ
शु.घ. ११ १२	फ.	५ ४२ ०	५ ५३ १२	६ ४ २४	६ १५ ३६	६ २६ ४८	६ ३८ ०	६ ४९ १२	७ ० २४	७ ११ ३६	७ २२ ४८	७ ३४ ०	७ ४५ १२	७ ५६ २४	८ ७ ३६	८ १८ ४८	५ ३६
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	फ.	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	२ ४८	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		२ ५९	३ १०	३ २२	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	५ ३६	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	८ १३	८ २४	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		८ ३६	८ ४७	८ ५८	९ ९	९ २०	९ ३२	९ ४३	९ ५४	१० ५	१० १७	१० २८	१० ३९	१० ५०	११ १	११ १२	
	अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ
शु.घ. ९ ११	फ.	८ ३० ०	८ ३९ ३६	८ ४९ १२	८ ५८ ४८	९ ८ २४	९ १८ ०	९ २७ ३६	९ ३७ १२	९ ४६ ४८	९ ५६ २४	१० ६ ०	१० १५ ३६	१० २५ १२	१० ३४ ४८	१० ४४ २४	४ ४८
शु.	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	फ.	० १०	० २०	० २९	० ३८	० ४८	० ५८	१ ९	१ १६	१ २६	१ ३६	१ ४६	१ ५५	२ ५	२ १४	२ २४	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		२ ३४	२ ४३	२ ५३	३ २	३ १२	३ २२	३ ३२	३ ४१	३ ५०	४ ०	४ १०	४ १९	४ २८	४ ३८	४ ४८	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		४ ५८	५ ८	५ १७	५ २६	५ ३६	५ ४६	५ ५५	६ ४	६ १४	६ २४	६ ३४	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १२	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		७ २२	७ ३१	७ ४०	७ ५०	८ ०	८ १०	८ २०	८ २९	८ ३८	८ ४८	८ ५८	९ ७	९ १६	९ २६	९ ३६	

भौममन्दफलसारिणी.

अ.कों	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गफ.
फ	११ ५४ ०	११ ० ०	११ ६ ०	११ १२ ०	११ १८ ०	११ २४ ०	११ ३० ०	११ ३६ ०	११ ४२ ०	११ ४८ ०	११ ५४ ०	१२ ० ०	१२ ६ ०	१२ १२ ०	१२ १८ ०	३ ०
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	१ ३०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	३ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०	

अ.कों	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	गफ
फ	१२ २४ ०	१२ २६ २४	१२ २८ ४८	१२ ३१ १२	१२ ३३ ३६	१२ ३६ ०	१२ ३८ २४	१२ ४० ४८	१२ ४३ १२	१२ ४५ ३६	१२ ४८ ०	१२ ५० २४	१२ ५२ ४८	१२ ५५ १२	१२ ५७ ३६	१३ ० ०	१ १२
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
फ	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	० ३६		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	१ ४८		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१ ५०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४		

बुधशीघ्रफलसारिणी.

	अं.को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ
गु.ध. १६ २४	फ	० ० ०	० १६ २४	० ३२ ४८	० ४९ १२	१ ५ ३६	१ २२ ०	१ ३८ २४	१ ५४ ४८	२ ११ १२	२ २७ ३६	२ ४४ ०	३ ० २४	३ १६ ४८	३ ३३ १२	३ ४९ ३६	१०८ २०
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	फ.	० १६	० ३३	० ४९	१ ६	१ २२	१ ३८	१ ५५	२ ११	२ २८	२ ४४	३ ०	३ २७	३ ३३	३ ५०	४ ६	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		४ २२	४ ३९	४ ५५	५ ११	५ २८	५ ४४	६ १	६ १७	६ ३४	६ ५०	७ ६	७ २३	७ ३९	७ ५६	८ १२	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		८ २८	८ ४६	९ १	९ १८	९ ३४	९ ५०	१० ७	१० २३	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २९	११ ४५	१२ १	१२ १८	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		१२ ३४	१२ ५१	१३ ७	१३ २३	१३ ४०	१३ ५६	१४ १२	१४ २९	१४ ४६	१५ २	१५ १८	१५ ३५	१५ ५१	१६ ८	१६ २४	

	अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.घ
गु.ध. १६		४ ६ ०	४ २२ ०	४ ३८ ०	४ ५४ ०	५ १० ०	५ २६ ०	५ ४२ ०	५ ५८ ०	६ १४ ०	६ ३० ०	६ ४६ ०	७ २ ०	७ १८ ०	७ ३४ ०	७ ५० ०	१०७
		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
		० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २०	३ ४४	४ ०	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ६६	५ ५२	६ ८	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	८ ०	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		८ १६	८ ३२	८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	१२ ०	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४	१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१४ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४४	१६ ०	

बुधशीघ्रफल सारिणी

अ को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग घ
फ	८ ६ ०	८ २० २४	८ ३४ ५८	८ ४९ १२	९ ३ ३६	९ १८ ०	९ ३२ २४	९ ४६ ४८	१० १ १२	१० १५ ३६	१० ३० ०	१० ४४ २४	१० ५८ ४८	११ १३ १२	११ २७ ३६	१०२ २०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० १४	० २९	० ४३	० ५८	१ १२	१ २६	१ ४१	१ ५५	२ १०	२ २४	२ ३८	२ ५३	३ ७	३ २२	३ ३०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ ५०	४ ५	४ १९	४ ३४	४ ४८	५ २	५ १७	५ ३०	५ ४५	६ ०	६ १४	६ २८	६ ४३	६ ५८	७ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	७ २६	७ ४१	७ ५५	८ १०	८ २४	८ ३८	८ ५३	९ ७	९ २२	९ ३६	९ ५०	१० ५	१० १९	१० ३४	१० ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	११ ०	११ १७	११ ३१	११ ४६	१२ ०	१२ १४	१२ २९	१२ ४३	१२ ५८	१३ १२	१३ २६	१३ ४१	१३ ५५	१४ १०	१४ २४	

अ को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग घ
फ	११ ४२ ०	११ ५५ १२	१२ ८ २४	१२ २१ ३६	१२ ३४ ४८	१२ ४८ ०	१३ १ १२	१३ १४ २४	१३ २७ ३६	१३ ४० ४८	१३ ५४ ०	१४ ७ १२	१४ २० २४	१४ ३३ ३६	१४ ४६ ४८	९८ ४४
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० १३	० २६	० ४०	० ५३	१ ६	१ १९	१ ३२	१ ४६	१ ५९	२ १२	२ २५	२ ३८	२ ५२	३ ५	३ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ ३१	३ ४४	३ ५८	४ ११	४ २४	४ ३७	४ ५०	५ ३	५ १७	५ ३०	५ ४३	५ ५६	६ १०	६ २३	६ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६ ४९	७ २	७ १६	७ २९	७ ४२	७ ५५	८ ८	८ २२	८ ३५	८ ४८	९ १	९ १४	९ २८	९ ४१	९ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
.	१० ७	१० २०	१० ३६	१० ४७	११ ०	११ १३	११ २६	११ ४०	११ ५३	१२ ६	१२ १९	१२ ३२	१२ ४६	१२ ५८	१३ ०	

बुधशीघ्रफलसारिणी.

शु.घ. ११ १२

अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.ध
फ.	१५ ० ०	१५ ११ १२	१५ २२ २४	१५ ३३ ३६	१५ ४४ ४८	१५ ५६ ०	१६ ७ १२	१६ १८ २४	१६ २९ ३६	१६ ४० ४८	१६ ५२ ०	१७ ३ १२	१७ १४ २४	१७ २५ ३६	१७ ३६ ४८	१२ ४४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	२ ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ५९	३ १०	३ २२	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	५ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	८ १३	८ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	८ ३५	८ ४६	८ ५८	९ ९	९ २०	९ ३१	९ ४२	९ ५४	१० ५	१० १२	१० २७	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १२	

शु.घ. ८ २४

अं.को.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.ध
फ.	१७ ४८ ०	१७ ५६ २०	१८ ४ ४८	१८ १३ १२	१८ २१ ३६	१८ ३० ०	१८ ३८ २४	१८ ४६ ४८	१८ ५५ १२	१९ ३ ३६	१९ १२ ०	१९ २० २४	१९ २८ ४८	१९ ३७ १२	१९ ४५ ३६	८४ २०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	२ ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५९	३ ५	३ १२	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	४ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ ९	६ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ६	८ १५	८ २४	

बुधशीघ्रफलसारिणी.

अं.को	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गत्य.
फ.	१९ ५४ ०	१९ ५९ १२	२० ४ २४	२० ९ ३६	२० १४ ४८	२० २० ०	२० २५ १२	२० ३० २४	२० ३५ ३६	२० ४० ४८	२० ४६ ०	२० ५१ १२	२० ५६ २४	२१ १ ३६	२१ ६ ४८	७४ ४४
ग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ४१	२ ४६	२ ५१	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	३ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२	
अं.को.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	गत्य ३
फ.	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	५९ ८
ग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	

बुध शीघ्रफलसारिणी

अ.को	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.ध	
फ.	२१ १२ ०	२१ ५ १२	२० ५८ २४	२० ५१ ३६	२० ४४ ४८	२० ३८ ०	२० ३१ १२	२० २४ २४	२० १७ ३६	२० १० ४८	२० ४ ०	१९ ५७ १२	१९ ५० २४	१९ ४३ ३६	१९ ३६ ४८	३८ ४४	गु.क्र. ६ ४८
क्र.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
क्र.	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	१ ४१		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१ ४५	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १८	३ १७	३ २४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	५ ६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४१	६ ४८		

अ.को	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.ध	
फ.	१९ ३० ०	१९ १४ ०	१८ ५८ ०	१८ ४२ ०	१८ २६ ०	१८ १० ०	१७ ५४ ०	१७ ३८ ०	१७ २२ ०	१७ ६ ०	१६ ५० ०	१६ ३४ ०	१६ १८ ०	१६ २ ०	१५ ४६ ०	११ ८	शु.क्र. १६ ०
क्र.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
क्र.	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	४ ०		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ३६	५ ५२	६ ८	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	८ ०		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	८ १६	८ ३२	८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	१२ ०		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४	१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१४ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४४	१६ ०		

बुधशीघ्रफल सारिणी.

अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.फ.
फ.	१५ ३० ०	१५ ३ ३६	१४ ३७ १२	१४ १० ४८	१३ ४४ २४	१३ १८ ०	१२ ५१ ३६	१२ २५ १२	११ ५८ ४८	११ ३२ २४	११ ६ ०	१० ३९ ३६	१० १३ १२	९ ४६ ४८	९ २० २४	१० ४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० २६	० ५३	१ १९	१ ४६	२ १२	२ ३९	३ ५	३ ३१	३ ५८	४ २४	४ ५०	५ १७	५ ४३	६ ९	६ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	७ २	७ २९	७ ५५	८ २२	८ ४८	९ १४	९ ४१	१० ७	१० ३४	११ ०	११ २६	११ ५३	१२ १९	१२ ४५	१३ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१३ ३८	१४ ५	१४ ३१	१५ ८	१५ २४	१५ ५०	१६ १७	१६ ४३	१७ १०	१७ ३६	१८ २	१८ २९	१८ ५५	१९ २२	१९ ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२० १४	२० ४१	२१ ७	२१ ३४	२२ ०	२२ २६	२२ ५२	२३ १९	२३ ४६	२४ १२	२४ ३८	२५ ५	२५ ३१	२५ ५८	२६ २४	
अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	
फ.	८ ५४ ०	८ १८ २४	७ ४२ ४८	७ ७ १२	६ ३१ ३६	५ ५६ ०	५ २० २४	४ ४४ ४८	४ ९ १२	३ ३३ ३६	२ ५८ ०	२ २२ २४	१ ४६ ४८	१ ११ १२	० ३५ ३६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ३६	१ ११	१ ४७	२ २२	२ ५८	३ ३४	४ ९	४ ४६	५ २०	५ ५६	६ ३२	७ ७	७ ४३	८ १८	८ ५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	९ ३०	१० ५	१० ४१	११ १६	११ ५२	१२ २८	१३ ३	१३ ३९	१४ १४	१४ ५०	१५ २६	१६ १	१६ ३७	१७ १२	१७ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१८ २४	१८ ५९	१९ ३५	२० १०	२० ४६	२१ २२	२१ ५७	२२ ३३	२३ ८	२३ ४४	२४ २०	२४ ५५	२५ ३१	२६ ६	२६ ४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२६ १८	२७ ५३	२८ २९	२९ ४	२९ ४०	३० १६	३० ५१	३१ २७	३२ २	३३ ३८	३३ १४	३३ ४९	३४ २५	३५ ०	३५ ३६	

अंत्यांकगतिफल सारिणी.

अं.को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
फ. क.	३७ ५२	३९ १८	४० ४२	४२ ९	४३ ३५	४५ १	४६ २६	४७ ५२	४९ १८	५० ४३	५२ ९	५३ ३५	५५ १	५६ २६	५७ ५२	५९ ५८
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	० १	० ३	० ४	० ६	० ७	० ९	० १०	० ११	० १२	० १४	० १६	० १७	० १९	० २०	० २२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० २३	० २४	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३१	० ३३	० ३४	० ३६	० ३७	० ३९	० ४०	० ४१	० ४३	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० ४४	० ४६	० ४७	० ४८	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५६	० ५७	० ५८	१ ०	१ १	१ ३	१ ५	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	१ ११	१ १३	१ १४	१ १६	१ १७	१ १९	१ २०	१ २२	१ २३	१ २५	१ २६	

बुधमंद फल सारिणी.

बु. ४ ४८ मृ.के ७००

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.फ.
फ.	० ० ०	० ४ ४८	० ९ ३६	० १४ २४	० १९ १२	० २४ ०	० २८ ४८	० ३३ ३६	० ३८ २४	० ४३ १२	० ४८ ०	० ५२ ४८	० ५७ ३६	१ २ २४	१ ७ १२	४ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ५	० १०	० १४	० १९	० २०	० २९	० ३४	० ३८	० ४२	० ४६	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	१ १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ १७	१ २२	१ २२	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	२ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४३	२ ४८	२ ५३	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	३ ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ४	४ ५	४ १०	४ १८	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८	

बुधमन्दफलसारिणी.

अ.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ	
फ. ०	१ १२ ०	१ १५ ३६	१ १९ १२	१ २२ ४८	१ २६ २४	१ ३० ०	१ ३३ ३६	१ ३७ १२	१ ४० ४८	१ ४४ २४	१ ४८ ०	१ ५१ ३६	१ ५५ १२	१ ५८ ४८	२ २ २४	३ ३६	गु.ध. ३ ३६
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		मृ.के. ७...
′	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	० ५४		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	१ ४८		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	२ ४२		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २९	३ ३२	३ ३६		

अ.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ	
फ	२ ६ ०	२ ८ ४८	२ ११ ३६	२ १४ २४	२ १७ १२	२ २० ०	२ २२ ४८	२ २५ ३६	२ २८ २४	२ ३१ १२	२ ३४ ०	२ ३६ ४८	२ ३९ ३६	२ ४२ २४	२ ४५ १२	२ ४८	गु.ध. २ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		मृ.के. ७...
ध.	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	० ४२		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ४६	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २१	१ २४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४४	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	२ ६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४६	२ ४८		

बुधमंद फल सारिणी.

अ.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ
गु.ध. २° फ.	२ ४८ ०	२ ५० ०	२ ५२ ०	२ ५४ ०	२ ५६ ०	२ ५८ ०	३ ० ०	३ २ ०	३ ४ ०	३ ६ ०	३ ८ ०	३ १० ०	३ १२ ०	३ १४ ०	३ १६ ०	२ ०
शु.के ७००० क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	० ३०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ३२	० ३४	० ३६	० ३८	० ४०	० ४२	० ४४	० ४६	० ४८	० ५०	० ५२	० ५४	० ५६	० ५८	१ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	१ ३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	२ ०	

अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ
गु.ध. ४८° फ.	३ १८ ०	३ १८ ४८	३ १९ ३६	३ २० २४	३ २१ १२	३ २२ ०	३ २२ ४८	३ २३ ३६	३ २४ २४	३ २५ १२	३ २६ ०	३ २६ ४८	३ २७ ३६	३ २८ २४	३ २९ १२	० ४८
शु.के. ७००० क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २४	० २५	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० २६	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३६	० ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८	

बुध मंदफल सारिणी.

अं.कों.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.फ
फे.	३ ३० ०	३ ३० २४	३ ३० ५८	३ ३१ १२	३ ३१ ३६	३ ३२ ०	३ ३२ २४	३ ३२ ४८	३ ३३ १२	३ ३३ ३६	३ ३४ ०	३ ३४ २४	३ ३४ ४८	३ ३५ १२	३ ३५ ३६	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ०	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ६	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० १२	० १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० १२	० १३	० १३	० १४	० १४	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	० १६	० १७	० १७	० १८	० १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २०	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २४	० २४	

गु.घ.
०
२४
मृ.के.
७

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अं.कों.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ
फे.	० ० ०	० १० ०	० २० ०	० ३० ०	० ४० ०	० ५० ०	१ ० ०	१ १० ०	१ २० ०	१ ३० ०	१ ४० ०	१ ५० ०	२ ० ०	२ १० ०	२ २० ०	१३ २०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १०	० २०	० ३०	० ४०	० ५०	१ ०	१ १०	१ २०	१ ३०	१ ४०	१ ५०	२ ०	२ १०	२ २०	२ ३०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ४०	२ ५०	३ ०	३ १०	३ २०	३ ३०	३ ४०	३ ५०	४ ०	४ १०	४ २०	४ ३०	४ ४०	४ ५०	५ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	५ १०	५ २०	५ ३०	५ ४०	५ ५०	६ ०	६ १०	६ २०	६ ३०	६ ४०	६ ५०	७ ०	७ १०	७ २०	७ ३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	७ ४०	७ ५०	८ ०	८ १०	८ २०	८ ३०	८ ४०	८ ५०	९ ०	९ १०	९ २०	९ ३०	९ ४०	९ ५८	१० ०	

गु.घ.
१०
०

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

	अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध.
गु.ध ८ ४८	फ.	२ ३० ०	२ ३८ ४८	२ ४७ ३६	२ ५६ २४	३ ५ १२	३ १४ ०	३ २२ ४८	३ ३१ ३६	३ ४० २४	३ ४९ १२	३ ५८ ०	४ ६ ४८	४ १५ ३६	४ २४ २४	४ ३३ १२	१२ २०
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	ध.	० ९	० १८	० २६	० ३५	० ४४	० ५३	१ २	१ १०	१ १९	१ २८	१ ३७	१ ४६	१ ५४	२ ३	२ १२	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		२ २१	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १४	३ २२	३ ३१	३ ४०	३ ४९	३ ५८	४ ६	४ १५	४ २४	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		४ ३३	४ ४२	४ ५०	४ ५९	५ ८	५ १७	५ २४	५ ३४	५ ४२	५ ५२	६ १	६ १०	६ १८	६ २७	६ ३६	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		६ ४५	६ ५४	७ २	७ ११	७ २०	७ २९	७ ३८	७ ४६	७ ५५	८ ४	८ १३	८ २२	८ ३०	८ ३९	८ ४८	
	अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.ध.
गु.ध. ८ २४	फ.	४ ४२ ०	४ ५० २४	४ ५८ ४८	५ ७ १२	५ १५ ३६	५ २४ ०	५ ३२ २४	५ ४० ४८	५ ४९ १२	५ ५७ ३६	६ ६ ०	६ १४ २४	६ २२ ४८	६ ३१ १२	६ ३९ ३६	१२ ०
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	ध.	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	२ ६	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ८	४ १२	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १८	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५९	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १६	८ २४	

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.ध.	
फ.	६ ४८ ०	६ ५४ ४८	७ १ ३६	७ ८ २४	७ १५ १२	७ २२ ०	७ २८ ४८	७ ३५ ३६	७ ४२ २४	७ ४९ १२	७ ५६ ०	८ २ ४८	८ ९ ३६	८ १६ २४	८ २३ १२	१० ४०	गु.ध. ६ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध.	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	१ ४३		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१ ४९	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १०	३ १७	३ २४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	३ ३१	३ ३८	३ ४८	३ ५०	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	[illegible] ५२	४ ५९	५ ६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३५	६ ४१	६ ४८		

अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.ध.	
फ.	८ ३० ०	८ ३५ १२	८ ४० २४	८ ४५ ३६	८ ५० ४८	८ ५६ ०	९ १ १२	९ ६ २४	९ ११ ३६	९ १६ ४८	९ २२ ०	९ २७ १२	९ ३२ २४	९ ३७ ३६	९ ४२ ४८	९ २०	गु.ध. ५ १२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध.	० ५	० ११	० १६	० २२	० २६	० ३२	० ३७	० ४२	० ४७	० ५३	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १४	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३६		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	२ ४२	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	३ ५४		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२		

गुरुशीघ्रफल सारिणी.

गु.घ. २ १२

अं.कौ.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गा.घ
फ.	९ ४८ ०	९ ५१ १२	९ ५४ २४	९ ५७ ३६	१० ० ४८	१० ४ ०	१० ७ १२	१० १० २४	१० १३ ३६	१० १६ ४८	१० २० ०	१० २३ १२	१० २६ २४	१० २९ ३६	१० ३२ ४८	७ ४०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २	० ६	० १०	० १३	० १६	० १९	० २२	० २६	० २९	० ३२	० ३५	० ३८	० ४२	० ४५	० ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ५२	० ५४	० ५८	१ १	१ ४	१ ७	१ १०	१ १४	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	१ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ ३९	१ ४२	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ २	२ ५	२ ८	२ ११	२ १४	२ १८	२ २२	२ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२ २७	२ ३०	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४३	२ ४६	२ ५०	२ ५३	२ ५६	२ ५९	३ २	३ ६	३ ९	३ १२	

गु.घ. ० ४८

अं.कौ.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गा.घ
फ.	१० ३६ ०	१० ३६ ४८	१० ३७ ३६	१० ३८ २४	१० ३९ १२	१० ४० ०	१० ४० ४८	१० ४१ ३६	१० ४२ २४	१० ४३ १२	१० ४४ ०	१० ४४ ४८	१० ४५ ३६	१० ४६ २४	१० ४७ १२	५ ४०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८	

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अ.कों	२०५	२०६	२०७	२०८	२०९	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	ग.घ.
फ.	१० ४८ ०	१० ४५ ३६	१० ४३ १२	१० ४० ४८	१० ३८ २४	१० ३६ ०	१० ३३ ३६	१० ३१ १२	१० २८ ४८	१० २६ २४	१० २४ ०	१० २१ ३६	१० १९ १२	१० १६ ४८	१० १४ २४	३ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	० ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	१ ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१ ५०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४	

गु.क्र. २ २४

अं.कों.	२२०	२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०	२३१	२३२	२३३	२३४	ग.घ.
फ.	१० १२ ०	१० ६ ४८	१० १ ३६	९ ५६ २४	९ ५१ १२	९ ४६ ०	९ ४० ४८	९ ३५ ३६	९ ३० २४	९ २५ १२	९ २० ०	९ १४ ४८	९ ९ ३६	९ ४ २४	८ ५९ १२	० ४५
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३२	२ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	३ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२	

गु.क्र. ५ १२

गुरु शीघ्र फलसारिणी.

गु.क्र. ९ १२

अंको	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.क्र.
फ.	८ ५४ ०	८ ४४ ४८	८ ३५ ३६	८ २६ २४	८ १७ १२	८ ८ ०	७ ५८ ४८	७ ४९ ३६	७ ४० २४	७ ३१ १२	७ २२ ०	७ १२ ४८	७ ३ ३६	६ ५४ २४	६ ४५ १२	२ ४०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	० ९	० १८	० २८	० ३७	० ४६	० ५५	१ ४	१ १४	१ २३	१ ३२	१ ४१	१ ५०	२ ०	२ ९	२ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ २७	२ ३६	२ ४५	२ ५५	३ ४	३ १३	३ २२	३ ३२	३ ४१	३ ५०	३ ५९	४ ८	४ १८	४ २७	४ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ ४५	४ ५४	५ ४	५ १३	५ २२	५ ३२	५ ४०	५ ५०	५ ५९	६ ८	६ १७	६ २६	६ ३६	६ ४५	६ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	७ ३	७ १२	७ २२	७ ३१	७ ४०	७ ४९	७ ५८	८ ८	८ १७	८ २६	८ ३५	८ ४४	८ ५४	८ ३	८ १२	

गु.क्र. १२ ०

अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.क्र.
फ.	६ ३६ ०	६ २४ ०	६ १२ ०	६ ० ०	५ ४८ ०	५ ३६ ०	५ २४ ०	५ १२ ०	५ ० ०	४ ४८ ०	४ ३६ ०	४ २४ ०	४ १२ ०	४ ० ०	३ ४८ ०	५ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	३ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	६ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६ १२	६ २४	६ ३६	६ ४८	७ ०	७ १२	७ २४	७ ३६	७ ४८	८ ०	८ १२	८ २४	८ ३६	८ ४८	९ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	९ १२	९ २४	९ ३६	९ ४८	१० ०	१० १२	१० २४	१० ३६	१० ४८	११ ०	११ १२	११ २४	११ ३६	११ ४८	१२ ०	

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अ. को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग. फ.
फ.	३ ३६ ०	३ २१ ३६	३ ७ १२	३ ५२ ४८	२ ३८ २४	२ २४ ०	२ ९ ३६	१ ५५ १२	१ ४० ४८	१ २६ २४	१ १२ ०	० ५७ ३६	० ४३ १२	० २८ ४८	० १४ २४	७ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ऋ.	० १४	० २९	० ४३	० ५८	१ १२	१ २६	१ ४१	१ ५५	२ १०	२ २४	२ ३८	२ ५३	३ ७	३ २२	३ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ ५०	४ ५	४ १९	४ ३४	४ ४८	५ २	५ १७	५ ३१	५ ४६	६ ०	६ १४	६ २९	६ ४३	६ ५८	७ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	७ २६	७ ४१	७ ५५	८ १०	८ २२	८ ३७	८ ५२	९ ६	९ २१	९ ३९	९ ५०	१० ५	१० १९	१० ३८	१० ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	११ २	११ १७	११ ३१	११ ४६	१२ ०	१२ १४	१२ २९	१२ ४३	१२ ५८	१३ १२	१३ २६	१३ ४२	१३ ५५	१४ १०	१४ २४	

गु. ऋ. १४ २४

गुरु मंद फल सारिणी.

अ. को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग. फ.
फ.	० ० ०	० ५ ३६	० ११ १२	० १६ ४८	० २२ २४	० २८ ०	० ३३ ३६	० ३९ १२	० ४४ ४८	० ५० २४	० ५६ ०	१ १ ३६	१ ७ १२	१ १२ ४८	१ १८ २४	० २८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ६	० ११	० १७	० २२	० २८	० ३४	० ३९	० ४५	० ५०	० ५६	१ २	१ ७	१ १३	१ १८	१ २४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ३०	१ ३५	१ ४१	१ ४६	१ ५२	१ ५८	२ ३	२ ९	२ १४	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३७	२ ४२	२ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ५४	२ ५९	३ ५	३ १०	३ १६	३ २२	३ २७	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	४ १७	४ २२	४ २९	४ ३४	४ ४०	४ ४६	४ ५१	४ ५७	५ २	५ ८	५ १४	५ १९	५ २५	५ ३०	५ ३६	

गु. ध ५ ३६

मृ. के ६ ०

गुरुमंदफलसारिणी.

बुध. ५ १२ मृ.के ६०००

अं की	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग फ
	१ २४ ०	१ २९ १२	१ ३४ २४	१ ३९ ३६	१ ४४ ४८	१ ५० ०	१ ५५ १२	२ ० २४	२ ५ ३६	२ १० ४८	२ १६ ०	२ २१ १२	२ २६ २४	२ ३१ ३६	२ ३८ ४८	० २६
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	३ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३१	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५२	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२	

बुध ४ ४ मृ.के ६०००

अ की	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग ध्य.
क्र.	२ ४२ ०	२ ४६ ४८	२ ५१ ३६	२ ५६ २४	३ १ १२	३ ६ ०	३ १० ४८	३ १५ ३६	३ २० २४	३ २५ १२	३ ३० ०	३ ३४ ४८	३ ३९ ३६	३ ४४ २४	३ ४९ १२	० २४
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
म	० ५	० १०	० १५	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ ३	१ ७	१ १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ १७	१ २१	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ १०	२ १४	२ १९	२ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४३	२ ४८	२ ५३	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	३ ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८	

गुरु मंद फल सारिणी.

अं.को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
फ.	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १२ ०	४ १५ ३६	४ १९ १२	४ २२ ४८	४ २६ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ २४	० १८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घं.	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २६	० २९	० ३३	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	० ५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	१ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	२ ४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २६	३ २९	३ ३२	३ ३६	

गु.घ. ३ ३६, मृ.के. ६००

अं.को	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
फ.	४ ४८ ०	४ ५० ४८	४ ५३ ३६	४ ५६ २४	४ ५९ १२	५ २ ०	५ ४ ४८	५ ७ ३६	५ १० २४	५ १३ १२	५ १६ ०	५ १८ ४८	५ २१ ३६	५ २४ २४	५ २७ १२	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	० ४२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २१	१ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४०	१ ४३	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४५	२ ४८	

गु.घ. ३ ४६ मृ.के. ६०००

गुरु मंद फल सारिणी.

गु.ध. ० ४८ मृ.के ६ ० ० ०

अ.कां	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	ग
फ.	५ ३० ०	५ ३० ४८	५ ३१ ३६	५ ३२ २४	५ ३३ १२	५ ३४ ०	५ ३४ ४८	५ ३५ ३६	५ ३६ २४	५ ३७ १२	५ ३८ ०	५ ३८ ४८	५ ३९ ३६	५ ४० २४	५ ४१ १२	५ ४२ ०	० ४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० १२		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० २४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८		

शुक्र शीघ्र फल सारिणी.

गु.ध. २५ १२

अं कां.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग ध्य
फ.	० ० ०	० २५ १२	० ५० २४	१ १५ ३६	१ ४० ४८	२ ६ ०	२ ३१ १२	२ ५६ २४	३ २१ ३६	३ ४६ ४८	४ १२ ०	४ ३७ १२	५ २ २४	५ २७ ३६	५ ५२ ४८	७४ ५३
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ६	२ ३१	२ ५६	३ २१	३ ४७	४ १२	४ ३७	५ २	५ २८	५ ५३	६ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६ ४३	७ ८	७ ३४	७ ५९	८ २४	८ ४९	९ १५	९ ४०	१० ५	१० ३०	१० ५६	११ २१	११ ४६	१२ ११	१२ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१३ १	१३ २६	१३ ५२	१४ १७	१४ ४३	१५ ८	१५ ३३	१५ ५७	१६ २३	१६ ४८	१७ १३	१७ ३८	१८ ४	१८ २९	१८ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१९ १९	१९ ४४	२० १०	२० ३५	२१ ०	२१ २५	२१ ५०	२२ १६	२२ ४१	२३ ६	२३ ३१	२३ ५६	२४ २२	२४ ४७	२५ १२	

शुक्र शीघ्रफल सारिणी.

अ.को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गध
फ.	६ १८ ०	६ ४३ १२	७ ८ २४	७ ३३ ३६	७ ५८ ४८	८ २४ ०	८ ४९ १२	९ १४ २४	९ ३९ ३६	१० ४ ४८	१० ३० ०	१० ५५ १२	११ २० २४	११ ४५ ३६	१२ १० ४८	७४ ५२
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ६	२ ३१	२ ५६	३ २१	३ ४७	४ १२	४ ३७	५ ४	५ २९	५ ५३	६ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६ ४३	७ ८	७ ३४	७ ५९	८ २४	८ ४९	९ १४	९ ४०	१० ५	१० ३०	१० ५५	११ २१	११ ४६	१२ ११	१२ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१३ १	१३ २६	१३ ५२	१४ १७	१४ ४२	१५ ७	१५ ३३	१५ ५७	१६ २३	१६ ४८	१७ १३	१७ ३८	१८ ४	१८ २९	१८ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१९ १९	१९ ४४	२० १०	२० ३५	२१ ०	२१ २५	२१ ५०	२२ १६	२२ ४१	२३ ६	२३ ३२	२३ ५६	२४ २२	२४ ४७	२५ १२	

शुध २५ १२

अ.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गध
फ.	१२ ३६ ०	१३ ० ०	१३ २४ ०	१३ ४८ ०	१४ १२ ०	१४ ३६ ०	१५ ० ०	१५ २४ ०	१५ ४८ ०	१६ १२ ०	१६ ३६ ०	१७ ० ०	१७ २४ ०	१७ ४८ ०	१८ १२ ०	७४ ८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	६ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	१२ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	१८ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०	

शुध. २४ ०

शुक्र शीघ्र फल सारिणी.

	अं.को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गत्य
शु.ध २४ ०	फ.	१८ ३६ ०	१९ ० ०	१९ २४ ०	१९ ४८ ०	२० १२ ०	२० ३६ ०	२१ ० ०	२१ २४ ०	२१ ४८ ०	२२ १२ ०	२२ ३६ ०	२३ ० ०	२३ २४ ०	२३ ४८ ०	२४ १२ ०	७४ ८
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	ध.	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	६ ०	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	१२ ०	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	१८ ०	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०	

	अं.को	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गत्य
शु.ध. २२ २४	फ.	२४ ३६ ०	२४ ५८ २४	२५ २० ४८	२५ ४३ १२	२६ ५ ३६	२६ २८ ०	२६ ५० २४	२७ १२ ४८	२७ ३५ १२	२७ ५७ ३६	२८ २० ०	२८ ४२ २४	२९ ४ ४८	२९ २७ १२	२९ ४९ ३६	७३ ८
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	ध.	० २२	० ४५	१ ७	१ ३०	१ ५२	२ १४	२ ३७	२ ५९	३ २२	३ ४४	४ ६	४ २९	४ ५१	५ १४	५ ३६	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		५ ५८	६ २१	६ ४३	७ ६	७ २८	७ ५०	८ १३	८ ३५	८ ५८	९ २०	९ ४२	१० ५	१० २७	१० ५०	११ १२	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		११ २२	११ ३४	११ ५५	१२ १९	१२ ४१	१२ ४	१२ २६	१२ ४२	१४ ११	१४ ३६	१४ ५४	१५ १८	१५ ४२	१६ ३	१६ २५	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		१७ १६	१७ ३२	१७ ५५	१८ १८	१८ ४०	१९ २	१९ २४	१९ ४७	२० १०	२० ३२	२० ५४	२१ १७	२१ ३९	२२ २	२२ २४	

शुक्र शीघ्र फल सारिणी.

अं.कों.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गध	
फ.	३०	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३४	३४	३४	३५	७०	गु.घ
	१२	३२	५२	१४	३६	०	१६	३७	५८	१९	४०	०	३१	४२	३	८	२०
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२		४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५		
	२१	४२	२	२३	४४	५	२६	४६	७	२८	४९	१०	३०	५१	३२		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०		
	१६	५४	१४	३४	५६	१७	३८	५८	१९	४०	१	२२	४३	३	२४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५		
	४५	६	२६	४७	८	२९	५०	१०	३२	५२	१३	३३	५४	१५	३६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२०		
	५७	१८	३८	५९	२०	४१	२	२२	४३	४	२४	४६	६	२७	४८		

अं.कों.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गध	
फ.	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३९	३९	३९	७१	गु.घ.
	२४	४३	७	३१	४०	०	१९	३८	५७	१६	३६	५२	१४	३३	५२	८	१९
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८		१२
																	०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४		
	१९	३८	५७	१७	३६	५५	१४	३३	५२	१२	३१	५०	१०	२९	४८		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	९		
	७	२६	४५	४	२४	४३	२	२२	४०	०	१९	३८	५७	१७	३६		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४		
	५५	१४	३४	५३	१२	३२	५१	११	३०	४८	७	२०	४६	४	२४		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९		
	४२	२	२२	४१	०	१९	३८	५८	१७	३६	५५	१६	३४	५०	१२		

शुक्र शीघ्र फलसारिणी

गु.प १५ १२

अं.को.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	गध.
फ	४० १२ ०	४० २७ १२	४० ४२ २४	४० ५७ ३६	४१ १२ ४८	४१ २८ ०	४१ ४३ १२	४१ ५८ २४	४२ १३ ३६	४२ २८ ४८	४२ ४४ ०	४२ ५९ १२	४३ १४ २४	४३ २९ ३६	४३ ४४ ४८	६८ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० २५	० ३०	० ४६	१ १	१ १६	१ ३१	१ ४६	२ २	२ १७	२ ३२	२ ४७	३ २	३ १८	३ ३३	३ ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४ ३	४ १८	४ ३४	४ ४९	५ ४	५ १९	५ ३४	५ ५०	६ ५	६ २०	६ ३५	६ ५१	७ ६	७ २१	७ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	७ ५१	८ ६	८ २२	८ ३७	८ ५२	९ ७	९ २२	९ ३८	९ ५३	१० ८	१० २३	१० ३८	१० ५४	११ ९	११ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	११ ३९	११ ५८	१२ १०	१२ २५	१२ ४०	१२ ५५	१३ १०	१३ २६	१३ ४१	१३ ५६	१४ ११	१४ २६	१४ ४२	१४ ५७	१५ १२	

शु.प. ३ ४

अं.को.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.ध.
फ.	४४ ० ०	४४ ८ २४	४४ १६ ४८	४४ २५ १२	४४ ३३ ३६	४४ ४२ ०	४४ ५० २४	४४ ५८ ४८	४५ ७ १२	४५ १५ ३६	४५ २३ ०	४५ ३२ २४	४५ ४० ४८	४५ ४९ १२	४५ ५७ ३६	६४ ४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३४	१ ४१	१ ४९	१ ५८	२ ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	४ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ ९	६ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १४	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १५	८ २४	

शुक्र शीघ्र फल सारिणी

अं. को.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.फ.	
फ.	४६ ६ ०	४५ ५८ ४८	४५ ५१ ३६	४५ ४४ २४	४५ ३७ १२	४५ ३० ०	४५ २२ ४८	४५ १५ ३६	४५ ८ २४	४५ १ १२	४४ ५४ ०	४४ ४६ ४८	४४ ३९ ३६	४४ ३२ २४	४४ २५ १२	५४ ४२	गु. क. ७ १२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध.	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३४	१ ४१	१ ४८		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२ ३८	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ७	३ १४	३ २२	३ २९	३ ३६		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	३ ४३	३ ५०	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १९	४ २६	४ ३४	४ ४१	४ ४८	४ ५५	५ २	५ १०	५ १७	५ २४		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	५ ३१	५ ३८	५ ४६	५ ५३	६ ०	६ ७	६ १४	६ २२	६ २८	६ ३६	६ ४३	६ ५०	६ ५८	७ ५	७ १२		
	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.फ.	
	४४ १८ ०	४३ ३१ १२	४२ ४४ २४	४१ ५७ ३६	४१ १० ४८	४० २४ ०	३९ ३७ १२	३८ ५० २४	३८ ३ ३६	३७ १६ ४८	३६ ३० ०	३५ ४३ १२	३४ ५६ २४	३४ ९ ३६	३३ २२ ४८	२९ ५३	गु. क. ३ ४८
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
	० ४७	१ ३४	२ २०	३ ७	३ ५४	४ ४१	५ २८	६ १४	७ १	७ ४८	८ ३५	९ २२	१० ८	१० ५५	११ ४२		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१२ २९	१३ १६	१४ २	१४ ४९	१५ ३६	१६ २३	१७ १०	१७ ५६	१८ ४३	१९ ३०	२० १७	२१ ४	२१ ५०	२२ ३७	२३ २४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	२४ ११	२४ ५८	२५ ४४	२६ ३१	२७ १८	२८ ५	२८ ५२	२९ ३८	३० २५	३१ १२	३१ ५९	३२ ४६	३३ ३२	३४ १९	३५ ६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	३५ ५३	३६ ४०	३७ २६	३८ १३	३९ ०	३९ ४७	४० ३४	४१ २०	४२ ७	४२ ५४	४३ ४१	४४ २८	४५ १४	४६ १	४६ ४८		

शुक्रशीघ्रफलसारिणी

शु.क्र. १३० २४

अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग.फ.
फ.	३२ ३६ ०	३० २५ १५	२८ १५ १२	२६ ४ १८	२३ ५४ २४	२१ ४४ ०	१९ ३३ ४३	१७ २३ १२	१५ १२ ४८	१३ २ २४	१० ५१ ०	८ ४१ ३६	६ ३१ ३२	४ २० ४८	२ १० २४	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	२ १०	४ २३	५ ३१	८ ४२	१० ५२	१३ २	१५ १३	१७ २३	१९ ३४	२१ ४४	२३ ५४	२६ ५	२८ १५	३० २६	३२ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३४ ४६	३६ ५७	३९ ७	४१ १८	४३ २८	४५ ३८	४७ ४९	४९ ५९	५२ १०	५४ २०	५६ ३०	५८ ४०	६० ५१	६३ २	६५ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६७ २२	६९ ३३	७१ ४३	७३ ५४	७६ ४	७८ १४	८० २५	८२ ३५	८४ ४५	८६ ५६	८९ ६	९१ १७	९३ २७	९५ ३८	९७ ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	९९ ५८	१०२ ९	१०४ १९	१०६ ३०	१०८ ४०	११० ५०	११३ १	११५ ११	११७ २२	११९ ३२	१२१ ४२	१२३ ५३	१२६ ३	१२८ १४	१३० २८	

अंत्यांक फलसारिणी.

शु.क्र. २०

अं को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग.फ.
	० ० ध	० २० ध	० ४० ध	१ ० ध	१ २० ध	१ ४० ध	२ ० ध	२ २० ध	२ २० ऋ	२ ० ऋ	१ ४० ऋ	१ २० ऋ	१ ० ऋ	० ४० ऋ	० २० ऋ	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०	

अंत्यांक गति फल सारिणी.

अ को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	शु.घ.
फ	६ ८ ध	२ ४८ ध	० ३२ ऋ	३ ५२ ऋ	७ १२ ऋ	१० ३२ ऋ	१३ ५२ ऋ	१७ १२ ऋ	२० ३२ ऋ	२३ ५२ ऋ	२७ १२ ऋ	३० ३२ ऋ	३३ ५२ ऋ	३७ १२ ऋ	४० ३२ ऋ	४३ ५२ ऋ	३ २० ऋ
कं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ऋ	० ३	० ७	० १०	० १३	० १७	० २०	० २३	० २७	० ३०	० ३३	० ३७	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ५३	० ५७	१ ०	१ ३	१ ७	१ १०	१ १३	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	१ ३७	१ ४०		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१ ४३	१ ४७	१ ५०	१ ५३	१ ५७	२ ०	२ ३	२ ७	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २३	२ २७	२ ३०		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	२ ३३	२ ३७	२ ४०	२ ४३	२ ४७	२ ५०	२ ५३	२ ५७	३ ०	३ ३	३ ७	३ १०	३ १३	३ १७	३ २०		

शुक्र मंद फल सारिणी.

अ. को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग फ	शुध.
फ.	० ० ०	० २ २४	० ४ ४८	० ७ १२	० ९ ३६	० १२ ०	० १४ २४	० १६ ४८	० १९ १२	० २१ ३६	० २४ ०	० २६ २४	० २८ ४८	० ३१ १२	० ३३ ३६	२ २४	२ २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	० ३६		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५२	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	१ ४८		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१ ५०	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २१	२ २४		

शुक्रमंदफलसारिणी.

शु.घ. २ ० मृ.के. ०।०।२।०

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ
फ.	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	१ ० ०	१ २ ०	१ ४ ०	२ ०
फ.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	० ३०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ३२	० ३४	० ३६	० ३८	० ४०	० ४२	० ४४	० ४६	० ४८	० ५०	० ५२	० ५४	० ५६	० ५८	१ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	१ ३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	२ ०	
अं.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ.
फ.	१ ६ ०	१ ६ ४८	१ ७ ३६	१ ८ २४	१ ९ १२	१ १० ०	१ १० ४८	१ ११ ३६	१ १२ २४	१ १२ १२	१ १४ ०	१ १४ ४८	२ १५ ३६	१ १६ २४	१ १७ १२	० ४८
फ.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १	० २	० ३	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० १२	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८	

शु.घ. ४९ मृ.के. ०।३।०

शुक्रमंदफल सारिणी.

अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ	शु.ध. ० २४
फ.	१ १८ ०	१ १८ २४	१ १८ ४८	१ १९ १२	१ १९ ३६	१ २० ०	१ २० २४	१ २० ४८	१ २१ १२	१ २१ ३६	१ २२ ०	१ २२ २४	१ २२ ४८	१ २३ १२	१ २३ ३६	० २४	सू.के. २ ० ० ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध	० ०	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ६		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ६	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० १२	० १२		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	० १२	० १३	० १३	० १४	० १४	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	० १६	० १७	० १७	० १८	० १८		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २०	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २४	० २४		
अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ	शु.ध. ० २४
फ.	१ २४ ०	१ २४ २४	१ २४ ४८	१ २५ १२	१ २५ ३६	१ २६ ०	१ २६ २४	१ २६ ४८	१ २७ १२	१ २७ ३६	१ २८ ०	१ २८ २४	१ २८ ४८	१ २९ १२	१ २९ ३६	० २४	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध.	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ६		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ६	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० १२	० १२		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	० १२	० १३	० १३	० १४	० १४	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	० १६	० १७	० १७	० १८	० १८		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २०	० २१	० २१	० २२	० २२	० २३	० २३	० २४	० २४	० २४		

शुक्रमंदफलसारिणी.

गु.च. ०
मृ.के. ३०००

अं.को.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.फ.
फ.	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	० ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	

शनिशीघ्रफलसारिणी.

शु.ध. ६

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.ध.
फ.	० ० ०	० ६ ०	० १२ ०	० १८ ०	० २४ ०	० ३० ०	० ३६ ०	० ४२ ०	० ४८ ०	० ५४ ०	१ ० ०	१ ६ ०	१ १२ ०	१ १८ ०	१ २४ ०	८ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	१ ३०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	३ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०	

शनि शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध.
फ.	१ ३० ०	१ ३५ १२	१ ४० २४	१ ४५ ३६	१ ५० ४८	१ ५६ ०	२ १ १२	२ ६ २४	२ ११ ३६	२ १६ ४८	२ २२ ०	२ २७ १२	२ ३२ २४	२ ३७ ३६	२ ४२ ४८	७ १२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३०	२ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	३ ५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५४	५ २	५ ७	५ १२	

गु.ध. ५ १२

अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.ध.
फ.	२ ४८ ०	२ ५२ २४	२ ५६ ४८	३ १ १२	३ ५ ३६	३ १० ०	३ १४ २४	३ १८ ४८	३ २३ १२	३ २७ ३६	३ ३२ ०	३ ३६ २४	३ ४० ४८	३ ४५ १२	३ ४९ ३६	६ २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ४	० ९	० १३	० १८	० २२	० २६	० ३०	० ३५	० ४०	० ४४	० ४८	० ५३	० ५७	१ २	१ ५	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ १०	१ १५	१ १९	१ २४	१ २८	१ ३२	१ ३७	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५४	१ ५९	२ ३	२ ८	२ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ १६	२ २१	२ २५	२ ३०	२ ३६	२ ३८	२ ४२	२ ४७	२ ५२	२ ५६	३ ०	३ ५	३ ९	३ १४	३ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ २२	३ २७	३ ३२	३ ३६	३ ४०	३ ४४	३ ४९	३ ५२	३ ५८	४ २	४ ६	४ ११	४ १५	४ २०	४ २४	

गु.ध. ४ २४

शनि शीघ्र फल सारिणी.

गु.घ.	अ.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.घ.
३ ३६	फ.	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १२ ०	४ १५ ३६	४ १९ १२	४ २२ ४८	४ २६ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ २४	५ २६
	क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	घ.	० ४	० ७	० १२	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	० ५४	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	१ ४८	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	२ ४२	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २९	३ ३२	३ ३६	
	अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
गु.घ. २ २४		४ ४८ ०	४ ५० २४	४ ५२ ४८	४ ५५ १२	४ ५७ ३६	५ ० ०	५ २ २४	५ ४ ४८	५ ७ १२	५ ९ ३६	५ १२ ०	५ १४ २४	५ १६ ४८	५ १९ १२	५ २१ ३६	४ २४
		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
		० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३०	० ३४	० ३६	
		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
		९ ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ ३	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२	
		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
		१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ३९	१ ४३	१ ४५	१ ४८	
		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
		१ ५०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४	

शनि शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.ध.	गु.ध.
फ.	५ २४ ०	५ २५ १२	५ २६ २४	५ २७ ३६	५ २८ ४८	५ ३० ०	५ ३१ १२	५ ३२ २४	५ ३३ ३६	५ ३४ ४८	५ ३६ ०	५ ३७ १२	५ ३८ २४	५ ३९ ३६	५ ४० ४८	२ १२	१ २
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध.	० १	० २	० ४	० ५	० ६	० ७	० ८	० १०	० ११	० १२	० १३	० १४	० १६	० १७	० १८		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० १९	० २०	० २२	० २३	० २४	० २५	० २६	० २८	० २९	० ३०	० ३१	० ३२	० ३४	० ३५	० ३६		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	० ३७	० ३८	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४६	० ४७	० ४८	० ४९	० ५०	० ५२	० ५३	० ५४		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	० ५५	० ५६	० ५८	० ५९	१ ०	१ १	१ २	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ८	१ १०	१ ११	१ १२		

अं.को.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.फ.	गु.ध.
फ.	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	२ ०	० ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
ध.	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०		

शनि शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	२०५	२०६	२०७	२०८	२०९	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	ग.घ.
गु.क्र. ३६ फ.	५ ४२ ०	५ ४० २४	५ ३८ ४८	५ ३६ १२	५ ३४ ३६	५ ३४ ०	५ ३२ २४	५ ३० ४८	५ २९ १२	५ २७ ३६	५ २६ ०	५ २४ २४	५ २२ ४८	५ २१ १२	५ २९ ३६	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० २	० ३	० ५	० ६	० ८	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १८	० १९	० २१	० २२	० २४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३२	० ३४	० ३५	० ३७	० ३८	० ४०	० ४२	० ४३	० ४५	० ४६	० ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५६	० ५८	० ५९	१ १	१ २	१ ४	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	१ १२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१ १४	१ १५	१ १७	१ १८	१ २०	१ २२	१ २३	१ २५	१ २६	१ २८	१ ३०	१ ३१	१ ३३	१ ३४	१ ३६	
	२२०	२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०	२३१	२३२	२३३	२३४	
गु.क्र. १२	५ १८ ०	५ १४ ४८	५ ११ ३६	५ ८ २४	५ ५ १२	५ २ ०	४ ५८ ४८	४ ५५ ३६	४ ५२ २४	४ ४९ १२	४ ४६ ०	४ ४२ ४८	४ ३९ ३६	४ ३६ २४	४ ३३ १२	१ १२
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	० ३	० ६	० १०	० १३	० १६	० १९	० २२	० २६	० २९	० ३२	० ३५	० ३८	० ४२	० ४५	० ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ५१	० ५४	० ५८	१ १	१ ४	१ ७	१ १०	१ १४	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	१ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ ३९	१ ४२	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ २	२ ५	२ ८	२ ११	२ १४	२ १८	२ २१	२ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२ २७	२ ३०	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४६	२ ५०	२ ५३	२ ५६	२ ५९	३ २	३ ६	३ ९	३ १२	

शनि शीघ्र फल सारिणी.

अ कौ	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	गक्र.
फ	४ ३० ०	४ २५ १२	४ २० २४	४ १५ ३६	४ १० ४८	४ ६ ०	४ १ १२	३ ५६ २४	३ ५१ ३६	३ ४६ ४८	३ ४२ ०	३ ३७ १२	३ ३३ २४	३ २७ ३६	३ २२ ४८	२ ४८
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
अं	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	१ १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३०	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	२ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५३	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	३ ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ४३	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८	

गुक्र. ४ ४८

अ का	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	गक्र
फ	३ १८ ०	३ १२ ०	३ ६ ०	३ ० ०	२ ५४ ०	२ ४८ ०	२ ४२ ०	२ ३६ ०	२ ३० ०	२ २४ ०	२ १८ ०	२ १२ ०	२ ६ ०	२ ० ०	१ ५४ ०	४ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
अं	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	१ ३१	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	३ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	६ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०	

गुक्र. ६

शनिशीघ्रफलसारिणी.

शुक्र ७ १२

अं को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	गफ़
फ	१ ४८ ०	१ ४० ४८	१ ३२ ३६	१ २६ २४	१ १९ १२	१ १२ ०	१ ४ ४८	० ५७ ३६	० ५० २४	० ४२ १२	० ३६ ०	० २८ ४८	० २१ २६	० १४ २४	० ७ १२	५ १२
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ऋ.	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३४	१ ४१	१ ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२ ३८	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ७	३ १[illegible]	३ २२	३ २९	३ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ४३	३ ५०	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १९	४ २६	४ ३४	४ ४१	४ ४८	४ ५५	५ २	५ १०	५ १७	५ २४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	५ ३१	५ ३८	५ ४६	५ ५३	६ ०	६ ७	६ १४	६ २२	६ २९	६ ३६	६ ४३	६ ५०	६ ५८	७ ५	७ १२	

शनिमंदफलसारिणी

गुध ७ २६ मृके ८०००

अ को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
फ	० ० ०	० ७ ३६	० १५ १२	० २२ ४८	० ३० २४	० ३८ ०	० ४५ ३६	० ५३ १२	१ ० ४८	१ ८ २४	१ १६ ०	१ २३ ३६	१ ३१ १२	१ ३८ ४८	१ ४६ २४	० १५
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ८	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४६	० ५३	१ २	१ ८	१ १५	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४६	१ ५३	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ २	२ ९	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ४०	२ ४७	२ ५५	३ २	३ १०	३ १८	३ २५	३ ३३	३ ४०	३ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ५६	४ ३	४ ११	४ १८	४ २६	४ ३४	४ ४१	४ ४९	४ ५६	५ ४	५ १२	५ १९	५ २७	५ ३४	५ ४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	५ ५०	५ ५७	६ ५	६ १२	६ २०	६ २७	६ ३५	६ ४२	६ ५०	६ ५८	७ ६	७ १३	७ २१	७ २८	७ ३६	

शनि मंद फल सारिणी.

अ का	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग फ
फ	१ ५४ ०	२ २ २४	२ १० ४८	२ १९ १२	२ २७ ३६	२ ३६ ०	२ ४४ २४	२ ५२ ४८	३ १ १२	३ ९ ३६	३ १८ ०	३ २६ २४	३ ३४ ४८	३ ४३ १२	३ ५१ ३६	० १७
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	२ ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५२	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	४ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ ९	६ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १५	८ २४	

गु ध ८ २४ मृ:के ८ ....

अ को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग फ
फ	४ ० ०	४ ८ ०	४ १६ ०	४ २४ ०	४ ३२ ०	४ ४० ०	४ ४८ ०	४ ५६ ०	५ ४ ०	५ १२ ०	५ २० ०	५ २८ ०	५ ३६ ०	५ ४४ ०	५ ५२ ०	० १६
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध	० ८	० १६	० २४	० ३२	० ४०	० ४८	० ५६	१ ४	१ १२	१ २०	१ २८	१ ३६	१ ४४	१ ५२	२ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ८	२ १६	२ २४	२ ३२	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ४	३ १२	३ २०	३ २८	३ ३६	३ ४४	३ ५२	४ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ ८	४ १६	४ २४	४ ३२	४ ४०	४ ४८	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २०	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५२	६ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ ८	६ १६	६ २४	६ ३२	६ ४०	६ ४८	६ ५६	७ ४	७ १२	७ २०	७ २८	७ ३६	७ ४४	७ ५२	८ ०	

गु ध ८ १२ गु के ८ ....

शनि मंद फल सारिणी.

शु·ध· ६ ४८ मृ·के· ८ ० ० ०

अ·को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग फ.
फ.	६ ० ०	६ ६ ४८	६ १३ ३६	६ २० २४	६ २७ १२	६ ३४ ०	६ ४० ४८	६ ४७ ३६	६ ५४ २४	७ १ १२	७ ८ ०	७ १४ ४८	७ २१ ३६	७ २८ २४	७ ३५ १२	० १२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ २५	१ ४२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	-
	१ ४१	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १०	३ १७	३ २४	-
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	५ ६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४०	६ ४८	

शु·ध· ४ ४८ मृ·के ९ ० ० ०

अ·को·	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग फ.
फ	७ ५२ ०	[illegible] ४६ ४८	७ ५१ ३६	७ ५६ २४	८ १ १२	८ ६ ०	८ १० ४८	८ १५ ३६	८ २० २४	८ २४ १२	८ ३० ०	८ ३४ ४८	८ ३९ ३६	८ ४४ २४	८ ४९ १२	० ९
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध.	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	१ १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ १७	१ २२	१ २४	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	२ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५४	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३३	३ ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४२	४ ४८	

शनिमंद फल सारिणी.

अं का	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग फ
फ.	८ ५४ ०	८ ५५ ३६	८ ५७ १२	८ ५८ ४८	९ ० २४	९ २ ०	९ ३ ३६	९ ५ १२	९ ६ ४८	९ ८ २४	९ १० ०	९ ११ ३६	९ १३ १२	९ १४ ४८	९ १६ २४	० २
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध	० २	० ३	० ५	० ६	० ८	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १८	० १९	० २१	० २२	० २४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३२	० ३४	० ३५	० ३७	० ३८	० ४०	० ४२	० ४३	० ४५	० ४६	० ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५६	० ५८	० ५९	१ १	१ २	१ ४	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	१ १२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१ १४	१ १५	१ १७	१ १८	१ २१	१ २२	१ २३	१ २५	१ २६	१ २८	१ ३०	१ ३१	१ ३३	१ ३४	१ ३५	

गु.श ० ३६,

रामदुर्गे चन्द्रस्य त्रिफलं द्विचाशांद्वयौ घटिकादि.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
क्रा ३ ४०	६ ५४	९ ३४	१२ १६	१५ २	१७ ५२	२० ४	२१ ४०	२३ ३	२४ २१	२५ ९	२५ २५	२४ २५
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२४ ३४	२४ २८	२३ २८	२१ ५१	१९ ५	१७ २७	१५ ३३	१२ ५१	९ ४२	६ ४८	४ ३	१ ३ क्रा	२ ६ ध
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
ध ५ २७	८ २७	११ ५१	१४ ४२	१६ ८	२१ १०	२३ २६	२४ ५०	२६ ५	२७ ५१	२९ ४०	२९ ३५	२८ ५०
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
३२ ३१	३० १४	२७ १९	२५ ३	२२ ५२	२० २५	१८ २	१५ १०	१२ ६	९ १८	६ १८	३ १६	० १०

रामविनोदे अवधीष्ट संस्कार सारिणी.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
धं	२०	१७	१८	११	१२	१०	३	३	३ ऋ	ऋं	४	८	८	६	५	१६	१४	७	७	८	८	७	७	८	६
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
१०	९	१३	१९	११	१५	१५	१२	११	१४	१२	१०	३	४ ऋ	१ ध.	७	१०	९	१०	१७	१८	१९	१८	२१	२२	२१

रामगढकी सायन मेषादि दिनमान सारिणी.

दिन.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
मेष	३० ०	३० ४	३० ८	३० १२	३० १६	३० २०	३० २४	३० २८	३० ३२	३० ३६	३० ४०	३० ४४	३० ४८	३० ५२	३० ५६	३१ ०	३१ ४	३१ ८	३१ १२	३१ १६	३१ २०	३१ २४	३१ २८	३१ ३२	३१ ३६	३१ ४०	३१ ४४	३१ ४८	३१ ५२	३१ ५६	३२ ०
वृष	३२ ४	३२ ८	३२ १२	३२ १६	३२ २०	३२ २३	३२ २६	३२ २९	३२ ३२	३२ ३५	३२ ३८	३२ ४१	३२ ४४	३२ ४७	३२ ५०	३२ ५३	३२ ५६	३२ ५९	३३ २	३३ ५	३३ ८	३३ ११	३३ १४	३३ १७	३३ २०	३३ २३	३३ २६	३३ २९	३३ ३२	३३ ३५	३३ ३८
मिथु	३३ ४२	३३ ४४	३३ ४६	३३ ४८	३३ ५०	३३ ५२	३३ ५४	३३ ५६	३३ ५८	३४ ०	३४ २	३४ ३	३४ ४	३४ ५	३४ ६	३४ ७	३४ ८	३४ ९	३४ १०	३४ ११	३४ १२	३४ १३	३४ १४	३४ १५	३४ १६	३४ १७	३४ १८	३४ १९	३४ २०	३४ २१	३४ २२
कर्क	३४ २२	३४ २१	३४ २०	३४ १९	३४ १८	३४ १७	३४ १६	३४ १५	३४ १४	३४ १३	३४ १२	३४ ११	३४ १०	३४ ९	३४ ८	३४ ७	३४ ६	३४ ५	३४ ४	३४ ३	३४ २	३४ ०	३३ ५८	३३ ५६	३३ ५४	३३ ५२	३३ ५०	३३ ४८	३३ ४६	३३ ४४	३३ ४१
सिंह.	३३ ३८	३३ ३५	३३ ३२	३३ २९	३३ २६	३३ २३	३३ २०	३३ १७	३३ १४	३३ ११	३३ ८	३३ ५	३३ २	३२ ५९	३२ ५६	३२ ५३	३२ ५०	३२ ४७	३२ ४४	३२ ४१	३२ ३८	३२ ३५	३२ ३२	३२ २९	३२ २६	३२ २३	३२ २०	३२ १७	३२ १४	३२ ११	३२ ८
कन्या	३२ ४	३२ ०	३१ ५६	३१ ५२	३१ ४८	३१ ४४	३१ ४०	३१ ३६	३१ ३२	३१ २८	३१ २४	३१ २०	३१ १६	३१ १२	३१ ८	३१ ४	३१ ०	३० ५६	३० ५२	३० ४८	३० ४४	३० ४०	३० ३६	३० ३२	३० २८	३० २४	३० २०	३० १६	३० १२	३० ८	३० ४
तुल	३० ०	२९ ५६	२९ ५२	२९ ४८	२९ ४४	२९ ४०	२९ ३५	२९ ३१	२९ २६	२९ २२	२९ १८	२९ १४	२९ १०	२९ ५	२९ ०	२८ ५६	२८ ५४	२८ ५०	२८ ४६	२८ ४२	२८ ३८	२८ ३४	२८ ३०	२८ २६	२८ २२	२८ १८	२८ १४	२८ १०	२८ ५	२८ ०	
वृश्चि	२७ ५६	२७ ५२	२७ ४८	२७ ४४	२७ ४०	२७ ३६	२७ ३२	२७ २८	२७ २४	२७ २१	२७ १८	२७ १५	२७ १२	२७ ९	२७ ६	२७ ३	२७ ०	२६ ५७	२६ ५४	२६ ५१	२६ ४८	२६ ४५	२६ ४२	२६ ३९	२६ ३६	२६ ३३	२६ ३०	२६ २७	२६ २४	२६ २१	
धन.	२६ १८	२६ १५	२६ १३	२६ ११	२६ ९	२६ ७	२६ ५	२६ ३	२६ १	२५ ५९	२५ ५७	२५ ५६	२५ ५५	२५ ५४	२५ ५३	२५ ५२	२५ ५१	२५ ५०	२५ ४९	२५ ४८	२५ ४७	२५ ४६	२५ ४५	२५ ४४	२५ ४३	२५ ४२	२५ ४१	२५ ४०	२५ ३९	२५ ३८	
मकर.	२५ ३८	२५ ३९	२५ ४०	२५ ४१	२५ ४२	२५ ४३	२५ ४४	२५ ४५	२५ ४६	२५ ४७	२५ ४८	२५ ४९	२५ ५०	२५ ५१	२५ ५२	२५ ५३	२५ ५४	२५ ५५	२५ ५६	२५ ५८	२६ ०	२६ २	२६ ४	२६ ६	२६ ८	२६ १०	२६ १२	२६ १४	२६ १६		
कुंभ.	२६ १८	२६ २०	२६ २२	२६ २५	२६ २८	२६ ३१	२६ ३४	२६ ३७	२६ ४०	२६ ४३	२६ ४६	२६ ४९	२६ ५२	२६ ५६	२६ ५९	२७ २	२७ ५	२७ ८	२७ ११	२७ १४	२७ १७	२७ २०	२७ २४	२७ २८	२७ ३२	२७ ३६	२७ ४०	२७ ४४	२७ ४८	२७ ५२	
मीन	२७ ५६	२८ ०	२८ ४	२८ ८	२८ १२	२८ १६	२८ २०	२८ २४	२८ २८	२८ ३२	२८ ३६	२८ ४०	२८ ४४	२८ ४८	२८ ५२	२८ ५६	२९ ०	२९ ४	२९ ८	२९ १२	२९ १६	२९ २१	२९ २६	२९ ३०	२९ ३४	२९ ३९	२९ ४३	२९ ४८	२९ ५२	२९ ५६	

अथ ग्रहके नक्षत्र और राशिचार करनेकी विधिः—अवधिस्थ ग्रहका और अभीष्ट राशि नक्षत्रपर लाना हो जिसका अंतर करके गतिके भागसे लब्ध जो अंशादिफल आवें सो गत होवें तो ऋण. गम्य होवे तो धन किये ग्रहका राश्यादिचार होताहै. अथ चन्द्रग्रहणके जाननेकी विधिः—इस चंद्रग्रहणमें पृथ्वीकी छाया चन्द्रबिंबको आच्छादन करती है और चंद्रपातके विना बिल्कुल ग्रहण सिद्ध नहीं होसक्ता और वही। चन्द्रपातका नाम राहु है. जब राहु और चन्द्रमा एक राशिका वा सात राशिके अंतरसे हों और पूर्णिमा रात्रितक बनी रहे तब पृथ्वीकी छायामें राहु मिलके आच्छादन करनेसे चन्द्रग्रहणका संभव है. जिसके लिये पूर्णिमांतके इष्टमें राहु और सूर्य चन्द्रमा स्पष्ट करके फिर सूर्य चंद्रसे शुद्ध तिथि घटी पूर्वोक्त विधिसे स्पष्ट करके पूर्णिमांत घटी शुद्ध करनेसे ग्रहणका मध्य काल होता है. फिर राहुको सूर्य में हीन करे व्यगु कहलाताहै. उसका उक्त विधिसे भुजांश बनावे वह १४ अंशों से अल्प होय तो अवश्य चन्द्रग्रहणका संभव है. नहीं तो नहीं है.अथ शर साधनेकी विधिः—व्यगुके भुजांश नीचे सारिणी कोष्ठकमें स्पष्ट शर कलादि लेके उसको व्यगु मेषादिमें उत्तर संज्ञक और तुलादिमें दक्षिणशर समझना चाहिये. अथ बिम्बसाधनविधिः—पंचांगमें तिथि गतैष्य घटीका योग सारिणीके कोष्ठक सूत्रमें चन्द्रबिंब और भूभाबिंब स्पष्ट होते हैं. अथ ग्रास लानेकी विधिः—चन्द्रबिंब और भूभा बिंबको जोड़के उसको आधा करके इसमें उक्त शरको हीन किये ग्रास होता है. शर उत्तरसंज्ञक हो तो ग्रास दक्षिणसंज्ञक और दक्षिण शर हो तो ग्रास उत्तरसंज्ञक समझना चाहिये. यदि शर ग्राससे जियादा होय तो ग्रहण नहीं होताहै. अथ खग्रास लानेकी विधिः—चंद्रबिंबसे जितना अधिक ग्रास आवे उतनाही खग्रास अर्थात चंद्रबिंब ग्रसके आकाश ग्रसित होताहै. और चंद्रबिंबसे जितना ग्रास कमती हो उतनाही ग्रहण कमती होताहै. अथ विथा लानेकी विधिः—ग्रासको २० से

गुणके उसके चंद्रबिंबके भागसे लब्ध आवे सो विश्वा समझना चाहिये अथ स्पर्शमोक्षकी स्थिति घटीके लानेकी विधिः—ग्रासके अंक नीचे सारिणीमें स्थिति घटी लेके फिर व्यगु भुजांशको दूना करके उसको पल समझके मेषादि व्यगुमें हो तो उक्त स्थिति घटीमें पूर्वोक्त पलोंको युक्त और तुलादि व्यगुके कारण ऋण किये स्थिति घटी स्पष्ट होती है. इन्होंको मध्यकालमें हीनकिये ग्रहणका स्पर्शकाल और युक्त किये मोक्षकाल होताहै.

अथ ग्रहणके परिलेख (किस कोणसे स्पर्श और किस कोणसे मोक्ष) के जाननेकी विधिः—ग्रास उत्तर हो तो चंद्रग्रहण ईशानकोणसे स्पर्श और नैर्ऋतसे मोक्ष होताहै और दक्षिण ग्रास होनेसे अग्निकोणसे स्पर्श और वायव्यसे मोक्ष होताहै. इति चंद्रग्रहणसाधनविधिः ।

अथ सूर्यग्रहण स्पष्ट करनेकी विधिः—पंचांगमें जितनी घटी पल अमावास्याहो उसी इष्टऊपर सूर्य चंद्र और राहु स्पष्ट करना पीछे सूर्य चंद्रसे तिथि घटी लेके अमावस्याकी घटी स्पष्ट हो उसी इष्ट ऊपर सूर्य चंद्रसमान राश्यादि कर लेना चाहिये. अथ ग्रहणसंभव जाननेकी विधि—सूर्यमें राहुको हीनकिये व्यगु कहलाता है. उक्त व्यगुका १४ भुजांशसे कमहुए उत्तरगोली व्यगुमें सूर्यग्रहण होता है. और याम्य गोली व्यगुमें ८ भुजांशसे कम हुएसे सूर्यग्रहणका संभव है नहीं तो नहीं है. अथ नत लानेकी विधिः—पर्वांतको दिनार्द्धमें हीन किये तो पूर्वनत और दिनार्ध पर्वांतमें हीन

---

[1]रविके ऊपर चंद्रमाकी छाया जितनी बार रहै उसीका नाम सूर्यग्रहण है. उक्त ग्रहण की सिद्धि चंद्रपातसे है. और चन्द्रपातका नाम ही राहु है जब चंद्रबिंबकी छायामें राहु मिलके पर्व आवे तब ब्रह्माके वरदानसे सूर्यको आच्छादन करता है. इसका प्रमाण ऋग्वेदकी संहिताके चौथे अष्टक में है "यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्यान्ये अशक्नुवन्" इत्यादि मंत्रसे सूर्य पूर्व [illegible] पश्चिमको चन्द्रमाका जितना अंतर है उसीका नाम लंबन है. और सूर्यसे उत्तर दक्षिण चंद्रमाका अंतर है उसीका नाम नति है उक्त दोनों संस्कार सूर्यग्रहणमें ही देना होताहै. चंद्रग्रहणमें ही देना पड़ता. क्योंकि चन्द्रग्रहणमें चन्द्रकक्षामेंही छाया रहतीहै. और सूर्यग्रहणमें चंद्रबिंब सूर्यसे कुछ ऊंचा दृष्टिगत होताहै जिस कारणसे लंबन और नति संस्कार दियेसे दृक्सूत्रमें बरोबर शुद्ध आवेगा नहीं तो अंतर रह जायगा.

हुयेपर नत कहलाता है. अथ लंबन लानेकी विधिः—नतको ४ से गुणके फिर दिनार्द्धके भागसे लब्ध घट्यादि लंबन लेके पूर्वनत हो जब तो उक्त लंबनको अमांतकी घटी पलोंमें ऋण और पश्चिम नत हो जब धन किये ग्रहणका मध्यकाल होता है. अथ शरलानेकी विधिः—उक्त लंबनको १३ से गुणनेसे कलादि फलको व्यगुमें लंबन धन हो तो धन और ऋण हो तो ऋण करके फिर इसी व्यगुके भुजांश तुल्य शरसाधनसारिणीमें अंगुलादि शर होता है. व्यगु मेषादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिणसंज्ञक शर समझना चाहिये. अथ नति और शुद्धशर लानेकी विधिः—नतके चारके भागसे लब्ध राश्यादि चार अंक लेके सायन सूर्यमें नत पूर्व हो तो ऋण और पश्चिमनत हो तो धन करके नतिसारिणीमें जो राशि अंश नजदीक हों उसीसे न्यून कोठक की नति लेनी फिर निजकोठक का अगले कोठक से अंतर करे उसको सारिणीमें नतसंस्कृत सायन सूर्य राशि अंश है सो और निजनतसंस्कृत सायन सूर्यके अंतरांक से गुणके १५के भागसे लब्ध अंगुलादि दो अंक लेना फिर निज कोठक की नतिसे अग्रिम कोठक की नति न्यून हो तो निजनतिमें हीन और अधिक हो तो धन करदेनेसे सदैव दक्षिण नति स्पष्ट होती है यह नति केवल दिल्लीप्रांतकी समझनी चाहिये और देशकी भिन्न भिन्न नति होती है जिसकारण सूर्यका ग्रहण देशभेदसे कहीं कम कहीं विशेष कहीं पूर्णग्रास कहीं शुद्ध रूपसे दर्शन देता है उक्त नति को दक्षिणशरमें धन और उत्तरशरमें ऋण किये शुद्धशर होताहे ।

अथ बिंब और मानैक्य खंडके लानेकी विधिः—सूर्यराश्यादि कोठक नीचे सारिणीमें सूर्यबिंब लेना और चंद्रबिंब पूर्वोक्त सारिणीसे लब्ध लेके सूर्यबिंबमें जोडके उसको आधा करनेसे मानैक्य खंड होताहै अथ ग्रासलानेकी विधि—मानैक्य खंडमें शुद्ध शर हीनकिये जिस दिशाको शरहो उसी दिशाका ग्रास समझना चाहिये यदि मानैक्यखंडमें शर नहीं हीन होवे तो ग्रहण नहीं दीखेगा ऐसा समझना चाहिये अथ स्थितिघटी और मध्यम मानके स्पर्श-

काललानेकी विधिः-अंगुलादि ग्रासके नीचेसारिणीमें स्थिति घटी लेके इसको मध्यकालमें हीन कियेसे स्पर्शकाल और युक्तकियेसे मोक्षकाल मध्यममानके होतेहैं अथ शुद्ध स्पर्श काल और मोक्षकाल लानेकी विधिः—मध्यम मानके स्पर्शकालकी नत बनाके पूर्वोक्त विधिसे लंबन करना इसको स्पार्शिक लंबन कहतेहैं और मध्यम मानकी मोक्षघटीको नत बनाके उससे लंबन पूर्वोक्त विधिसे आताहै वह मौक्षिक लंबन कहलाताहै इसको उक्त विधिसे मध्यम स्पर्शकाल और मोक्षकालके संस्कार देनेमे स्पर्शकाल और मोक्षकाल शुद्ध होताहै अथ विश्वा लानेकी विधि—ग्रासको २० से गुणके सूर्यबिंबके भागसे लब्धांकको विश्वा समझनाचाहिये अथ ग्रहणपरिलेख करनेकी विधिः—उत्तर ग्रास होवे तो सूर्यबिंब वायव्यसे स्पर्श होके और अग्निसे मोक्ष होताहै और दक्षिण ग्रास होवे तो नैर्ऋतसे स्पर्श होके ईशान दिशासे मोक्ष होताहै यदि १ अंगुलसे ग्रास कमती होवे तो सूर्य चंद्र ग्रहण दीखना मुश्किल है और इन चंद्र और सूर्यग्रहणादि गणित विषयकी सारिणी है जिसमें कथित अंकसे न्यूनाधिक होवे तो उसके पूर्वोक्त त्रैराशिक गणित देखेनाचाहिये.

इति श्रीमनुरचिते देवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते चंद्रसूर्यग्रहणगणितविधिकथनं नाम एकोनविंशतितमविनोदः ॥ १९ ॥

अथ शुक्रोदयास्तके साधनकी विधिः—शुक्रके उदयास्त स्पष्ट करनेमें प्रथम शीघ्रकर्ण चाहिये. जिसकेलिये शीघ्रकर्ण बनानेकी विधि लिखतेहैं. इसी शीघ्रकर्णसाधनका १ । २ । ३ । ४ । ४ । २ इतने खंडहैं. सो द्वि-शीघ्रकेंद्र शुक्र ६ राशिसे अधिक होवे जब बारामें शोधना नहीं तो है सोही राशितुल्य उक्त शीघ्रखंडको अलग रखके फिर अधस्थ अंशादिकों को ऐष्य खंडसे गुणके ३० भागसे लब्ध तीन अंक लेके पूर्वोक्त खंडमें जोडके फिर१९ में शोधनकिये शुक्रका शीघ्रकर्ण होताहै. अथ शरसाधनम् । शुक्र-पात राश्यादि २ । ० । ० । ० में प्रथम शीघ्र केंद्रको हीनकिये से राश्यादि

स्पष्टपात होताहै. इसको फिर मंद स्पष्ट शुक्रमें हीनकिये राश्यादिपातोनकेंद्र होताहै इसका भुजांश बनाके क्रांतिसारिणीसे क्रांति लेनी चाहिये फिर क्रांति को २३ से गुणके शीघ्र कर्णके भागसे लब्ध आवे सो अंगुलादि शर कहलाताहै. उक्त शर पातोन द्विशीघ्रकेंद्र मेषादि हो तो उत्तर तुलादि हो तो दक्षिणसंज्ञक समझनाचाहिये. अथ नतांशसाधनविधिः—स्पष्ट शुक्रमें तीनराशि हीन और पश्चिमोदयास्त स्पष्ट शुक्रमें तीन राशि युक्त करके फिर अयनांशा युक्त करना फिर क्रांतिसारिणीसे क्रांति साधन करके याम्याक्षांशा रामगढका २७ । १० या और शहरोंका अमुक अक्षांश हीन युक्त कर देना चाहिये यहां मेषादि सायन रविसे उत्तर क्रांति और तुलादि रविसे दक्षिण क्रांति कहलातीहै और अक्षांश तो हमेशाही दक्षिणसंज्ञक है. जब क्रांति और अक्षांशोंकी एक जाति अर्थात् दक्षिणक्रांति होय तो युक्त और उत्तर क्रांति अर्थात् भिन्न जातिके कारण हीनकिये दक्षिणसंज्ञक नतांशा सदैव होताहै.

अथ दृक्कर्मसाधनविधिः—नतांशके १०के भागसे लब्ध आवे जिसको दृक्कर्मसंज्ञकांक कहना चाहिये वह दृकर्मज खंड ६ । ७ । ८ । ९ । १२ । १८ इतना होताहै. उक्त भागसे लब्धांक तुल्य दृक्कर्मज खंडांकको अलग रखके फिर ऐष्य खंडांकसे दशहृत् शेष कलादिकों को गुणके फिर १० के भागसे लब्ध कलादि दृक्कर्म लेके नतांश और शरकी एक दिशाके कारण पूर्वोदय साधनोपयोगी स्पष्ट शुक्रमें धन और भिन्नदिशाके कारण हीन करना चाहिये और पश्चिमोदयास्त उपयोगी स्पष्ट शुक्रमें नतांश और शरकी एक एक दिशाके कारण हीन और भिन्न दिशाके कारण युक्त करनेसे दृक्कर्मदत्त स्पष्ट शुक्र होताहै. अथ इष्टकालांश लानेकी विधिः—एक जगह सूर्य स्पष्ट और दूसरी जगह दृक्कर्मदत्त शुक्र धरके इन दोनोंमें अधिक हो उसीको लग्न और कमहो जिसको सूर्य कल्पना करना. उक्त दोनोंमें अयनांश जोडके फिर पूर्वोदयास्त साधन करना हो तो ई जैसाही और पश्चिमोदयास्त साधन-

विधि में ६ राशि और दोनोंमें युक्त करके फिर दोनोंका अंतर करना फिर जिसको लग्न कल्पित किया उसीकी राशि तुल्य स्वदेशी लग्नमानसे इस अंतरको गुणके ३० के भागसे लब्ध कलादि लेके उसका ६० के भागसे अंशादि करके फिर ६ से गुणे इष्टकालांशा होताहै. अथ स्पष्टकालांश लानेकी विधिः—उक्त सायन स्पष्ट शुक्र जो कि, पूर्वोदयास्त साधन में है जैसा और पश्चिमोदयास्त साधन में सषड्के तुल्य लग्नमानको और ३०० पलोंको अंतर करके २७ के भागसे लब्ध अंक तीन लेना उक्त ३०० पलोंसे लग्नमान यदि कम हो तो ऋण और अधिक हो तो धनसंज्ञक फल समझके दृक्कर्म में धन ऋण करदेना दोनों धन धन हों तो धन और ऋण ऋण हों तो धन और एक ऋण और एक धन ऋण हो तो अंतर करके फिर ५ के भागसे लब्ध कलादि धन फल अधिक हो तो स्थूलकालांशा ९ में धन और ऋण फल अधिकके कारण स्थूल कालांशोंमें ऋणकिये स्पष्ट कालांशा होताहै. अथ उदयास्तके गतगम्यदिन जाननेकी विधिः—स्पष्टकालांशसे इष्टकालांशा अधिक हो तो शुक्रोदय होचुका और कम हो तो शुक्रोदय आगे होवेगा अथ अभीष्ट दिनादि लानेकी विधिः—इष्टकालांश और स्पष्टकालांशका अंतर फिर उसकी कला करके उसको३००से गुणके उक्त सायन सूर्य पूर्वोक्तकी राशितुल्य लग्न मानके भागसे लब्ध लेके शुक्र रविका गत्यंतर करके यदिवा शुक्र वक्री हो तो उक्त दोनों गतियोंके योगके भागसे लब्ध दिनादिफल आवें सो उक्त विधिसे ऋणधनकिये शुक्रका स्पष्ट उदयास्त होताहै क्योंकि विवाहादिकामोंमें शुक्रके उदयास्तकी आवश्यकता जियादा रहनेके कारण इसका स्पष्टतर गणित यहां लिखागया बाकी और ग्रहोंका उदयास्त स्थूलमान (शीघ्रांश) से पहले लिखाही है और सूक्ष्म उदयास्तादि उनका भी जानना हो तो वे सूर्यसिद्धांत तुल्य उनका गणित करलिया जावे इति शुक्रोदयास्तके साधन विधि अथ अगस्त्यमुनिके उदयास्तके साधन की

विधिः—पलभाको ८ से गुणके ७८ में हीन किये शेष रहैं उसके ३० के भागसे लब्ध रविकी राशि और शेष बचे सो अंश तुल्य अगस्त्यका अस्त होताहै फिर उक्त पलभाको ८ से गुणके फिर ७८ में युक्त करके ३० के भागसे लब्ध रविकी राशि और शेष अंश प्रमाण अगस्त्यका उदय होताहै अथ सुगमरीतिसे प्रभवादिसंवत्सर प्रवेश करनेकी विधिः—गत संवत्के पंचांगमें जिस इष्ट ऊपर संवत्सर प्रवेशहै उसी इष्टका सूर्य स्पष्ट करके फिर उसमें ४। १३। ५५। १९ यह अंक हीन किये संवत्सर प्रवेश समयका सूर्य स्पष्ट होताहै फिर वह सूर्यसे इष्ट घटीकोऽष्टि सूर्यबिंबमित्यादिना गणित लेके वर्तमान संवत्सर प्रवेशका इष्ट करलेना चाहिये.

अथ रोहिणी ऊपर ग्रहवेध करे वा नहीं जिसके जाननेकी विधिः—राहु जब पुनर्वसुनक्षत्र आदि ८ नक्षत्र ऊपर रहे तब वृषभका १७ अंश ऊपर चन्द्रमाका शर ५० अंगुलसे ऊंचा होनेसे चन्द्रमा रोहिणीको निश्चय वेधता है बाकी और ग्रहोंका शर न्यूनही रहजानेके कारण नहीं वेध सके जो कभी कोई युगान्तर में वेधा होयगा तो आश्चर्य नहीं क्योंकि बिना कुछ वेध किये विना तो शनैश्चरका और दशरथका युद्ध क्यों होता और उनकी कथा कैसे संसारमें चलती. परंच इस समयमें तो वह बात देखनें में नहीं आती है. अथ सप्तऋषियोंके स्पष्ट जाननेकी विधिः—संवत् १९४९ वैक्रमीयमें सप्तऋषियोंका स्पष्ट राश्यादि ५। २०। ४०। ० यह हुये इन्हों के प्रतिवर्षके स्पष्ट करनेमें ८ कला धन करदेनी-चाहिये क्योंकि जिस समय राजा युधिष्ठिर राज्य करताथा उस समयमें सप्त ऋषियोंकी मघानक्षत्र ऊपर स्थिति थी इस समयमें हस्त नक्षत्र ऊपर उक्त ऋषि महाराज निवास करते हैं. अथ सारिणीसे लग्न स्पष्ट करनेकी विधिः—स्वदेशी लग्नसारिणीमें सूर्य स्पष्टके अंशतुल्य कोष्ठकमें इष्ट युक्त करनेसे जो अंक उत्पन्नहो उससे एक कोष्ठक कमती के तुल्य उस लग्नका अंश लेना फिर स्पष्ट सूर्यकी कला विकला इस लग्नके नीचे रखनी चाहिये. और सारिणीमें

लग्नके अंशतुल्य कोष्ठकका और पूर्वानीत अंकका अंतर करके और दोनों पार्श्वांतरके अंकके भागमे लब्ध अंशादि तीन अंक लेके पूर्वोक्त लग्नके अंशादिकों में युक्त करनेसे ग्रहलाघवके गणिततुल्य शुद्ध लग्न स्पष्ट होता है. अथ दशम और चतुर्थ के साधनोपयोगी नत बनानेकी विधिः—अर्धरात्रिसे मध्याह्नके पहिले अपनी इष्टघटीपर्यंतके समयका नाम पूर्वनत है. और मध्याह्नसे अर्धरात्रिसे पहले जो इष्टसमय है उसीको पश्चिम नत समझ लेना यदि पूर्वनत हो तो ३० से जरूर शुद्ध करलेना चाहिये फिर दशम चतुर्थ सारिणीमें पूर्वोक्त लग्न स्पष्ट विधिके तुल्यही संस्कार देनेसे दशम वा चतुर्थ लग्न स्पष्ट होताहै.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते उदयास्तादि-
वर्णननाम विंशतितमविनोदः ॥ २० ॥

व्यग्रुभुजभागात् शरसारिणीअंगुलादि-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१ ३४	३ ८	४ ४३	६ १७	७ ५१	९ २६	११ ०	१२ ३४	१४ ८	१५ ४३	१७ १७	१८ ५१	२० २६	२२ ०

तिथिसारिणीगतैष्ययोगेचंद्रभूभाबिंब-

५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	तिथिगतैष्ययोगानाम्
११ ४८	११ ३५	११ २२	११ ११	१० ५९	१० ४८	१० ३८	१० २८	१० १८	१० ८	९ ५९	९ ४९	९ ४१	चद्रबिंब.
२९ ४९	२९ १७	२८ ४६	२८ १६	२७ ४८	२७ २०	२६ ५३	२६ ३६	२६ ७	२५ ३६	२५ १७	२४ ५१	२४ १८	भूभाबिंब.
२० ४९	२० २६	२० ४	१९ ४४	१९ २४	१९ ४	१८ ४६	१८ ३२	१८ १०	१७ ५२	१७ ३६	१७ १०	१७ ५	मानैक्यखंड.

चंद्रग्रहणे ग्रासोपरिघटीसारिणीस्थिति-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
१ १७	१ ०	१ १७	१ ४८	३ २	३ १८	३ २०	३ ४२	३ ५३	४ १	४ ९	४ १५	४ ११	४ १७	४ ३३	४ ३६	४ ४०	४ ४०	४ ४०	४ ४०	४ ४०

रविराशिअंशोपरि रविबिंबसारिणी.

० १५	१ ०	१ १५	२ ०	२ १५	३ ०	३ १५	४ ०	४ ११	५ ०	५ १५	६ ०	६ १५	७ ०	७ १५	८ ०	८ १५	९ ०	९ १५	१० ०	१० १५	११ ०	११ १५	रवि रा श्या दि
१० ४१	१० ३६	१० ३१	१० २६	१० २०	१० २४	१० २९	१० ३४	१० ३९	१० ४४	१० ४९	१० ५४	१० ५९	११ ५	११ ९	११ १४	११ १९	११ १६	११ ११	११ ६	११ १	१० ५६	१० ४६	रवि- बिंब.

नतसंस्कृतसायनसूर्योपरि नतिसारिणी.

० ०	० १५	१ ०	१ १५	२ ०	२ १५	३ ०	३ १५	४ ०	४ १५	५ ०	५ १५	६ ०	६ १५	७ ०	७ १५	८ ०	८ १५	९ ०	९ १५	१० ०	१० १५	११ ०	११ १५	सू.
६ ४१	५ १७	३ ५२	३ ३८	१ ३८	१ २	० ४८	१ ४	१ ४२	२ ४३	३ ५८	५ २३	६ ४७	८ १७	९ ४३	१० ५६	११ ५६	१२ २२	१२ ४६	१२ ३०	११ ५३	१० ५२	९ ३७	८ ११	न ति

रविग्रहणे ग्रासोपरि स्थितिघटीपलानि.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	ग्रासः
१	१ ३७	२ ४	२ २०	२ २९	२ ३६	२ ४२	२ ४७	२ ५०	२ ५२	२ ५४	२ ५५	स्थिति घटि

ग्रासोपरि सूर्यग्रहणे प्रथमदिगंश्रयः । .

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	ग्रासः
३ ३०	४ ३८	४ ५४	५ ३०	५ ०	६ ३०	६ ४०	६ ५६	७ ११	७ ४५	७ १०	८ ३०	मानें. गं. १०

ग्रासोपरि सूर्यग्रहणे द्वितीयदिगंश्रयः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	ग्रासः
३ २२	४ ८	४ ४०	५ १६	५ ४४	६ १४	६ ३५	६ ३१	७ ४	७ २४	७ ४५	८ ८	मानें. गं. ११

लग्नसारिणी अयनांशा २३ अक्षप्रभा ६ । १२ चरखंडा ६२ । ४९ । २० अक्षांशाः २७ । १०

राशयः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	४७	५५	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२
१ वृषभ	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१
२ मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३
३ कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	१५	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
५ कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	४१	५३	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	७
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	१८	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४५	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
७ वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३७	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६
८ धन	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	५८	२८	३८	४९	५९	९	१	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०
९ मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५
१० कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	१२	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९

क्रांतिसारिणी.

भु.भा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अं.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३
क.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
	■	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क. वि.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५
	०	२४	४८	१२	३५	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क. वि.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	१०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क. वि.	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क. वि.	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

क्रांतिसाधनसारिणी.

भु. अ.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
अं.	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७
क.	०	२४	४८	२२	३६	०	२४	४८	१२	३६
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क. वि.	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क. वि.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
वि.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३
वि.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
अ.	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११
क.	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	२	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
ध.	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४२	४	२६	४८	१०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०
ध.	३३	५१	१७	३९	१	२४	४६	८	३०	५२	१५	३७	५९	२१	४३
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
ध.	६	२८	५०	१२	३४	५७	१९	४१	३	२५	४८	१०	३२	५४	५६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१
ध.	३९	१	२३	४५	७	३०	५२	१४	३६	५८	२९	४३	५	२७	५९

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
अ.	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
क.	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	२५
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
ध.	०	२०	४०	२	२२	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	४५
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
ध.	६	२६	४६	७	२७	४८	८	२८	४९	९	३०	५०	११	३१	५१
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
ध.	१२	३२	५२	३४	३४	५५	१६	३६	५६	१६	३७	५७	१७	३८	५८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
ध.	१९	३९	५९	२०	४०	१	२१	४१	२	२२	४१	३	२३	४४	४

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
अ. क.	१५ ६ ०	१५ २४ ०	१५ ४२ ०	१६ ० ०	१६ १८ ०	१६ ३६ ०	१६ ५४ ०	१७ १२ १०	१७ ३० ०	१७ ४८ ०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
ध.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	९
ध.	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
ध.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७
ध.	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३८	४८	६	२४	४२

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
अ. क.	१८ ६ ०	१८ २२ ०	१८ ३६ ०	१८ ५१ ०	१९ ६ ०	१९ २१ ०	१९ ३६ ०	१९ ५१ ०	२० ६ ०	२० २१ ०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७
ध.	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११
ध.	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४
ध.	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
अ.	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२
क.	३६	४६	५७	८	१९	३०	४०	५१	२	१३
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध.	०	१०	११	३१	४३	५४	४	१५	१६	३७	४८	५९	१०	१	३१
को.	१५	१६	१७	१८	१९	१०	११	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
क.	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५
ध.	४२	५३	४	१५	१६	३६	४७	५८	९	१०	३०	४१	५१	३	१४
को.	३०	३१	३१	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४३	४४
क.	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
ध.	२४	३५	३५	४६	८	१८	१९	४०	५१	१	११	१३	३४	४५	५६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५१	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०
ध.	६	१७	१८	३९	५०	०	११	११	३३	४४	५५	५	१६	१७	३८

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	७०	७१	७१	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
अ.	११	३१	११	११	११	१३	१३	१३	१३	१३
घ.	१४	३१	३८	४५	५१	०	७	१४	११	१८
	०	११	०	३६	४८	०	११	१४	३६	४८

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
ध.	०	७	१४	११	१८	३५	४१	५०	५७	४	११	१९	३५	३३	४०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	१०	११	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२९
क.	१	१	२	२	१	१	१	१	१	१	३	३	३	३	३
ध.	४८	५२	२	७	१६	१४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	११	१८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४३	४४
क.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५
ध.	३६	४३	५०	५७	४	१०	१८	१६	३३	४०	४८	५५	१	९	१६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५१	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७
ध.	२४	३१	३८	४५	५१	०	७	१४	११	१८	३५	४२	५०	५७	४

क्रांतिसारिणी.

भु. अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
क.	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	०	२	४	७	९	११	१४	१५	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
ध.	३६	३८	४०	४२	४५	४७	५०	५२	५४	५७	५९	१	४	६	८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
ध.	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३५	३७	४०	४२	४४
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
ध.	४८	५०	५२	५५	५७	५९	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०

करणनामानि ।

अथ शुक्लपक्षे करणविचारः						अथ कृष्णपक्षे करणविचारः					
ति	पूर्वद.	उत्तरद.	ति.	पूर्वद	उत्तरद.	ति	पूर्वद.	उत्तरद	ति	पूर्वद.	उत्तरद
१	किस्तु	बव.	९	बा.	कौ.	१	बाल	कौल	९	तै.	ग.
२	बा.	कौ.	१०	तै.	ग.	२	तै.	ग.	१०	व.	भ.
३	तै.	ग.	११	व.	भ.	३	व.	भ.	११	ब.	बा.
४	व.	भ.	१२	ब.	बा.	४	ब.	बा.	१२	कौ.	तै.
५	ब.	बा.	१३	कौ.	तै.	५	कौ.	तै.	१३	ग.	व.
६	कौ.	तै.	१४	ग.	व.	६	ग.	व.	१४	भ.	श.
७	ग.	व.	१५	भ.	ब.	७	भ.	ब.	३०	च	ना.
८	भ.	ब.	०	०	०	८	बा.	कौ	०	०	०

वक्रीग्रहपादप्रवेशसारिणी. मार्गीग्रहपादप्रवेशसारिणी.

पाद	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
पंचमं	० १३ २०	० २६ ४०	१ १० ०	१ २३ २०	२ ६ ४०	० २० ०	३ ३ २०	३ १६ ४०	४ ० क.	४ १३ २०	४ २६ ४०	५ १० ०	५ २३ २०	६ ६ ४०	६ २० ०	७ ३ २०	७ १६ ४०	८ : वृ.	८ १३ २०	८ १६ ४०	९ १० ०	९ २३ २०	१० ६ ४०	१० २० ०	११ ३ २०	११ १३ २०	० ० मी.
तृती.	० १० ०	० २३ २०	१ ६ ४०	१ २० ०	२ ३ २०	२ १६ ४०	३ ० मि.	३ १३ २०	३ २६ ४०	४ १० ०	४ २३ २०	५ ६ ४०	५ २० ०	६ ३ २०	६ १६ ४०	७ : तु.	७ १३ २०	७ २६ ४०	८ १० ०	८ २३ २०	९ ६ ४०	९ २० ०	१० ३ २०	१० १६ ४०	११ : कुं	११ १६ २०	११ २६ ४०
द्विती.	० ६ ४०	० २० ०	१ ३ २०	१ १६ ४०	२ : मि.	२ १३ २०	२ २६ ४०	३ १० ०	३ २३ २०	४ ६ ४०	४ २० ०	५ ३ २०	५ १६ ४०	६ : क.	६ १३ २०	६ २६ ४०	७ १० ०	७ २३ २०	८ ६ ४०	८ २० ०	९ ३ २०	९ १६ ४०	१० : मं	१० १३ २०	१० २६ ४०	११ १० ०	११ २३ २०
प्रथम	० ३ २०	० १६ ४०	१ : मे.	१ १३ २०	१ २६ ४०	२ १० ०	२ २३ २०	३ ६ ४०	३ २० ०	४ ३ २०	४ १६ ४०	५ : सिं	५ १३ २०	५ २६ ४०	६ १० ०	६ २३ २०	७ ६ ४०	७ २० ०	८ ३ २०	८ १६ ४०	९ : ध.	९ १३ २०	९ २६ ४०	१० १० ०	१० २३ २०	११ ६ ४०	११ २० ०
प्रथम	० ३ २०	० १६ ४०	१ : वृ.	१ १३ २०	१ २६ ४०	२ १० ०	२ २३ २०	३ ६ ४०	३ २० ०	४ ३ २०	४ १६ ४०	५ : क.	५ १३ २०	५ २६ ४०	६ १० ०	६ २३ २०	७ ६ ४०	७ २० ०	८ १६ २०	८ १६ ४०	९ : म.	९ १३ २०	९ २६ ४०	१० १० ०	१० २३ २०	११ ६ ४०	११ २० ०
द्विती.	० ६ ४०	० २० ०	१ ३ २०	१ १६ ४०	२ ० मि.	२ १३ २०	२ २६ ४०	३ १० ०	३ २३ २०	४ ६ ४०	४ २० ०	५ ३ २०	५ १६ ४०	६ : तु	६ १३ २०	६ २६ ४०	७ १० ०	७ २३ २०	८ ६ ४०	८ २० [illegible]	९ ३ २०	९ १६ ४०	१० : कु	१० १३ २०	१० २६ ४०	११ १० ०	११ २३ २०
तृती	० १० ०	० २३ २०	१ ६ ४०	१ २० ०	२ ३ २०	२ १६ ४०	३ : क.	३ १३ २०	३ २६ ४०	४ १० ०	४ २३ २०	५ ६ ४०	५ २० ०	६ ३ २०	६ १६ ४०	७ : वृ	७ १३ २०	७ २६ ४०	८ १० ०	८ २३ २०	९ ६ ४०	९ २० [illegible]	१० ३ २०	१० १६ ४०	११ : मी.	११ १३ २०	११ २६ ४०
पंचमं	० १३ २०	० २६ ४०	१ १० ०	१ २३ २०	२ ६ ४०	२ २० ०	३ ३ २०	३ १६ ४०	४ : सिं.	४ १३ २०	४ २६ ४०	५ १० ०	५ २३ २०	६ ६ ४०	६ २० ०	७ ३ २०	७ १६ ४०	८ : ध.	८ २३ २०	८ २६ ४०	९ १० ०	९ २३ २०	१० ६ ४०	१० २० ०	११ ३ २०	११ १६ ३०	० ० [illegible]

अथ संवत्सरलानेकी विधिः—वर्तमान शकमें १७७६ हीन करनेसे वर्तमान संवत्सर होता है. यहां उक्त संवत्सरों का फल लिखा जाताहै. अथ विस्तरतः षष्टिवर्षाणां स्पष्टता फले।।प्राचीनवचनैरेव गद्यरीत्या निगद्यते ।।१।।

प्रभवः १ ब्रह्मा स्वामी चैत्रवैशाखश्रेष्ठ समस्तवस्तुसमर्घता ज्येष्टादयो मासास्त्रयः सर्वधान्यं महर्घं गोधूममुद्गादीनां युगंधरीणां च विशेषमहर्घं भाद्रपदोपि शुभः आश्विनश्च क्वचिन्महर्घः पश्चाद्रोगपीडा महती सर्वक्रयाणकं महर्घं १ विभवः२ विष्णुः स्वामी रोगव्याप्तिः पृथिव्यां नागपुरादिषु भंगः तैलंगमगध चीनदेशे महर्घता उच्चमुल्तानस्थले महाविग्रह अन्यत्र समता. चैत्रादिमासत्रये महर्घता आषाढादित्रये मेघवृष्टिः आश्विने सर्वरसमहर्घता ततो मेघबाहुल्यं कार्तिकादिमासेषु सर्ववस्तुसमर्घता गोधूमाः समाः २ शुक्लः ३ रुद्रः स्वामी छत्रभंगो म्लेच्छदेशेषु मंत्रिणो राज्यं चैत्रादिमासत्रये समता आषाढादिमासत्रये महामेघा आश्विने जनरोगः घृतानां समर्घत्वम् अन्यत्सर्वं महर्घं कार्तिकादिचतुष्टये सर्वधान्यं समर्घं फाल्गुनमासे सर्वत्र विग्रहः लोकग्रामपीडा देशेषु आकुलता शून्यत्वं ग्रामेषु ३ प्रमोदः ४ रविः स्वामी. मध्यमं वर्षं अल्पवृष्टिः मंडले मेदपाटपीडा देशोद्वासः म्लेच्छवर्णक्षयः छत्रभंगः पर्वततटे स्वल्पा प्रजा तैलंगे राजविड्वरं चैत्रे वैशाखे च महर्घता ज्येष्ठे रोगपीडा आषाढादिमासत्रये अल्पमेघः आश्विने किंचिद्वर्षा धान्यस्य त्रयोदश फदिया कलशिका १ कार्तिकादिमासचतुष्टये सर्वरसमहर्घता फाल्गुनो मध्यमः ४ प्रजापतिः ५ चंद्रः स्वामी द्वादशैव मासाः शुभाः अल्पमेघः आश्विने रोगबाहुल्यं धान्यस्य कलशिका त्रिंशत्फदिया नाणकः कार्तिकादिमासद्वयं मंदं पौषादिमासत्रयेऽरिष्टं क्वचिदुत्पातदर्शनेपि पीडा ५ आंगिरा ६ मंगलःस्वामी चैत्रो वैशाखश्च मंदः ज्येष्ठे वायुः प्रबलःआषाढे मेघबाहुल्यं श्रावणादिमासत्रये रोगपीडा कार्तिके सर्वान्ननिष्पत्तिः पौषादिमासत्रये समता६ सुमुखः ७ बुधः स्वामी चैत्रे सर्वधान्यं महर्घम् आषाढकृष्णपक्षे अत्यंतमेघ वर्षा श्रावणे गोधूमा महर्घाः घृते धान्ये च द्विगुणो लाभः वणिग्लोकपीड

पश्चिमायां रौरवम् पूर्वस्यां परचक्रम् उच्च मुलतानस्थले प्रजापीडा भाद्रपदे वर्षा आश्विनादिषु प्रजाप्रसादः ७ भावः ८ गुरुः स्वामी बहुक्षीरा गावः वर्षा बहुला विंशोपकाः सर्ववस्तुमहर्घता उच्चमुलतान अयोध्यासु राजविड्वरं लोकपीडा घृत गुड अहिफेन पूगीफल मंजिष्ठ मरिच चंदन वस्तुमहर्घता चैत्रे-समता वैशाखे महर्घं धान्ये द्विगुणो लाभः आषाढे श्रावणे किंचिद्वर्षा भाद्रे मेघवर्षा.आश्विने रोगबाहुल्यं कार्तिके उत्तमः मार्गशीर्षादिमासचतुष्टयं मंदं राजविड्वरं ८ युवा ९ शुक्रः स्वामी भूकंपः उल्काभयं बहुलं चैत्रादिमासद्वये उत्पातः ज्येष्ठे रोगः आषाढशुद्धपक्षे महामेघः श्रावणे वायुर्वाति अन्नं महर्घं भाद्रपदे दिन १४ महावृष्टिः व्याकुलता राजविग्रहः उत्तरदेशे रौरवं दुर्भिक्षं पूर्वस्यां निष्फला कृषिर्दक्षिणस्यां वैरं विरोधः, मार्गे विषमता पश्चिमायां लोकपीडा पश्चात् दुर्भिक्षं सर्वरसेषु समता कार्तिकादिमासद्वयम् उत्तमं पौषमाघौ मध्यमौ फाल्गुनमासे किंचित् क्लेशः माघादौ मार्गे विग्रहः ९ धाता १० शनिः स्वामी चैत्रवैशाखयोः सर्वधान्यमहर्घता. ज्येष्ठे मासे समता आषाढे अल्पमेघः घृततैलयुगंधरी कार्पासमंजिष्ठमरिचपूगफल महर्घता, श्रावणे सर्वधान्यमहर्घता, भाद्रपदे पुरुषा नपुंसकाः पश्चिमायां महती मेघवर्षा सर्वधान्यं महर्घं उत्तरदक्षिणयोर्मध्ये महामेघः परलोक पीडा आश्विने रसकसधातुमहर्घता. कार्तिके सर्वमन्नम् समर्घम् । १०

ईश्वरः ११ राहुः स्वामी उत्तरस्यां दुर्भिक्षं पूर्वस्यां सुभिक्षं पश्चिमायां परस्परविरोधः चैत्रवैशाखे अन्नमहर्घता ज्येष्ठाषाढयोः अल्पमेघः परं सर्वधान्यमहर्घता धान्ये द्विगुणलाभः भाद्रपदे महान् मेघः परं सर्ववस्त्रधान्य-महर्घता. आश्विने घृतमहर्घता कार्तिके रौरवं दुर्भिक्षं मंजिष्ठ मरिच लवण एला पूगीफल एतद्वस्तु महर्घता. मार्गशीर्षादिमास ४ अतिदुर्भिक्षं धान्यं महर्घं मनुष्याणां रुंडमुंडादि भूमौ पतंति ११ बहुधान्यः १२ केतुः स्वामी पुरुषा निर्वीर्याः पश्चिमायां सुभिक्षं परसौख्यं सर्वदेशमध्ये दक्षिणस्यां विग्रहः परं महाभयं उत्तरपथे सर्वदेशेषु पीडा पूर्वस्यां दुर्भिक्षं अन्नसंग्रहः कार्यः चैत्रवैशा-

खयोः अन्ने किंचिन्महर्घता ज्येष्ठमासे चतुर्गुणो लाभः श्रावणाषाढयोर्मेघः अन्नं सर्वं महर्घं षड्गुणो लाभः भाद्रपदे अत्यंतमेघाः सर्वधान्यसमर्घता आश्विने मेघः कनकधाराभिः कार्तिकादिमासचतुष्टये समता १२ प्रमाथी १३ रविः स्वामी आषाढे श्रावणे च अल्पमेघः भाद्रपदे पंचम्यां किंचिन्मेघः चैत्रे गोधूमयुगंधरीमहर्घता वैशाखे ज्येष्ठे वा सर्वत्र धान्यमहर्घता. परं कृष्ण-सप्तम्याममायां च महामेघः परं अतीवारिष्टं कार्तिके दिन २१ मास ५ सर्वान्नमहर्घता सर्वरसमहर्घता. मंजिष्ठ पूगीफल हिंगुल काश्मीरजन्म अगरु पट्टसूत्र नारिकेलं एतद्वस्तु महर्घता १३ विक्रमः १४ चंद्रः स्वामी राज प्रजा सौख्यम् अतिमेघः चैत्रवैशाखे महर्घम् अन्ने द्विगुणलाभः परं वैशाखे म्लेच्छभयात् नगरं उद्वसत्वं अरण्ये वासः वैशाखे दिन १० महान् वायुः भूमिकंपः प्रजापीडा ज्येष्ठमासे दुर्भिक्षं आषाढे प्रलयः श्रावणभाद्रपदे महामेघः प्रजासुखं सर्वधान्यं समर्घं. सर्ववस्तुसमता आश्विने रोगः सर्वरससमता कार्तिकादिमास ५ सर्व अन्न समता १४ वृषः १५ भौमः स्वामी. वर्षा बहुला परं नृपाणां पीडा छत्रभंगः ज्येष्ठे वर्षे अन्नसमर्घता धान्ये त्रिगुणो लाभः आषाढे अन्नमहर्घता श्रावणे महान् मेघः आश्विने सर्वधान्यसमता घृतमहर्घता पश्चिमेन्नं महर्घं देशा उद्वासाः पश्चिमायां किंचित् दुर्भिक्षं आश्विने मेघः सर्ववस्तुसमर्घता कार्तिके किंचिदरिष्टं मार्गशीर्षे दौःस्थ्यं पौषादिमासत्रयं महर्घं परं मध्यमः समयः १५ चित्रभानुः १६ बुधः स्वामी लोकसुखी पूर्वं अल्पमेघः पश्चात् महती वर्षा धान्यघृतसमता वैशाखे अन्नं समं भावेन ज्येष्ठादित्रये महान् मेघः सर्वधान्यमहर्घता भाद्रादिमासद्वये रोगार्तिः कार्तिके महामारीभयं मार्गशीर्षद्वयेऽरिष्टं माघद्वये सरोगप्रजा परं सर्वान्नरससमर्घता वैशाखज्येष्ठयोः रोगपीडा अन्नं महर्घं क्रयाणकसर्ववस्तुमहर्घता १६ सुभानुः १७ गुरुः स्वामी पूर्वस्यां दुर्भिक्षं लोकः सुखी चैत्रे महर्घता वैशाखज्येष्ठयोः रोगपीडा आषाढेऽन्नं महर्घं श्रावणे मेघः अन्नसमता भाद्रे महामेघः आश्विने रोगपीडा गोधूमसमता युगंधरी मुद्गादि मण प्रति फदिया नाणकानि १२ धातु

सर्ववस्तुमहर्घं घृतसमता कार्तिकादिमासद्वयं मध्यमं राजपीडिता लोकाः पौषादिमासत्रये रोगपीडा भयंकरः परस्परं विरोधः १७ तारणः १८ शुक्रः स्वामी अतिवायुः परस्परं युद्धं बहुलं चैत्रे रोगः वैशाखे सर्ववस्तु समर्घं ज्येष्ठे महान् वायुः आषाढे अल्पवृष्टिःश्रावणे सप्तमीतो नवमीतो वा वर्षा भाद्रपदे एकादश्याम् अत्यंतमेघः आश्विने अन्नं महर्घं सर्वरससंग्रहः कार्यः कार्तिके महर्घता मार्गे विग्रहः धान्यं महर्घं योगिनीपुरे महाभयं राज्ञां विरोधः म्लेच्छभयं पौषे युद्धं पश्चिमायां धान्यं महर्घं उत्तरपथे महादुर्भिक्षं फाल्गुनमासे मध्यमः तस्करभयं अन्नं महर्घं विग्रहः राजविरोधात् महत्पातकं पूर्वस्यां दक्षिणस्यां वा वनेवासः पश्चिमायां महायुद्धं परं चान्यवस्तु समर्घं १८ पार्थिवः १९ शनिःस्वामी उत्पाताः बहुलाः चैत्रे वैशाखे च महर्घता सर्वतो विग्रहः ज्येष्ठे रोगः पीडा यद्वा नृपयुद्धं आषाढे अल्पमेघः धान्यं महर्घं महावायुः श्रावणे खंडवृष्टिः भाद्रपदे नैर्ऋतवायुः अन्यमहर्घता आश्विने वृष्टिः गोधूमयुगंधरी मुद्गादिमहर्घता कार्तिकादिद्वये रोगपीडा पौषमाघयोर्महर्घता फाल्गुने समता १९ व्ययः २०राहुः स्वामी अनावृष्टिःदुर्भिक्षं रौरवं चैत्रो मध्यमः वैशाखद्वये महर्घता देशविग्रहः आषाढे अल्पमेघः परं महर्घता श्रावणे दुर्भिक्षं मध्यदेशे विग्रहः दाक्षिणस्यां प्रजापीडा भाद्रपदे खंडवृष्टिः अन्नमहर्घता आश्विने रोगपीडा पूर्वस्यां विग्रहः गोधूममहर्घता मध्यमः समयः कार्तिके रोगपीडा यद्वा विग्रहोपशमः मार्गशीर्षमासे अन्नमहर्घता न परं युद्धं किंचित् पौषादिमासद्वये अतिमहर्घता फाल्गुने समता परं मार्गवैषम्यं अन्नं महर्घं २० इति उत्तमविंशतिफलम् सर्वजित् २१ ब्रह्मा स्वामी चैत्रादिमासत्रयं समर्घं आषाढे अल्पमेघः श्रावणे महामेघः सर्वधान्यरसवस्तुसमर्घता नवीनमुद्रोदयः राजविग्रहः परस्परं अन्नमहर्घता भाद्रपदे दिन ५ पश्चान्महती वृष्टिः आश्विने रोगार्तिः सर्वधान्य समर्घता कार्तिके राजा राज्यं करोति प्रजासुखं अन्नसमर्घता मार्गशीर्षपौषौ उत्तमौ सर्वलोकसुखम् माघमासे मेघा दिन ३ मंजिष्ठा मुहरा मरिच शुंठी पिप्पली सुपारी प्रमुख महर्घता फाल्गुने सर्ववस्तु रस समता उत्तमः

समयः २१ सर्वधारी २२ विष्णुः स्वामी राजा राज्यसुस्थः प्रजासुखं अन्नं समर्घं मार्गशीर्षः पौषश्च उत्तमः सर्वलोकसुखं षट्दर्शनमहत्पूजा सर्वनगरदेशेषु स्थानवासः चैत्रे सर्वधान्यसमता उत्तरापथे दुष्कालः वैशाखज्येष्ठयोर्महर्घता ज्येष्ठे महाभयं अरिष्टं आषाढे मेघः श्रावणे अल्पवर्षा अन्नं महर्घं भाद्रपदे दुर्भिक्षं आश्विने रोगः अन्नसमता राज्ञां परस्परविरोधः अन्न महर्घता २२ विरोधी २३ रुद्रस्वामी चैत्रादिमासत्रये धान्यमहर्घता आषाढे श्रावणे अतिवर्षा भाद्रपदे खंडवृष्टिः मासत्रयेऽतिभयं किंचिदुत्पातः राजा सुखी प्रजाहर्षः कचिद्राजयुद्धं सर्वधान्यसमर्घता आश्विने सर्वसमर्घं कार्तिके मारीरोगबहुलता मार्गशीर्षादिमास ४ गुर्जरे मरुदेशे अन्नं महर्घं २३ विकृतः २४ रविः स्वामी अकाले वर्षा राजविग्रहः देशोद्वास मरुधरायां दुर्भिक्षं चैत्रादिमास ४ महर्घता कणकलशिका प्रति फदिया नाणके एकशतेन लाभः श्रावणमासद्वये मेघवृष्टिर्नास्ति रौरवं दुर्भिक्षं आश्विने उत्पात भूमिकंपः कार्तिके छत्रभंगः सुवर्ण रूपा ताम्र कांस्य सर्वधातुसमर्घता कणकलशिका प्रति २० फदिया नाणकानां एकप्राप्तिर्न लभ्यते २४ खरः २५ चंद्रः स्वामी चैत्रादिमासपंचके महती वर्षा सुभिक्षं प्रजासुखं सर्वलोके गुरूणां महत्त्वं पश्चिमायां सुभिक्षं आश्विने अन्नसमता रसमहर्घता मंजिष्ठा सुहागा वस्तुतो मरुधरायां त्रिगुणो लाभः म्लेच्छक्षयः पररोगपीडा सर्व धान्यनिष्पत्तिः प्रजासुखं कार्तिकादि मासपंचकं मध्यमं सर्व धान्यसमर्घता २५ नंदनः २६ भौमः स्वामी प्रजासुखं सर्वधान्यसमता चैत्रमध्ये करकाः पतंति वैशाखे धान्यं महर्घं प्रचंडवायुः ज्येष्ठेऽपि तथैव महर्घं आषाढे महामेघः श्रावणे अल्पवर्षा भाद्रपदे महावृष्टिः आश्विने सुभिक्षं राजा राज्यं प्रजासुखं कार्तिके सुभिक्षं अन्नसमता. मार्गशीर्षादि मास ४ महर्घता मंजिष्ठालवणमहर्घता २६ विजयः २७ स्वामी बुधः सर्वदेशेषु महापीडा राज्ञां परस्परविरोधःअन्नं महर्घं तुच्छजलं मही लोहितपायिनी विप्रपीडा गोमहिष अश्व हस्ति पीडा चैत्रमध्ये महती वर्षा वैशाखे ज्येष्ठे अन्नमहर्घता

आषाढे श्रावणे अल्पमेघः कणकलशिका प्रति फदिया ४० भाद्रपदे वर्षा वर्षति कलशिका प्रति फदिया १४ आश्विनमध्ये वणिग्जनपीडा अन्न-महर्घता फाल्गुने समता परं विग्रहः धान्ये षड्गुणो लाभः २७ जजः २८ गुरुः स्वामी महासुभिक्षं चैत्रे महर्घता वैशाखज्येष्ठयोः समर्घता आषाढे मेघवर्षा अन्नं महर्घं श्रावणे दिन २४ महामेघः भाद्रपदे दिन ७ मेघवृष्टिः आश्विने अन्नं समर्घं कणानां मणं प्रति द्रामा ३५ लभ्या स्वर्णादिधातुसमता कार्तिकादिमासपंचके उत्तमं अन्नसमता अन्यवस्तुनि महर्घता भवति परं मौक्तिकादिप्रवालकमहर्घता मार्गशीर्षे रोगबहुलता वणिक्पीडा उच्चमुलतान-देशे रोगपीडा छत्रभंगः लोका दुःखिताः२८मन्मथः२९शुक्रःस्वामी राजविरोधः पूर्वदेशे लोकपीडा परं अतिवृष्टिः रोगबाहुल्यं धान्यसंग्रहः चैत्रवर्षा भूमिकंपः वैशाखे समर्घता ज्येष्ठाषाढयोर्महर्घता धान्ये षड्गुणो लाभः श्रावणे अल्पमेघाः भाद्रे महामेघा दिन २४ आश्विने रोगपीडा अन्नं महर्घं धान्यं मणं प्रति द्रामा ६० लभ्यते सर्वधान्यसमर्घता कार्तिके सुभिक्षं अन्नसमता मार्गशीर्षादिमासत्रये अन्नं समर्घं लोकसुखं राजा सुखं सर्वधातुसमर्घता वस्त्रमहर्घता २९ दुर्मुखः ३० शनिः स्वामी अत्र अशुभं अल्पमेघाः महतां लोकानां पीडा सरोगाकुलाः उत्तरापथे दुष्कालः पश्चिमायां महापीडा पूर्वदेशे सुभिक्षं अन्यत्रा महर्घं क्षत्रियेषु न कुलसर्पविद्वेषो गृह्यते चैत्रादिमासत्रये महर्घता. आषाढे अल्पमेघः श्रावणे प्रचंडवायुः सर्वधान्यमहर्घता भाद्रपदे कणानां मणं प्रति द्रामा ८५ लभ्यते खंडवृष्टिः आश्विने रोगपीडा सर्वे धातवः समर्घाः कार्तिकादिमासेषु ४ रौरवं दुर्भिक्षं जीवादयः अकराः प्रवर्तंते माता पुत्रविक्रयः पिता पुत्रस्नेहमुक्तः फाल्गुने रोगपीडा राज्ञा परस्परं विरोधो लोकपीडा ३० हेमलंबः ३१ राहुः स्वामी अतिरौरवं सरोगा लोकाः भूकंपादयः उत्पाताः वणिक्पीडा चैत्र वैशाखमासे पीडा धान्यादि मंजिष्ठामंदभावः परचक्रागमः ज्येष्ठादिमासत्रये धान्यं महर्घं चतुर्गुणो लाभः भाद्रपदे महामेघः अन्नसमता मंजिष्ठा मरिच लवंग दंत महावस्तु महर्घता.

कार्तिक छत्रभंगः लोकपीडा अन्नकलशिका प्रतिफदिया १०२ सर्वधातु-समर्घता चतुष्पदानां पीडा मार्गशीर्षादिमास४राज्ञां स्वस्थता लोकाः सुखिनः ३१ विलंब ३२ रविः स्वामी चैत्रवैशाखयोर्धान्यसमर्घता आषाढे श्रावणे धान्यकलसिका प्रति टका ५ फदिया २५ लभ्यते आषाढे मेघ अल्पः श्रावणे महामेघः सुभिक्षं भाद्रपदे दिन२१ वर्षा बहुला परं गोधूमाश्च महर्घता पश्चिमायां सुभिक्षं राजविग्रहः पूर्वदेशे अन्नं महर्घं अन्नं दुष्प्राप्यं दक्षिणदेशे राज्ञामन्योन्यविरोधः आश्विने अन्नमहर्घता रोगपीडा सर्वक्रयाणकवस्तु महर्घं कार्तिकादिमासपंचके धान्यकलसिका प्रतिफदिया १० लभ्यते ३२ विकारी ३३ चंद्रः स्वामी सर्वं अन्नं महर्घं सर्ववस्तुमहर्घता द्विजाः सुखिनः चैत्रादिमासत्रये धान्यमहर्घता आषाढे श्रावणे महान्मेघः सुभिक्षं भाद्रपदे स्वल्पमेघः आश्विने सर्पभयं केतूदयः अन्नकलसिका प्रति फदिया दश लभ्यंते सर्ववस्तुमहर्घता कार्तिकादिमासद्वये धान्यं समर्घं पौषे रोगपीडा लोकः सुखी फाल्गुने धान्यमहर्घता ३३ शर्वरी ३४ भौमस्वामी वर्षाल्पा प्रजाप्रलयः राज्ञां विरोधः चैत्रादिमासत्रये अन्नसमता आषाढद्वये महामेघः परं खंडवृष्टिः अन्नसमर्घता भाद्रपदे वर्षा नास्ति राजपीडा लोकेषु आश्विने रोगपीडा अन्नकलसिकां प्रति फदिया १० नाणकैर्लभ्यंते पश्चिमायां दुर्भिक्षं पूर्वस्यां सुभिक्षं कार्तिकादिमासद्वये अन्नं महर्घं पौषादिमासत्रये धान्यं समर्घं ३४ प्लवः ३५ बुधः स्वामी वर्षाकाले वर्षाबहुला उत्तमः समयः चैत्रे धान्यमंदता वैशाखे भूमिः भयंकरी ज्येष्ठे अन्नसमर्घता तैलंगे पूर्वदेशे पीडा आषाढे महावायुः उत्पाताः लोकाःसरोगाः श्रावणे महान्मेघो दिन २७ वर्षा भाद्रपदे घनो घनागमः धान्यं समर्घं कणकलसिका एका फदिया नाणकैरष्ट-भिर्लभ्यते आश्विने सर्ववस्तुसर्वधातुसमर्घता गोधूमानां महर्घता कार्तिके अन्नं समर्घं लोकः सुखी मंडपांचालो विग्रहः पौषादिमासत्रये अतिसुभिक्षं राजा-राज्यं ३५शुभकृत्३६ गुरुः स्वामी अतिवर्षा राजा प्रजा सुखेन वर्तते उत्तरा-पथे वह्निभयं चैत्रे वैशाखे समर्घता धातुसमर्घता श्रावणे नवमीतिथितो वर्षा

अन्नसमर्घता भाद्रपदे महान् मेघः वह्निभयं अन्नकलसिका एका फदिया नाणकैरष्टभिः घृततैलं समर्घं कार्तिकादिमासत्रयं युगंधरी गोधूमचणकतिल मुद्गतंदुला इत्यादि अन्नं समर्घं राज्ञां परस्परविरोधः ज्येष्ठादिमासेषु सर्ववस्तु समर्घं फाल्गुने किंचिदुत्पातः मरुदेशे रोगः परं सुभिक्षम् ३६ शोभनः ३७ शुक्रः स्वामी राज्ञां प्रजानां च सुखं अतिवर्षा चैत्रादिमासत्रये धान्यं समर्घं राजविग्रहः किंचिदुत्पातः आषाढे अल्पमेघः श्रावणे अतिवर्षा परं लोकपीडा भाद्रपदे महान्मेघः आश्विने सुभिक्षं ततोपि किंचिद्विग्रहः ३७ क्रोधी ३८ शनिः स्वामी द्वादशमासात् अन्नं महर्घं मध्यमः समयः राज्ञां परस्परविरोधःप्रजायाःपरलोको निर्धना व्यापारिणःचैत्रवैशाखयोःकरकापातः रोगमारीभयं ज्येष्ठे धान्यं महघ आषाढे समता अल्पो मेघः श्रावणे रौरवं भाद्रपदे खंडवृष्टिः अन्नं महर्घं आश्विने मेघवर्षा सर्वत्र रसकसवस्तुसमता अन्नवस्तु सर्वं समर्घं कार्तिके समता ३८ विश्वावसुः ३९ राहुः स्वामी वर्षा समता अन्नमहर्घता चैत्रे राज्ञां विरोधः धान्यं महर्घं वैशाखे मंडपदुर्गे विग्रहः मरुदेशे दुर्भिक्षं पश्चिमायां अन्नं महर्घं ज्येष्ठे विग्रहः अन्नस्य ४५ फदिया नाणकैरेका कलशिका आषाढे अल्पमेघः श्रावणे भाद्रपदे दुर्भिक्षं ५५ फदिया नाणकैरेका कलसिका अन्यत्रदेशे सुभिक्षं आश्विने रोगपीडा रोगबाहुल्यं गोमहिषी घोटक अजा महर्घता सुवर्णादि धातुसमर्घता कार्तिकादिमासत्रये समर्घता. कणकलसिका एक फदिया १८ । ३९ पराभवः ४० केतुस्वामी. द्वादशमासा वर्षा मध्यमवृष्टिःचैत्रवैशाखे चान्नं महर्घं मेघगर्जिते विद्युतो वायवः ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः उद्दंडवायुः आषाढे अल्पमेघः अन्ने द्विगुणलाभः श्रावणे महती वर्षा अन्नसमता. भाद्रपदे खंडवृष्टिः परं दुर्भिक्षं आश्विने किंचिल्लोकसुखं परं धान्यरसवस्तुमहर्घता .धातुसमर्घता कार्तिकादिमासपंचके समता पश्चिमायां अन्नसमता सिंधुदेशाद्धान्यागमः । इति मध्यमविंशतिफलम् ॥ २० ॥ प्लवंगः ४१ ब्रह्मा स्वामी चैत्रवैशाखे च महर्घता ज्येष्ठमध्ये राजपीडा आषाढे अल्प-

मेघः भूमिकंपः हस्तिपीडा. तुरंगमहर्घता. श्रावणे महामेघः भाद्रपदे अष्टमीतो महामेघः आश्विने रोगः रसमहर्घता फाल्गुने कणकलसिका एक फदिया १० प्रमाणैः अश्वमहिषीपीडा लोकपीडा ४१ कीलकः ४२ विष्णुः स्वामी वर्षा मध्यमा चैत्रे धान्यं महर्घं वैशाखे. रोगः मरुदेशे दुर्भिक्षं पश्चिमायां समर्घता ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः आषाढे श्रावणे अल्पमेघः अन्नं समर्घं धान्ये द्विगुणो लाभः भाद्रपदे अष्टम्यां मेघः आश्विने वर्षा अन्नं महर्घं राजधानी नगरे उद्वसता रोगा बहुला गोधूमा महर्घाः सर्वधान्यं समर्घं रसाः समर्घाः घृते एकमणं प्रति फदिया ५०० कार्तिकादिमासत्रये समर्घता. माघमासे अन्नमहर्घता रोगपीडा महती. फाल्गुने राजा राज्यसुस्थः प्रजासौख्यं अन्नसमता ४२ सौम्यः ४३ रुद्रः स्वामी अल्पमेघः गावः अल्पक्षीराः वृक्षे अल्पफलं चैत्रे महर्घता वैशाखे उद्दंडवायुः ज्येष्ठे विग्रहः प्रजापीडा आषाढे अल्पमेघः अन्नं महर्घं श्रावणे महामेघः धान्ये द्विगुणो लाभः गोधूमानां कलशिका एकां प्रति फदियाः ५० प्रमाणं लभ्यते सर्वधान्यसमता रसमहर्घता भाद्रे खंडवृष्टिः अन्नं दुर्भिक्षं आश्विने राजविरोधः लोकपीडा मार्गे विषमता अन्ने संग्रहः धान्ये द्विगुणो लाभः सर्व रसधातु समर्घता कार्तिकादि मास ४ तेषु समता परं राजविड्वरं बालकरोगः देशा उद्वस्ता देशांतरीय लोकपीडा फाल्गुने उद्दंडवायुः पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधुदेशे राजविरोधः अन्न समर्घता ४३ साधारणः ४४ रविः स्वामी चैत्रे धान्यमंदता वैशाखे ज्येष्ठे च उत्पातः भूमिकंपः रोगवृद्धिः राजविरोधः धान्यमहर्घता आषाढे वायुदंडः रौरवं कचिदल्पमेघः श्रावणे महती वर्षा अन्नसमता भाद्रपदे अल्पमेघः आश्विने अल्पधान्यनिष्पत्तिः कार्तिकादिमासद्वयं मध्यममरिष्टं भूमिकंपः अकस्माद्राजविग्रहः अन्नमहर्घता सर्वरससंग्रहः परं राजा सुखी. ४४ विरोधकृत् ४५ चंद्रः स्वामी पंडलपालदुर्गविग्रहः कोङ्कणदेशे मेदपाटमंडले मध्यदेशे महारौरवं परस्परराजविग्रहः मार्गा विषमाः चैत्रादिमासत्रये अन्न समता आषाढे अल्पमेघः श्रावणे महावर्षा अन्नसमर्घता. भाद्रपदे मेघः

अन्नसमता सर्वधातुमहर्घता, फाल्गुने देशविरोधः मार्गवैषम्यं मंजिष्ठा सुपारिका पट्टसूत्रं दंत महद्वस्तु तुरंगमादि महर्घता ४५ परिधावी ४६ भौमः स्वामी दुर्भिक्षं नागपुरे मेदपाटे जालंधरदेशे राज्ञां विरोधः चैत्रादि मास ४ अन्नसमता. तंत्र संग्रहः कार्यः लोकेरोगभयं मरुदेशे मनुष्येषु मारीभयं चतुष्पदमहिषीतुरंगहस्तीनां पीडा श्रावणे भाद्रपदे अल्पमेघः खंडवृष्टिः अन्नमहर्घता. सर्वरसमहर्घता सर्वे धातवः समर्घाः कार्तिकादिमासपंचके धान्यसमता राजविड्वरं सिंधुदेशाद्धान्यागमः ४६ प्रमाथी ४७ बुधः स्वामी कोंकणे दुर्भिक्षं विग्रहः चैत्रे धान्यसमतावैशाख ज्येष्टयोर्धान्यसंग्रहः आषाढे नवीनमुद्रा परं अल्पमेघः श्रावणस्यार्द्धे मेघवर्षा अन्नं महर्घं धान्ये त्रिगुणलाभः भाद्रपदे महामेघः अन्नसमर्घं आश्विनादि मासाः ६ सुभिक्षं सर्वरसमहर्घता लोकः सुखी गुरूणां पूजा महिपवृद्धिः राज्यधर्म,४७आनंदः ४८ गुरुः स्वामी वर्षा बहुला सुभिक्षं चैत्र वैशाखे च अन्नं समर्घं ज्येष्ठाषाढयोर्मध्यमवृष्टिः परं नवीनमुद्रा जायते श्रावणे महामेघः भाद्रपदे खंडवृष्टिः गोधूमा महर्घा आश्विने समर्घा रसअन्न वस्तु समता धातुमहर्घता कार्तिके अकस्माद्भयं लोकपीडा मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिणदिशि गमनं पौषमाघयोर्मेघवर्षा अन्नं समर्घं फाल्गुने धान्यं महघ ४८ राक्षसः ४९भृगुः स्वामी धान्यसंग्रहः कार्यः चैत्रे करकाः पतंति वैशाखे ज्येष्ठे तैलं महर्घं ज्येष्ठे आषाढे गुडशर्करा द्रव्यं महर्घं श्रावणे अल्पमेघः अन्नमहर्घता भाद्रपदे महान्मेघः अन्नसमर्घता आश्विने समता कार्तिके रोगार्तिः मार्गशीर्षादि मास ४ धान्यसमर्घता राजा सुखी प्रजा राजमान्या फाल्गुने समर्घता वृक्षा नवपल्लवाः मार्गे सुखं सुभिक्षं ४९ नलः ५० शनिः स्वामी अल्पमेघः परं समर्घं चैत्रे रोगपीडा वार्दितं बहुला वायुः प्रबला वैशाखे अरिष्टं अन्नसंग्रहः कार्यः ज्येष्ठे राज्ञां परस्परं विरोधः लोकः सुखी मार्गवैषम्यं क्वचित् आषाढे संग्रहः कार्यो कार्तिके विक्रयः मार्गशीर्षादिमासत्रये अन्नसमता फाल्गुने बालानां रोगः तस्करभयं उत्तरदेशे दुष्कालः पूर्वस्यां दुर्भिक्षं ५०

पिंगलः ५१ राहुः स्वामी उच्चमुलतान नागपुर मरु दिल्ली मंडलेषु मथुरायां पूर्व देशेषु दुर्भिक्षं अन्नं महर्घं सर्वधातुसमर्घं परं सर्वत्र विग्रहः नगरे वासः ग्रामाणां उद्वसनं ५०० रोगपीडा राजस्वास्थ्य प्रजासुखं अन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता सिंधुदेशे धान्यागमः चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा वैशाखादिमासत्रये अन्न समर्घता प्रजाक्षयः अश्वपीडा आषाढे श्रावणे अल्पमेघः धान्ये चतुर्गुणो लाभः भाद्रे खंडवृष्टिः आश्विने समता कार्तिकादि मास ५ विग्रहपीडा अन्नमहर्घता चतुष्पादरोगः५१ कालः ५२ केतुः स्वामी अल्पमेघः देशे उद्वसनं अल्प-व्यापारः राजविग्रहः चैत्रे वैशाखे च अत्यरिष्टं उत्तरापथदेशभंगः ज्येष्ठे धान्य संग्रहः धान्ये षड्गुणो लाभः आषाढे अल्पमेघः लोके दुःखं मार्गे विषमता श्रावणे महान्मेघः अन्नसमता भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्यं दुर्भिक्षं उत्पातः आश्विने रोगशीतलादिविकारः धान्यफदिया ७५ नाणकैः कलशिकैका लभ्यते सर्वरसमहर्घता सर्वधातुसमर्घता कार्तिकादिमासपंचके यावत् परं राज विड्वरमश्वचतुष्पदपीडा वृक्षाः सफलाः ५२ सिद्धार्थः ५३ रविः स्वामी सुभिक्षं सर्व देशे वसतिर्बहुला अन्नविक्रयः चैत्रे वैशाखे लोकपीडा ज्येष्ठाषाढयोः उद्दंड वायुः श्रावणे दिनत्रयं महावर्षा सर्वान्नमहर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः आश्विने अन्नसमता कार्तिके धान्यनिष्पत्तिः बहुला अन्नसमर्घता सर्वधातुसमता मार्गादि मास ४ अनंतरं सर्वत्र ग्राहकतोत्पातः क्वचिद्राज्यविरोधः लोक विग्रहश्च अश्वमूल्यमहर्घता५३रौद्रः ५४ चंद्रः स्वामी पृथिव्यां विरोधबाहुल्यं चतुष्पदनाशः छत्रभंगः स्वदेशे ग्रामभंगः अल्पमेघः चैत्रादिमासत्रये महर्घ आषाढे श्रावणे अल्पमेघः खंडवृष्टिः भाद्रपदे महान्मेघः अन्नसमर्घता अन्य-द्वस्तु मंजिष्ठा सुपारिका लवंग महर्घता लोकः सुखी चतुष्पदसमर्घता हस्तिनां पीडा ५४ दुर्मतिः ५५ भौमः स्वामी चैत्रे वैशाखे च धान्यं समर्घं ज्येष्ठे अन्नसमता आषाढे उद्दंडवायुः श्रावणे अल्पमेघः कणकलसिका फदिया ३५ प्रमाणेन लभ्यते सर्वधातवः समर्घतया लभ्यंते आश्विने सर्वरस समर्घता धान्यसमता कार्तिकादिमासद्वये यावत् सर्ववस्तुसमता राजा सुस्थः

ग्रामे ग्रामे नवीनवसतिः सर्वलोकः सुखी. अश्वमहर्घता चतुष्पद ३२ महर्घता पाषादिमासद्वये यावत् सर्वधातुसमर्घता ५५ दुंदुभिः ५६ बुधः स्वामी वर्षा बहुला अन्नसमर्घता रसकसवस्तुसमर्घता चैत्रादिमासत्रये अन्नसमर्घता आषाढे द्विगुणो लाभः अल्पमेघः श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः भाद्रपदे मेघदिन ९वर्षतिअन्नं समर्घ देशो नवीनो वसति आश्विने अन्नं समर्घं रोगाःबहुला मंजिष्टा मरिचानां समर्घता सर्वरससर्वधातुसमर्घः कार्तिके धान्यं समर्घ अन्नं दुर्भिक्षं पश्चिमायां शुभम् मार्गशीर्षे समर्घता राज्ञां परस्परविरोधः लोका देशांतरं यांति पौषादिमासत्रये समता अश्वमहर्घता मंजिष्ठा महर्घा ५६ रुधिरोद्गारी ५७ गुरुः स्वामी राज्ञां परस्परविरोधःलोका देशांतरं यांति दुर्भिक्षं द्विजपीडा जीवादि दुःखं म्लेच्छराज्यं परदेशात् धान्यमायाति आषाढशुक्लपक्षे महामेघः श्रावणे दिन १५ महावर्षा चैत्रादिमासत्रये समर्घता धातवः समर्घाः उत्तरापथे उचमुलतान तिल तैलंगे गौडे मोट एषु देशेषु दुर्भिक्षं पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधु देशे धान्यनिष्पतिः भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्ये त्रिगुणो लाभः आश्विने समता रोगः स्वल्पः कार्तिकादिमासपंचके अन्नं समर्घं मेदपाटे लोकपीडा ५७ रक्ताक्षः ५८ शुक्रः स्वामी अन्नं समर्घ मेदपाटे पक्षे महामेघः आषाढे महती जलवृष्टिः सुराष्ट्रायां ग्रामप्रवाहकः अन्नं समर्घं श्रावणे अल्पमेघः किंचिद्विग्रहः भाद्रपदे अल्पवर्षा रोगपीडा आश्विने अन्नं समर्घं रसकसवस्तु समर्घं कार्तिकादि मासपंचके धान्यं महर्घं विवाहादिकं नास्ति अश्वपीडा पश्चिमायां५८क्रोधनः५९ शनिः स्वामी सेना बहुला मंदवृष्टिः प्रजापीडा उत्तरापथे दुष्कालः लोका निर्धनाः चैत्रवैशाखे अल्पमेघः अन्न समर्घता ज्येष्ठे मंदरोग पीडा अन्नसमता आषाढश्रावणयोरल्पवर्षा धान्ये द्विगुणो लाभः भाद्रपदे मेघः अन्नं समर्घं आश्विने रोगपीडा कार्तिके विग्रहः धान्यं समर्घं मार्गशीर्षे धान्य समता अकस्मादुत्पातः पौषे समर्घता वणिक्पीडा धान्ये द्विगुणो लाभः अन्यद्वस्तु समर्घ ५९ क्षयः ६० राहुः स्वामी चैत्रे करकापातः वैशाखे उत्पातः भूमिकंपः ज्येष्ठाषाढयोः बालकरोगः नवीनमुद्रोदयः अल्पमेघः

पिंगलः ५१ राहुः स्वामी उच्चमुलतान नागपुर मरु दिल्ली मंडलेषु मथुरायां पूर्व देशेषु दुर्भिक्षं अन्नं महर्घं सर्वधातुसमर्घं परं सर्वत्र विग्रहः नगरे वासः ग्रामाणां उद्वसनं ५०० रोगपीडा राजस्वास्थ्य प्रजासुखं अन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता सिंधुदेशे धान्यागमः चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा वैशाखादिमासत्रये अन्न समर्घता प्रजाक्षयः अश्वपीडा आषाढे श्रावणे अल्पमेघः धान्ये चतुर्गुणो लाभः भाद्रे खंडवृष्टिः आश्विने समता कार्तिकादि मास ५ विग्रहपीडा अन्नमहर्घता चतुष्पादरोगः५१ कालः ५२ केतुः स्वामी अल्पमेघः देशे उद्वसनं अल्प-व्यापारः राजविग्रहः चैत्रे वैशाखे च अत्यरिष्टं उत्तरापथदेशभंगः ज्येष्ठे धान्य संग्रहः धान्ये षड्गुणो लाभः आषाढे अल्पमेघः लोके दुःखं मार्गे विषमता श्रावणे महान्मेघः अन्नसमता भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्यं दुर्भिक्षं उत्पातः आश्विने रोगशीतलादिविकारः धान्यफदिया ७५ नाणकैः कलशिकैका लभ्यते सर्वरसमहर्घता सर्वधातुसमर्घता कार्तिकादिमासपंचके यावत् परं राज विड्वरमश्वचतुष्पदपीडा वृक्षाः सफलाः ५२ सिद्धार्थः ५३ रविः स्वामी सुभिक्षं सर्व देशे वसतिर्बहुला अन्नविक्रयः चैत्रे वैशाखे लोकपीडा ज्येष्ठाषाढयोः उद्दंड वायुः श्रावणे दिनत्रयं महावर्षा सर्वान्नमहर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः आश्विने अन्नसमता कार्तिके धान्यनिष्पत्तिः बहुला अन्नसमर्घता सर्वधातुसमता मार्गादि मास ४ अनंतरं सर्वत्र ग्राहकतोत्पातः कचिद्राज्यविरोधः लोक विग्रहश्च अश्वमूल्यमहर्घता ५३ रौद्रः ५४ चंद्रः स्वामी पृथिव्यां विरोधबाहुल्यं चतुष्पदनाशः छत्रभंगः स्वदेशे ग्रामभंगः अल्पमेघः चैत्रादिमासत्रये महर्घं आषाढे श्रावणे अल्पमेघः खंडवृष्टिः भाद्रपदे महान्मेघः अन्नसमर्घता अन्य-वस्तु मंजिष्ठा सुपारिका लवंग महर्घता लोकः सुखी चतुष्पदसमर्घता हस्तिनां पीडा ५४ दुर्मतिः ५५ भौमः स्वामी चैत्रे वैशाखे च धान्यं समर्घं ज्येष्ठे अन्नसमता आषाढे उद्दंडवायुः श्रावणे अल्पमेघः कणकलसिका फदिया ३५ प्रमाणेन लभ्यते सर्वधातवः समर्घतया लभ्यंते आश्विने सर्वरस समर्घता धान्यसमता कार्तिकादिमासद्वये यावत् सर्ववस्तुसमता राजा सुस्थः

ग्रामे ग्रामे नवीनवसतिः सर्वलोकः सुखी. अश्वमहर्घता चतुष्पद ३२ महर्घता पाषादिमासद्वये यावत् सर्वधातुसमर्घता ५५ दुर्दुभिः ५६ बुधः स्वामी वर्षा बहुला अन्नसमर्घता रसकसवस्तुसमर्घता चैत्रादिमासत्रये अन्नसमर्घता आषाढे द्विगुणो लाभः अल्पमेघः श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः भाद्रपदे मेघदिन ९ वर्षतिअन्नं समर्घ देशो नवीनो वसति आश्विने अन्नं समर्घ रोगाःबहुला मंजिष्टा मरिचानां समर्घता सर्वरससर्वधातुसमर्घः कार्तिके धान्यं समर्घ अन्नं दुर्भिक्षं पश्चिमायां शुभम् मार्गशीर्षे समर्घता राज्ञां परस्परविरोधः लोका देशांतरं यांति पौषादिमासत्रये समता अश्वमहर्घता मंजिष्ठा महर्घा ५६ रुधिरोद्गारी ५७ गुरुः स्वामी राज्ञां परस्परविरोधःलोका देशांतरं यांति दुर्भिक्षं द्विजपीडा जीवादि दुःखं म्लेच्छराज्यं परदेशात् धान्यमायाति आषाढशुक्लपक्षे महामेघः श्रावणे दिन १५ महावर्षा चैत्रादिमासत्रये समर्घता धातवः समर्घाः उत्तरापथे उच्चमुलतान तिल तैलंगे गौडे मोट एषु देशेषु दुर्भिक्षं पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधु देशे धान्यनिष्पत्तिः भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्ये त्रिगुणो लाभः आश्विने समता रोगः स्वल्पः कार्तिकादिमासपंचके अन्नं समर्घं मेदपाटे लोकपीडा ५७ रक्ताक्षः ५८ शुक्रः स्वामी अन्नं समर्घ मेदपाटे पक्षे महामेघः आषाढे महती जलवृष्टिः सुराष्ट्रायां ग्रामप्रवाहकः अन्नं समर्घं श्रावणे अल्पमेघः किंचिद्विग्रहः भाद्रपदे अल्पवर्षा रोगपीडा आश्विने अन्नं समर्घं रसकसवस्तु समर्घं कार्तिकादि मासपंचके धान्यं महर्घं विवाहादिकं नास्ति अश्वपीडा पश्चिमायां५८क्रोधनः५९ शनिः स्वामी सेना बहुला मंदवृष्टिः प्रजापीडा उत्तरापथे दुष्कालः लोका निर्धनाः चैत्रवैशाखे अल्पमेघः अन्न समर्घता ज्येष्ठे मंदरोग पीडा अन्नसमता आषाढश्रावणयोरल्पवर्षा धान्ये द्विगुणो लाभः भाद्रपदे मेघः अन्नं समर्घ आश्विने रोगपीडा कार्तिके विग्रहः धान्यं समर्घ मार्गशीर्षे धान्य समता अकस्मादुत्पातः पौषे समर्घता वणिक्पीडा धान्ये द्विगुणो लाभः अन्यद्वस्तु समर्घ ५९ क्षयः ६० राहुः स्वामी चैत्रे करकापातः वैशाखे उत्पातः भूमिकंपः ज्येष्ठाषाढयोः बालकरोगः नवीनमुद्रोदयः अल्पमेघः

अन्नसमर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः चतुष्पदहानिः फदिया ५० नाणकैर्धान्य कलसिकैकालभ्यते आश्विने रोगोत्पत्तिः परमन्नं समर्घं सर्वधातुसमता मध्यमः समयः राजविरोधः पश्चिमायां सुभिक्षं अन्नं समर्घं सिंधुदेशात् स्थलदेशाद्वा अन्नागमः, पूर्वस्यां विड्वरमन्नसमता ॥ ६० ॥

इति कश्यपसंहितायां गघरीत्यानयेन संवत्सरफलं समाप्तम् ।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते संवत्सर फलकथनं नामैकविंशतितमो विनोदः ॥ २१ ॥

अथ संवत्सरफलान्याह कश्यपः–ईतयश्चाग्निकोपश्च व्याधयः प्रचुरा भुवि ॥ प्रभवाब्दे मंदवृष्टिस्तथापि सुखिनो जनाः १ दंडनीतिपरा भूपा बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ विभवाब्देऽखिला लोकाः सुखिनः स्युर्विवैरिणः २ शुक्लाब्दे निखिला लोकाः सुखिनः सुजनैः सह ॥ राजानो युद्धनिरताः परस्परजयैषिणः ३ प्रमोदाब्दे प्रमोदंते राजानो निखिला जनाः ॥ वीतरोगा वीतभया ईतिवैरिविवर्जिताः ४ न चलंत्यखिला लोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन ॥ अब्दे प्रजापतौ नूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ५ अन्नाद्यं भुंजते शश्वज्जनैरतिथिभिः सह ॥ अंगिराब्देऽखिला लोका भूपाश्च कलहोत्सुकाः ६ श्रीमुखाब्देऽखिला धात्री बहुसस्यार्घसंयुता ॥ अध्वरे निरता विप्रा वीतरोगा विवैरिणः ७ भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः राजानो युद्धनिरतास्तथापि सुखिनो जनाः ८ प्रभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजंतवः । सर्वकामक्रियासक्तो युवाब्दे युवतीजनः ९ धातृवर्षेऽखिलाः क्ष्मेशाः सदा युद्धपरायणाः ॥ संपूर्णा धरणी भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः १० ईश्वराब्देऽखिला जंतून् धात्री धात्रीव सर्वदा ॥ पोषयत्यतुलं चान्नं फलं सूते च पुष्कलम् ११ अनीतिरतुला वृष्टिर्बहुधान्यारव्यवत्सरे ॥ विविधैर्धान्यनिचयैः संपूर्णा निखिला धरा १२ न मुंचंति पयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम् ॥ मध्यमा वृष्टिरर्घश्च नूनमब्दे प्रमाथिनि १३ विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रांतभूनयः ॥ सर्वत्र सर्व-

दा मेघा मुंचंति प्रचुरं जलम् १४ वृषाब्दे निखिलाः क्ष्मेशा युध्यंति वृषभा इव विद्याप्रसक्ता विप्रेंद्रा यजंते सततं सुरान् १५ चित्रार्घवृष्टिः सस्याद्यैर्विचित्रा-निखिला धरा ॥ निराकुलाखिला लोकाश्चित्रभानोश्च वत्सरे १६ सुभानुवत्सरे भूमौ भूमिपानां च विग्रहः ॥ भाति भूर्भूरिसस्याढ्या भयंकरभुजंगमा १७ कथंचिन्निखिला लोकास्तरंति प्रतिपन्नताम् ॥ नृपाहवक्षतात्रोगाद्भैषज्यैस्तारणा-ब्दके १८ पार्थिवाब्दे तु राजानः सुखिनः सुप्रजा भृशम् ॥ बहुभिः फलपुष्पाद्यै-र्विविधैश्च पयोधरैः १९ व्ययाब्दे निखिला लोका बहुव्ययपरा भृशम् ॥ वीरमत्ते-भतुरगै रथैर्भूपातिसर्वदा २० सर्वजिद्वत्सरे सर्वे जनास्त्रिदशसन्निभाः ॥ राजानो विलयं यांति भीमसंग्रामभूमिषु २१ सर्वधार्यब्दके भूपाः प्रजापालनतत्पराः प्रशांतवैराः सर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः २२ विरोधीवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः भूरिभूतियुता भूमिर्भूरिवारिसमाकुला २३ प्रकृतिर्विकृतिं याति विकृतिः प्रकृतिं तथा ॥ तथापि सुखिनो लोका भृशं विकृतिवत्सरे २४ खराब्दे निखिला लोका अन्योन्यं समरोत्सुकाः मध्यमा वृष्टिरत्युग्ररोगैर्यान्तिलयं नृपाः २५ नंदनाब्दे सदा-पृथ्वी बहुसस्यार्घवृष्टिभिः आनंददाऽखिलानां तु जंतूनां समहीभुजाम् २६ विजया-ब्दे तु राजानः जयसंघोपतत्पराः सुनंदंति प्रजाः सर्वा बहुसस्यार्घवृष्टिभिः २७ जयमं गलघोषौघैः संकुला धरणी सदा ॥ जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकांक्षिणः २८ मन्मथाब्दे प्रजाः सर्वास्तस्करा इव लोलुपाः शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवा धरा २९ दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीतिचोराकुला धरा ॥ महावैरा महीनाथा वीरवारणवा-जिभिः ३० आकुला हेमलंबे तु मध्यसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ भाति भूर्भूपतिक्षोभवह्निवि-द्युल्लतादिभिः ३१ विलंबीवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः ॥ प्रजापीडा अनर्घ्य-त्वं तथापि सुखिनो जनाः ३२ विकार्यब्देऽखिला लोकाः सरोगा वृष्टिपीडिताः पूर्व-सस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम् ३३ शार्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घवृष्टिभिः जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युर्विवैरिणः ३४ प्लुवाब्दे निखिला धात्री वृष्टिभिः प्लुवसन्निभा ॥ रोगकाले त्वीतिभीतिः संपूर्णे वत्सरे फलम् ३५ शुभकृद्वत्सरे पृथ्वी संपूर्णा विविधोत्सवैः ॥ आतंकचौरामयदा राजानः समरोत्सुकाः ३६ शोभकृद-

त्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा॥तथापि सुखिनो लोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ३७ क्रोध्यब्देनिखिला लोकाःक्रोधलोभपरायणाः॥ईतिदोषेण सततं मध्यसस्यार्घवृष्टयः ३८अब्दे विश्वावसौ शश्वद्घोररोगधरा नराः॥सस्यार्घवृष्टयो मध्या भूपाला नातिभूतयः ३९पराभवाब्दे राज्ञःस्यात्समरं सह शत्रुभिः॥आमयः क्षुद्रसस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः४०प्लवंगाब्दे मध्यवृष्टिरोगचौराकुला धराः॥ अन्योन्यसमरे भूपाः शत्रुभिर्हृतभूमयः ४१ कीलकाब्दे त्वीतिभीतिः प्रजाः क्षोभनृपाहवौ ॥ तथापि वर्धते लोकाः समधान्यार्घवृष्टिभिः ४२ सौम्याब्दे निखिला लोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥ विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतत्पराः॥ ४३ साधारणाब्दे वृष्टयर्घं भयं साधारणंमतम्॥मध्यसंपद्धराधीशाःप्रजाःस्युःस्वस्थचेतसः४४ विरोधकृद्वत्सरे तु परस्परविरोधिनः॥सर्वे जना नृपाश्चैव मध्यसस्यार्घवृष्टयः४५ भूपाहवो महारोगो मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ दुःखिनो जंतवः सर्वे वत्सरे परिधाविनि ४६ प्रमाथीवत्सरे तत्र मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ प्रजाः कथंचिज्जीवंति समात्सर्याः क्षितीश्वराः ४७ आनंदाब्देखिला लोकाः सर्वदानंदचेतसः ॥ राजानः सुखिनः सर्वे वत्सरे मेदिनीशिवम् ४८ राक्षसाब्देखिलालोका राक्षसा इव निष्कृपाः ॥ इंद्रोपि न जलं दद्यात्सुभिक्षं नैव जायते ४९ नलाब्दे मध्यसस्यार्घवृष्टिभिः प्रवरा धरा ॥ नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ५० पिंगलाब्दे त्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ राजानो विक्रमाक्रांता भुंजते शत्रुमेदिनीम् ५१ वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः ॥ ततोपि संति सस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः५२सिद्धार्थीवत्सरे भूपाः शांतवैरास्तथा प्रजाः॥सकला वसुधा भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ५३ रौद्राब्दे नृपसंभूतसंक्षोभक्लेशभागिनः ॥ सततं त्वखिला लोका मध्यसस्यार्घवृष्टयः ५४ दुर्मत्यब्देखिला भूपा लोका दुर्मतयः सदा ॥ तथापि सुखिनः सर्वे संग्रामाः संति चेदपि ५५ सर्वसस्ययुता धात्री पालिता धरणी धरैः ॥ पूर्वदेशादि नाशः स्यात्तत्र दुंदुभिवत्सरे ५६ आहवे निरताः सर्वे भूपा रोगैस्तथा जनाः ॥ यथाकथंचिज्जीवंति रुधिरोद्गारिवत्सरे ५७ रक्ताक्षीवत्सरे सस्यवृद्धि-

वृष्टिरनुत्तमा ॥ प्रेक्षंते सर्वदान्योन्यं राजानो रक्तलोचनाः ५८ क्रोधनाब्दे मध्यवृष्टिः पूर्वदेशे विशेषतः ॥ संग्रामनिरताः सर्वे भूपाः क्रोधपरायणाः ५९ कार्पासं गंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम् ॥ क्षीयमाणाश्चापि नरा जीवंति क्षयवत्सरे ६० इति संवत्सरफलम् ।

अथ राजफलम् ।

चैत्रशुदि १ का वार संवत्का राजा होताहै जिसका फल ।

श्लोक ॥ सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाःस्वल्पं पयो गोपु जनेषु पीडा ॥ स्वल्पंसुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणां १ चंद्रेनृपेमंगलशोभनानिप्रभूतवृष्टिःप्रचुरं च धान्यं।सौख्यंजनानामुदयोनृपाणांप्रशाम्यतिव्याधिजरानराणाम् २भौमेनृपेवह्निभयंजनक्षयं चौराकुलंपार्थिवविग्रहंच॥ दुःखंप्रजाव्याधिवियोगपीडास्वल्पंपयोमुंचतिवारिवाहाः ३बुधस्यराज्येसजलंमहीतलंगृहेगृहेतूर्यविवाहमंगलम्॥प्रकुर्वतेदानदयाजनोपिस्वास्थ्यंसुभिक्षंधनधान्यसंकुलम् ४ गुरौनृपेवर्षतिकामदंजलंमहीतलेकामदुघाश्चधेनवः ॥यजंति विप्राबहवोग्निहोत्रिणोमहोत्सवंसर्वजनेषुवर्तते५शुक्रस्यराज्येबहुसस्यसंकुलास्वतीव्रवेगाःसरितोंबुराशिभिः॥ फलंतिवृक्षाबहुगोप्रसूतिर्वसुंधरापार्थिवसौख्यसंयुता६ शनैश्चरेभूमिपतौस्तकज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यतेजनः ॥ युद्धंनृपाणांगदतस्करायैर्भ्रमंतिलोकाःक्षुधिताश्च देशान् ७ इतिराजफलम् ॥

अथ मंत्रिफलम् ।

मेषसंक्रांतिका वार मंत्री होताहै जिसका फल ।

श्लोक ।

नृपभयंगदतोपिहितस्करान्प्रचुरधान्यधनादिमहीतले॥रसचयंहिसमर्घतमंतदारविरमात्यपदंहिसमागतः१शशिनिमंत्रिगतेबहुसस्यवत्यपिधरारमतेसुखमंडिता। वियतिवारिधराबहुवर्षिणोजनपदाः सुखराशिसुशोभिताः २ अवनिजोननुमंत्रिपदं गतो भवति दस्युमदादिजवेदनाः॥जनपदेषुजयंसुखसंचयंनबहुगोपुपयोद्विजकर्मच ३शशिसुतेशुभमंत्रिसमागतेस्वपतिनाकुरुतेमदनाक्रियाम्।बहुधनंबहुवारि-

समन्वितंयवमसूरिचणान्नमहर्घता४ विविधधान्ययुताखलुमेदिनीप्रचुरतोयघना मुदिताभवेत् ॥ नृपतयोजनपालनतत्पराःसुरगुरौननुमंत्रिसमागते५ भृगुसुते ननु-मंत्रिपदंगतेशलभभूपकरावथमाहिपैः ॥ भवतिधान्यसमर्घतयाभयंजनपदेषुजलं-सरितोधिकम् ६ रविसुतेयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुःखदाः॥नजल-दाजलदाजनतापदाजनपदेषुसुखंधनदंक्वचित् ७ इतिमंत्रिफलम् ॥

अथ सस्येशफलम् ।

कर्कसंक्रांतिका वार सस्येश होताहै तिसकाफल—श्लोक ।

सस्याधिनाथेतरणौहिपूर्वं धान्यंसमर्घंबहवोपिचौराः॥युद्धंनृपाणांजलदाज-लाढ्याः स्वल्पंचसस्यंबहुभूरुहाश्च १ सस्याधिपेशीतकरेप्रजासुखं मेघाः पयो मुंचतिगोपगोधुक्॥देवद्विजाराधनतत्परान्नृपाधराभवेद्धान्यधनौघपूर्णा २प्रथम-धान्यपतौधरणीपतौगजतुरंगखरोष्ट्रगवामपि ॥ प्रभवदाबहुरोगघनोजलंनसम-सौख्यकरंतुपधान्यहव् ३ जलधराजलराशिमुचोभृशंसुखसमृद्धियुतंनि-रुपद्रवम् ॥ द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदाप्रथमसस्यपतौसतिबोधने ४ सस्यपतौसुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकाः ॥ जलधराजलदा बहुसस्यदारसपयांसिबहूनिवसूनि वै ५ शुक्रोयदाधान्यपतिर्धरायांमेघोजलं-वर्षतिशोभनंप्रियम् ॥ गोधूमशालेक्षुधनप्रियंगुवृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि ६ रविसुतेयदिधान्यपतौजनोनृपतिभिः परिपीडितविग्रहः ॥ गदभयंतुपधान्यह-रंसदाद्धुरितवादविवादयुतानराः ७ इतिसस्येशफलम्॥

अथ धान्येशफलम् ।

धनसंक्रांतिका वार धान्येश होताहै तिसका फल—श्लोक ।

पश्चाद्धान्याधिपेसूर्येपश्चाद्धान्यंतदा नहि। विग्रहंभूभृतांधान्यंमहर्घज्वरपीडनम् १ चंद्रेधान्याधिपेजातेप्रजावृद्धिःप्रजायते॥गोधूमाः सर्षपाश्चैवगोपुक्षीरंतथाबहु २ भूमिजेग्रीष्मधान्येशेग्रीष्मधान्यमहर्घकम् ।शालीक्षुघृततैलादिमहर्घाणिभवंतिच ३बुधेधान्याधिपेमेघा जलंमुंचंतिवैभृशम्॥सैंधवेलाटदेशे च माषवोल्पं च वर्षति ४गुरौधान्यपतौयातियवगोधूमशालयः ॥ पर्च्यंतेसर्वदेशेषुयज्ज्वानोब्रह्मवादिनः ५ भृगौ पश्चिमधान्येशेपश्चाद्धान्यं न पश्यति॥ सस्याःसमर्घतांयांतिस्वल्पंक्षीरं-

गवामपि ६ दुर्भिक्षंजायते तत्र कलहं देशविग्रहम् ॥ सौराष्ट्रदेशनष्टश्चयत्रधान्याधिपोशनिः ७ ॥ इति धान्येशफलम् ॥

अथ मेघेशफलम् ।

. सूर्य आर्द्रानक्षत्रपर जिसदिन प्रवेशकरे वो वार मेघेश होताहै---श्लोक ।

जलदपेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसम् । यवचनेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुविवर्तते १ शशिनितोयदपेयदिगोमहिष्यजवरादिपुदुग्धरसंतदा । फलवतीधनधान्यवतीधराविविधभोगवतीननुभामिनी २ अवनिजे जलदस्यपतौभुविश्रुतिविचारविहीनधराभवाः । क्वचिदपिप्रचुरंजलमल्पकंक्वचिदपिप्रचुरंबहुतापदम् ३ अमृतरश्मिसुतेयदिवारिपे बहुजलंतुपधान्यरसादिकम्॥ द्विजवरायजनोत्सुकचेतसाविविधसौख्ययुताधरणीतदा ४ गुरुरविप्रियदृष्टिकरः सदाखिलविलासवतीधरणीतदा । श्रुतिविचारपरानरपालका रससमृद्धियुताखिलमानवाः ५ भृगुसुतेजलदस्यपतिर्यदाजलयुताजलदादिविशोभनाः॥धननिधानयुताद्विजपालका नृपतयोजनतासुखदायकाः ६ रविसुतेजलदस्यपतौभवेद्विरतवृष्टिवतीवसुधातदा॥मनसितापकरोनृपतिः सदा विविधरोगरताजनतायदा७इति मेघेशफलम् ॥

अथ रसेशफलम् ।

तुलासंक्रांतिकावार रसेश होताहै---श्लोक ।

रसपतौ तरणौधरणीतदा विरसभोगरताल्पपयोधरा । वसनतैलघृतप्रियमानवाःसुखरसंच भुनक्तिमहीपतिः १ यदिविधौरसपेभुविमानवोनवनवांयुवतींबुभुजेप्रियाम्।जलधराबहुवारिविधायका रसवतीधनधान्यवतीमही २ यदि धरातनयोरसपोभवेन्नरसराशियुता जनताशुभा । नरपतिर्विषमोजनतापदोनजलदोबहुवृष्टिकरोभुवि ३ रसपतौद्विजराजसुते मही सुलभधान्यघृतादियुता जनाः प्रमुदितावरनायकपालिताबहुजलाखिलदेशसुरक्षिताः ४ यदिगुरौरसपेजनसौख्यदे कमलवंतिसरांसितृणानिच । जनपदा द्विजपूजनतत्परागजसवाजिरथैर्युतानृपाः ५ यजनयाजनकोत्सवकोत्सुका जनपदाजलनीधिनमानसाः। सुखसुभिक्षसमोदवनीधराधरणिपाहनपापगणा प्रिया ६ रविसुनेरसपेरससंक्षये

नजलदागदवाश्वपयोधराः । अजगवांगजवाजिसरोरुहा जनपदेषुनराः नरसैर्युता ॥ ७ ॥ इति रसेशफलम् ।

अथ नीरसेशफलम् ।

मकरसंक्रांतिका वार नीरसेश होता है——श्लोक ।

नीरसाधिपतौ सूर्ये त्रपुचंदनयोरपि । रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्घवृद्धिःप्रजायते १ शुक्लवर्णादिवस्तूनांमुक्तारजतवाससाम्।अर्घवृद्धिः प्रजायेत शशांकेनीरसाधिपे २नीरसेशोयदाभौमःप्रवालारक्तवाससाम्।रक्तचंदनताम्राणामर्घवृद्धिर्दिनेदिने ३ चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम् ।अर्घवृद्धिःप्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि ४ हारिद्रापीतवस्तूनांपीतवस्त्रादिकंचयत् । नीरसेशोयदाजीवः सर्वेषांप्रीतिरुत्तमा ५ कर्पूरागरुगंधानांहेममौक्तिकवाससाम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोभृगुर्यदि ६ त्रपुपिंडादिलोहानांकृष्णवस्त्रादिवस्तुनाम्।अर्घवृद्धिः प्रजायेत मंदेनीरसनायके७ इति नीरसेशफलम् ॥

अथ फलेशफलम् ।

मीनसंक्रांतिका वार फलेश होताहै——श्लोक ।

द्रुमवतीफलपुष्पवती धरा प्रमुदिताफलभोगविरोधतः । बहुजलंजलदोभुविमुंचतिकचिदपिप्रमितंफलपोरविः १ यदिविधुः फलपोद्रुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमैर्युता । द्विजमुखावरभोगसमन्वितानृपतयोनयनाटनतत्पराः २ फलपतिर्यदिभूतनयोभवेत्सुबहुपुष्पफलान्वितमेदिनी । गतभयानृतदेशजनास्तदानृपतयोबहुविग्रहकारकाः ३ यदि बुधेफलपेफलमुत्तमंजलधराजलराशिमुचस्तदा । बहुतृणंकुसुमंकमलैर्युतंजनपदाजनसौख्यमुदान्विताः ४ सुरगुरुः फलनायकतांगतो गतभयावनराशिमहाद्रुमाः । यजनयाजनकोत्सवमंदिराः श्रुतिविचारपराद्विजपूर्वकाः ५ यदिफलस्यपतौभृगुजेधरामृदुकुमारमहीरुहराशयः।बहुपथानरनाथसुभोगदाद्विजवराःश्रुतिपाठपरायणाः६ यदि शनिः फलपः कलहोभवेज्जनितपुष्पगणास्तरवःसदा । हिमभयंनरतस्करजंवदाजनपदाजनराशिसमाकुलाः ७ इति फलेशफलम् ।

अथ धनेशफलम् ।

कन्यासंक्रांतिका वार धनेश होताहै- श्लोक ॥ द्रविणपेयदिवासरपे

तदावणिजतोबहुद्रव्यसमागमः। गजतुरंगममेषकरोष्ट्रतोधनचयंलभतेक्रयविक्र-
यात् १ धनपतिर्मृगलांछनकोयदारसचयात्क्रयविक्रयतोधनम्। वसनशालियुगं
धनजंबहुद्रविणतैलघृतंनृपसौख्यकम् २ असतिमौल्यकरोधरणीसुतः शरदि
ताम्रकरस्तुपधान्यहृत् ।महिषमिभासिभवेद्विगुणंतदानरपतिर्जनशोकविधायकः ३
द्रविणपोहिमरश्मिसुतोयदाविविधसंग्रहवस्तुफलातदा।द्विजवराजपयज्ञसुसंयुताः
कृषिविशेषविशेषितमानसाः ४सुमनसांचगुरुर्द्रविणाधिपोवणिजवृत्तिपराः सुख-
भाजनाः। फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदाविविधद्रव्ययुताभुविमानवाः ५ द्रविण-
पो भृगुजोद्रविणैर्युताःसमधनाःसकलाभुविमानवाः।समसुखाः क्रयविक्रयजीवि-
नोनृपतयोजनपालनतत्पराः ६ द्रविणपेरविजेविरलं धनंगदरता धरणीपतयः
सदा। अधनिकावणिजःकृषिजीविनोद्विजवराःपरिपीडितमानसाः ७ इति द्रव्ये-
शफलम्।

अथ दुर्गेशफलम्।

सिंहसंक्रांतिका वार दुर्गेश होता है—श्लोक ॥ नयविशेषकरस्तरणिस्त-
दागतभयानरराजपुरोगमाः । समधिकेनतदानृपतोन्यतः पथि संव्रजतांनभयं
क्वचित् १ गढपतिर्मृगलांछनकोयदानृपसुराज्यविलासितपौरजाः । बहुधने-
क्षुजगोरसभोगिनोनरवरा नरवर्णितविग्रहाः २ अवनिजोगढनायकतांगतोविवि-
धदुःखवियोगसमन्वितः। जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतयानफलं
क्वचित्३ विषयसाम्यसुखंशशिजेभयौभवतिराशिगतेतुविशेषतः। शशिसुतेयदि
कोटकपालकेपथिषुद्रव्ययुजांनभयंक्वचित् ४ सुरगुरौगढपेनयशोभितानरवरा
नरपाः करपालिताः। गिरिषुवैनगरेषुसमंसुखंसुखमतिद्विजशस्त्रयतांविशाम् ५
नरवरेषुविशेषपतिर्यदा भृगुसुतोबहुसौख्यकरोमतः। विनयवाणिजगेहसमः सुखो
गतवनंनिकटेपिचदूरतः ६ रविसुतेगढपालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलिताज-
नाः । विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनंनलभेद्वविकश्वन ७ इति
कोटपालफलम्।

अथ चतुर्मेघफलं—त्रिभिर्गताब्दाः सहिताश्चतुर्भिः शेषंभवेदंबुपतिः
क्रमेण।आवर्तसंवर्तकपुष्करश्चद्रोणश्चतुर्थोमुनिभिःप्रदिष्टः १फलम्-आवर्तेछिन्न-
वृष्टिश्चसंवर्तेजलपूरिता। पुष्करेमंदवृष्टिश्च द्रोणे वर्षतिसर्वदा २ इति मेघफलम्॥

अथ गुरूदयवशेन वर्षनामफलम्।

श्लोकः—नक्षत्रेणसहोदयमस्तं वा येन याति सुरमंत्री।तत्संज्ञंवक्तव्यंवर्षं मासक्रमेणैव॥ १ ॥कार्तिक्यादिपुसंयोगेकृत्तिकादिद्वयं द्वयम् । अंतोपांत्यौपंचमश्च त्रिधामासत्रयं स्मृतम् ॥ २॥अथ फलं-सस्यानिघृतकार्पासतैलादिसुखसंचयः। चैत्रवर्षेभवेद्वृद्धिर्नृपसौख्यफलप्रदा १ अर्घं विविधभावेन जायतेद्रविणप्रदम्। नीरुजानिर्भयालोका वैशाखेजनपूजिताः २ तस्करैः पापरोगैर्वापीड्यंते पीडयाजनाः। भ्रमंतेस्वेच्छयाभूम्यांनिर्द्रव्यैर्ज्येष्ठसंज्ञके ३ अर्घमहर्घतांयाति धनधान्यं समंभवेत् । आषाढेस्वल्पवृष्टिश्चतुषधान्यमहर्घता ४ मनोल्हादंप्रकुर्वंतिजनाः सौख्यसमायुताः। श्रावणेवृष्टिरत्युग्रागोमहिष्यादिकं सुखम् ५अर्घमहर्घतांयाति धनधान्यं समं भवेत्।मघवावर्षतिस्वच्छं संपदोभाद्रवर्षके ६ सुभिक्षंपूर्वसस्यंस्याज्ज्वररोगाकुलंजगत् । आश्विनेशोभनावृष्टिर्नृपसौख्यकरीसदा ७ पापबुद्धिरतालोकाभवंतिकार्तिकेसदा । देवतानैवमन्यंतेराज्यंचतस्करैर्हतम् ८कार्पासादिमहर्घंस्याद्गोधूमापतिलादिकम् । मेघोवर्षतिदेवोवामार्गशीर्षेविशेषतः ९ ज्वररोगक्षुधार्ताश्चनानाजनपदाः सदा। महर्घंतुयवोमासापौषेस्वास्थ्यंततःपरं १०सुभिक्षं पूर्वयाम्यायां मध्यमंपश्चिमेतथा।उत्तरेरौरवंमाघेवर्षेधान्यमहर्घता ११ सुभिक्षंप्रचुरावृष्टिरुत्तरेयाम्यपश्चिमे । पूर्वस्यांरौरवंघोरं फाल्गुनेवत्सरे शुभम् १२ इति गुरुवर्षफलम् ।

अथ अधिकमासफलम्॥स्वल्पवृष्टिर्भवेन्मेघोधनधान्यसमाकुलम्। घृतंतैलंच कार्पासंसुभिक्षंमाधवद्वये १ विड्वरंभूमिपाङ्गीतिस्तस्करादिभयंभवेत् । घृतंतैलंतथाधान्यंसमर्घंस्याद्द्विज्येष्ठके २ सुभिक्षंशुभवृष्टिश्चधनधान्यसमाकुलम्।घृतंतैलं चकार्पासं सुभिक्षंचैत्रकद्वये ३तुषधान्यादिवृद्धिः स्यात्पशुरोगोतिवृष्टितः। राज्ञांसुखकराभूमिराषाढद्वितयंयदा ४द्विश्रावणेतिदुर्भिक्षंस्वल्पवृष्टिर्महद्भयं।पापबुद्धिरतालोका राजानःक्रूरमानसाः ५ द्विभाद्रे क्षेममारोग्यंसस्यनिष्पत्तिरुत्तमा । बहुक्षीरघृतागावोवृष्टिः कार्तिकमश्विना ६ सस्यंमहर्घतांयातिस्वल्पवृष्टिर्भयंनृपात् । शारदानि चसस्यानि गजबाधाश्विनद्वये७इत्यधिकमासफलम् ।

अथ गुरुचारशनिचारफलं प्रारभ्यते.

अथातःसंप्रवक्ष्यामि गुरुचारमनुत्तमम्। अनेनगुरुचारेणप्रभवायब्दसंभवः १ मेषराशौयदाजीवस्तत्रसंवत्सरस्तदा।प्रवर्द्धनाप्रजलदोवर्षाचसर्वतोमुखी २सुभिक्षंविग्रहोराज्ञांसमर्घंवस्त्रकर्पटं।हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ३ मंजिष्ठा नारिकेलंचपट्टसूत्रंसमर्घता। कांस्यंलोहंतथैवेक्षुपूगादीनांचसंग्रहः ४ राजपीडा-महारोगोद्विजानांकष्टसंभवः। मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्राज्ञप्रदेपुनः ५गोधूमशा-लिमाषाणामाज्यस्याग्रेमहर्घता।दक्षिणस्यामुत्तरस्यांखंडवृष्टिःप्रजायते ६ दक्षि-णोत्तरयोर्देशेछत्रभंगोपिकुत्रचित् । दर्भिक्षमपिषण्मासादाश्विनेफल्गुनेतथा ७ पश्चात्सुभिक्षं द्वौमासौनाम्नामेघोजलेंद्रकः।कार्तिकेमार्गशीर्षेचकार्पासान्नमहर्घता ८ मेदपाटेराजपीडादेशभंगोल्पवर्षणम्। लोकाः सरोगादुर्भिक्षंपापेरेसमहर्घ-ता ९ वाणिज्येसंशयोलाभोघेशाखेदुर्जरारसाः। छत्रभंगस्तथापाढेश्रावणेचाभयं युधि १०-नवीनोजायतेराजाकचिन्मेघोपिकार्तिके। धान्यादिसंग्रहेलाभस्त्रिगु-णोमासपंचमे ११ अब्दमध्येयदाजीवः क्रमाद्राशित्रयंस्पृशेत् । तदासुभटको टीभिःप्रेतपूर्णावसुंधरा १२ उदग्वीथींचरञ्जीवः सुभिक्षक्षेमकारकः। मध्य-मेमध्यमंचार्थमेवमन्येपिखेचराः १३ एषराशिफलभेदविशेषः शेषमत्रगुरुगम्य-मशेषं।द्वेषमत्रगुरुचारविचार संग्रहेभजतुजातुनकश्चित्१४इतिमेषराशिफलम्। वृषराशौयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा।नंदशालीभवेन्मेघःसर्वधान्यसमर्घता १५ वैशाखेआश्विनेमासेस्त्रीणांरोगाश्चदंतिनाम् । अश्वानांचमहापीडाग्रहेवैरंपरस्पर-म्। १६ उत्तरस्यामनावृष्टिर्दुर्भिक्षंमंडलेकचित् । पूर्वस्यांचमहासौख्यंराजबु-द्धिविपर्ययः १७ घृतं तैलंच मंजिष्ठामौक्तिकंचप्रवालकम् । लवणंरक्तवस्त्रं चनारिकेलंसमर्घता १८ गोधूमाः शालिचणकामुद्रामाषास्तथातिलाः। महर्घाःश्रावणेज्येष्ठेमेघानांचमहाजलम् १९ शृगालकेमालवेचउत्पातोराज-विग्रहः। देशभंगाद्भयंभूरिघृतधान्यमहर्घता २० मेदपाटेग्रीष्मकालेसमर्घं धान्यमीरितम्। मरौधान्यंघृतंतैलंमहर्घंधातवोन्यथा २१ अश्वरोगश्चतुष्पा-दनाशः पीडागमः क्वचित्। आषाढेश्रावणेवर्षानवर्षाभाद्रपादके २२ सिंधुदे-

अष्टोत्तरीमतेन आयव्ययसारिणी.

जिसवर्षकाराजाजोग्रहउसीकेसूत्रगतराशियोंकालाभखर्चदेखना.

राशि.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
रवि. ६	२ १४	११ ५	१४ २	८ २	११ ११	१४ २	११ ५	२ १४	५ ५	८ १४	८ १४	५ ५
चंद्र. १५	१४ २	८ ११	११ ८	५ ८	८ २	११ ८	८ ११	१४ २	२ ११	५ ५	५ ५	२ ११
मं. ८	८ १४	२ ८	५ ५	१४ २	२ १४	५ ५	२ ८	८ १४	११ ५	१४ १४	१४ १४	११ ५
बुध. १७	५ ५	१४ ११	२ ११	११ ८	१४ २	२ ११	१४ ११	५ ५	८ ११	११ ५	११ ५	८ ११
गुरु. १९	११ ५	५ १४	८ ११	२ ११	५ ५	८ ११	५ १४	११ ५	१४ ११	२ ८	२ ८	१४ ११
शु. २१	२ ८	११ १४	१४ ११	८ ११	११ ५	१४ ११	११ १४	२ ८	५ १४	८ ८	८ ८	५ १४
शनि १०	१४ १४	८ ८	११ ५	५ ५	८ १४	११ ५	८ ८	१४ १४	२ ८	५ २	५ २	२ ८

कुयोगसारिणी.

	योगकिनाम.	रविवार	सोम०.	मग०	बुधवार.	गुरुवार	शुक्र०	शनि०
२	क्रकचयोग.	१२ ति.	११ ति.	१० ति.	९ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
३	दग्धयोग.	१२ ति.	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
४	मृत्युयोग.	१ ११ति. ६	२ ७ति. १२	१ ६ ति. ११	३ ६ ति. ११	४ ९ ति. १४	१ ५ ति १२	५ १०ति. १५
५	सिद्धियोग.	० ति.	० ति.	३ ८ ति. १३	२ ५ ति. १२	५ १०ति. १५	१ ६ ति. ११	४ ९ ति. १४
६	उत्पातयोग.	विशा.	पूर्वा.	धनिष्ठा.	रेवती.	रोहि.	पुष्य	उत्त.षा.
७	मृत्युयोग.	अनुरा.	उत्तरा.	शतता.	अश्विनी	मृगशी.	आश्ले	हस्त.
८	कालयोग.	ज्येष्ठा.	अभिजि	पू.भा.	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.
९	सिद्धियोग.	मूळ.	श्रव.	उत्तभा	कृत्ति.	पुनर्व.	पूर्वा	रेवती.
१०	यमदंष्ट्रयोग.	मघा. धनिष्ठा	मूळ. विशा.	कृत्ति. रोहि.	पूर्वा षा पुनर्वसु	उत्त.षा अश्विनी	रोहिणी अनुरा.	श्रवण. शत.
११	यमघंट.	मघा.	विशा.	मृग.	मूळ.	कृत्ति	रोहि	हस्त.
१२	मुसळ. वज्र.	भर.	चित्रा.	उत्त षा	धनि.	उत्तरा.	ज्येष्ठा.	रेवती.
१३	अमृतसिद्धियोग	हस्त.	श्रव.	अश्वि.	अनु.	पुष्य	रेवती.	रोहिणी.

अथ गुरूदयवशेन वर्षनामफलम् ।

श्लोकः—नक्षत्रेणसहोदयमस्तं वा येन याति सुरमंत्री।तत्संज्ञंवक्तव्यंवर्षं मास क्रमेणैव॥ १ ॥ कार्तिक्यादिपुसंयोगेकृत्तिकादिद्वयं द्वयम् । अंतोपांत्यौपंचमश्च त्रिधामासत्रयं स्मृतम् ॥ २॥ अथ फलं-सस्यानिघृतकार्पासतैलादिसुखसंचयः। चैत्रवर्षेभवेद्वृद्धिर्नृपसौख्यफलप्रदा १ अर्घं विविधभावेन जायतेद्रविणप्रदम् । नी-रुजानिर्भयालोका वैशाखेजनपूजिताः २ तस्करैः पापरोगैर्वापीड्यंते पीडया जनाः । भ्रमंतेस्वेच्छयाभूम्यांनिर्द्रव्यैर्ज्येष्ठसंज्ञके ३ अर्घमहर्घतांयाति धनधान्यं समंभवेत् । आषाढेस्वल्पवृष्टिश्चतुषधान्यमहर्घता ४ मनोल्हादंप्रकुर्वंतिजनाः सौख्यसमायुताः । श्रावणेवृष्टिरत्युग्रागोमहिष्यादिकं सुखम् ५अर्घमहर्घतांयाति धनधान्यं समं भवेत्।मघवावर्षतिस्वच्छं संपदोभाद्रवर्षके ६ सुभिक्षंपूर्वसस्यंस्या ज्ज्वररोगाकुलंजगत् । आश्विनेशोभनावृष्टिर्नृपसौख्यकरीसदा ७ पापबुद्धिरता लोकाभवंतिकार्तिकेसदा । देवतानैवमन्यंतेराज्यंत्रतस्करैर्हृतम् ८कार्पासादिम-हर्घंस्याद्रोधूमाषतिलादिकम् । मेघोवर्षतिदेवोवामार्गशीर्षेविशेषतः ९ ज्वर-रोगक्षुधार्तांश्चनानाजनपदाः सदा । महर्वंतुत्रयोमासापौषेस्वास्थ्यंततःपरं १०सु भिक्षं पूर्वयाम्यायां मध्यमंपाश्चिमेतथा।उत्तरेरौरवंमाघेवर्षेधान्यमहर्घता ११ सु-भिक्षंप्रचुरावृष्टिरुत्तरेयाम्यपश्चिमे । पूर्वस्यांरौरवंघोरं फाल्गुनेवत्सरे शुभम् १२ इति गुरुवर्षफलम् ।

अथ अधिकमासफलम्।।स्वल्पवृष्टिर्भवेन्मेघोधनधान्यसमाकुलम् । घृतंतै-लंच कार्पासंसुभिक्षंमाधवद्वये १ विड्वरंभूमिपाद्भीतिरतस्करादिभयंभवेत् । घृतंतै-लंतथाधान्यंसमर्घंस्याद्विज्येष्ठके २ सुभिक्षंशुभवृष्टिश्चधनधान्यसमाकुलम्।घृतं-तैलं चकार्पासं सुभिक्षंचैत्रकद्वये ३तुषधान्यादिवृद्धिः स्यात्पशुरोगोतिवृष्टितः । राज्ञांसुखकराभूमिराषाढद्वितयंयदा४ द्विश्रावणेतिदुर्भिक्षंस्वल्पवृष्टिर्महद्भयं।पाप-बुद्धिरतालोका राजानःक्रूरशासनाः ५ द्विभाद्रे क्षेममारोग्यंसस्यनिष्पत्तिरुत्त-मा । बहुक्षीरघृतागावोवृष्टिः कार्तिकसम्मिता ६ सस्यंमहर्घतांयातिस्वल्पवृष्टि-र्भयंनृपात् । शारदानि चस्वल्पानि गजबाधाश्विनद्वये ७इत्यधिकमासफलम् ।

अथ गुरुचारशनिचारफलं प्रारभ्यते.

अथातः संप्रवक्ष्यामि गुरुचारमनुत्तमम्। अनेनगुरुचारेणप्रभवाद्यब्दसंभवः १ मेषराशौयदाजीवस्तत्रसंवत्सरस्तदा।प्रवद्धनामाजलदोवर्षाचसर्वतोमुखी २सुभिक्षंविग्रहोराज्ञांसमर्घवस्त्रकर्पटं।हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ३ मंजिष्ठा नारिकेलंचपट्टसूत्रंसमर्घता। कांस्यंलोहंतथैवेक्षुपूगादीनांचसंग्रहः ४ राजपीडा-महारोगोद्विजानांकष्टसंभवः। मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्भाद्रपदेपुनः ५गोधूमशालिमाषाणामाज्यस्याग्रेमहर्घता।दक्षिणस्यामुत्तरस्यांखंडवृष्टिःप्रजायते ६ दक्षिणोत्तरयोर्देशेछत्रभंगोपिकुत्रचित्। दर्भिक्षमपिषण्मासादाश्विनेफल्गुनेतथा ७ पश्चात्सुभिक्षं द्वौमासौनाम्नामेघोजलंद्रकः।कार्तिकंमार्गशीर्षेचकार्पासान्नमहर्घता ८ मेदपाटेराजपीडादेशभंगोल्पवर्षणम्। लोकाः सरोगादुर्भिक्षंपौषेरसमहर्घता ९ वाणिज्येसंशयोलाभोवैशाखेदुर्जरारसाः। छत्रभंगस्तथाषाढेश्रावणेचाभयं युधि १० नवीनोजायतेराजाकश्चिन्मेघोपिकार्तिके। धान्यादिसंग्रहेलाभस्त्रिगुणोमासपंचमे ११ अब्दमध्येयदाजीवः क्रमाद्राशित्रयंस्पृशेत्। तदासुभटकोटीभिःप्रेतपूर्णावसुंधरा १२ उदग्वीथींचरञ्जीवः सुभिक्षक्षेमकारकः। मध्यमेमध्यमंचार्थमेवमन्येपिखेचराः १३ एषराशिफलंभेदविशेषः शेषमत्रगुरुगम्यमशेषं।द्वेषमत्रगुरुचारविचार संग्रहेभजतुजातुनकश्चित् १४इतिमेषराशिफलम्।

वृषराशौयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा।नंदशालीभवेन्मेघःसर्वधान्यसमर्घता १५ वैशाखेआश्विनेमासेक्षीणारोगाश्चदंतिनाम्। अश्वानांचमहापीडागृहेवैरंपरस्परम्। १६ उत्तरस्यामनावृष्टिर्दुर्भिक्षंमंडलेकचित्। पूर्वस्यांचमहासौख्यंराजबुद्धिविपर्ययः १७ घृतं तैलंचं मंजिष्ठामौक्तिकंचप्रवालकम्। लवणंरक्तवस्त्रं चनारिकेलंसमर्घता १८ गोधूमाः शालिचणकामुद्गामाषास्तथातिलाः। महर्घाःश्रावणेज्येष्ठेमेघानांचमहाजलम् १९ शृगालकेमालवेचउत्पातोराजनिग्रहः। देशभंगाद्भयंभूरिघृतधान्यमहर्घता २० मेदपाटेग्रीष्मर्तौसमर्घं धान्यमीरितम्। मरौधान्यंघृतंतैलंमहर्घधातवोन्यथा २१ अश्वरोगश्चतुष्पादनाशः पीडागमः क्वचित्। आषाढेश्रावणेवर्षानवर्षाभाद्रपादके २२ सिंधुदे-

शेनागपुरेश्रीविक्रमपुरस्थले । धान्यंमहर्घंसमर्घं मेदपाटे तदाभवेत् २३ मासद्वयंसंग्रहः स्याद्धान्यानांचततोऽशुभम् । दुर्भिक्षंमासदशकेमार्गरोधः प्रजाक्षयः २४ मुनिवृषगैर्वृषभतोगुरौफलंसकलमेवमादिष्टम्। जिनवृषदृष्टया-नवलादचलासर्वत्रसरसास्यात् २५ इतिवृषराशिफलं मिथुनेसंगतेजीवेज्ये-ष्ठाख्योवत्सरो भवेत्।वालानांदोपमश्वानांखंडवृष्टिस्तदाभवेत्२६ कर्कोटकोय-दामेघोगंडूपदोमतांतरे। तस्करैः पीड्यतेलोकःपापोपहतमानसैः २७ पश्चिमा-यांसिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि। चित्राविचित्राजायंतेरोगाः पीडोत्तरापथे २८ श्वेतवस्त्रंतथाकांस्यंकर्पूरंचंदनादिकम् । मंजिष्ठानालिकेरंचपूगीस्वर्णंचरूप्यकम् २९मासानांपंचकंयावत्समर्घंचित्रतोभवेत् । पश्चान्महर्घंपूर्वोक्तंधान्यानांचसम-र्घता३०पूर्वाग्नियाम्यनैर्ऋत्यामीशानेचसुभिक्षता। श्रावणेतुमहत्कष्टंमहिषीणांच हस्तिनां ३१ राजयुद्धंप्रजावृद्धिः सुभिक्षंमंगलंभुवि।समर्घं तैलखंडादिशर्कराधा-तवोपिच ३२ सृगालदेशेचोत्पाताःक्रयाणकेपुमंदता। महावर्षाघृतंधान्यंसमर्घं चगुरुस्तथा ३३ शुंठीमरीचपिप्पल्योमंजिष्ठाजातिकोशकाः । महर्घमेतद्वस्तु स्यात्फाल्गुनेधान्यसंग्रहः ३४ कार्पासलवणंगुडतिलगोधूमयुगंधरीचणकमु-द्गान्। ग्राह्यविक्रयक्रयतस्त्रिगुणोलाभस्त्रिमासांते ३५ गुरुरपिमिथुननिलीनःसा-रस्यंमनस्यंतः करोतिजने। व्यभिचारचारचर्याबलात्कचिद्देशभंगभयम् ३६ इति मिथुनराशिफलम् ३ कर्कोगुरुस्तथाषाढवत्सरेतत्रजायते । पूर्वदक्षिणयोर्मे-घोमध्यमंकंबलाभिधः ३७ महर्घसर्वधान्यानांकार्तिकेफाल्गुनेतथा। पश्चिमाया सिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि ३८ क्षयश्चतुष्पदानांस्याद्दुर्भिक्षंमृगसैन्यकम् । हेमरूप्यं तथा ताम्रंपट्टसूत्रंप्रवालकं ३९ मौक्तिकंद्रव्यमन्नादिलोको-त्त्या लोकविक्रयः । मंजिष्ठाश्वेतवस्त्राणांमहर्घंसुजटक्षयः ४० गोधूमशा-लितैलाज्यलवणादिगुडंपुनः। मापामहर्घंजायंतेपापकर्मरतोजनः ४१ कार्तिक द्वितयेधान्यंघृतंतैलंमहर्घता।पट्टसूत्रंचवस्त्राणिजातीफललवंगकं ४२ मीरचंशी तकालेपुसंग्राह्याणिवणिग्जनैः।विशाखज्येष्ठयोर्लाभोद्विगुणस्तस्यविक्रयात् ४३ वर्षाकालेमहावर्षासर्वधान्यमहर्घता शुभिक्षंतिलकार्पासचणक्यानांगुडस्यच४४

गोधूममाषतुवरीयुगंधरीमुद्गकोद्रवादीनां ।आषाढेसंग्रहतोलाभःपुनरुद्भवोद्विगुणः ४५ इतिकर्कराशिफलं। सिंहेजीवेश्रावणाख्योवत्सरोवासुकिर्घनः।बहुक्षीरघृता गावोजलपूर्णाचमेदिनी ४६ देवब्राह्मणपूजास्यात्नराणांमान्यतासताम्। रोगाविवाहश्चान्योन्यंचतुष्पदमहर्घता ४७ म्लेच्छदेशेमहायुद्धंछत्रभंगश्चविड्वरम्।उद्वसः क्रियतेलोकः पश्चिमोत्तरवायुषु ४८ गोधूमतिलमाषाज्यशालीनांचमहर्घता। सुवर्णरूप्यताम्रादिप्रवालानां समर्घता ४९सुभिक्षंसर्वदेशेचमेघोप्याषाढभाद्रयोः। श्रावणेवृष्टिरल्पैवसुकालः कार्तिकेस्मृतः ५० सोपारीखोपराडोडामंजिष्ठशुंठिखारिकाः। पट्टकूलंजातिफलंकर्पूरंसुमहर्घकं ५१ उदकाले गुरुः खंडाहिंगुश्री श्चित्रशर्करा। महर्घमेतद्वस्तुस्याद्धान्यस्यातिसमर्घता ५२ज्येष्ठेष्टस्कंदकैर्धान्यंलभ्यंतेमणमानतः।स्कंदकैःपंचविंशत्याघृतंतैलंतुविंशतेः ५३ स्कंदकैर्दशभिर्लभ्यागोधूमामणसंमिताः।धान्यकार्पासतैलादिरससंग्रहणंशुभम् ५४ फाल्गुनेरत्नतो ज्येष्ठाल्लाभोद्विगुणतः परं। गुरौसूर्यग्रहप्राप्तेसर्वत्र भ्रामिकोदयः ५५ इतिसिंह राशिफलम्।कन्याभोगेगुरोर्जातेमेघनामतमस्तमः।भाद्रसंवत्सरस्तत्रसप्तमासान्न रौरवम् ५६ ततःपरंसुभिक्षंस्यात्कार्तिकान्माघवावधि ।आयः संग्रहणाल्लाभो द्विगुणोभाद्रमासतः ५७चतुष्पदानांपीडापिगोधूमशालिशर्करा।तैलमाषामहर्घाः स्युर्गुडादीक्षुरसस्तथा५८ शूद्राणामंत्यजानांचकष्टंसौराष्ट्रमंडलं। खंडवृष्टिर्दक्षिणस्यामुत्पातान्म्लेच्छमंडले ५९भेदपाटेशृगालेचपरचक्रभयंरणं । सर्वदेशेवह्निभयंमेघोल्पश्चरसाल्पता६०मरुदेशेछत्रभंगश्चैत्रेवामाधवेभवेत्, । गोधूमघृततैलानिमहर्घाणिसमादिशेत् ६१वस्त्रकंबलधातूनांरत्नादेश्चमहर्घता।आषाढेधान्यसंदोहोभाद्रेलाभश्चतुर्गुणः ६२ इतिकन्याराशिफलं ६ गुरोस्तुलायांमेघःस्यात्तक्षकोवत्सरोश्विनः । तदातिवृष्टिर्मंजिष्ठानारिकेलमहर्घता६३अन्योन्यंराजयुद्धा निसमर्घभोज्यतैलयोः । मार्गशीर्षेतथापौषेद्वयोर्धान्यस्यसंग्रहः६४लाभः स्यात्पंचमेमासेमार्गादारभ्यचैत्रतः ॥छत्रभंगस्ततोराजविग्रहःकापिमंडले६५ उत्पातोमरुदेशेस्यान्मार्गेभयंचचोरतः । कोटजेसलमेर्वाधैः परचक्रागमोमतः ६६ स्कंदकैर्दशभिश्चैकमणधान्यंचउच्यते । कार्तिकेमार्गशीर्षेवामेघस्त्वाषाढके

महान् ६७ त्रयोदशस्कंदकैश्चपंढामणमवाप्यते । पंचाशतस्कंदकैर्मिश्रीशर्करा मणविक्रयः६८रसक्रयाणकादीनांसंग्रहेणचतुर्गुणः । लाभश्चतुर्थमासेस्याद्वातू- नांचमहर्घता ६९ इतितुलाराशिफलं ७ वृश्चिस्थेगुरौसोमेमेघः कार्तिकमा- सतः । संवत्सरः खंडवृष्टिर्धान्यमल्पंभयंमहत् ७० गृहेपरस्परंवैरमष्टौमासानसं- शयः ।भाद्राश्विनेकार्तिकाख्याश्चयोमासामहर्घता ७१ ततः सुभिक्षंजायेतमंद वृष्टिश्चमंडले । पश्चिमायांजीववृष्टिर्दुर्भिक्षंवायुमंडले ७२हेमरूप्यकांस्यताम्रति- लाज्यश्रीफलादिषु । महर्घंगुडकार्पासलवणश्वेतवस्त्रकम्७३महिषीवृषभाश्वाः समर्घाधान्यमंडले ।तीडानांम्लेछलोकानांमहोत्पातश्चसंभवेत् ७४ शृगालदेशे कटकं रोगोश्वमहिषीषुच। राजीनिचमहर्घाणिहिंगुखारिकखोपराः७५देशभंगः स्वल्पवृष्टिस्तृणानामपिदुः खिता । मरौतथानागपुरेदेशे क्लेशाकुलाः गजाः७६ गोधूमचणकतुवरियुगंधरीमाषमुद्गकंगुतिलाः।संग्राह्यास्तेमासाःपंचपरंविक्रयाद्द्वि गुणलाभः ७७ इतिवृश्चिकराशिफलम् ८ धनुर्गुरौहेममालीमेघसंवत्सरस्तदा । मार्गशीर्षेदिव्यवृष्टिः स्त्रीणांपीडागृहेगृहे ७८ पूर्वकालेभवेद्धान्यंगोधूमशालि- शर्कराः।कार्पासश्चप्रवालानिकांस्यलोहंघृतंत्रपु ७९ हेमंरूप्यंमहर्घाणितिलतैलं गुडस्तथा । पूगीफलंश्वेतवस्त्रंमहर्घंचक्वचिद्भवेत् ८० मार्गशीर्षादिचपुनर्ज्येष्टे यावन्महर्घता । महिषीवाजिधेनूनांमंजिष्ठायामहर्घता ८१ देशभंगश्चदुर्भिक्षं क्वचिन्मारकसंभवः ।संजातेशीतकालेथग्रीष्मेम्लेच्छजनक्षयः८२श्रावणे धान्य- कलसीत्रिंशतास्युष्टकैर्भवेत्।पंचाशत्स्कंदकैराज्यंमणंभाद्रेगुडोमहान्८३आश्वि- नेरोगितासर्पदंशोधान्यमणंपुनः।दशभिःस्कंदकैराज्यंमणैस्त्वावाद्भिरेवच८४खंड- लभ्यासेरमिनाएकेनस्कंदकेन च।गुडेसितोपलापंचमहर्घत्वंक्वचिद्भवेत् ८५कुल- त्थकामसूरान्नंरक्तवस्त्रंमहर्घकम् । तथैवगोधूमयवाश्छत्रभंगश्चगौर्जरे ८६मार्ग शीर्षतथापौषेमंजिष्ठाहिंगुमौक्तिकं । जातीफलंचसौपारीप्रवालानाम्महर्घता८७ चतुष्पदादिकार्पासंसंग्रहोरसमासकान् । तल्लाभःसप्तमेमासेप्रोक्तोव्यक्तैश्चतुर्गुणः ८८ इतिधनराशिफलं९गुरौमकरगेमेघोजलदःपोषवत्मरः । चतुष्पदक्षयोभूम्यां दुर्भिक्षंनिर्जलोजनः८९ मार्गशीर्षाद्धान्यनम्नुसंग्रहः क्रियतेतदा । विग्रहश्चमहा

घोरोराज्ञांबुद्धिविपर्ययः९०उत्तरे पश्चिमे देशेखंडवृष्टिःकदापिच ।पूर्वस्यादक्षि-
णस्यांचदुर्भिक्षंराजविड्वरम्९१पापबुद्धिरतालोकाहाहाभूताचमेदिनी । तिलतै-
लाज्यदुग्धान्नरक्तवस्त्रमहर्घता९२उत्तमामध्यमाः सर्वेसर्वभक्षणतत्पराः । क्षत्रि-
याणांछत्रभंगोम्लेच्छानांचततःक्षयः९३ चैत्राश्विनापाढमासास्त्रयोमहर्घहेतवे ।
पश्चाद्धान्यंसुभिक्षंस्यात्प्रजा पीडाचतस्कराः९४हेमरूप्यं ताम्रलोहंकर्पूरंचंदना
दिकं।महर्घेनर्मदातीरेअन्यदेशेशुभंभवेत्९५मेघोमालपदेदेशेभंगोवर्पानभूयसी ।
व्याधयोचहुलारूप्यधातूनांचमहर्घता ९६ मेदपाटेचकटकेमार्गशीर्पेपिपौपके ।
महाजनानांपीडापिछत्रभंगोमहाभयं९७देवग्रामपुरादीनांलुंठनंयुद्धसंभवः ।शाल
योयवगोधूमामहर्घाःस्युस्तथा रसः९८खंडाधान्यगुण्डानाम्मंजिष्ठायाःसितोपला
दीनाम्। सर्वत्रमहर्घत्वंचैत्रेचफाल्गुनेमासे९९ घृततैलपट्टसूत्रकंबलवस्त्राणिचेक्षु
रसवस्तु । आपाढेतुमहर्घमेघोल्पोपिचसुभिक्षंस्यात्१०० दशकैःस्कंदकैर्धान्यं
मणंपोडशभिस्ततः । पंचदशभिस्तैलंचतुर्भिः शेपधान्यकम् १ इतिमकरराशि-
फलं१० कुंभेगुरौवज्रदंष्ट्रोमेघोमाघादिवत्सरः। सुभिक्षंजायतेतत्रक्वपिदेवद्विजा-
र्चनम् २ कांस्यंचपित्तलंलोहंमंजिष्ठात्रपुकांचनम् । एपांमासत्रयंयावत्समर्घ-
त्वंप्रजायते ३ मौक्तिकंचप्रवालानिमंजिष्ठापट्टकूलकं । पूगीरूप्यंनालिके-
रंश्वेतवस्त्रंमहर्घकम् ४ फाल्गुनमाघचैत्रेपुरोगामासत्रयेमताः । महर्घलवणं
लोकेमरौधान्यमहर्घकं १०५ चैत्रवैशाखयोः सिंधुदेशेकटकचालकः ।
वस्त्रकंबलहिंगूनाम्महर्घताप्रजायते ६ कार्तिकेचाश्विनेरोगाश्छत्रभंगोमह-
द्भयम् । रसकार्पासवस्त्राणांसर्वत्रस्यान्महर्घता ७ आपाढेमणगोधूमाश्चतुर्भिः
स्कंदकैर्मता । अष्टादशभिराज्यंचतैलंतैर्मनुसंमिते ८ श्रावणेचाभाद्रपदेधान्यं
संगृह्यतेतदा । पौपेस्याद्द्विगुणोलाभो युगंधर्याश्चविक्रयात् ९ इतिकुंभरा-
शिफलं मीनेगुरौफाल्गुनेस्याद्वत्सरः संभवोघनः -। खंडवृष्टिर्महर्घा-
णिसर्वधान्यानिभूतले ११० वायुरोगस्यपीडाचदेशांतरंव्रजेज्जनः ।
मासानांपंचमंयावद्भयंराजविरोधतः ११ पश्चात्सुखंसुभिक्षंचशालिगोधूम-
शर्कराः । तिलतैलगुडानांचमहर्घत्वंसमीरितम् १२ मंजिष्ठानारिकेलानिश्वेत-

वस्त्रंचदंतकाः । कर्पूरलवणाज्यानांमहर्घत्वंप्रजायते १३ चतुष्पदानां मरणं वैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् । आषाढे श्रावणे धान्यघृततैलमहर्घता १४ श्रावणस्योत्तरेपक्षेमहावर्षा प्रजायते । घृतंसमर्घंभाद्रपदेशुभावाश्विनकार्तिकौ १५ समर्घास्तिलकार्पासाश्छत्रभंगस्ततोर्बुदे। मार्गशीर्षेतथापौषेह्युत्पातोमरुमंडले १६ ग्रीष्मेकटकसंग्रामे चतुष्पदमहर्घता । स्यान्नागपुरदुर्भिक्षं वर्षाकाले सुभिक्षता १७ इति कतिपयशास्त्रात् । वीक्षणाद्गौरवेणगुरुचारितविचारः स्फार बोधायवृद्धः । इहमतिरतिशायीनैव युक्ता प्रयुक्तादविकलफललाभोवाक्यतोयं यतःस्यात् १८ ॥ इतिनक्षत्रसंवत्सराणांनामगुरुचारविचारः ॥

अथ विशेषशनिचारफलम् ।

सद्योबोधायगद्येनविस्तरेणनिगद्यते॥शनैःशनैःशनैश्चारः फलं शास्त्रविमर्शतः १ मेषराशौयदासौरिस्तदापश्चिमायांराजविग्रहः वस्तुमहर्घता नृपतेर्भयं गुर्जर गौडसौराष्ट्रदेशेषु धान्यमहर्घता द्विगुणो व्यापारेलाभः छत्रभंगः राशिभोगात्परतः उत्पातबहुलामही तथा महीनदीपार्श्वेपीडा राज्ञामुपद्रवः मेघाबहवः सप्तधान्यानियुगंधर्यादीनिसंगृह्यंते मासचतुष्टयानंतरेविक्रये द्विगुणलाभः गुर्जरदेशे अहिफेनगुडशर्कराखंडागोधूमबाजरचवलाविक्रयेलाभः सुवर्णरूप्यलाभः प्रथमं शनैश्चरसप्तमासराशिभोगतः पश्चादुत्पातचालका भूकंपगर्जितैः कचित्फाल्गुनेउपद्रवः तदावस्त्रमहर्घता व्यापारेजयः मालवदेशे घृत शर्करा तैलखोपरारायणः इत्येतानि महर्घाणि कटकचालकः अष्टौमासान् १ इति मेषराशिशनिफलम् १ वृषेयदाशनिस्तदाविग्रहोदक्षिणादिशि परचक्रभयं वैराडदेशे अस्वस्थता पश्चिमापथे दक्षिणस्यांयाति देशउद्वसः अन्नंमहर्घं गोधूमचणक लवणव्यापारेलाभः सुवर्णरूप्यपित्तल कांस्य व्यापारे लाभो मासपट्कंयावत् आषाढादिमासत्रयेमहान् व्यवसायेलाभः अशोरदेशेयुद्धं म्लेच्छहिंदुराज्यस्य क्षयः भाद्रपदेअहिफेनाल्लाभः देवगढदेशेविग्रहः दुर्गभंगः शनैश्चरस्यराशिभोगे एकवर्षानंतरंचमहर्घता तन्मध्ये अजमकःतस्यमाघमासेविक्रयेलाभःइति वृषराशिशनिफलम् २मिथुनेशनिस्तदा पश्चिमायांदुर्भिक्षं राजकुलविग्रहः मालवदेशे

विग्रहः राशिभोगात्मासपंचकतः पश्चात् उज्जयिन्यामुत्पातः दुर्गभंगः सामद्वयात्प- रंदुर्भिक्षं मासं १ यावत् ततोवत्सरेशुभम् धान्यनिष्पत्तिः पूर्वदेशेउत्पातः गुडसमता लवंग केसर एलची पारद हिंगु पानडी रेशम कथीर शुंठि एतानि महर्घाणि क्षत्रियाणांमालवदेशे खंडेजयदुर्गरोधः उच्चवस्तुविक्रयः इतिमिथुनराशिशनि- फलम् ३ कर्कराशिशनिस्तदा मेदपाटदेशे मालवासीमांतम् उद्वसता छत्रभंगोम- हीपतेः राजयुद्धं सबलं मालवदेशे मुगलकटकं तापीनदीतीरेयावत् विग्रहः परंकु- शलं दक्षिणदिशिलोकनाशः ग्रामभंगः श्रावणेधान्यंमहर्घं भाद्रपदेजलोपद्रवः मेघाबहवः आश्विनेवर्षा अहिफेनमहर्घता मासद्वये पुनः समर्घता वापर वस्तु महर्घं घोटकमहिषमहर्घता व्यापारेलाभः इतिकर्कराशिशनिफलं ४ सिंहरा- शौशनिस्तदा अन्नं सर्वत्र निष्पद्यते जलवृष्टिबहुलता मालवदेशेव्यापारेलाभः राशिभोगानंतरंमासदेशागमनंयाति साहिचलाचलत्वंपरम् अन्नं समर्घं शोकबंधु- तुल्याः संग्रामाः प्रतिग्रामंगुडगोधूमचणकतंडुलशालिमसूरान्नघृतादिवस्तु- व्यापारे लाभः पूर्वेसुभिक्षं परं मारीभयं सर्वदेशेषुपीडा व्याकुलता अशुभं संव- त्सरफलं मरीचशुंठिप्रमुखक्रयाणे लाभः ताम्रपित्तलमहर्घता घृततैलादि रस महर्घता कोंकणदेशे तृण मर्सजी समर्घता मालवमध्ये उपद्रवः परं राज्यसुखं कटकविग्रहः पूर्वदेशे वस्त्रलाभः सर्ववस्तुमहर्घं इति सिंहराशिफलम् ५ कन्यायांयदाशनिः तदादुर्भिक्षं चतुर्दिशासु पितापुत्रं विक्रीणाति अन्ननाशः जलवर्षानास्ति गुरुदेशे शिवपुर्यां द्रविडदेशेराजपीडा छत्रभंगः शेषाः सर्वे देशाः शुभा अर्बुददेशे सुभिक्षं शिरोहिमध्ये अन्नलाभः सर्वधान्यसंग्रहे द्विगुणलाभः मासनवकंयावत् धान्यंरक्षणीयंपश्चाद्विक्रयः धातुवस्तु समर्घम् उत्तमवस्तु महर्घं मालवदेशे परस्परविरोधः राजभयाद्भूम्यां किंचिदुत्पातादि अशुभं गुडसमता धान्यं महर्घम् अन्नभयं महावृष्टिः क्रयक्रया- णकानि समर्घाणि इति कन्याराशिफलम् ६ तुलाराशौयदासौरिः सुभिक्षंस्या- च्चराचरम्।प्रजानां सुखसौभाग्यं धनंधान्यंचसंपदः १ बंगालदेशे विग्रहः तत्रैव प्रजापीडा रोगबहुलता कार्तिके महाजनत्रये कष्टं बहुलं बंगाले उत्पातःछत्र-

भंगः अर्धराशिभोगात् परउत्पातः दक्षिणदिशिउपद्रवः गोधूम चणकचोखा भारंगी कांगुणी उडद एतन्महर्घता ज्येष्ठमासादिक्रये द्विगुणोलाभः अन्ये सर्वदेशाःसुभिक्षाःसुस्थाःइति तुलाराशिशनिफलम् ७वृश्चिकेयदाशनिस्तदाहस्ति नागपुरे तद्देशे वैराटदेशे विग्रहः मालवमेदपाटवागड गुजरात सौर उत्तरार्ध देशे एतेषु कटकचालकः अन्नाल्लाभः गोधूमकार्पासमसूरान्नतिल-कापडादिव्यापारेलाभः मासनवक परम् उपद्रवः राज राणा म्लेच्छानां परस्परं युद्धं पातसाहिगृहे क्लेशःमालवदेशेतिपीडा आयांति सर्ववस्तु मूल्यवृद्धि अफीमलाभः ज्येष्ठमासेवृद्धिः अजमोमेथी प्रमुख विक्रयः रोगचालकः वर्षाबहुला इति वृश्चिकराशिफलं८धनेशनिः तदासर्वत्रमहर्घता लोकदुर्बलता तैलतिलदाणा गोधूम चणक चोखा खांड लूंग डोडा असालिनुं अजमोमेथी घृत एतानि वस्तूनि महर्घाणि श्रावणादिमासचतुष्टये मारीपीडा राजसुखम् उत्तरा पथे कटकचालकःइति धनेशनिफलं९मकरेशनिस्तदानंदःसर्वत्र सुभिक्षं राजानिर्भयः आरोग्यं समाधानं तथा कर्पूर पारद जातिफल लूंग खोपराहिंगुजीरा सोपारी आबीरहाली घृत लवण महर्घता मूल्यवृद्धिः आषाढादिमाससप्तकंयावत् अहि-फेनात् लाभःदक्षिणस्यान् अहिफेनमहर्घता चोरभयं देशांतरे महाजनपीडा धन हानिः शास्त्रप्रमाणेन मालवदेशे रोगपीडा प्रथमं वर्षं भयंकरं पश्चात् शुभं देवा भंगः राशिभोगांते इति मकरेशनिफलम् १० कुंभेशनिस्तदा दक्षिण कोंकण महाविग्रहराजक्षयः प्रजाभयंधनप्रलेपः राशिभोगात् माससप्तकंयावत् सर्व-धान्यमहर्घता आषाढादिमासपंचकं यावत् गोधूम मंडूई चीणा मसूर मूंग युगंधरी चोखा उडद चहुला तुवरी कांगणी चाउल बाजरी एतानि महर्घाणि दुष्कालः माघेवृष्टिः प्रबला ततोधान्यविनाशः छत्रभंगः फाल्गुनचैत्रयोर्धान्यसं-ग्रहः अन्यत्र जनानमंति अमार्गेणा मार्गयंति धान्याद्द्विगुणलाभः इति कुंभेशनिफलं ११ मीनेशनिस्तदा दुर्भिक्षं लोको दुर्बलः मातापुत्रं विक्रीणाति मालवदेशे महर्घता उत्पातः धान्यलाभः दक्षिणस्यां धान्यंमहर्घं मलयदेशे

राजविरोधः प्रजावसति वाखरवस्तुमहर्घता धातुवस्तुसुवर्णरूप्यताम्रत्रपु-लोहमहर्घं सर्ववस्तुषु वाणिज्यलाभः इतिमीनराशिफलम् ॥

इति श्रीमनुरचितेदेवज्ञविनोदेसुभाषाविभूपितेसंवत्सरदशाधिकारीआयव्ययादि-कुयोगसुयोगसारिणीगुरुचारशनिचारादिकथनंनामद्वाविंशतितमविनोदः२२

अथ सस्यजन्मपत्री—जिस समयमें जिस अन्नका जन्म होताहै उसकी जन्म पत्री देखनेकी क्रिया व्यासआदि महर्षियोंने लिखीहै. अतः उसके देखनेकी क्रिया यहां लिखतेहैं प्रथम अन्न बोयेपीछे उगे तिसकी ग्रीष्म शरद यह दो प्रधान ऋतु हैं जिसमें बाजरी,जुवार,चाँवल,मोठ,मूँग,तिलइत्यादि तो ग्रीष्मऋतु (ज्येष्ठआषाढ) में बोयेजातेहैं और यव गेहुं चणा इत्यादि शरद (आशोज कार्तिक) में बोयेजातेहैं जिसमें ग्रीष्मऋतुका बोयाहुवा सस्य तो शारदधान्य कहलाताहै और शरदऋतुका बोयाहुवा ग्रैष्मिकधान्य कहलाताहै.जब वृश्चिककी संक्रांति समयमें गुरु और चंद्रमा कुंभ अथवा सिंहका स्थित हो तो-ग्रीष्म अन्नकी उत्पत्ति अच्छी होतीहै. सूर्यसे दूसरे बुध शुक्र हो अथवा बारवे हो और गुरुकी दृष्टि हो तो निष्पत्ति ग्रीष्मअन्नकी श्रेष्ठ होती है यदि वृश्चिकका सूर्य शुभ ग्रहों करके युक्त हो वा सप्तम ग्रह शुभ हो तो श्रेष्ठ उत्पत्ति समझनी यदि सूर्यसे गुरु दूसरे हो, तो अर्द्धनिष्पत्ति होतीहै सूर्यसे ११ । ४ शुक्र और बुध हो यदि दशमगुरु हो तो सस्य की अच्छी उत्पत्ति होतीहै सूर्यके वृश्चिक प्रवेशसमयमें कुंभका गुरु और वृष-भका चंद्रमा और मंगल शनि मकरका हो तो अन्न अच्छा होवे परंतु प्रजाको रोगादिकोंकी बाधा होती है जब सूर्यसे दोनापार्श्व (बारवे और दूसरे) स्थान पर पापग्रह हो तो अन्नका नाश करे यदि सूर्यसे सप्तम पापग्रह हो तो जन्मे अन्नका विनाश करते हैं यदि दूसरे स्थान सूर्यसे क्रूरग्रह हो और शुभग्र-होंकी दृष्टि नहीं हो तो प्रथमउत्पत्ति हुये अन्नका विनाश करके पीछेके बोये हुयेको सुधारताहै. सूर्यसे सातवे और केंद्र ४ । १ । ७ । १० इन स्थानोंमें पृथक् पृथक् दो क्रूर ग्रह हो तो टीडी वा कातरो वा वृष्टिकी खैंच इत्यादि अनेक अन्नके परिपाकमें विपदा होती है. सूर्य से ६।७ क्रूरग्रह प्राप्त होवे तो

अन्नकी उत्पन्नता तो होवे परंच महर्घता बनीही रहै. एवं जिस महिनेमें जो अन्न बोयाजावे उस महिनेकी संक्रांति करकें बस उसी सूर्यसे उक्त योग देखना वृश्चिक संक्रांनिका जैसा फल लिखा तैसा ही सारे संक्रांतियोंका जान लेनाचाहिये. जिस महीनेका सूर्य शुभग्रहोंकरके युक्त वा शुभग्रहोंकरके दृष्ट वा उक्त शुभ योगोंकरके विभूपित ज्योंज्यों विचरेगा त्योंत्यों उस महीने की उत्पत्ति पाईहुई वस्तुवोंकी सस्ती और पुष्टिकरता चलाजायगा और इसी विधानसे पापग्रहोंकरके युक्त और पापग्रहों करके दृष्ट वा उक्त कुयोगोंसे विभूपित ज्योंज्यों रवि आगे बढेगा त्यों त्यों उस महीनेकी औत्पात्तिक वस्तुवोंकी तेजी और क्षीणता करता चलाजायगा इति सस्यजातकम् ।

अथवृष्टिअवरोधकयोगों के जाननेकी विधिः—वर्षाऋतुमें रविके अंशोंसे आगे मंगल चले और सूर्य मंगल एकराशिका होवे तो वर्षाका अवरोध होताहै. १ यदि बुध और शुक्र. एक राशिका होवे और उनके बीच अंशोंसे सूर्य होवे तो वर्षा वर्षणका अवरोध कुयोग कहलाता है. २ जब बृहस्पति और मंगल एक राशिका होवे तो चतुर्मासमें वृष्टिको रोकताहै. यदि वसंतादि अन्य ऋतुवोंमें उक्त योग होवे तो वृष्टि होती है. ३ और सिंह कुंभका राहु केतु क्रूरग्रहों करके युक्त होवे और क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट होवे तो वर्षा वर्षणमें बाधा होतीहै. और ऐसे ऐसे अनेक योग वर्षाके अवरोधक हैं परंच इनमें विशेष योग इन्हीकोही समझना चाहिये अब यहां और भी कितनी वस्तुओंकी महर्घता का योग लिखे जाते हैं. ज्येष्ठा नक्षत्र ऊपर रवि और मंगल होवे तो एक मासतक गेहूं वगैरे अन्न महंगा रहै. १ सूर्य और केतु भरणीनक्षत्र ऊपर होवे जब लवण महंगा होवे २ अनुराधाका शनि और ज्येष्ठाका गुरु होवे तो प्रजामें जंग मचे और अन्न महंगा होवे ३ धनका शनैश्वर और मिथुनका मंगल इन दोनों ग्रहोंके साथ राहु केतु आर्द्रा और पूर्वाषाढका होवे तो अन्न और रस महंगा करे. और ऐसा योग वर्षाऋतुमें होवे तो वर्षाकाभी अवरोधकरे ४ धनिष्ठाका शनैश्वर और मंगल

होवे तोभी वर्षाका अवरोध करे ५ शततारका नक्षत्र ऊपर गुरु और चित्रा नक्षत्र ऊपर मंगल यदि ऐसा योग माघ फाल्गुनमें होवे तो गेहूंकी फसलको अवश्यमेव बिगाड़ेगा ६ आर्द्रा नक्षत्रऊपर शनि और राहु प्राप्ति होवे तो उस वर्षमें वर्षाका अवरोध करके दुर्भिक्षका संभव करेगा ७ वृष का राहु और मंगलका योग होवें जब अन्न खरीदनेवालोंको ६ मासके लगभग दूना नफा मिलता है ८ वृषभराशिका सूर्य शनि और मंगल होवे तो एकमास वर्षाका अवरोध रहै. उत्तराभाद्रपदाका शनि और विशाखाका मंगल कर्कका बृहस्पति होवे तो दुर्भिक्षका संभव है.९ उत्तराभाद्रपदा और हस्त इन दोनों नक्षत्रोंपर राहु केतु होवें तो रस और कार्पासकी महँगाई करैं. यदि एकपर होवे तो शून्यफल समझना चाहिये. १० वृश्चिक और मेषके शुक्रमें अन्न महँगा होताहै. ११ मकर और कुंभके सूर्यमें वस्त्र महँगा होताहै. मकर और कुंभका राहु शनि और बुध होनेसे द्विपद और चतुष्पद प्राणियोंको महा दुःख होता है १२ मेष और वृश्चिकमें राहु केतु मंगल और शुक्र सूर्य होनेसे गुड और कार्पास महँगा होता है. १३ मेष और वृश्चिकका राहु और शनि होवे तो ताम्र महँगा होता है. इति संक्षेपतो महर्घयोगः ॥

अथ समर्घ्ययोगाः—संसारमें एक कहानी चलती है कि, मारनेवालेसे जिवानेवाला बहुत प्रबलहै. सो यह बात सत्य है. क्योंकि अनुभव करनेमें आता है कि, महर्घ्य योगोंमें समर्घ्य योग यदि आजावे तो समर्घ्यकी प्राबल्यता विशेष रहती है. जिसके लिये यहां कितनेही समर्घ्य योग दिखलाये जाते हैं. शनि और राहु एक राशिपर होवें तो अन्न सस्ता करे १ बुध और शुक्र मंगल आश्लेषा नक्षत्र ऊपर होवे तो राज्य प्रजामें आनंद और अन्न सस्ता रहै २ मूलका शनैश्वर स्वातिका बुध होवें तो अन्न सस्ताकरे ३ आर्द्राको बृहस्पति रस और कार्पासकी मंदी करे ४ श्रावणका बुध शुक्र और पूर्वाषाढका गुरु होवे तो अन्न और रस कार्पासकी मंदी करैं. ५ मघा और धनिष्ठाका गुरु मृगशीर्षका राहु होवे तो अन्नकी मंदी करै.६ बुध और

शुक्र सूर्य एक राशिका होवे तो सर्वधान्यकी मंदी होवे ७ बुध शुक्र और सूर्य एकराशिका होवे जिसमें सूर्यके आगे बुध शुक्र होवे तो वर्षा श्रेष्ठ होती है. ८ सूर्यके अनुगामी भौम होनेसे वर्षा अच्छी होती है. ९ कृत्तिका और उत्तराभाद्रपदाका गुरु होनेसे चांदी और कार्पास रस और चावल इन्होंकी मंदी होती है. १० सूर्य बुध और गुरु शुक्र एक राशिका होनेसे अन्नकी और रसकी मंदी होती है. ११ विशाखाका और भरणीका शुक्र गुरु होनेसे अन्न और कार्पासकी मंदी होती है. १२ पुनर्वसुका शुक्र होनेसे कार्पास मंदा होता है. १३ श्रवण और धनिष्ठाके शुक्र और गुरु होनेसे गेहूंकी मंदी होती है. १४ अधिकमासमें यदि भौमका राशिचार होवे तो वर्षा श्रेष्ठ होती है. १५ जब कर्ककी संक्रांति प्रवेश समयमें कुंभ मीनका चंद्रमा होवे तो चारमासही श्रेष्ठ वर्षा होती है. १६ शनैश्चरसे नवम पंचम और सप्तमस्थानपर चंद्रमा होवे और गुरु शुक्रकी पूर्णदृष्टि होवे तो वर्षा बहुत श्रेष्ठ होतीहै. १७ शुक्रसे सप्तमराशि ऊपर चंद्रमा होवे और गुरुकी पूर्ण दृष्टि होवे और वर्षाका अवरोधक योग होवे नहीं तो वर्षा बहुत श्रेष्ठ होती है. १८ तुला राशिका शुक्र और भौम होवे तो अन्नकी मंदी होती है १९ आगे सूर्य मध्यमें बुध और पीछे शुक्र ऐसा योग होवे तो अन्नकी मंदी होती है २० यहाँ ध्यान देना चाहिये कि, ऐसे ऐसे महर्घ्य समर्घ्य योग अनेक हैं परंच जिस जिस योगोंमें हमारी श्रद्धा जमी वही यहाँ लिखेगये हैं बाकी और योगोंकी जिनको अपेक्षा होवे तो वर्षप्रबोध, संवत्सरी, मेघमाला, भड्डली, नारदसंहिता, बृहत्संहिता इत्यादि ग्रंथोंमें देख लेवेंगे अथ वनस्पतिके विशेष फल फूलोंसे वस्तुओंकी उत्पत्ति जाननेकी विधि–जिस वर्षमें पीपलके फूलफल अधिक आनेसे सर्व धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती है १ वटके फल फूल अधिक आनेसे चावल अच्छा होता है २ जांबूके फल फूल अधिक आनेसे तिल और उड़दकी उत्पत्ति होती है ३ शिरीषके फल फूल अधिक होनेसे माल-कॉंगनी अच्छी होती है ४ कुंदके फूलोंसे कार्पासकी वृद्धि श्रेष्ठ होतीहै ५

चित्रकके फल फूल अधिक होनेसे सरसोंकी उत्पत्ति श्रेष्ठ होती है ६ बदरी (बोर) के फल फूल अधिकके कारण कुलथी अन्नकी उत्पत्ति होती है ७ करंजके फलफूल अधिक होनेके कारण मूँगमोठकी उत्पत्ति अच्छी होती है. ८ कुशा और दूर्वाके विशेष बढनेसे पौंडा (गुड खाँड) की साख अच्छी होती है ९ नींबके फल फूल अधिक होनेसे संवत् श्रीकार होता है १० शमी (जांटी) और खैरके फल फूल अधिक होनेके कारण दुःकाल होता है ११ आमके फल फूल विशेष होनेसे प्रजामें कल्याण अधिक होताहै १२ भिलावे के फल फूल अधिक होनेसे प्रजामें रोगकी वृद्धि होती है १३ इसीप्रकार वृक्षोंका नाम तो विशेष (बहुत) हैं परंच उनके ज्ञानविना प्रयोजन सिद्ध नहीं होसक्ता जिससे वे यहाँ नहीं लिखे गये. अथ संक्रांतिके मुहूर्त जाननेकी विधिः—सूर्यसंक्रांति आर्द्रा स्वाति. भ. श. ऽश्ले. ज्येष्ठामें प्रवेश होवे तब १५मुहूर्ती जाननी. म. कृ.ऽश्वि. मृग. चि.ऽनु. मू. श्रव. ध. रे. पुष्य. ह. पूर्वा.फा.पूर्वाषा.पूर्वाभाद्र. इन नक्षत्रोंमें प्रवेश होवे तो३०मुहूर्ती जाननी,रोहि. पुन. विशाखा उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपद उक्त नक्षत्रोंमें प्रवेश होवे तो ४५ मुहूर्ती समझनी चाहिये और पूर्व संक्रांतिके वारसे २ । ३ वार और पूर्वनक्षत्रसे २ ।३ नक्षत्र संक्राति प्रवेश करे और ४५ मुहूर्ती होवे तो धान्यकी समर्घता होती है और पूर्ववार और नक्षत्रसे ४ । ५ वार नक्षत्रमें प्रवेश करे और १५ मुहूर्ती होवे तो धान्यकी महर्घता होती है और शेष फलकी समाधानी समझनी चाहिये ॥

वत्सवास.				राहुवास.				मृत्युवास.				
सि	क.	तु.	पूर्वदि.	वृश्चि.	ध.	म.	पूर्व.	मि.	सि.	क.	म.	स्वर्ग.
वृश्चि.	ध.	म.	दक्षिण	कुं.	मी.	मे.	दक्षिण.	क.	तु.	मी.	ध.	भूमि.
कुं.	मी.	मे.	पश्चिम	वृष.	मि.	क.	पश्चिम.					
वृ.	मि.	क	उत्तर.	सि.	कं.	तु.	उत्तर.	मे	वृ.	वृ.	कुं.	पाता.

संक्रांतिनामफल.					संक्रांतिसमयफल.		
वार	नक्षत्र	न.ना.	नाम	उत्तमफल	काल	नेष्टफल	दिशागमन.
रवि	भ·म·पू·उ	उग्र	घोरा	शूद्रसुखी	पूर्वाह्ण	राज्ञोहंति	पूर्व
चंद्र	अ.पु.ह.अभि.	क्षिप्र.	ध्वांक्षी	वैश्यान्सु.	मध्याह्न.	द्विजान्हं·	पश्चिम
मंगल	पू·स्वा-श्र·ध·श.	चर	महोदरी	चोरसुखी	अपराह्ण	वैश्यान्हं·	दक्षिण
बुध	मृ-चि-अनु-श.	मैत्र	मंदाकि·	राजासु·	प्रदोष	पिशाचान्हं·	दक्षिण
गुरु	रो उ ३	ध्रुव	नंदा	गणकद्वि.सु.	मध्यरात्रि	राक्षसान्हं·	उत्तर
शुक्र	कृ.विशा·	मित्र.	मिश्रा	पशुसुखी	अपररा.	नटान्हंति	पूर्व
शनि	आ·आश्ले·ज्ये.मू.	साधारण	राक्षसी	चांडालसु.	प्रभात	गोरक्षकान्हं	पश्चिम

संक्रांतिकरणोपरिवाहनादिसारिणी.

करण.	बव.	बाल.	कौल	तैतिल	गर.	वणिज	विष्टि.	शकु.	चतु.	नाग.	किंस्तु.
स्थिति.	बैठी.	बैठी.	ऊभी.	सूती.	बैठी.	बैठी.	बैठी.	ऊभी.	सूती.	सूती.	ऊभी.
फल.	मध्य.	मध्य.	महर्घ	नेष्ट.	मध्य.	मध्य.	मध्य.	महर्घ.	नेष्ट.	नेष्ट.	समर्घ.
वांहन.	सिंह.	व्या.	सिंह.	रासभ	हस्ती	महि.	अश्व.	श्वान.	मीढक	बलद.	कुक्कुट.
उपवा.	गज.	अश्व.	बलद	मींढा.	खर.	ऊँट.	सिंह.	शार्दूल	महि.	व्याघ्र.	बंदर.
फल.	भीति.	भीति.	पीडा.	सुभि	लक्ष्मी	क्लेश.	स्थैर्य.	सुभि.	पीडा.	स्थैर्य.	अपमृ.
वस्त्र.	श्वेत.	पीत	हरित.	सफेद	लाल.	श्याम	काला	चित्रक	कंबल.	दिगंबर.	घनवर्ण.
आयुध.	भुशुं.	गदा.	खड्ग.	दंड.	धनुष	तोमर.	कुंत.	पाश.	अंकुश	तल्वा.	तीर.
पात्र.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह.	खप्पर	पत्र.	वस्त्र.	कर.	भूमि.	काष्ठ.
क्षभण.	अन्न.	दूध.	भैक्ष्य	पकवा	पय.	दधि.	चित्रा.	गुड.	मधु.	घृत.	खाँड.
लेपन.	कस्तू.	कुंकु.	चंद.	मोटि.	गोरोच	अल.	हलद	कज्जल	सिंदूर	अगरु.	कपूर.
जाति.	देव.	भूत.	सर्प.	पक्षी.	पशु.	मृग.	विप्र.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र.	मिश्र.
पुष्प.	पुन्नाग	जाती	बकु.	केवड़ा	बिल्व.	अर्क.	दूर्वा	कमल	मोगरा	पाटली.	जाती.
भूषण.	पिरो.	कंकण	मोती.	प्रवाल.	मुकुट.	मणि.	गुंजा.	कौडी.	नील.	काच	सुवर्ण.
कंचुकी.	विचि	पर्ण.	हरित.	भूर्जप.	सित.	पांडु.	नील	कृ.जि.	चर्म.	वल्कल	पांडुर.
वय.	बाला.	कुमा.	गता.	युवा.	प्रौढा.	प्रगल्भा	वृद्धा.	वंध्या.	अति.	पुत्रे.व.	संन्या.सि.

अथद्वादशसंक्रांतिपर्वकाल.

मेष १	पूर्व१५घ.	पर१५घ.	दानमेष.	तुळ ७	पू १५	प. १५	तिळ गोरस दा
वृष. २	१६ घ.	०	गोदान.	वृश्चि ८	१६ घ	०	दीपदान
मिथुन ३	०	१६ घ.	वस्त्रान्न.	धन ९	०	१६ घ	वस्त्रदान
कर्क ४	३० घ.	०	घृत धेनु	मकर१०	०	४० घ	काष्ठ अन्न
सिंह ५	१६ घ.	०	छत्र	कुंभ ११	१६ घ	०	गौड अन्न
कन्या ६	०	१६ घ.	गृह वस्त्र	मीन १२	०	१६ घ	भूमि माळा.

अथ संक्रांतिफलं—रविवारको संक्रांति अर्के जब युद्ध होवे राजविग्रहं होय. सूर्य बहुत तपे, रोगउपजे. धान्य महँगा होय. १ सोमवारको संक्रांति प्रवेश करे तब दक्षिणकी पवनचले धान्य सस्ता होवे सर्व वस्तु सस्ती रहैं रस घृत किराणुँ तेज रहै. लोक महाजन प्रसन्न रहैं. गौ ब्राह्मणकी पूजा और सुख संपदा रहै. २ भौमके दिन संक्रांति प्रवेश होवे तब अन्न महँगा होवे गेहूँ वा लालवस्तु महँगी रहै. विग्रह प्रजामें रहे युद्धकोदंगल होवे.अग्निभय. घृत तैल लवण रस कर्पूर चंदन यह सब महँगे होवें ३ बुधदिन संक्रांति प्रवेश होवे तो रसकस घृत महँगे और वस्त्रकी सस्ती होवे कार्पास (रूई) सस्ती बिके प्रजा को भयकारक और चातुर्मासमें वर्षा कम होवे४गुरुदिन संक्रांति प्रवेश होवे तो पीतवस्तु महँगी और प्रजासुखी.धान्य सस्ता.वहुत अन्न.उत्पन्न होवे.गौ को बहुतदुग्ध और ब्राह्मणकी पूजाकरे ५ शुक्रदिन संक्रांति प्रवेश कियेसे प्रजाको सुख होवे सुवर्ण चाँदी महँगी होवे गो महिषी हस्ती घोड़ा महँगे और रस कस लवण घृत समता रहे. ६ शनिदिन संक्रांति प्रवेश होवे तो लगंतीही महा अशुभ फल कारक है. सर्व वस्तुका क्षय करे. दुर्भिक्षकारक है धान्य महँगा लोक दुखी और रोगकी उपाधिकारक है. अथ संक्रांतिपर्वकालं-निर्णयः—केषांचिन्मतभेदात्त्रिंशत्कथिताःपराःपुण्याः।चत्वारिंशदन्यमुनेर्मता मकरसंक्रमे तु १ यदस्तेवाप्रदोषेवानिशीथेमकरंगते॥भास्करेतूत्तरदिनंपुण्यमि-त्याहमाधवः२ हेमाद्रिरर्धरात्रात्पूर्वंचेत्संक्रमोभवति तदहस्तुपुण्यमेवपरतश्चेत्परे-हनीत्याह ३ तत्त्वंप्रदोषसमयादूर्ध्वंचेत्संक्रमोभवति परदिवसेन्यथासत्तुपूर्वदि-वसेतुपुण्यकालः ४ इतिसंक्रांतिपर्वकालनिर्णयः ॥

+ त्रिंशत्कर्कटेपूर्वो चत्वारिंशत्परामृगे. इतिगोभिलः।

वस्तुनांराशिसारिणी.

श्लोक—य एषां द्रव्याणामधिपतयो राशयः समुद्दिष्टा मुनिभिः शुभाशुभार्थं तानागमतः प्रवक्ष्यामि ॥ १ ॥

मेष.	वृषभ.	मिथुन.	कर्क.	सिंह.	कन्या.	तुल.	वृश्चिक	धन.	मकर.	कुंभ.	मीन.
सोना मसूर कंवल. पस मीनुराळञ्ज ल गेहूँ. यव.	वस्त्र पुष्प. सरसोंगेहूँ यव.चावल महिष बैल	वाजरी. रूई कपास कम लकंद गुवार जुवार मक्का	कोद्र. केला. दूर्वा.जायफ ल.तमालपत्र दालचीनी.	शाली. षट्रस. मृगछा. गुड खांड	जवासा बट ला. कुलथी. मुंग. सफेद. गेहूँ.अलसी	उडद. लाल गोहुं नालि. अर. सरसों हरडे मटर.	गुडखांड. नागरपा. लोहमीठा शर्करा.	रस.घोडा इ. लवण.चित्र. वस्त्र आयुध. लधणुं मूल.	कनीर. सकूट मजीठच. जमीकंद.	रस पोस्त रत्न अमो. चित्र वि. वस्त्.	सॉप. मो. समु.शो. हीरा अत रस.मोती.

श्लोकः—षट् सप्तमगो हानिं वृद्धिं शुक्रः करोति शेषेषु ॥ उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः ॥ १ ॥ इत्यादि इस चक्रको न्यास तथा चक्रका देखना वाराही संहितामें है जिसका उदाहरण जिस वस्तुकी तेजी वा मंदी देखनी हो वा वस्तुकी चक्रमें राशि कौन है ऐसी प्रथम देखनी फिर वा राशिसे कौन ग्रह कौन कौन ठिकाने हैं ऐसा देखना जो वस्तुकी राशिसे गुरु ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशिपे होय तो वा वस्तुकी मंदी करै और १।३।६।८।१२ इतने ठिकाने गुरु होवे तो वा वस्तुकी तेजी करै ऐसे ही २ । ११ । १० ।५ । ८ बुध होय तो मंदी करै और १ । ३ । ४ । ६ । ७ ।९।१२ इतनी जगह बुध होवे तो तेजी करै शुक्र ६ । ७ सदा तेजी करै और १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । १० ।११।१२ शुक्र सदा मंदी करै मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य क्षीणचंद्र यह ग्रह इतनी जगह ३।६।१०।११ मंदी करैं और इन स्थानोंपर १ । २ । ४ । ५ । ७ । ८।९ तेजी करैं ऐसे पूर्णचंद्रमाको फल बृहस्पति सदृश देखना ऐसे नववें ग्रहसे देखके फलकी दोपंक्ति स्थापित करनी जिनग्रहोंमें जियादह बल होवे और तेजी मंदीतरफ जियादह ग्रह होवें वही फल विशेष होता है यह निःसंदेह है फिर ग्रहोंका उच्च मूलत्रिकोणी स्वगृहादि यथावत् बलको निर्धारकरना जैसे कि, एक तरफमें मंदीका करणेवाला चार ग्रह हैं और मंगल मकर को प्राप्त हुवा तो जैसा मंगलका फल विशेष होवे गा ऐसा उन चारोंका नहीं होवेगा.

द्विपंचाशदवधौ रामविनोदजो स्पष्टरविः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
०	६	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	[illegible]	७	१३	२०	१७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	४	११	१८
०	५०	३८	२६	१०	५४	३६	१७	५७	३६	१५	५३	३१	९	४७	२७	६	४७	३०	१३	५९	४५	३४	२४	१६	१०
०	१३	३९	२३	३६	१५	३१	३६	३४	४५	१६	२१	१४	१९	४८	१०	५४	५९	१६	५०	१	४२	६	१३	१४	८
५८	५८	५८	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५९	५९
४५	२९	१२	५७	४५	३४	२३	१३	५	१७	५६	५०	५०	५५	५७	५	१२	२२	३४	४५	५७	१२	२९	४५	०	१६
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
५	६	६	६	६	७	७	[illegible]	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
२५	२	९	१६	२३	०	७	१४	२१	२८	५	१२	२०	२७	४	११	१८	२५	२	१०	१७	२४	१	८	१४	२१
५	३	२	३	६	१०	१५	२२	३०	३९	४८	५८	८	१८	२७	३६	४४	५१	१७	१	४	५	५	३	५९	५३
५१	२१	४०	४३	२०	२३	५३	३८	२	७	२९	१७	१७	८	३५	२४	२४	११	१०	३८	२७	५०	३०	२३	२६	४०
५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६०	६०	६०	६०	६०	५९	५९	५९	५९
३१	४६	२	१८	३०	४०	५३	३	११	१९	२२	२६	२६	२४	१९	१३	४	५५	४२	३१	२०	५	४९	३५	१६	४

द्विपंचाशदवधौ ग्रहलाघवजो स्पष्टरविः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
११	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
२९	३	१३	२०	१७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	४	११	१८
५२	४९	३८	२५	१०	५४	३६	१७	५७	१७	१६	५४	३२	१०	४८	२८	८	४९	३१	१४	५९	४५	३४	२४	१६	९
३३	५५	३९	३३	२१	११	३६	४४	५६	२८	५	२२	४	१७	९	४	३	३	१४	४१	३९	५९	१५	१२	४	४९
५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५९
४४	२८	१४	१	४८	३७	२७	११	१२	५	०	५४	५३	५८	३	१०	१७	२६	३६	४६	५८	११	२५	५९	५७	१५
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
२५	२	९	१६	२३	०	०	१४	२१	२८	५	१२	२०	२७	४	११	१८	२५	२	९	१७	२४	१	८	१४	२१
५	२	२	२	४	९	१५	२१	२८	३७	४६	५५	५	१५	२३	३३	४०	४८	५३	५८	१	३	३	०	५८	५२
२४	५३	१०	३	४३	२७	५	३१	५७	१८	१६	४६	३२	२३	४९	७	५५	२	५३	२२	४९	३६	२७	५७	२३	५६
५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६०	६०	६०	६०	६०	५९	५९	५९	५९
३२	४७	२	१४	२६	२७	४६	५६	४	१३	१५	२१	२२	१८	१३	[illegible]	०	५१	३४	३१	१९	३६	५२	३७	३०	३

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते सस्यजातकादिसंक्रांतिफलकथनं नाम त्रयोविंशतितमो विनोदः ॥ २३ ॥

अथ पंचांगलेखनक्रमः॥श्रीगणेशाय नमः॥ अचिंत्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥ समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥ अथ श्रीमन्नृ-

पतिविक्रमादित्यराज्यात् संवत् शालिवाहनशके,सत्ययुगप्रमाण १७२८००० त्रेतायुगप्रमाणवर्ष १२९६००० द्वापरयुगप्रमाण ८६४००० कलियुगप्रमाण ४३२००० गतकलिः भोग्यकलिः। अथास्मिन्वर्षे राजा मंत्री सस्याधिपतिः धान्येशो मेघेशो रसेशो नीरसेशः फलेशो धनेशो दुर्गेशो एते दशाधिकारिणः वर्षनाम संवत्सरनाम मेघनाम रोहिणिवासः समयनिवासः समयवाहनरोहिणी आषाढकृष्णस्तंभाः सोमवतीअमावास्या सोमवती पंचमी रविसप्तमी अंगारकचतुर्थी बुधाष्टमी रविदशमी ग्रहणं विश्वा शनिदृष्टि उत्पत्ति खपति अगस्त्यउदयं सिंहार्को २८ शे बुधोदयं समयमुहूर्ताः समयदिनानि क्षयतिथिः वृद्धतिथयः पूर्णिमाघट्यादि अमाघट्यादि अनयोरंतरघट्यादि रविदशमी घट्यादि सौभाग्यपंचमीघट्यादि वर्षाविश्वा धान्यं तृणं शीतं तेजो वायुः वृद्धिः क्षय विग्रह अहंकारैक्यं सत्यं धर्म पापं इसके आगे संवत्सर शुभाशुभ और परमेश्वरका नाम लिखना चाहिये अथ वर्षनाम--चैत्र. शुक्ल १ के दिन जिस नक्षत्रऊपर गुरु हो उसीके नामसे मासनाम हो सो ही वर्षनाम समझना और संवत्सर पूर्वोक्त गणितसे लाके फिर लिखना चाहिये अथ चतुर्मेघ लानेकी विधिः—शाकेमें १५१२हीनकरै शेष रहै जिसमें तीन और युक्त करके ४ के भागसें शेष १ आवर्त २ संवर्त ३ पुष्कर ४ द्रोण नाम मेघ होताहै. अथ रोहिणीवासः—मेषसंक्रांतिके समय नक्षत्रसे २ नक्षत्र समुद्रका ३ तट ४ संधि ५ पर्वत ६ संधि७ तट ९ समुद्र १० तट ११ संधि १२ पर्वत १३ संधि १४ तट १६ समुद्र १७ तट१८ संधि १९ पर्वत २० संधि २१ तट २३ समुद्र २४ तट २५ संधि २६ पर्वत २७ संधि२८तट ऐसे गिनके जिस ठिकाने गणनासे रोहिणी नक्षत्र की गिनती प्राप्ति होवे जहांही समुद्रादि निवास लिखना जिसका फल—समुद्रे तु महावृष्टिस्तटे वृष्टिः सुशोभना॥ पर्वते बिंदुमात्रश्च खंडवृष्टिश्च संधिषु॥ अथ समयनिवासः-रोहिणीका वास समुद्रमें हो तो समयका निवास मालीके घर संधिमें वैश्यके घर पर्वतमें कुम्हारके घर रोहिणीतटमें तब रजक के घर समयका नि-

वास कहना अथसमयवाहनाः—सूर्यादिवार संवत्का राजा होवे उसीसे अश्व १ मृग २ वृषभ ३ सिंचाणु ४ चातक ५ दर्दुर ६ महिष ७ उक्त वारों के क्रमसे समयके वाहन समझना चाहिये अषाढकृष्णपक्षकी कृष्णारोहिणी कहलाती है अथस्तंभा चैत्रशुदि १ रेवतीजल वैशाखशुदि १ भरणी तृण ज्येष्ठशुदि १ मृगशीर्षवायु आषाढशुदि १ पुनर्वसु होवे तो अन्नका स्तंभ समझना चाहिये अथ शनिदृष्टिः-मेष वृष मिथुनके शनिकी पूर्वदृष्टि कर्क सिंह कन्याके शनिकी दक्षिण तुला वृश्चिक धनके शनिकी पश्चिम और मकर कुम्भ मीनके शनिकी उत्तरमें दृष्टि होती है अथ उत्पत्ति और खपतिविश्वाः—लाभके विश्वा इकट्ठा करनेसे उत्पत्ति विश्वा और द्वादशराशियोंके खर्चके विश्वा इकट्ठा करनेसे खपति विश्वा होता है. अथ अगस्त्यअस्तोदय-रामगढमें अगस्ति अस्त सूर्य ० । २८ । २४ ऊपर और उदय ४ । २७ । ३६ ऊपर होताहै और देशोंमें पलभासे पूर्वोक्त गणित करके देखलेना चाहिये अथ समयमुहूर्ताः—संक्रांतिके बारह मासके मुहूर्त इकट्ठा करनेसे समय मुहूर्त होताहै अथ समयदिनानिः—बारहमासकी तिथि इकट्ठी करके उसमें क्षयतिथि हीन किये समयका दिन होताहै कार्तिकशुदि पंच सौभाग्य पंचमी कहलातीहै शुक्ल पक्षकी दशमी रवियुक्त होवे सो रविदशमी होती है शुक्ल पक्षकी तिथि जो वार होवे वही वारके नामसे वह तिथि बोली जाती है. बारह मासकी पूर्णिमाकी और अमावास्याकी घटी होती है इन्होंके अंतर करनेसे-अंतर घटी होती है. अथ वर्षादिकोंके विश्वा लानेकी विधि-वर्तमानशाके को ३ से गुणके ७ के भागसे शेषरहे जिसको द्विगुणित करके फिर ५ और युक्त करनेसे वर्षाका विश्वा होता है. एवं ७के भागसे लब्धांकको शक कल्पना करके फिर उक्त विधिसे गणितके लानेसे धान्य तृण शीत तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह पर्यंतके विश्वा होता है. इनसबको इकट्ठा करनेसे अहंकारैक्यके विश्वा होते हैं.

अथ धर्म और पापके विश्वा लानेकी विधिः—कलियुगके गतवर्षोंके २१६००० के भागसे लब्धधर्मका विश्वा और वीसमें हीनकिये पापका विश्वा होते हैं. अथ संवत्के विश्वा लानेकी विधिः—कर्कसंक्रांति प्रवेशके दिन जो वार होवे उसीसे सूर्य १० चंद्र २० मंगल ८ बुध १२ बृहस्पति १८ शुक्र १८ शनि ५ संवत्के विश्वा होते हैं. अथ पुरुष स्त्री नपुंसक नक्षत्र संज्ञाः—आर्द्रादि स्वात्यांत१० नक्षत्रस्त्री विशाखादि ज्येष्ठांत ३ नपुंसक और मूलादि मृगशीर्षांत १४ नक्षत्र पुरुषसंज्ञक समझना चाहिये जिसका फल स्त्रीसंज्ञक नक्षत्रके दिन पुरुषसंज्ञक नक्षत्र ऊपर सूर्य प्राप्त होय तो वर्षा वर्षती है परंच यहां वृष्टिरोधक योग कोई आन पड़ें तो वर्षा नहीं वर्षती है और इसका वाहन भी देखलेना चाहिये—

अथ वाहनानि—सूर्यके प्राप्त नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिनके ९ के भागसे शेषवचे १ अश्व २ जंबुक ३ मंडूक ४ मेष ५ चातक ६ मूषक कोई मतसे मृग ७ महिष ८ खर ९ नाग नक्षत्र वाहन होते हैं अथ वर्ष और वर्षेश कुंडली बनानेकी विधिः—गत संवत्सरकी चैत्रवदि अमावास्याकी घटीके इष्ट ऊपर जो लग्न होवे और ग्रह हो सो वर्षलग्न और मेषसंक्रांति- प्रवेशसमयके लग्नको वर्षेश लग्न समझना चाहिये अथ गर्भलक्षणं—मार्गशीर्ष शुदि १ से जिस नक्षत्रमें बद्दल वायु इत्यादि गर्भ रहा सो १९५ दिनोंसे वर्षता है परंतु मेषसंक्रांतिमें अश्विन्यादि नक्षत्र १० वर्षेतो उक्त दिनमें थोड़ा वर्षता है अथ चंद्रोदय जाननेकी विधिः—रात्रिमानको तिथिके अंकसे गुणकर कृष्णपक्षमें २ हीन और शुक्लपक्षमें २ युक्त करके फिर १५ के भागसे लब्ध घटीः और शेषको ६० गुणके १५ भागसे पल लेनी उक्त घटी पलोंके समय कृष्ण पक्षमें चंद्रमाका उदय और शुक्लपक्षमें चंद्रमाका अस्त समझना चाहिये.

अथ इंग्रेजी महीनोंके नाम—जनवरी मास १ तारीख ३१ फरवरी मास २ तारीख २८ मार्चमास ३ तारीख ३१ अप्रेल मा० ४ तारीख ३० मे मास ५ ता० ३१ जून मा० ६ ता० ३० जुलाई मा० ७ ता० ३१

अगष्ट मा० ८ ता० ३१ सप्टेंबर मा० ९ ता० ३० अक्टोबर मा० १० ता० ३१ नोवेंबर मा० ११ ता० ३० दिसेंबर मा० १२ ता ३१ उक्त इंग्रेजी वर्ष जनवरी माससे और धनसंक्रांतिके १८ अंशके लगभग प्रारंभ होता है और इंग्रेजी सन्के ४ के भागसे शेष ०रहै उसवर्षमें फरवरी मासकी २८ तारीखमें १ और तारीख बढाके २९ तारीख लिखनी चाहिये परंतु शताब्दीमें नहीं बढतीहै अथ मुसलमानी महीनाका नाम—मोहोरम १सफ्फर २ रविलावल ३ रविलाखर ४ जमादिलावल ५ जमादिलाखर ६ रज्जव ७ साबान ८ रमजान ९ सव्वाल १० जिलकाद ११ जिल्हेज १२ उक्त मुगलाई वर्ष मोहोरमसें प्रथम लगताहै और इसकी तारीख चंद्रोदयसे दूसरे दिन प्रथम लिखनी चाहिये अथ मुगलाई तिव्हार—रोजा रमजानकी १तारीखसे सुरु होताहै वह सव्वालकी १तारीखको ईद मनाके पूरा होताहै और जिल्हेजकी १० तारीखको बकरीद और ९ तारीखको हज्ज होती है, और मोहोरमकी १० तारीखको ताजिया साबानकी १४ तारीखको सब्बरात होती है. अथ पारसी महीनोंका नाम फरवर्दिन १ आर्दि बेहस्त २ खोरदाद ३ तिर ४ अमरदाद ५ शेरेवर ६ मेहेर ७ आबान ८ आदर ९ देह १० बहमन ११ आस्पंदाद १२ उक्तमहीने ३० दिनके होते हैं पीछे दिन ५ की गाथा होती है. अथ इंग्रेजी सन् बनानेकी विधि—वर्तमान शाकेमें ७९ युक्त करनेसे इंग्रेजी सन् पौष महीनेसे शुरू होता है. अथ मुसलमानी हिजरी सन बनानेकी विधि—शाकेमें ५४३ हीनकर शेषको २ जगे रखके ६१ के भागसे दूसरी जगेके अंकमें हीनकिये शेषके ३२ के भागसे लब्धको दूसरी जगेके अंकमें युक्त करके १२ के भागसे लब्ध आवे सो हिजरी सन् और शेष रहे सो उसके गतमास समझना चाहिये अथ पारसी सन् (इयजदेजर्दी) बनानेकी विधिः—शालीवाहन शकमें ५५३ हीन करनेसे शेष रहे सो पारसीसन् इसका प्रारंभ भाद्रपद महीनेमें होता है. अथ याहुदी सन् बनानेकी विधिः—शालीवाहन शकमें ३८३८ युक्त करनेसे याहुदी

सन् आसोज सुदि १ के लग भगसे प्रारंभ होता है. अथ दिनमान लिखनेकी विधिः—दिनमान सारिणीसे मेषे भानुः पंचांगमें देखके उसके दूसरे दिनसे दिनमान क्रमसे धरदेना चाहिये।

अथ चन्द्रलिखनेकी विधिः—सर्वर्क्ष बनाके जिस पादमें राशी प्राप्त हो उसको निकालके इष्ट करके चन्द्र लिखना चाहिये।

अथ सायन संक्रांति बनानेकी विधिः—अयनांश और घटी पल सहितको ३० से शोधके शेषांकके समीप अवधिस्थ सूर्यका अंतर करके फिर गोमूत्रिकासें गतिसे गुणके ६० के भागसे लब्ध दिनादि फलको अवधीष्टमें उक्त ३० से शोधित अयनांश अवधिस्थ सूर्यसे हीन हो तो हीन और अधिक हो तो युक्तकिये सायनसंक्रांति होतीहै अथ सर्वशास्त्रोंकी सिद्धांतरीतिसे विवाहलग्न बनानेकी विधिः—धर्म अर्थ और कामकी सिद्धिके लिये सुमुहूर्तसे विवाह करना चाहिये उक्त विवाह मेष वृषभ मिथुन वृश्चिक मकर और कुंभ इन संक्रांतियोंमें करना अच्छाहै जिसमें मिथुनके सूर्यमेंभी आपाढशुदि १० दशमीतक करना श्रेष्ठहै और उक्त महीनों में शुक्र गुरुका उदयास्त हो तो उनके अस्तसे तीन दिन पहलेसे लेके और उदयके तीन दिन पीछेतक विवाह नहीं करना और सिंहस्थ (सिंहराशिपर गुरु) हो तब भी विवाह नहीं करना चाहिये *अथ पंचांगशुद्धिः—रोहिणी १ उत्तराफाल्गुनी २ उत्तराषाढ ३ उत्तराभाद्रपद* ४ रेवती ५ मूल ६ स्वाती ७ मघा ८ अनुराधा ९ हस्त १० मृगशीर्ष ११ यह ग्यारह नक्षत्र विवाहमें महर्षियोंने उत्तम मानाहै पहले त्रेताके समय पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें सीताकाविवाह हुवा था फिर सीताजीने सुखकम भोगाथा जिससे इस समयमें पूर्वाफाल्गुनीमें विवाह नहीं होताहै और पुष्य नक्षत्र ब्रह्मदेवसे शापितहै जिससे पुष्यभी नहीं लेना चाहिये और बाकी नक्षत्रजितनेहैं वे सब विवाहके योग्य भी नहींहैं और तिथियोंमें कृष्ण पक्षकी त्रयोदशीसे लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदातक विवाहमें नहीं लेना क्योंकि वहां क्षीण चंद्रमा है और बाकी तिथियां विवाहमें श्रेष्ठ हैं यद्यपि चतुर्थी चतुर्दशी नवमी

इन्होंको रिक्ता मानके शास्त्रकारोंने वर्जित करीभी हैं तथापि इन्हों के दोष परिहारक योग अनेकहैं जिससे उक्त तिथियोंमें विवाह शिष्टाचारसे सदैव होताहै व्यतीपात वैधृति यह दोनों योग और भद्रा करणभी नहीं लेना चाहिये. और तेरह तिथियोंका पक्ष और लुप्ताब्दमेंभी विवाह करना अच्छा नहीं इति पंचांगशुद्धिः ॥ अथ दशदोषोंकी सारिणीप्रवेशः—लात दोषकी सारिणीमें जिस नक्षत्रका विवाह हो उसके नीचे कोष्ठकमें सूत्रगत ग्रह की नक्षत्र स्थिति होवे तो लातदोष होताहै परंच यहां गत पूर्णिमाकी घटी समाप्तहो जिस समयमें जो नक्षत्र भोगे उस नक्षत्रका पूर्ण चंद्रमा लेना चाहिये उक्त लातदोष का विवाह मालवदेशमें नहीं होता और सबदेशोंमें होता है . १ और पात दोष सूर्यनक्षत्रसे देखाजाता है उक्त पातदोपका विवाह कुरुक्षेत्र देशमें नहीं होता और सब देशोंमें होता है २ अथ युतिः—जिस राशिका चंद्रमा हो उसी राशिका पापग्रह होवे तो युतिदोष होताहै उक्त युतिदोपका विवाह सब देशोंमेंही होता है. क्योंकि इसका परिहार अनेक प्रकारसे है ३ वेधसारिणीमें जिस विवाह नक्षत्रके अधस्थ नक्षत्र ऊपर ग्रह वर्तमान होनेसे वेधदोष लगता है उक्त वेधदोषका विवाह किसी देशमें भी नहीं होता इस वेधमें और एकार्गलमें अभिजित् सहित नक्षत्रोंकी गणना होती है. बाकी और दोषोंमें अभिजित् विना सप्तविंशति नक्षत्रोंके अनुकूल सारिणी बनाई गई है. उक्तअभिजित् नक्षत्रका भोग उत्तराषाढके अंत चरण और श्रवणकी चार घटी प्रथमतक है. इन घटियों में प्राप्तहुवा ग्रह रोहिणी नक्षत्रको वेधता है. और बाकी उत्तराषाढके आद्य

---

१ पातीतास्खलुपूर्णिमाविवाहानिकष।तद्गतभोविधुर्निधेयः लत्तावेधविधौसुधीसर्णायो नान्यथेति मुधावदति सारम् ॥ १ ॥ पूर्णिमातदलस्यापि यावन्मासंभवेद्दलि। अंतस्त्थविधुमीक्षेताविवाहेवेधलत्तयो. ॥ २ ॥ पौर्णमास्यात्ययद्दक्षे यलेतस्यैकमासकम्। यावन्नान्या भवेत्पूर्णातमेषान्नविचारयेदिति। कोशिरावदिताय। स्पष्टं किंबहुना॥सितचतुर्दशी॥विवाहेप्यव्ययविहितातीतपूर्णमासीनक्षत्रस्थचंद्रं ग्राह्यम्.

२ वक्ष्यमाणदशदोषे अभिजित्कुयमाद्ये वदाह-एकार्गलेवेधमाभिजिद्गणयेद्बुध।एकोपमहपातेपुपापि त्रैपिनतद्भवेत् । इतिविवाहरत्ने मघुनस्वद्यश्रर्वास्ण्यभिजितिविवाहः कार्योनचेतिसद्धयेगर्गः । लिखिता पूर्विस्यासारमभिजिसकमुत्तमम्। शिरस्युपसिवेद्यात्रिशिपटपरस्तपोद्दरे ॥ १ ॥

सन् आसोज सुदि १ के लग भगसे प्रारंभ होता है. अथ दिनमान लिखनेकी विधिः—दिनमान सारिणीसे मेषे भानुः पंचांगमें देखके उसके दूसरे दिनसे दिनमान क्रमसे धरदेना चाहिये।

अथ चन्द्रलिखनेकी विधिः—सर्वर्क्ष बनाके जिस पादमें राशी प्राप्त हो उसको निकालके इष्ट करके चन्द्र लिखना चाहिये।

अथ सायन संक्रांति बनानेकी विधिः—अयनांश और घटी पल सहितको ३० से शोधके शेषांकके समीप अवधिस्थ सूर्यका अंतर करके फिर गोमूत्रिकामें गतिसे गुणके ६०के भागसे लब्ध दिनादि फलको अवधीष्टमें उक्त ३०से शोधित अयनांश अवधिस्थ सूर्यसे हीन हो तो हीन और अधिक हो तो युक्तकिये सायनसंक्रांति होतीहै अथ सर्वशास्त्रोंकी सिद्धांतरीतिसे विवाहलग्न बनानेकी विधिः—धर्म अर्थ और कामकी सिद्धिके लिये सुमुहूर्तसे विवाह करना चाहिये उक्त विवाह मेष वृषभ मिथुन वृश्चिक मकर और कुंभ इन सक्रांतियोंमें करना अच्छाहै जिसमें मिथुनके सूर्यमेंभी आषाढशुदि १० दशमीतक करना श्रेष्ठहै और उक्त महीनोंमें शुक्र गुरुका उदयास्त हो तो उनके अस्तसे तीन दिन पहलेसे लेके और उदयके तीन दिन पीछेतक विवाह नहीं करना और सिंहस्थ (सिंहराशिपर गुरु) हो तब भी विवाह नहीं करना चाहिये अथ पंचांगशुद्धिः—रोहिणी १ उत्तराफाल्गुनी २ उत्तराषाढ ३ उत्तराभाद्रपद ४ रेवती ५ मूल ६ स्वाती ७ मघा ८ अनुराधा ९ हस्त १० मृगशीर्ष ११ यह ग्यारह नक्षत्र विवाहमें महर्षियोंने उत्तम मानाहै पहले त्रेताके समय पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें सीताकाविवाह हुवा था फिर सीताजीने सुखकम भोगाथा जिससे इस समयमें पूर्वाफाल्गुनीमें विवाह नहीं होताहै और पुष्य नक्षत्र ब्रह्मदेवसे शापितहै जिससे पुष्यभी नहीं लेना चाहिये और बाकी नक्षत्र-जितनेहैं वे सब विवाहके योग्य भी नहींहैं और तिथियोंमें कृष्ण पक्षकी त्रयोदशीसे लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदातक विवाहमें नहीं लेना क्योंकि वहां क्षीण चंद्रमा है और बाकी तिथियां विवाहमें श्रेष्ठ हैं यद्यपि चतुर्थी चतुर्दशी नवमी

इन्होंको रिक्ता मानके शास्त्रकारोंने वर्जित करीभी हैं तथापि इन्हों के दोष परिहारक योग अनेकहैं जिससे उक्त तिथियोंमें विवाह शिष्टाचारसे सदैव होताहै व्यतीपात वैधृति यह दोनों योग और भद्रा करणभी नहीं लेना चाहिये. और तेरह तिथियोंका पक्ष और लुप्ताब्दमेंभी विवाह करना अच्छा नहीं इति पंचांगशुद्धिः ॥ अथ दशदोषोंकी सारिणीप्रवेशः—लात दोषकी सारिणीमें जिस नक्षत्रका विवाह हो उसके नीचे कोष्ठकमें सूत्रगत ग्रह की नक्षत्र स्थिति होवे तो लातदोष होताहै परंच यहां गत पूर्णिमाकी घटी समाप्तहो जिस समयमें जो नक्षत्र भोगे उस नक्षत्रका पूर्ण चंद्रमा लेना चाहिये उक्त लातदोष का विवाह मालवदेशमें नहीं होता और सबदेशोंमें होता है . १ और पात दोष सूर्यनक्षत्रसे देखाजाता है उक्त पातदोषका विवाह कुरुक्षेत्र देशमें नहीं होता और सब देशोंमें होता है २ अथ युतिः—जिस राशिका चंद्रमा हो उसी राशिका पापग्रह होवे तो युतिदोष होताहै उक्त युतिदोषका विवाह सब देशोंमेंही होता है. क्योंकि इसका परिहार अनेक प्रकारसे है ३ वेधसारिणीमें जिस विवाह नक्षत्रके अधस्थ नक्षत्र ऊपर ग्रह वर्तमान होनेसे वेधदोष लगता है उक्त वेधदोपका विवाह किसी देशमें भी नहीं होता इस वेधमें और एकार्गलमें अभिजित् सहित नक्षत्रोंकी गणना होती है. बाकी और दोषोंमें अभिजित् विना सप्तविंशति नक्षत्रोंके अनुकूल सारिणी बनाई गई है. उक्तअभिजित् नक्षत्रका भोग उत्तराषाढके अंत चरण और श्रवणकी चार घटी प्रथमतक है. इन घटियों में प्राप्तहुवा ग्रह रोहिणी नक्षत्रको वेधता है. और बाकी उत्तराषाढके आद्य

१ पातीलातकृत्पूर्णिमाविवाहेनिरूपः तद्गतभोविधुर्निधेयः लत्तावेधविधौमुनीश्वराणां नान्यत्रेति बुधानदति सारम् ॥ १ ॥ पूर्णिमांतदलस्यापि यावन्मासभवेद्दले । भंतस्थविधुमीक्षेतविवाहेवेधलत्तयोः ॥ २ ॥ पौर्णमास्यांत्तपदक्षे भलेतस्यैनमासनम् । यावन्नान्या भवेत्पूर्णातमेवाब्जविचारयेदिति। कौशिकसंहिताय। स्पष्टं किंबहुना।सितचतुर्दशीविवाहेप्यन्यथादितातीतपूर्णमासीनक्षत्रस्थंचंद्रं माद्यम्.

२ पश्यमाणदशदोषे अभिजित्कुत्रमाह्यो तदाह एकार्गलेचवेधेचमाभिजिद्गणयेद्बुध । लत्तोपग्रहपातेषुयामित्रेपिनतद्वदेत् । इतिविवाहरत्ने ननुनक्षत्रद्वयशरीरेप्यभिजितिविवाहः कार्योनचेतिसंक्रमेणगे । लिखित्वा भुविचाकारमभिजिद्युगमम् । शिरस्युरसिसंदद्यान्त्रिनिघ्टयस्तपोद्रे ॥ १ ॥ .

तीन चरणगत ग्रह मृगशीर्षको वेधता है. और उत्तराषाढके चतुर्थ चरणमें अभिजित्की स्थिति है. जिससे उक्तचरणमें विवाह करना या नहीं यह संशय दूरकरनेके लिये गर्गाचार्य कहते हैं कि, उत्तराषाढके चतुर्थ चरणमें भी विवाह करना अच्छा है. उसमें अभिजित्का कुछभी दोष नहीं फक्त श्रवणकी चारघटीमें अभिजित्की प्रवृत्ति है सो उसमें विवाह नहीं करना चाहिये ४ अथ यामित्रदोषः–वैवाहिक नक्षत्रसे चतुर्दशवें नक्षत्र ऊपर पापग्रह होनेसे यामित्रदोष लगताहै उक्त दोषके अनेक प्रकारसे परिहार होनेके कारण सब देशोंमें यामित्रदोषका विवाह होताहै ५ अथ बाणपंचकदोषः–सारिणीमें सूर्यसंक्रांतिके स्पष्ट अंशके तुल्य देखलेना जिसमें अग्नि चौर नृप और रोग इन बाणोंका परिहार तो अनेक प्रकारसेहै जिससे उक्तबाण दोषोंमें विवाह करलेना बाकी मृत्युबाण दोषका. विवाह सब देशोंमेंही त्याज्य है. ६ अथ एकार्गलदोषः–वैवाहिक नक्षत्रके नीचे सारिणीमें नक्षत्र लिखे हुये हैं उनके ऊपर सूर्य होवे तो एकार्गलदोष लगता है. उक्त एकार्गल दोषका विवाह काश्मीरदेशमें नहीं होता. और सबदेशोंमें होता है ७ अथउपग्रहदोषः एकार्गलकी सदृशही उपग्रह सारिणीमें देखलेना चाहिये उक्त उपग्रह दोषका विवाह बाह्लीक देशमें नहीं होता और सब देशोंमें होताहै ८ अथ क्रांतिसाम्यदोषः–सारिणीमें सूर्यकी संक्रांति देखके उसके नीचे चंद्र लिखा सो विवाहमें होवे तो क्रांतिसाम्य दोष लगता है उक्त क्रांतिसाम्यका विवाह सब देशोंमें त्याज्यहै ९अथ दग्धा तिथिदोषः–सारिणीमें सूर्यराशिके नीचे दग्धातिथि लिखी सो उस दिन होवे तो दग्धातिथि दोष लगता है उक्त दग्धातिथिके दिन भी लग्नादिकेंद्र कोणमें बुध गुरु और शुक्र होवें तो विवाह करलेना यदि उक्त स्थानोंमें उक्त ग्रह नहीं होवे तो दूसरा इसका परिहार भी नहीं है । इति विवाहे दशदोषाः।

एकैकाघटिकाषट्सुपादेषुचतथापुन. । चतस्रोनाडिकाः पुच्छेगर्गाचार्येणभाषिता ॥ वृश्चिकस्य विना पुच्छं शेषागोक्तघटीषुच । निर्विषामुमकर्तव्योविवाहः सर्वसंमतः ॥ ३ ॥

विवाहे दशदोषसारिणी.

१ लातसारिणी.

वि.न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
सू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भ.	रो.	आ.	पुष्य.	म.	स्वा.	वि.
चं.	पू.भा.	उ.भा.	रो.	आर्द्रा.	पुन.	ऽऽश्ले.	पू.फा.	ह.	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.
मं.	भ.	कृ.	पुष्य.	म.	पूफा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श.	पू.भा.
बु.	म.	पू.फा.	वि.	ज्ये.	मू.	उ.षा.	ध.	पू.भा.	रे.	मृ.	आर्द्रा.
बृ.	उ.भा.	रे.	मृ.	पुन.	पुष्य.	म.	उ.फा.	चि.	वि.	उ.षा.	श्र.
शु.	पुष्य.	ऽऽश्ले.	चि.	वि.	ऽनु.	मू.	उ.षा.	ध.	पू.भा.	कृ.	रो.
श.	श.	पू.भा.	कृ.	मृ.	आर्द्रा	पुष्य	म.	उ.फा.	चि.	मृ.	पू.षा.
रा.	उ.फा.	ह.	ज्ये.	पू.षा.	उ.षा.	ध.	पू.भा.	रे.	भ.	पुन.	पुष्य.

२ पातसारिणी.

वि.न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
सू.	आर्द्रा.	मृ.	अश्वि.	कृ.	भ.	रो.	भ.	रो.	भ	भ.	ऽश्वि.
सू.	पुन.	आर्द्रा.	मृ.	पु.	आर्द्रा	पुष्य.	आर्द्रा	ऽऽश्ले.	पुन.	पू.फा	म.
सू.	पू.फा.	म.	ऽऽश्ले.	पू.फा.	म.	ह.	पू.फा	ज्ये.	वि.	उ.फा	पू.फा.
सू.	स्वा.	चि.	ह.	वि.	स्वा.	श्र.	पू.षा.	मू.	ऽनु	वि.	स्वा.
सू.	मू.	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा.	श.	ध.	उ.षा	ध.	उ.षा.	पू.षा.	मृ.
सू.	श.	ध.	रे.	उ.भा.	पू.भा.	रे.	पू.भा.	रे.	पू.भा.	श.	ध.

३ युतिश्चंद्रयुतक्रूरः—इति.

४ वेधयंत्रम्.

वि.न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.षा	उ.भा.	रे.
वे.धः	ऽभि.	उ.षा.	श्र.	रे.	उ.भा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उ.फा.

५ यामित्रदोषसारिणी.

न.	रो.	मृ	म.	उ.फा	ह.	स्वा	ऽनु.	मू.	उ.पा.	उ.भा.	रे.
या	ऽनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	ऽश्वि.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.

६ मृत्युपंचकयंत्रम्.

१	२	४	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१९	२०	२२	२४	२६	२८	२९	सू.	अ.
मृ.	ऽग्नि.	नृ.	चो.	रो.	मृ.	ऽग्नि.	नृ.	चो	रो.	मृ.	ऽग्नि.	नृ.	चो.	रो.	मृ.	ऽग्नि	पंच	क.

७ एकार्गलयंत्रम्.

न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.पा.	उ.भा.	रे.	योग.
वि.	पू.भा.	श.	पू.पा.	ज्ये.	ऽनु.	स्वा.	ह.	पू.फा.	ऽऽश्ले.	कृ.	भ.	प्री.
आ.	रे.	उ.भ.	ऽभि.	पू.पा.	मू.	ऽनु.	स्वा.	ह	पू.फा.	मृ.	रो.	सौ.
शो.	भ.	ऽश्वि.	ध.	ऽभि.	उ.पा.	मू.	ऽनु.	स्वा	ह.	पुष्य.	आ.	अ.
सु.	रो.	कृ.	पू.भा.	ध.	श्र.	उ.पा.	मू	ऽनु.	स्वा.	ऽऽश्ले.	पुष्य	धृ.
शू.	आ.	मृ.	रे.	पू.भा	श.	श्र.	उ.पा.	मू.	ऽनु.	पू.फा.	म.	गं.
धृ.	पु.	पुन.	भ.	रे.	उ.भा.	श.	श्र	उ.पा	मू.	ह.	उ.फा.	ध्रु.
व्या.	म.	ऽऽश्ले.	रो	भ.	ऽश्वि.	उ.भा.	श.	श्र.	उ.पा	स्वा.	चि.	ह.
व.	उ.फा.	पू.फा.	आ	रो.	कृ.	ऽश्वि.	उ.भा.	श.	श्र.	ऽनु.	वि.	सि.
व्य.	चि.	ह.	पुष्य.	आ.	मृ.	कृ.	ऽश्वि.	उ.पा.	श.	मू.	ज्ये.	व.
प.	वि.	स्वा.	म.	पुष्य.	पु.	मृ.	कृ	ऽश्वि.	उ.भा.	उ.पा.	पू.पा.	शि.
सि.	ज्ये.	ऽनु.	उ.फा.	म.	ऽश्ले.	पुन.	मृ.	कृ.	ऽश्वि.	श्र.	ऽभि.	सा.
शु.	पू.पा.	मृ.	चि	उ.फा.	पू.फा.	ऽश्ले.	पुन.	मृ.	कृ.	श.	ध	शु.
ब्र.	ऽभि.	उ.पा	वि.	चि.	ह.	पू.फा.	ऽश्ले.	पुन	मृ.	उ.भा.	पू.भा	ऐं.
वै.	ध.	श्र.	ज्ये.	वि.	स्वा.	ह.	पू.फा.	ऽऽश्ले	पुन.	ऽश्वि.	रे.	वि.
यो.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स	स.	स.	स.	यो.

८ उपग्रहयंत्रम्.

वि	रो	मृ	म	उ.फा.	ह	स्वा	ऽनु.	मू.	उ.षा.	उभा.	रे
५	रे	अ	आ	पुष्य	ऽश्ले	पू.फा	ह.	स्वा.	ऽनु.	श्र.	ध
८	श	पू.भा	कृ-	मृ	आर्द्रा	पु.ष्य.	म.	उ.फा.	चि.	मू.	पू.षा
१४	ज्ये	मू	रा	उ.भा.	रे	भ.	रो.	आर्द्रा.	पुष्य.	ह.	चि
१८	चि	स्वा	पू.षा.	श्र	ध	पू.भा.	रे.	भ.	रो.	ऽश्ले.	म
१९	ह	चि	मू	उ.षा.	श्र	श.	उ.भा.	ऽश्वि.	कृ.	पुष्प.	ऽश्ले
२२	म	पू.फा.	वि	ज्ये	मू	उ.षा.	ध.	पूभा.	रे.	मृ.	आर्द्रा
२३	ऽश्ले	म	स्वा	ऽनु	ज्ये	पू.षा.	श्र.	श.	उभा.	रो.	मृग
२४	पुष्प.	ऽश्ले	चि	वि	ऽनु	मू	उ.षा.	ध.	पू.भा.	कृ.	रो

९ क्रांतिसाम्ययंत्रम्.

मे.	वृ.	मि	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी	सू.
मि.	म.	ध.	वृश्चि.	मे.	मी.	कुं.	कर्क.	मि	वृष.	तु.	कुंभ.	चं.

१० दग्धातिथियंत्रम्.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.	सू.
६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२	ति.

विश्वाप्रदाग्रहाः

सू	चं	मं	बु		बृ		शु		श		रा	
११ ३ ८	२ ३ ११	१२ ६ ३	११ १ ३ ९ ५	२ ६ ४ १०	११ ६ ४ १०	९ २ ३ ५ १	११ ३ ५ १०	२ ४ ९ १	११ ३ ८		११ १० ८	६ ५ ३ ९
३॥	५	१॥	२		३		२		१॥		१॥	

लग्नात्वर्जितग्रहाः

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	लग्नग
१ ७	१ ८ ६	१ ८ ८	७ ८	८	६ ७ ८	१ ७	१ ४ ७	६

अथ लग्नशुद्धिः—चंद्रमा सायंकाली लग्नसे एकादश द्वितीय और तृतीय होवे तो गोधूलि और चतुर्थ पंचम सप्तम नवम द्वादश होवे तो गर्गके मतसे धूलिमुख कहलाता है उक्त गोधूलि लग्नसे शुक्र भौमादि अष्टमस्थान होवें तो भी दोष नहीं क्योंकि गोधूलि लग्नसे सप्तम सूर्य तो हमेशहही रहता है जब सूर्य जन्यदोष हीन मानों तो और ग्रहोंका दोष तो होनाही क्या केवल लग्न षष्ठाष्टमर्में चंद्रमा होवे तो गोधूलि लग्न नहीं करना चाहिये यदि रात्रिलग्न शुद्ध बनता होवे तो गोधूलि लग्नसे रात्रि लग्न शुद्ध है क्योंकि स्त्रीकृत्य जितने हैं वे सब रात्रिमें करनाही अच्छा है यद्यपि शास्त्रकारोंने लग्नशुद्धि रात्रि दिवा दोनोंहीमें समान लिखी है परंच हेमाद्रि देवलके मतसे कन्यादान देना रात्रिमेंही श्रेष्ठ लिखा है उक्त लग्नशुद्धि सारिणीमें देखके अशुभ लग्नको छोडके शुद्ध लग्न लेलेना और उस लग्नके ग्रहोंका सारिणीसे विश्वाभी लेलेना चाहिये कितने शास्त्रकारोंने बारहवें शनि दशम मंगल और तृतीय शुक्रसे लग्न दूषित किया है परंच इनके दोष परिहारक वचन अनेक हैं जिससे उक्त दोषों से लग्न दूषित नहीं होता है, अथ सुगमरीतिसे सूक्ष्म क्रांतिसाम्य देखनेकी विधिः—विवाह लग्नके इष्ट ऊपर सूर्य चंद्र और राहुको स्पष्ट करके फिर सूर्यका भुजांश बनाके क्रांतिसारिणीसे क्रांति लेनी और राहुको चंद्रमामें हीनकिये व्यगु कहलाता है उक्त व्यगुका भुजांश बनाके राशि छोडके अंशादिकों को डेढा करनेसे व्यगु मेषादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिण संज्ञक शर समझना चाहिये फिर चंद्रमाका भुजांश बनाके क्रांति सारिणीमें क्रांति लेनी यदि मेषादि चंद्रमा हो तो उत्तर और तुलादि होतो दक्षिण संज्ञक चंद्रमाकी क्रांति समझनी चाहिये उक्त चंद्रक्रांति और शरकी एक दिशा हो तो धन और भिन्नदिशा हो तो चंद्र और शरका अंतरकिये चंद्रमाकी स्पष्ट क्रांति होती है उक्त सूर्य और चंद्रमाकी एक क्रांति होवे तब सूक्ष्म क्रांतिसाम्य दोष होता है और आधुनिक ज्योतिर्विद सायनसूर्य चंद्रसे क्रांतिसाम्य बनाते हैं सो ठीक नहीं यद्यपि सिद्धांतोंमें पात स्पष्ट सायन गणितसेही कियागया है

परंच धर्मशास्त्रोंमें निरयन गणितसेही धर्मकी सिद्धि मानी है क्या उनको सायन गणितका ज्ञान नहीं था? नहीं उनका अभिप्राय कुछ औरही था यदि सायन गणितसे क्रांतिसाम्य दोष मानोंगे तो एकार्गलादि दोषोंको भी सायन गणितसेही मानना चाहिये जब तो सब शास्त्र औरही बनाने होवें गे जिससे उनका सायन गणितसे क्रांतिसाम्य बनाना शास्त्रकी असंगतिकारक है क्यों- कि उनके गणितसे तो क्रांतिसाम्य मकरके सूर्यमें मेषके चंद्रमामें संभव है और मुहूर्तचिंतामण्यादि ग्रंथोंसे मकरेण वृषाक्रांत (अर्थात्) मकरके सूर्य और वृषके चंद्रमाका है वा वृषभका सूर्य मकरके चंद्रमाका है इससे ज्योतिष- शास्त्रके मुहूर्तप्रतिपादक ग्रंथोंकी व्यवस्था और धर्मशास्त्रके ग्रंथोंकी व्यवस्था निरयन गणितके विना नहीं बैठसक्ती जिससे निरयन गणितसेही क्रांतिसाम्य बनाना शास्त्रसिद्धहै.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते पंचांगलेखन-
क्रमो नाम चतुर्विंशतितमोविनोदः ॥ २४ ॥

अथ व्रतादिनिर्णयः आदौसप्तकल्पादितिथिः—चैत्रशुक्ल १ चैत्रशुक्ला ५ वैशाखशुक्ला ३ कार्तिकशुक्ला ७ मार्गशीर्षशुक्ला ९ माघशुक्ला १३ चैत्रकृष्णा अथ ३ चतुर्दशमन्वादितिथिः—चैत्रशुक्ला ३ चैत्रशुक्ला १५ ज्ये- ष्ठशुक्ला १५आषाढशुक्ला १०भाद्रपदकृष्णा८भाद्रपदशुक्ला ३आश्विनशुक्ला ९ कार्तिकशुक्ला १२ कार्तिक शुक्ला १५ पौषशुक्ला ११ माघशुक्ला ७ फाल्गुनशुक्ला १५ चैत्रकृष्णाअमावास्या ३० अथदशावतारजयंतीः— चैत्रशुक्ला ३ अपराह्णे मत्स्योत्पत्तिः चैत्रशुक्लप्रतिपन्मत्स्यजयंतीत्येके चैत्र- शुद्ध ९ मध्याह्ने रामजयंती चैत्रशुक्ला १५ सूर्योदये हनुमज्जयंती वैशाख शुक्ला ३ मध्याह्ने परशुरामजयंती प्रदोषे बहवो वदंति वैशाखशुक्ला १४ सायं नरसिंहावतारः वैशाखशुक्ला १५ मध्याह्ने सायं वा कूर्मोत्पत्तिः श्रावण शुक्ला १० सायंकाले कल्कीजयंती भाद्रपद कृष्णा ८ निशीथे श्रीकृष्ण

जयंती भाद्रपदशुक्ला १२ मध्याह्ने वामनप्रादुर्भावः आश्विनशुक्ला १० सायंबौद्धावतारः मार्गशीर्षशुक्ला १५ दत्तजयंती. माघशुक्ला १ श्रीवल्लभ जयंती. अथ चतुर्युगादि–वैशाखशुक्ला ३ त्रेतायुगादि. आश्विनकृष्णा १३ कलियुगादि. कार्तिकशुक्ला ९ कृतयुगादि. माघकृष्णा ३० द्वापरयुगादि चैत्रशुक्ला ३ गौरीव्रतं. चैत्रशुक्ला ८ भवान्युत्पत्ति. शतश्लोकी प्रमाणसे अथ चैत्रादिमासनिर्णयः–चैत्रकृष्णा १ वसंत प्रतिपदा उदयव्यापिनी लेनी चैत्रकृष्णा८शीतलाष्टमी शुभवारकी करनी दो दिन शुभवार युक्त हो तोज्येष्ठा-अनुराधा नक्षत्रयुक्तसप्तमीविद्धाको शीतलाकी पूजा करनी. चैत्रकृष्णा अमावास्या ३० मन्वादि अपराह्णव्यापिनी लेनी. चैत्रशुक्ला १ संवत्सरप्रतिपदा कहलातीहै सो उदयव्यापिनी लेनी जब दो दिन उदय व्यापिनी होवे तो भी प्रथमहीकी लेनी उसदिन तैलाभ्यंगादि स्नान करना जिस दिनका वार संवत्का राजा होता है.गुर्जरोंके मतसे चैत्रवदि३०का वारभी वर्षका राजा होता है.परंच सर्वसंमत नहीं सर्वसंमतसे तो प्रतिपदा उदयव्यापिनीका वारही राजा होता है यदि प्रतिपदाकी वृद्धि होवे तो दूसरी प्रतिपदाके दिन नवरात्रारंभ करना चाहिये. और चैत्रअधिक मास होवे तो प्रथम चैत्रशुदि १ प्रतिपदाका वार संवत्का राजा होता है.और द्वितीय चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे नवरात्रारंभ होता है. इसका निर्णय शारदीयनवरात्र प्रमाणसे है. ॥ चैत्रशुक्ला ३ गौरीव्रत चतुर्थी युक्त करना. दूसरेदिन मुहूर्तमात्रभी होवे तो दूसरे दिन व्रत करना यह मन्वादि तृतीया कहलाती है. और देवीपूजा नवमीयुक्ता अष्टमी दिनमें करलेना. और चैत्रशुक्ला ९ रामनवमी सो मध्याह्नव्यापिनी लेनी. यदि पुनर्वसु नक्षत्र होवे तो महत्पुण्यदायक है. जब मध्याह्नव्यापिनी अष्टमीके दिन नवमी नहीं होवे वा उदय नवमी भी मध्याह्नव्यापिनी नहीं होवे तो भी उदयव्यापिनीके दिन व्रत करना. अथवा पुनर्वसुके दिन होवे तो उसदिन स्मार्तोंको व्रत कर

१ पराशरः–सप्तमीसहिताकार्याचैत्रकृष्णाष्टमीसदा।नवम्यानाधिकारोस्ति शीतलापूजनेमुने ॥ज्येष्ठामित्रर्क्षसयोगेतोप्यत्र समर्पयेत् । बालानांशांतिदश्चैव इतिदैवविदोविदुः ॥

लेना चाहिये. परंच वैष्णवों को तो अष्टमीयुक्ता नवमीका त्याग करना और उदय नवमीका व्रत करके दशमीके दिन पारण करना. तीन मुहूर्त अर्थात् ६ घटी भी नवमी उदयमें होवे तो वैष्णवोंको यही दिन व्रत करना चाहिये और स्मार्तोंको पूर्वदिन व्रत करना चाहिये यदि अष्टमी ६ घटी भोगके फिर नवमीका क्षय होवे जब तो अष्टमी विद्धाही व्रत वैष्णवोंने करलेना. चैत्रशुक्ला ११एकादशीके दिन लक्ष्मीकांतका दोलोत्सव करना. चैत्रशुक्ला १२के दिन हरिदमनोत्सव करना. और चैत्रशुक्ला १५ हनुमज्जयंती सूर्योदयव्यापिनी करनी यदि दो दिन सूर्योदयव्यापिनी होवे तो प्रथमके दिनही हनुमज्जन्मोत्सव करनाचाहिये. ॥ इतिचैत्रमासः ॥

अथ वैशाखमासः—चैत्रशुदि १५ से वैशाखशुक्ला १५ तक वैशाखस्नान वा मेषसंक्रांतिसे स्नान प्रारंभ करना वैशाखशुक्ला ३ अक्षय्य तृतीया पूर्वाह्णव्यापिनी लेंनी दोदिनतक पूर्वाह्णव्यापिनी होवे तो दूसरे दिनकी लेनी. इसी दिन परशुरामका जन्म हुवा. सो प्रथम प्रहर रात्रिमें तृतीयाकी प्राप्ति होवे जबही पूजा करनी और वैशाखशुक्ला १४ नृसिंहजयंती प्रदोषव्यापिनी करनी. प्रदोषकाल सूर्यास्त हुयेसे घटी ३ पर्यंत कहलाता है. यदि दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो परा करनी कमती होवेतो पूर्वदिन करनी वैशाखशुक्ला को गंगोत्पत्ति उत्सव मध्याह्नमें करना यदि दो दिन हो तो पूर्वको करना वैशाखशुक्ला १५ उदयव्यापिनी लेनी दोदिन होवे तो दूसरे दिनकी लेनी उसदिन यम और धर्मराजके प्रीत्यर्थ जलकुंभ दान और अन्न देनेका बडा माहात्म्यहै

अथ ज्येष्ठमासः—ज्येष्ठवदि ३० भावुका कहलाती है ज्येष्ठशुक्ला ३ रंभाव्रतमें द्वितीयायुक्त पूर्वविद्धा लेनी ज्येष्ठशुक्ला १० दशहरा होताहै इसमें दशयोगकी ज्येष्ठमास १ शुक्लपक्ष २ दशमी ३ बुधवार ४ हस्तनक्षत्र ५ व्यतीपातयोग ६ गरकरण ७ कन्याका चंद्र ८ वृषभका सूर्य ९ आनंद

१ हनुमदुपासनायाम्-नवमासे गते पुत्रं सुषुवे साञ्जनी शुभम्। चैत्रे मासे सितपक्षे पौर्णमास्यां कुजेऽहनि।

योग १० यह पूर्वाह्णव्यापिनी करनी यदि दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी होवे तो विशेष दशमी जिस दिन होवे उसी दिन करना ज्येष्ठमास अधिक होवे तो अधिकमासकी शुद्ध दशमीको दशहरा करलेना ज्येष्ठ शुदि १५ वटसावित्रीपूजामें चतुर्दशीयुक्त लेनी यदि चतुर्दशी १८ घटिकापर्यंत होवे तो पूजनविषयमें उदयपूर्णिमा लेनी उक्त वटसावित्रीका व्रत १३ से प्रारंभ करना और प्रतिपदाके दिन पारणा करना यह सावित्रिव्रत दक्षिणीलोक केवल पूर्णिमासी दिनही करते हैं और पश्चिमदेशीय लोक आषाढ कृष्ण ३० दिन करते हैं ज्येष्ठशुक्ला १५ मन्वादितिथि श्राद्ध विषयमें पूर्वाह्णव्यापिनी करनी ज्येष्ठशुक्ला १ करि दिन और उस दिनसे दशहराव्रतका प्रारंभ करना और शुक्ला १० दिन गंगाका अवतार हुवाहै औरशुक्ला १३ से प्रारंभ किया वटत्रिरात्र व्रत इसी १५ के दिन समाप्तकरना । इति ज्येष्ठमासः ॥

अथ आषाढमासः—आषाढशुक्ला १० वा १५ यह मन्वादितिथि हैं. सो पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी. आषाढशुक्ला ११ विष्णुशयनीका उत्सव करना यदि अधिकमास होवे तो शुद्धमासकी एकादशी लेनी अधिककी नहीं लेनी चाहिये. आषाढशुक्ला १२ भाद्रपद शुक्ला १२ कार्तिकशुक्ला १२ इन के दिन क्रमसे अनुराधाके आद्य पाद श्रवणके मध्यपाद और रेवतीके अन्त्य पादका संयोग होनेसे हरिवासर कहलाता है सो उक्त द्वादशी और नक्षत्र पादका संगम छोडके पारणा करना चाहिये नहीं तो एकादशीके व्रतका भंग होताहै यदि द्वादशी स्वल्पघटी होवे और नक्षत्रका योग आन पड़े तो द्वादशीमें केवल पारणा करनेवालेको नक्षत्र वेध नहीं मानना चाहिये यह कौस्तुभकारका आशय है अथवा संगम कालको छोडके प्रातःकाल अथवा मध्याह्नकाल पारणा करना यह पुरुषार्थचिंतामणिवालेका आशय है. इसमें कालनिर्णय कहतेहैं.सूर्योदयात्६ घटी प्रातःकाल६ घटी फिर संगवकाल तदनंतर ६ घटी मध्याह्नकाल. तदनंतर ६ घटी अपराह्णकाल. तदनंतर ६ घटी सायाह्नकाल इसप्रमाण ५ प्रकारसे कालसंज्ञा है. इसीप्रकार सूक्ष्म-

काल दिनमान के पंचमांशको समझना चाहिये। इतिहरिवासरनिर्णयः ॥

आषाढशुक्ला ११ से चातुर्मास्यारंभ और शुक्ला १५ के दिन व्यासपूजा अथवा गुरुकी पूजा करनी सायंकालव्यापिनी पूर्णिमा में पवन देखनी जिसमें ऐशान्य उत्तर और पूर्वकी पवन तो उत्तम है और दक्षिण अग्नि और नैर्ऋतकी नेष्ट बाकी और मध्यम है उक्त चातुर्मास व्रतका आरंभ शुक्र गुरुके अस्त वा अधिकमासमें प्रथम नहीं करना और खंडतिथिके दिनभी प्रथम प्रारंभ नहीं करना सूर्योदयसे दो प्रहर पहलेही समाप्तहो उसीको खंडतिथि कहतेहैं. उक्त खंडतिथि में व्रतका आरंभ और उद्यापन नहीं करना और दान विषय और अध्ययन स्नानसंध्यादि विषय ये तो एक पलमात्रभी उदयव्यापिनी तिथि हो उसीको संकल्पमें बोलना चाहिये। इति आषाढमासः ॥

अथ श्रावणमासः—श्रावणशुक्ला १ से नक्तव्रतका आरंभ करना. और भाद्रपदशुक्ला १ पर्यंत उक्त व्रत करके फिर उद्यापन करदेना उक्त व्रतारंभमें सूर्योदयव्यापिनी तिथि लेनी श्रावणशुक्ला ३ मधुश्रवा गुर्जर देशमें प्रसिद्धहै सो उर्वरिता उदयव्यापिनी लेनी शुक्ला ४ वरदचतुर्थी तृतीया युक्त लेनी शुक्ला ५ नागपंचमी षष्ठीयुक्त लेनी शुक्ला ६ वर्णषष्ठी और सप्तमी ७ के दिन शीतलापूजन शुक्ला ८ दुर्गा अष्टमी शुक्ला १२ पवित्रार्पण शुक्ला १५ रक्षाबंधन और श्रावणशुक्ला १२ से भाद्रपद शुक्ला १२ पर्यंत दधिभक्षण व्रतकरना अथ श्रावणीनिर्णयः—ऋग्वेदियोंको श्रवण नक्षत्रमें श्रावणी करनी यदि दोदिन श्रवण होवे तो पूर्वदिनोदयसे दूसरेदिन ६ घटीपर्यंत होवे तो पूर्वदिनही करलेनी जब पूर्वदिन उदयमें नहीं श्रवण होवे और दूसरे दिन उदयसे ४ घटीपर्यंत होवे तो दूसरे दिनही करलेनी चाहिये यदि दूसरेदिन ४ घटीसे श्रवण न्यून होवे और पूर्वदिन उत्तराषाढका वेध होवे तो श्रावणी कर्म श्रावणशुक्ला ५ अथवा हस्त नक्षत्रमें ऋग्वेदवालोंको करनी चाहिये. अथ यजुर्वेदीयश्रावणी निर्णयः—सर्व यजुर्वेदियोंके उपाकर्म विष-

योग १० यह पूर्वाह्णव्यापिनी करनी यदि दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी होवे तो विशेष दशमी जिस दिन होवे उसी दिन करना ज्येष्ठमास अधिक होवे तो अधिकमासकी शुद्ध दशमीको दशहरा करलेना ज्येष्ठ शुदि १५ वटसावित्रीपूजामें चतुर्दशीयुक्त लेनी यदि चतुर्दशी १८ घटिकापर्यंत होवे तो पूजन-विषयमें उदयपूर्णिमा लेनी उक्त वटसावित्रीका व्रत १३ से प्रारंभ करना और प्रतिपदाके दिन पारणा करना यह सावित्रीव्रत दक्षिणीलोक केवल पूर्णिमासी दिनही करते हैं और पश्चिमदेशीय लोक आषाढ कृष्ण ३० दिन करते हैं ज्येष्ठशुक्ला १५ मन्वादितिथि श्राद्ध विषयमें पूर्वाह्णव्यापिनी करनी ज्येष्ठशुक्ला १ कारि दिन और उस दिनसे दशहराव्रतका प्रारंभ करना और शुक्ला १० दिन गंगाका अवतार हुवाहै और शुक्ला १३ से प्रारंभ किया वटत्रिरात्र व्रत इसी १५ के दिन समाप्तकरना । इति ज्येष्ठमासः ॥

अथ आषाढमासः–आषाढशुक्ला १० वा १५ यह मन्वादितिथि हैं. सो पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी. आषाढशुक्ला ११ विष्णुशयनीका उत्सव करना यदि अधिकमास होवे तो शुद्धमासकी एकादशी लेनी अधिककी नहीं लेनी चाहिये. आषाढशुक्ला १२ भाद्रपद शुक्ला १२ कार्तिकशुक्ला १२ इन के दिन क्रमसे अनुराधाके आद्य पाद श्रवणके मध्यपाद और रेवतीके अन्त्य पादका संयोग होनेसे हरिवासर कहलाता है सो उक्त द्वादशी और नक्षत्र पादका संगम छोडके पारणा करना चाहिये नहीं तो एकादशीके व्रतका भंग होताहै यदि द्वादशी स्वल्पघटी होवे और नक्षत्रका योग आन पड़े तो द्वादशीमें केवल पारणा करनेवालेको नक्षत्र वेध नहीं मानना चाहिये यह कौस्तुभकारका आशय है अथवा संगम कालको छोडके प्रातःकाल अथवा मध्याह्नकाल पारणा करना यह पुरुषार्थचिंतामणिवालेका आशय है. इसमें कालनिर्णय कहतेहैं. सूर्योदयात् ६ घटी प्रातःकाल ६ घटी फिर संगवकाल तदनंतर ६ घटी मध्याह्नकाल. तदनंतर ६ घटी अपराह्णकाल. तदनंतर ६ घटी सायाह्नकाल इसप्रमाण ५ प्रकारसे कालसंज्ञा है. इसीप्रकार सूक्ष्म-

यमें पूर्णिमा मुख्य कालहै जिसमें यजुर्वेदी दो प्रकारके हैं शुक्लयजुर्वेदी और कृष्णयजुर्वेदी पूर्णिमा पूर्वदिन सूर्योदयसे २ घटी ऊपर प्राप्ति होवे और दूसरे दिन १२ घटीपर्यंत रहै तो दूसरेदिनही उपाकर्म करना चाहिये यदि दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी होवे तो प्रथमदिनही करनी चाहिये जब प्रथमदिन २ घटी पश्चात् पूर्णिमाकी प्राप्ति होवे और दूसरे दिन १२ घटीसे न्यून होवे तो कृष्णयजुर्वेदी तो उत्तरदिन और शुक्लयजुर्वेदियोंको प्रथम दिन उपाकर्म करना चाहिये फिर यदि पूर्वदिन २ घटी। अनंतर पूर्णिमा प्राप्त होवे और उत्तरदिन४ घटीसे कम होवे वा क्षय होवे तो पूर्वदिनही उपाकर्म करना सर्वसंमतहै अथवा श्रावणशुक्ला १५ दिन सूर्यसंक्रांति होवे वा ग्रहण होवे तो श्रावणशुक्ला ५ के दिन उपाकर्म करना श्रेष्ठ है यदि दैवयोगसे श्रावणमें वृष्टि नहीं होवे औषध्यादि उत्पन्न न होवें तो भाद्रपदमें हस्त नक्षत्रके दिन उपाकर्म करना श्रेष्ठहै. अथ सामवेदीय श्रावणीका मुख्यकालः—भाद्रपद शुक्लपक्ष हस्त नक्षत्रमें मुख्यहै और जिस दिन संक्रांति प्राप्त होवे तो श्रावणशुक्लमें हस्त नक्षत्र मुख्य यह निर्णयसिंधुका आशय है अथवा श्रावणीपूर्णिमाके दिन उपाकर्म करके फिर भाद्रपद शुक्लपक्ष हस्त नक्षत्रमें वेदारंभ करना यह कोईक आचार्यका मत है उक्त वेदवालोंको उपाकर्म अपराह्णमें करना और नर्मदाके उत्तरभागमें वसनेवाला सामवेदी सिंहराशिस्थ सूर्यमें हस्तके दिन उपाकर्म करतेहैं और नर्मदासे दक्षिणवासी कर्कस्थ सूर्यमें हस्तर्क्षदिन उपाकर्म करतेहैं अथाथर्ववेदी इनको भाद्रपद पूर्णिमा उपाकर्म करनेको श्रेष्ठहै. यदि स्वस्वकालमें कार्यवशसे कर्म नहीं होसके तो इतरवेदीके उक्त कालमें उपाकर्म करना परंच कर्मका लोप नहीं करना चाहिये और नवीन मौंजीबंधन किया होवे तो शुक्रगुरुके अस्तमें प्रथम उपाकर्मका आरंभ न करे और उक्त श्रावणी पूर्णिमादिन भद्रारहित समयमें रक्षाबंधन करना श्रेष्ठहै .

इति श्रावणमासः ॥

अथ भाद्रपदमासः—भाद्रपदकृष्णा ६ चंद्रषष्ठी चंद्रोदयव्यापिनी लेनी दोदिन होवे तो पूर्व लेनी भाद्रपद कृष्णा ८ जन्माष्टमीका २ भेद हैं जिसमें केवल अष्टमी तो जन्माष्टमी कहलाती है और चंद्रोदय कालिका अष्टमी रोहिणी नक्षत्र युक्ता जयंती कहलाती है उक्त व्रतका ४ भेदहैं पूर्वदिन निशीथयोगिनी १ परदिन निशीथयोगिनी २ दोनोंदिन निशीथयोगिनी ३ दोनों दिन न निशीथ योगिनी ४ निशीथ अर्थात् अर्धरात्रिकी संज्ञाहै जिसमें सप्तमीके-दिन निशीथकालव्यापिनी अष्टमी होवे तोभी ग्राह्य है और परदिवसी निशीथव्यापिनी अष्टमी होवे तो पर करनी श्रेष्ठहै दोदिन निशीथव्यापिनी अष्टमी होवे तो दूसरेदिन करनी श्रेष्ठहै विषमव्यापिनी होवे तो पूर्व करनी भाद्रपद ३० पिठोरी अमावास्या सायंकालव्यापिनी लेनी यदि दोदिनमेंभी सायंकालव्यापिनी न होवे तो दूसरी लेनी और उसीदिन कुशाका ग्रहण करना भाद्रपदशुक्ला ३ हरितालिका उदयव्यापिनी करनी जब दूसरेदिन २घटी भी होवे तो दूसरे दिनही हरितालिकाव्रत करना भाद्रपदशुक्ला ४ सिद्धिविनायक व्रतमें मध्याह्नव्यापिनी लेनी यदि प्रथमदिन मध्याह्न व्यापिनी नहीं होवे और दूसरे दिनभी नहीं होवे तो दूसरे दिनही करनी मध्याह्न घटी १२ से १८ तक होताहै भाद्रपद शुक्ला ५ ऋषिपंचमीका व्रत स्त्रियोंको करना योग्यहै पंचमी मध्याह्न व्यापिनी लेनी यदि दोदिन मध्याह्नव्यापिनी होवे तो चतुर्थीयुक्त पंचमी लेनी भाद्रपद शुक्ला ७ महालक्ष्मीका व्रत करना अनुराधासे प्रारंभ और मूलमें व्रतकी समाप्ति करनी भाद्रपदशुक्ला १२ श्रवणयुक्ता १२ घटीपर्यंत होवे तो उपवास करना इसका नाम श्रवण द्वादशी यदि दूसरेदिनभी६घटीपर्यंत श्रवण और द्वादशीका योग होवे तो दूसरे दिनही उपवास करना वैष्णवोंको तो अवश्यमेव करना चाहिये भाद्रपद शुक्ला १२ श्रवणयुक्त वामन जयंती मध्याह्नव्यापिनी लेनी भाद्रपद शुक्ला १४ अनंत

निम्बार्कसंप्रदायमें तो सप्तमीविद्धा त्यागके जन्माष्टमी करते हैं और रामानुजसंप्रदायमें सिंहस्थ सूर्यमें जब रोहिणी उदयमें हो तब जन्माष्टमी व्रत करतेहैं और स्मार्तोंको तो केवल अर्धरात्रव्यापिनी अष्टमी चाहिये.

चतुर्दशी उदयव्यापिनी लेनी यदि दोदिन उदव्ययापिनी होवे तो पूर्वलेनी जब पूर्वदिन उदयव्यापिनी न होवे और चतुर्दशीका क्षय होवे तोभी पूर्वही लेनी यदि पूर्वदिन उदयव्यापिनी न होवे और दूसरे दिन घटी २ पर्यंत चतुर्दशी होवे तो दूसरे दिनही अनंतव्रत करना भाद्रपद शुक्ला १५ प्रौष्ठपदी कहलाती है;

अथ आश्विनमासः–भाद्रपद शुक्ला १५ से दिन १६ महालय श्राद्ध कहलातेहैं जिसमें सर्वतिथि मध्याह्नव्यापिनी लेनी और सौभाग्यवतीका श्राद्ध नवमीको करना और शस्त्रादिकसे मृतकका श्राद्ध चतुर्दशीको करना और कोईभी कारणसे महालय श्राद्ध उक्त नियमपर रहता चलाजावे तो वृश्चिकसंक्रांतिपर्यंत करना फिर नहीं करना चाहिये आश्विनकृष्णा अमावस्या हस्त युक्त होवे तो गजच्छाया कहलाती है आश्विन शुक्ला १ को मातामहका श्राद्ध दौहित्रको अवश्य करना चाहिये और उस दिन नवरात्रकाभी प्रारंभ होताहै उक्त प्रतिपदा घटस्थापनमें अमायुक्त नहीं लेना और उसदिन वैधृतियोग होवे तो वैधृति छोडके घटस्थापन करना यदि वैधृत और चित्रानक्षत्रका योग होवे तो वैधृतजन्य दोष नहीं यदि प्रतिपदाका क्षय होवे तो अमावास्या युक्त प्रतिपदा घटस्थापनमें श्रेष्ठ कहलातीहै. आश्विनशुक्ला ५ उपांग ललिता व्रतमें मध्याह्नव्यापिनी पूर्व लेनी आश्विनशुक्ला ७ मूल नक्षत्रमें प्रातः सरस्वतीका आवाहन करके फिर पूर्वाषाढमें पूजन और उत्तराषाढमें बलिदान और श्रवणके प्रथम चरणमें विसर्जन करना चाहिये आश्विनशुक्ला ८ दिन मध्यरात्रिमें भद्रकालीका अवतार हुवाहै उक्तअष्टमी नवमी युक्ता लेनी यदि अष्टमी सूर्योदय समयमें मूल नक्षत्रमें होनी बडी दुर्लभ है. क्यों कि उसको महानवमी कहनी चाहिये और सप्तमीयुक्ता अष्टमीका सदाही त्याग करना यदि अष्टमीका क्षय होवे तो सप्तमीयुक्ता अष्टमी श्रेष्ठहै उक्त अष्टमीमें होम शुरू करके नवमीमें पूर्णाहुति देनी चाहिये. और इसीदिन सर्व शस्त्रों अस्त्रोंकी पूजा करनी. आश्विन शुक्ला ९ पूर्वविद्धा लेनी वेध ६

घटी अष्टमीसे पीछे नवमीकी प्राप्ति होवे तो दूसरे दिन करनी आश्विन शुक्ला प्रतिपदासे नवमीपर्यंत अश्वादिकोंके पालकको नीराजनविधि अर्थात् उनको वस्त्रादिकोंसे सजाके पुष्पादिकोंकी माला पहराके और खान पान अच्छा देना और जलसे नेत्रोंको आँजना चाहिये शुक्ला १० विजया दशमी सो अपराजिता पूजाके विषयमें. नवमी युक्ता दशमी लेनी. सीमोल्लंघनविषयमें सायंकाली दशमी लेनी. यदि सायंकाली न होवे तो विजय मुहूर्तव्यापिनी श्रवणनक्षत्रयुक्त लेनी चाहिये विजयमुहूर्तकी दिनकी २० घटी ऊपर प्राप्ति है. यदि पूर्व दिनमें सायंकाली दशमी और श्रवण नक्षत्र होवे तो पूर्वदिन ही श्रेष्ठहै पूर्वदिनमें श्रवण नहीं होवे तो उदयव्यापिनी श्रेष्ठहै. परंच इसमें श्रवणकी बलिष्ठता विशेष है. राजपट्टाभिषेक उदयव्यापिनी दशमीके दिन करना आश्विनशुक्ला १५ को जागरीव्रत उदयव्यापिनीमें करना इसी दिन नवान्नभक्षण करना और अश्वयुजी कर्ममें पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी चाहिये ।

अथ कार्तिकमासः—तुलासंक्रांतिसे वृश्चिकसंक्रांतिपर्यंत तिल तैलका आकाश दीप करना आश्विनशुक्ला १५ से कार्तिकस्नान प्रारंभ करना कार्तिक कृष्णा ४ कर्क चतुर्थी चंद्रोदयव्यापिनी लेनी कार्तिक कृष्णा १२ गोवत्सपूजा विषयमें प्रदोषव्यापिनी लेनी. कार्तिक कृष्णा १३ के दिन अपमृत्यु निवारणके अर्थ यमराजके प्रीत्यर्थ घरसे बाहिर दीपक करना और धनकी पूजा करनी कार्तिक कृष्णा १४ नरक चतुर्दशी वा रूप १४ चंद्रोदयव्यापिनी लेनी. उसीदिन तिल और आमलकसे अभ्यंग कर फिर स्नानकर अपामार्ग तुंबी और प्रपवाड़ इन तीनोंका पत्र अपने शरीर ऊपर भ्रमायके फेंक देना चाहिये कार्तिक कृष्णा ३० दीपमालिका महालक्ष्मी पूजाविषयमें प्रदोषव्यापिनी लेनी यदि उभयदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो दूसरे दिन करनी चाहिये कार्तिक शुदि १ बलिपूजनमें पूर्वविद्धा लेनी गोवर्धनपूजा इसीदिन करनी. शुक्ल २ यमद्वितीया कहलातीहै यही भाईबीज वा भाऊबीज समझलेना.

सो पूर्वविद्धा लेनी कार्तिकशुक्ला ८ गोपाष्टमी सायंकालव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ९ कूष्माण्डनवमी वा अक्षयनवमी वा युगादि तिथि पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ११ के दिन तुलसीका विवाह करना शुक्ला १२ के दिन रेवतीका अंत्यपाद छोडके पारणा करना. उक्त एकादशी प्रवोधिनी कहलातीहै कार्तिकशुक्ला १२ मन्वादितिथि पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी शुक्ला १४ वैकुंठचतुर्दशी निशीथव्यापिनी लेनी दोदिन होवेतो दूसरेदिनकी लेनी. कार्तिकशुक्ला १५ परदिनकी लेनी। इति कार्तिक मासः ॥

अथ मार्गशीर्षमासः—मार्गशीर्ष शुक्ला ५ नागपंचमी परदिन करनी मार्गशीर्ष शुक्ला ६ चंपाषष्ठी सप्तमीविद्धा करनी मार्गशुक्ला १४ के दिनपिशाचमोचन श्राद्ध करना मार्गशीर्षशुक्ला १५ दत्तजयंती प्रदोषव्यापिनी लेनी॥

अथ पौषमासः—पौषशुक्ला ११ मन्वादि तिथि कहलाती है पौषशुक्ला १५ से माघशुक्ला १५ पर्यंत माघस्नान करना ॥

अथ माघमासः—माघशुक्ला ४ तिल चतुर्थी प्रदोषव्यापिनी लेनी माघ शुक्ला ५ वसंत पंचमी वा श्रीपंचमी माधव मतसे पूर्वा और हेमाद्रिमतसे पुरा करनी माघशुक्ला ७ रथसप्तमी अरुणोदयव्यापिनी लेनी उक्त सप्तमी मन्वादि तिथि भी है माघशुक्ला ८ भीष्माष्टमी पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी माघशुक्ला १२ भीष्मद्वादशी परविद्धा लेनी माघशुक्ला १५ परविद्धा लेनी यदि सोम गुरु युक्ता पौर्णिमा होवेतो स्नानदानमें महापुण्यदायक है ॥

अथ फाल्गुनमासः—फाल्गुनकृष्णा १४ महाशिवरात्रि निशीथव्यापिनी होवे तो पूर्व लेनी दोदिनहीं निशीथव्यापिनी नहीं होवे तो पर करनी फाल्गुन शुक्ला १५ सायाह्नव्यापिनी लेनी सायाह्नव्यापिनी नहीं होवे तो प्रदोषव्यापिनी लेनी दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो दूसरी लेनी भद्राको त्याग करके होलिका दीपन करना यदि कोई ग्रहणादि संकट आजावे तो भद्राके मुखकी ५ घटी त्याग करके होलिकादीपन करना ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होवे तो सायंकाली भद्रारहित होलिकादीपन करना परंतु दिनमें नहीं करना

और प्रतिपदामें भी नहीं करना पूर्णिमा वर्तमानमेंही होलिकादीपन करना

अथ प्रदोपनिर्णयः—शुक्ला १३ त्रयोदशी प्रदोषकालव्यापिनीमेंही प्रदोषका व्रतकरना यदि दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो शुक्लपक्षकी पूर्व और कृष्णपक्षकी पर लेनी यदि दोदिन प्रदोषव्यापिनी नहीं होवे तो भी परकरनी यदि शनिवार युक्त होवे तो महापुण्यदायक कहनी प्रदोष काल सूर्यास्तपीछे ३ घटीपर्यंत होता है।

अथ संकष्ट चतुर्थीनिर्णयः—सारे महीनोंकी कृष्णपक्षकी चतुर्थी संकष्ट चतुर्थी चंद्रोदय व्यापिनी लेनी यदि दोदिन चंद्रोदय व्यापिनी होवे तो दूसरे दिनकी लेनी यदि दोनोंदिन चंद्रोदयव्यापिनी नहीं होवे तो भी दूसरेदिनही की लेनी चाहिये।

अथ एकादशी निर्णयः—एकादशीके व्रतमें ३ तीन भेद हैं स्मार्त १ वैष्णव २ भागवत ३ जिसमें दशमीविद्धा हो वा शुद्धाहो परंच द्वादशीमें पारण होवे सो स्मार्त कहलाती है और ५६ घटीसे एक पल भी अधिक दशमी होवे तो वह एकादशी वैष्णव और भागवतोंको त्याज्य है द्वादशीमेंही व्रत करना होता है और ४५ घटीसे दशमी एक पल भी अधिक होवे तो केवल निम्बार्कसंप्रदायी एकादशी त्यागके द्वादशीका व्रत करते हैं और वैष्णव सभी एकादशीकोही करते हैं अथैकादशीनामानिः—चैत्र शुक्ला ११ कामदा, वैशाखकृष्णा ११ वरूथिनी, वैशाखशुक्ला ११ मोहिनी, ज्येष्ठकृष्णा ११ अपरा, ज्येष्ठशुक्ला ११ निर्जला, आषाढकृष्णा ११ योगिनी, आषाढशुक्ला ११ शयनी, श्रावणकृष्णा ११ कामिका, श्रावणशुक्ला ११ पुत्रदा, भाद्रपदकृष्णा ११ अजा, भाद्रपदशुक्ला ११ पद्मा, आश्विनकृष्णा ११ इंदिरा, आश्विनशुक्ला ११ पाशांकुशा, कार्तिककृष्णा ११ रमा, कार्तिकशुक्ला ११ प्रबोधिनी, मार्गशीर्षकृष्णा ११ उत्पत्ति, मार्गशीर्षशुक्ला ११ मोक्षदा, पौषकृष्णा ११ सफला, पौषशुक्ला ११ पुत्रदा, माघकृष्णा ११ षटतिला, माघशुक्ला ११ जया, फाल्गुनकृष्णा ११ विजया, फाल्गुनशुक्ला ११

सो पूर्वविद्धा लेनी कार्तिकशुक्ला ८ गोपाष्टमी सायंकालव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ९ कूष्माण्डनवमी वा अक्षयनवमी वा युगादि तिथि पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ११ के दिन तुलसीका विवाह करना शुक्ला १२ के दिन रेवतीका अंत्यपाद छोडके पारणा करना. उक्त एकादशी प्रबोधिनी कहलातीहै कार्तिकशुक्ला १२ मन्वादितिथि पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी शुक्ला १४ वैकुंठचतुर्दशी निशीथव्यापिनी लेनी दोदिन होवेतो दूसरेदिनकी लेनी. कार्तिकशुक्ला १५ परदिनकी लेनी। इति कार्तिक मासः ॥

अथ मार्गशीर्षमासः—मार्गशीर्ष शुक्ला ५ नागपंचमी परदिन करनी मार्गशीर्ष शुक्ला ६ चंपाषष्ठी सप्तमीविद्धा करनी मार्गशुक्ला १४ के दिनपिशाचमोचन श्राद्ध करना मार्गशीर्ष शुक्ला १५ दत्तजयंती प्रदोषव्यापिनी लेनी॥

अथ पौषमासः—पौषशुक्ला ११ मन्वादि तिथि कहलाती है पौषशुक्ला १५ से माघशुक्ला १५ पर्यंत माघस्नान करना ॥

अथ माघमासः—माघशुक्ला ४ तिल चतुर्थी प्रदोषव्यापिनी लेनी माघ शुक्ला ५ वसंत पंचमी वा श्रीपंचमी माधव मतसे पूर्वा और हेमाद्रिमतसे पुरा करनी माघशुक्ला ७ रथसप्तमी अरुणोदयव्यापिनी लेनी उक्त सप्तमी मन्वादि तिथि भी है माघशुक्ला ८ भीष्माष्टमी पूर्वाह्णव्यापिनी लेनी माघशुक्ला १२ भीष्मद्वादशी परविद्धा लेनी माघशुक्ला १५ परविद्धा लेनी यदि सोम गुरु युक्ता पौर्णिमा होवेतो स्नानदानमें महापुण्यदायक है ॥

अथ फाल्गुनमासः—फाल्गुनकृष्णा १४ महाशिवरात्रि निशीथव्यापिनी होवे तो पूर्व लेनी दोदिनहा निशीथव्यापिनी नहीं होवे तो पर करनी फाल्गुन शुक्ला १५ सायाह्नव्यापिनी लेनी सायाह्नव्यापिनी नहीं होवे तो प्रदोषव्यापिनी लेनी दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो दूसरी लेनी भद्राको त्याग करके होलिका दीपन करना यदि कोई ग्रहणादि संकट आजावे तो भद्राके मुखकी ५ घटी त्याग करके होलिकादीपन करना ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होवे तो सायंकाली भद्रारहित होलिकादीपन करना परंतु दिनमें नहीं करना

अथवारुणीयोगः—चैत्रकृष्णा १३ शततारकानक्षत्रयुता वारुणीसंज्ञका शनिवारयुक्ता महावारुणी शुभयोगयुक्ता महामहावारुणीसंज्ञका । अथ व्यतीपातयोगः-पंचाननस्थौ गुरुभूमिपुत्रौ मेषे रविः स्यादि शुक्लपक्षे । या-साभिधानाकरभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः । इतिव्यतीपातयोगः॥

अथगजच्छायायोगः—आश्विनकृष्णपक्षे हस्तनक्षत्रे सूर्ये मघानक्षत्रयुता त्रयोदशी गजच्छायासंज्ञका ॥

अथ अर्द्धोदययोगः—अमार्कपातश्रवणे युताचेत्पौषमाघयोः । अर्धोदयः सविज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समः । इतिअर्द्धोदययोगः ॥

अथ ग्रंथबनानेका प्रयोजनः—ज्योतिष शास्त्रके ग्रंथ फलादेश कहनेका तो देवभाषासे मनुष्यभाषामें निर्माण कियाहुवा बहुत जगह देखा परंच सिद्धांत-भागका उदाहरण जो कठिन है सो आजतक हिंदी भाषामें नहीं देखा अतएव सर्व सज्जनोंके सुभीतेके लिंये परोपकार समझके अनेक ग्रंथोंका सारसंग्रह करके इस ग्रंथको मनुष्यभाषा (आर्यहिंदुस्थानी) में निर्माण कियाहे और पंचांग पद्धति जो कि पंचांग बनानेकी विद्या विविध शास्त्रोंसे ज्योतिर्वि-दोंको प्रतिवर्षके पंचांग बनानेमें बहुत प्रयास होताथा जिससे उक्त पद्धतिको भी व्रतादिनिर्णय सहित सांगोपांगसे परिपूरित करके जो पंचांगके प्रयोजन सिद्ध होनेयोग्य बातथी वह मेरी स्वल्प बुद्ध्यनुसार शंका समाधान सहित लिखी है और भूगोल खगोलका नकसाकी जिसके केवलमात्र देखनेसेही पृथ्वीपर विविधराज्यकी रचना और जलस्थलका नील और श्वेतरंगसे पृथक् भेद समझना और खगोलमें आकाशचारी ग्रहोंकी यथास्थिति राशिचारादि सब अवयवोंसे सुशोभित कियागयाहे अब इस ग्रंथके निर्माण करनेका प्रेरक सर्वांतर्यामी मुझको और ग्रंथपठनकरनेवालोंको चतुर्वर्गकी सिद्धि सम्यक् प्राप्ति करेंगे.

आमलकी, चैत्रकृष्णा ११ पापमोचनी अधिकमासे उभयपक्षयोः ११ कमला। इति एकादशीनिर्णयः ।

अथ ग्रहणपर्वकालनिर्णयः—ग्रहणस्पर्शकाल चंद्रमाका हो जिस प्रहरसे पहले तीनप्रहर और सूर्यग्रहणसे चार प्रहर पहले भोजन करके पीछे ग्रहण शुद्ध नहीं हो जितने भोजन नहीं करना चंद्रमा ग्रस्तास्त होवे तो वह दिनमें भोजन नहीं करना रात्रिके चंद्रोदय शुद्धबिंब देखके सचैल स्नान करके भोजन करना यदि सूर्यग्रहणभी ग्रस्तास्त होवे तो रात्रिको भोजन नहीं करना दूसरे दिन सूर्योदयात् शुद्धबिंब देखके मुक्तस्नान करके भोजन करना चाहिये.

अथ ग्रहणे धर्मशास्त्रं-ग्रहणप्रहरात्पुराविधोःप्रहराणां त्रितयेन भुज्यते ॥ सवितुश्च तथा चतुष्टये शिशुवृद्धातुरवर्जितैर्जनैः ॥ १ ॥ ग्रहयामादितः पूर्वं प्रहरे नहि भोजनम् ॥ शिशुवृद्धातुरैःकार्यमिति शास्त्रविदोविदुः॥ २ ॥ ग्रस्तास्तयोःपुष्पवतोस्तु पश्चाद्भुञ्जीव बिंबं विमलं विलोक्य ॥ अतीत्यकालं ग्रहणस्य संध्याहोमादिके स्यादिह नैव दोषः॥ ३ ॥ आरनालमथिते दधिदुग्धे तैलसर्पिरिह पाचितमन्नम् ॥ सतिलैःकुशयुतैःसमवेतं नो भवेद्ग्रहणजवेधविदग्धम् ॥ ४ ॥ गांगं च पणिकस्थंचजलं तद्वन्न दुष्यति ॥ अत्रामान्नेनहेम्ना वा श्राद्धदानादि निश्यपि ॥ ५ ॥ प्रत्याब्दिकं चापि विधेयमन्नेरामेन हेम्नापितथोपरागे। त्रिभिर्विभागैर्जपहोमदानं दिशेदिहाग्रे दिनसप्तकेपि ॥ ६ ॥ विशेषतो भास्करपर्वणियमाशौचमध्येपि च सर्वकर्म ॥ अशुद्धबिंबे तु रजस्वलापि स्नायात्पृथक्पात्रगताभिरद्भिः ॥ ६ ॥ मुक्तिस्नानं सचैलं तु मंत्रकृत्यविवर्जितम् ॥ अवश्यमेव कर्तव्यमिति ग्रहणनिर्णयः ॥ ८ ॥ इतिग्रहणपर्वकालनिर्णयः ॥

अथकपिलाषष्ठीः—भाद्रपदे सिते पक्षे षष्ठी भौमेन संयुता ॥ व्यतीपाते च रोहिण्यां सा षष्ठी कपिला स्मृता ॥ १ ॥

अथवारुणीयोगः—चैत्रकृष्णा १३ शततारकानक्षत्रयुता वारुणीसंज्ञका शनिवारयुक्ता महावारुणी शुभयोगयुक्ता महामहावारुणीसंज्ञका । अथ व्यतीपातयोगः-पंचाननस्थौ गुरुभूमिपुत्रौ मेषे रविः स्यायदि शुक्लपक्षे । या-साभिधानाकरभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः । इतिव्यतीपातयोगः॥

अथगजच्छायायोगः—आश्विनकृष्णपक्षे हस्तनक्षत्रे सूर्ये मघानक्षत्रयुता त्रयोदशी गजच्छायासंज्ञका ॥

अथ अर्द्धोदययोगः—अमार्कपातश्रवणे युताचेत्पौषमाघयोः । अर्धोदयः सविज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समः । इतिअर्द्धोदययोगः ॥

अथ ग्रंथबनानेका प्रयोजनः—ज्योतिष शास्त्रके ग्रंथ फलादेश कहनेका तो देवभाषासे मनुष्यभाषामें निर्माण कियाहुवा बहुत जगह देखा परंच सिद्धांत-भागका उदाहरण जो कठिन है सो आजतक हिंदी भाषामें नहीं देखा अतएव सर्व सज्जनोंके सुभीतेके लिये परोपकार समझके अनेक ग्रंथोंका सारसंग्रह करके इस ग्रंथको मनुष्यभाषा (आर्यहिंदुस्थानी) में निर्माण कियाहै और पंचांग पद्धति जो कि पंचांग बनानेकी विधा विविध शास्त्रोंसे ज्योतिर्वि-दोंको प्रतिवर्षके पंचांग बनानेमें बहुत प्रयास होताथा जिससे उक्त पद्धतिको भी व्रतादिनिर्णय सहित सांगोपांगसे परिपुरित करके जो पंचांगके प्रयोजन सिद्ध होनेयोग्य बातथी वह मेरी स्वल्प बुद्ध्यनुसार शंका समाधान सहित लिखी है और भूगोल खगोलका नकसाकी जिसके केवलमात्र देखनेसेही पृथ्वीपर विविधराज्यकी रचना और जलस्थलका नील और श्वेतरंगसे पृथक् भेद समझना और खगोलमें आकाशचारी ग्रहोंकी यथास्थिति राशिचारादि सब अवयवोंसे सुशोभित कियागयाहै अब इस ग्रंथके निर्माण करनेका प्रेरक सर्वांतर्यामी मुझको और ग्रंथपठनकरनेवालोंको चतुर्वर्गकी सिद्धि सम्यक् प्राप्ति करेंगे.

श्लोक।

श्रीमत्सीकरपत्तनादिनगराधिष्ठातृदेवः सदा ब्रह्मण्यः क्षितिपालक सुमुदितैर्विद्वद्गणैः सेवितः ॥ ग्रामैः पंचशतैः शतार्द्धसहितैर्वर्णैः पुरैः संयुतः श्रीमन्माधवसिंहवर्मनृपतेर्भूयात्सदा मंगलम् ॥१॥ तद्राज्येश्वरविद्ययाविलसितो मान्यो महाभूभुजां श्रीगौडान्वयवल्लभोतिकुशलः संगीतशास्त्रेन्वितः ॥ तत्सूनुर्मनिरामनामगणकः श्रीरामदुर्गे वरे प्राप्तो ज्येष्ठसहोदरात्सुविमलं ज्ञानं नृसिंहाभिधात् ॥ २॥ भूयो वेदनिधेः प्रगल्भगणकात्प्राप्तं विशालापुरे यस्मात्सारविचारचारुगणितं सज्ज्योतिषं निर्मलम् ॥ पाखंडद्रुमखंडखंडनकृतस्तस्यास्तु पूर्णा कृपा दीनानाथगुरोरखंडकरुणापूरान्मतिर्मे सती ॥ ३ ॥ शाके पट्शशिनागचंद्रसहिते सूर्येह्निदीपोत्सवे चोर्जे मास्यसिते दले सुविमलं ग्रंथं ह्यकार्षीन्मनुः ॥ दिव्यं भूग्रहवासनास्फुटतरैर्भेदैरनेकैर्युतं यं दृष्ट्वोपहसंति मत्सरधियस्तेभ्यो महद्भ्यो नमः ॥ ४ ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्मनीरामविरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते व्रतादिनिर्णयवर्णनं नाम पंचविंशतितमोविनोदः ॥ २५ ॥




समाप्तोऽयं दैवज्ञविनोदः ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी—बंबई.